भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य

चतुर्थखंडे वेदनानामधेये

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितानि
वेदनानुयोगद्वारगर्भितानि

वेदनाक्षेत्रविधान-वेदनाकालविधानानुयोगद्वाराणि

सम्पादकः

नागपुर विश्वविद्यालय-संस्कृत-पाली-प्राकृतविभागाध्यक्षः
एम् ए, एल्एल् बी, डी लिट् इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकः

पं बालचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

संशोधने सहायकः

डा नेमिनाथ तनय आदिनाथ उपाध्याय एम् ए, डी लिट्.

प्रकाशकः

श्रीमन्त शेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय
अमरावती (बरार)

वि. सं २०११]　　वीर-निर्वाण संवत् २४८१　　[ई स १९५५

मूल्यं रूप्यक-द्वादशकम्

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA
OF
PUṢPADANTA AND BHŪTABALI
WITH
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. XI

Vedanākṣetravidhāna-Vedanākālavidhāna Anuyogadwāras

Edited
with translation, notes and indexes
BY
Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL, B., D. LITT.

ASSISTED BY
Pandit Balchandra
Siddhānta Shāstri

with the cooperation of
Dr. A. N. UPADHYE, M. A., D. LITT.

Published by
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya,
AMRAVATI (Berar).

1955

Price Rupees Twelve Only

विषय-सूची

प्राक्-कथन

षट्खंडागम भाग १० के प्रकाशनके पश्चात् इतने शीघ्र प्रस्तुत भाग ११ को पाकर पाठक प्रसन्न होंगे, और प्रकाशनसम्बन्धी पूर्व विलम्बके लिये हमें क्षमा करेंगे, ऐसी आशा है।

इस भागके प्रथम १९ फार्म अर्थात् पृष्ठ १ से १५२ तक पूर्वानुसार सरस्वती प्रेस, अमरावतीमें छपे हैं; और शेष समस्त भाग न्यूभारत प्रेस, बम्बई, में छपा है। इस कारण यदि पाठकोंको टाइप, कागज व मुद्रण आदिमें कुछ द्विरूपता व दोष दिखाई दे तो क्षमा करेंगे। यदि बम्बईमें मुद्रणकी व्यवस्था न की गई होती तो अभी और न जाने कितने काल तक इस भागके पूरे होनेकी प्रतीक्षा करनी पड़ती।

बम्बईमें इसके मुद्रणकी व्यवस्था करा देनेका श्रेय श्रद्धेय पं० नाथूरामजी प्रेमीको है इस कार्यमें हमें उनका औपचारिक रूपमात्रसे नहीं, किन्तु यथार्थतः तन, मन और धनसे सहयोग मिला है जिसके लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। उनकी बड़ी तीव्र अभिलाषा और प्रेरणा है कि धवलशास्त्रका सम्पादन-प्रकाशन-कार्य जितना शीघ्र हो सके पूरा कर देना चाहिये, और इसके लिये वे अपना सब प्रकार सहयोग देनेके लिये तैयार हो गये हैं।

इस कार्यकी शेष सब व्यवस्था पूर्ववत् स्थिर रही है जिसके लिये हम धवलाकी हस्तलिखित प्रतियोंके स्वामियोंके तथा सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी व व्यवस्थापक समितिके अन्य सदस्योंके उपकृत हैं।

सहारनपुरनिवासी श्री रतनचंद्रजी मुख्तार और उनके भ्राता श्री नेमिचन्द्रजी वकील इन सिद्धान्त ग्रंथोंके स्वाध्यायमें असाधारण रुचि रखते हैं, यह हम पूर्वमें भी प्रकट कर चुके हैं। यही नहीं, वे सावधानीपूर्वक समस्त मुद्रित पाठपर ध्यान देकर उचित संशोधनोंकी सूचना भी भेजनेकी कृपा करते हैं जिसका उपयोग शुद्धिपत्रमें किया जाता है। इस भागके लिये भी उन्होंने अपने संशोधन भेजनेकी कृपा की। इस निस्पृह और शुद्ध धार्मिक सहयोगके लिये हम उनका बहुत उपकार मानते हैं।

पाठक देखेंगे कि भाग १२ वाँ भी प्रायः इसके साथ ही साथ प्रकाशित हो रहा है, जिससे पूर्वविलम्बका हमारा समस्त अपराध क्षम्य सिद्ध होगा।

नागपुर, ३ फरवरी १९५५ **हीरालाल जैन**

विषय-परिचय

वेदना महाधिकारके अन्तर्गत जो वेदनानिक्षेपादि १६ अनुयोगद्वार हैं उनमेंसे आदिके ४ अनुयोगद्वार पुस्तक १० में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें उनसे आगेके वेदनाक्षेत्रविधान और वेदनाकालविधान ये २ अनुयोगद्वार प्रकाशित किये जा रहे हैं।

५ वेदनाक्षेत्रविधान

द्रव्यविधानके समान इस अनुयोगद्वारमें भी पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार हैं। यहाँ प्रारम्भमें श्री वीरसेन स्वामीने क्षेत्रविधानकी सार्थकता प्रगट करते हुए प्रथमतः नाम, स्थापना, द्रव्य व भावके भेदसे क्षेत्रके ४ भेद बतला कर उनमेंसे नोआगमद्रव्यक्षेत्र (आकाश) को अधिकारप्राप्त बतलाया है। ज्ञानावरणादि आठ कर्म रूप पुद्‌गल द्रव्यका नाम वेदना है। समुद्‌घातादि रूप विविध अवस्थाओंमें संकोच व विस्तारको प्राप्त होनेवाले जीवप्रदेश उक्त वेदनाका क्षेत्र है। प्रकृत अनुयोगद्वारमें चूँकि इसी क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, अतएव 'वेदनाक्षेत्रविधान' यह उसका सार्थक नाम है।

(१) **पदमीमांसा**—जिस प्रकार द्रव्यविधान (पु. १०) के अन्तर्गत पदमीमांसा अनुयोगद्वारमें द्रव्यकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी वेदनाके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य व अजघन्य तथा देशामर्शकभावसे सूचित सादिअनादि पदोंकी प्ररूपणा की गई है; ठीक उसी प्रकारसे यहाँ इस अनुयोगद्वारमें भी उन्हीं १३ पदोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा प्ररूपणा की गई है। उससे यहाँ कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है (देखिए द्रव्यविधानका विषयपरिचय प्रस्तावना पृ. २-४)।

(२) **स्वामित्व** अनुयोगद्वारमें उत्कृष्ट पद विषयक स्वामित्व और जघन्य पद विषयक स्वामित्व, इस प्रकार स्वामित्वके २ भेद बतलाकर प्रकरण वश यहाँ जघन्य व उत्कृष्टके विषयमें निश्चित पद्धतिके अनुसार नामादि रूप निक्षेपविधिकी योजना की गई है। इसमें नोआगमद्रव्य-जघन्यके ओघ और आदेशकी अपेक्षा मुख्यतया २ भेद बतलाकर फिर उनमेंसे भी प्रत्येकके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा ४-४ भेद बतलाये हैं। उनमें ओघकी अपेक्षा एक परमाणुको द्रव्य-जघन्य कहा गया है। कर्मक्षेत्रजघन्य और नोकर्मक्षेत्रजघन्यके भेदसे क्षेत्रजघन्य दो प्रकारका है। इनमें सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहनाका नाम कर्मक्षेत्रजघन्य और एक आकाशप्रदेशका नाम नोकर्मक्षेत्रजघन्य बतलाया है। एक समयको कालजघन्य और परमाणुमें रहनेवाले एक स्निग्धत्व आदि गुणको भावजघन्य कहा गया है। आदेशतः तीन प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यजघन्य, तीन आकाशप्रदेशोंमें अधिष्ठित द्रव्यकी अपेक्षा दो आकाशप्रदेशोंमें अधिष्ठित द्रव्य क्षेत्रजघन्य, तीन समय परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो

समय परिणत द्रव्य कालजघन्य, तथा तीन गुण-परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण-परिणत द्रव्य भावजघन्य है। इसी प्रकारसे आदेशकी अपेक्षा इन द्रव्यजघन्यादिके भेदोंकी आगे भी कल्पना करना चाहिये। जैसे—चार प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला तथा पाँच प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा चार प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशकी अपेक्षा द्रव्यजघन्य है, इत्यादि। यही प्रक्रिया उत्कृष्टके सम्बन्धमें भी निर्दिष्ट की गयी है। विशेष इतना है कि यहाँ ओघकी अपेक्षा महास्कन्धको द्रव्य-उत्कृष्ट, लोकाकाशको कर्मक्षेत्र-उत्कृष्ट, आकाशद्रव्यको नोकर्मक्षेत्र-उत्कृष्ट, अनन्त लोकोंको काल-उत्कृष्ट, और सर्वोत्कृष्ट वर्णादिको भाव-उत्कृष्ट कहा गया है।

आगे इस अनुयोगद्वारमें ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य वेदनायें किन किन जीवोंके कौन कौनसी अवस्थाओंमें होती हैं, इस प्रकार इन वेदनाओंके स्वामियोंकी विस्तारसे प्ररूपणा की गयी है। उदाहरणस्वरूप क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए बतलाया गया है कि एक हजार योजन प्रमाण आयत जो महामत्स्य स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित है, वहां वेदना-समुद्घातको प्राप्त होकर जो तनुवातवलयसे संलग्न है तथा जो मारणान्तिकसमुद्घातको करते हुए तीन विग्रहकाण्डकोंको करके अनन्तर समयमें नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाला है उसके ज्ञानावरण कर्मकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना होती है। इस उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न ज्ञानावरणकी क्षेत्रकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट वेदना है। इसी प्रकारसे दर्शनावरण आदि शेष कर्मोंकी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट वेदनाओंकी प्ररूपणा की गयी है। वेदनीय कर्मकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना लोकपूरण केवलिसमुद्घातको प्राप्त हुए केवलीके कही गयी है।

ज्ञानावरणकी क्षेत्रतः जघन्य वेदना ऐसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके बतलायी है जो ऋजुगतिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ होनेके तृतीय समयमें वर्तमान व तृतीय समयवर्ती आहारक है, जघन्य योगवाला है, तथा सर्वजघन्य अवगाहनासे युक्त है। इस जघन्य क्षेत्रवेदनासे भिन्न अजघन्य क्षेत्रवेदना कही गयी है। इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य वेदनाकी यहाँ प्ररूपणा की गयी है।

(३) **अल्पबहुत्व** अनुयोगद्वारमें आठों कर्मोंकी उक्त वेदनाओंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा जघन्यपदविषयक, उत्कृष्टपदविषयक व जघन्य-उत्कृष्टपदविषयक, इन ३ अनुयोगद्वारोंके द्वारा की गयी है। प्रसंग पाकर यहाँ (सूत्र ३०-९९ में) मूलग्रन्थकर्ताने सब जीवोंमें अवगाहनादण्डककी भी प्ररूपणा कर दी है।

६ वेदनाकालविधान

इस अनुयोगद्वारमें पहिले नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, समाचारकाल, अद्धाकाल, प्रमाणकाल और भावकाल, इस प्रकार कालके ७ भेदोंका निर्देश कर इनके और भी उत्तरभेदोंको बतलाते हुए तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकालके प्रधान और अप्रधान रूपसे २ भेद बतलाये हैं। इनमें जो काल शेष पांच द्रव्योंके परिणमनमें हेतुभूत है वह प्रधानकाल कहा गया है। यह

प्रधानकाल कालाणु स्वरूप होकर संख्यामें लोकाकाशप्रदेशोंके बराबर, रत्नराशिके समान प्रदेश-प्रचयसे रहित, अमूर्त एवं अनादि-निधन है। अप्रधानकाल सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका बतलाया है। इनमें दंशकाल (डांसोंका समय) व मशककाल (मच्छरोंका समय) आदिको सचित्तकाल; धूलिकाल, कर्दमकाल, वर्षाकाल, शीतकाल व उष्णकाल आदिको अचित्त-काल; तथा सदंश शीतकाल आदिको मिश्रकालसे नामांकित किया गया है।

समाचारकाल लौकिक और लोकोत्तरके भेदसे दो प्रकार है। वन्दनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल, व ध्यानकाल आदिरूप लोकोत्तर समाचारकाल तथा कर्षणकाल (खेत जोतनेका समय) लुननकाल व वपनकाल (वोनेका समय) आदि रूप लौकिक समाचारकाल कहा जाता है। वर्तमान, अतीत व अनागत रूप काल अद्धाकाल तथा पल्योपम व सागरोपम आदि रूप काल प्रमाणकाल नामसे प्रसिद्ध हैं।

वेदनाद्रव्यविधान और क्षेत्रविधानके समान इस अनुयोगद्वारमें भी पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व ये ही तीन अनुयोगद्वार हैं।

(१) **पदमीमांसा** अनुयोगद्वारमें ज्ञानावरणादि कर्मोंकी वेदनाओंके उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि उन्हीं १३ पदोंकी प्ररूपणा कालकी अपेक्षा ठीक उसी प्रकारसे की गयी है जैसे कि द्रव्य-विधानमें द्रव्यकी अपेक्षासे और क्षेत्रविधानमें क्षेत्रकी अपेक्षासे वह की गयी है। यहाँ उससे कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है।

(२) **स्वामित्व**—पिछले उन दोनों अनुयोगद्वारोंके समान यहाँ भी इस अनुयोगद्वारको उत्कृष्ट पदविषयक और अनुत्कृष्ट पदविषयक इन्हीं दो भेदोंमें विभक्त किया गया है। प्रकरणवश यहाँ भी प्रारम्भमें क्षेत्रके विधानके समान जघन्य और उत्कृष्टके विषयमें नामादि रूप निक्षेपविधिकी योजना की गयी है। तत्पश्चात् ज्ञानावरणादि कर्मों सम्बन्धी कालकी अपेक्षा होनेवाली उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट एवं जघन्य-अजघन्य वेदनाओंके स्वामियोंकी प्ररूपणा की गयी है। उदाहरणार्थ, ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका कथन करते हुए यह बतलाया है कि जो संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो चुका है, साकार उपयोगसे युक्त होकर श्रुतोपयोगसे सहित है, जागृत है, तथा उत्कृष्ट स्थितिबन्धके योग्य संक्लेश-स्थानोंसे अथवा कुछ मध्यम जातिके संक्लेश परिणामोंसे सहित है, उसके ज्ञानावरण कर्मकी कालकी उत्कृष्ट वेदना होती है। उपर्युक्त विशेषताओंसे संयुक्त यह जीव कर्मभूमिज (१५ कर्म-भूमियोंमें उत्पन्न) ही होना चाहिये, भोगभूमिज नहीं; कारण कि भोगभूमियोंमें उत्पन्न जीवोंके उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त वह चाहे अकर्मभूमिज (देव-नारकी) हो, चाहे कर्मभूमिप्रतिभागज (स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागमें उत्पन्न) हो; इसकी कोई विशेषता यहाँ अभीष्ट नहीं है। इसी प्रकार वह संख्यातवर्षायुष्क (अढ़ाई द्वीप-समुद्रों तथा कर्मभूमि प्रतिभागमें उत्पन्न) और असंख्यातवर्षायुष्क (देव-नारकी) इनमेंसे कोई भी हो सकता है। वह देव होना

चाहिये, मनुष्य होना चाहिये, तिर्यंच होना चाहिये अथवा नारकी होना चाहिये; इस प्रकारकी गतिजन्य विशेषताके साथ ही यहाँ वेदजनित विशेषताकी भी कोई अपेक्षा नहीं की गयी है। वह जलचर भी हो सकता है, थलचर भी हो सकता है, और नभचर भी हो सकता है; इसकी भी विशेषता यहाँ नहीं ग्रहण की गयी।

इस उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न वेदना अनुत्कृष्ट बतलायी गई है। इसी प्रकारसे यथासम्भव शेष कर्मोंकी कभी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट वेदनाओंकी विशदतासे प्ररूपणा की गयी है। आयु कर्मकी कालतः उत्कृष्ट वेदनाका निरूपण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उत्कृष्ट देवायुके बन्धक मनुष्य सम्यग्दृष्टि ही होते हैं, किन्तु उत्कृष्ट नारकायुके बन्धक मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टिके साथ संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि भी होते हैं। देवोंकी उत्कृष्ट आयुका बन्ध १५ कर्मभूमियोंमें ही होता है, कर्मभूमिप्रतिभाग और भोगभूमियोंमें उत्पन्न जीवोंके उसका बन्ध सम्भव नहीं है। उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध १५ कर्मभूमियोंके साथ कर्मभूमिप्रतिभागमें भी उत्पन्न जीवोंके होना है, भोगभूमियोंमें उसका बन्ध नहीं होता। इस उत्कृष्ट देवायु और नारकायुके बन्धक संख्यात वर्षकी आयुवाले मनुष्य व तिर्यंच उसके बन्धक नहीं होते। तीनों वेदोंमेंसे किसी भी वेदके साथ उत्कृष्ट आयुका बन्ध हो सकता है, उसका किसी वेदविशेषके साथ विरोध सम्भव नहीं है; यह जो मूल ग्रन्थकारद्वारा सामान्य कथन किया गया है उसका स्पष्टीकरण करते हुए श्री वीरसेन स्वामीने कहा है कि वेदसे अभिप्राय यहाँ भाववेदका रहा है। कारण कि अन्यथा द्रव्य स्त्रीवेदसे भी उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध हो सकता है, किन्तु वह "आ पंचमी त्ति सिंहा इत्थीओ जंति छट्ठिपुढवि त्ति" इस सूत्र (मूलाचार १२-११३) के विरुद्ध होनेसे सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त द्रव्यस्त्रीवेदके साथ उत्कृष्ट देवायुका भी बन्ध संभव नहीं है, क्योंकि, उसका बन्ध निर्ग्रन्थ लिंगके साथ ही होता है; परन्तु द्रव्यस्त्रियोंके वस्त्रादि त्यागरूप भावनिर्ग्रन्थता सम्भव नहीं है।

कालकी अपेक्षा सब कर्मोंकी जघन्य वेदनाकी प्ररूपणा करते हुए ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्मकी यह वेदना छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयको प्राप्त जीवके (क्षीणकषायके अन्तिम समयमें) बतलायी गयी है। वेदना, आयु, नाम व गोत्रकी कालतः जघना वेदना अयोग-केवलीके अन्तिम समयमें होती है। मोहनीय कर्मकी उक्त वेदना सूक्ष्मसाम्परायके अन्तिम समयमें होती है। अपनी अपनी जघन्य वेदनासे भिन्न सब कर्मोंकी कालतः अजघन्य वेदना कही गयी है।

(३) **अल्पबहुत्व**—अनुयोगद्वारमें क्रमशः जघन्य पद, उत्कृष्ट पद और जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी कालवेदनाके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार इन ३ अनुयोगद्वारोंके समाप्त हो जानेपर प्रस्तुत वेदनाकालविधान अनुयोगद्वारा समाप्त हो जाता है। आगे चलकर उसकी प्रथम चूलिका प्रारम्भ होती है।

चूलिका १

इस चूलिकामें निम्न ४ अनुयोगद्वार हैं—स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा, आबाधा-काण्डकप्ररूपणा और अल्पबहुत्व। (१) **स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें** चौदह जीवसमासोंके आश्रयसे स्थितिबन्धस्थानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे जघन्य स्थितिको कम करके एक अंकके मिला देनेपर जो प्राप्त हो उतने स्थितिस्थान होते हैं। इस अल्पबहुत्वको देशामर्शक सूचित कर श्री वीरसेन स्वामीने यहाँ अल्पबहुत्वके अव्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ये दो भेद बतला कर स्वस्थान-परस्थानके भेदसे विस्तारपूर्वक प्ररूपणा की है। अव्वोगाढअल्पबहुत्वमें कर्मविशेषकी अपेक्षा न कर सामान्यतया जीवसमासोंके आधारसे जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्ध, स्थितिबन्धस्थान और स्थितिबन्धस्थानविशेषका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। परन्तु मूलप्रकृतिअल्पबहुत्वमें उन्हीं जीवसमासोंके आधारसे ज्ञाना-वरणादि कर्मोंकी अपेक्षा कर उपर्युक्त जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्धादिके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

आगे जाकर " बध्यते इति बन्धः, स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः, तस्य स्थानं विशेषः स्थितिबन्धस्थानम्; अथवा बन्धनं बन्धः, स्थितेर्बन्धः स्थितिबन्धः, सोऽस्मिन् तिष्ठतीति स्थिति-बन्धस्थानम् " इन दो निरुक्तियोंके अनुसार स्थितिबन्धस्थानका अर्थ आबाधास्थान करके पूर्वोक्त पद्धतिके ही अनुसार अव्वोगाढअल्पबहुत्वमें स्वस्थान-परस्थान स्वरूपसे जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा, आबाधास्थान और आबाधास्थानविशेषके अल्पबहुत्वकी सामान्यतया तथा मूलप्रकृतिअल्पबहुत्वमें इन्हींके अल्पबहुत्वकी कर्मविशेषके आधारसे प्ररूपणा की गयी है। तत्पश्चात् जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा, आबाधास्थान और आबाधाविशेष, इन सबके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा पूर्वोक्त पद्धतिके ही अनुसार सम्मिलित रूपमें एक साथ भी की गयी है।

तत्पश्चात् "स्थितयो बध्यन्ते एभिरिति स्थितिबन्धः, तेषां स्थानानि अवस्थाविशेषाः स्थितिबन्ध-स्थानानि" इस निरुक्तिके अनुसार स्थितिबन्धस्थानपदसे स्थितिबन्धके कारणभूत संक्लेश व विशुद्धि रूप परिणामोंकी व्याख्या प्ररूपणा, प्रमाण व अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंसे की गयी है। संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व स्वयं मूलग्रन्थकर्ता भट्टारक भूतबलिके द्वारा चौदह जीवसमासोंके आधारसे किया गया है। तत्पश्चात् स्थितिबन्धकी जघन्य व उत्कृष्ट आदि अवस्थाविशेषोंके अल्पबहुत्वका भी वर्णन मूलसूत्रकारने स्वयं ही किया है[1]।

(२) **निषेकप्ररूपणा**—संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आदि विविध जीव ज्ञानावरणादि कर्मोंके आबाधाकालको छोड़कर उत्कृष्ट स्थितिके अन्तिम समय पर्यन्त प्रथमादिक समयोंमें किस प्रमाणसे द्रव्य देकर निषेकरचना करते हैं, इसकी प्ररूपणा इस अधिकारमें प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, इन ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा विस्तारसे की गई है।

१ यह अल्पबहुत्व श्वेताम्बर कर्मप्रकृति ग्रन्थकी आचार्य मलयगिरि विरचित संस्कृत टीकामें भी यत् किंचित् भेदके साथ प्रायः ज्योंका त्यों पाया जाता है (देखिये कर्मप्रकृति गाथा १, ८०-८१ की टीका)। इसके अतिरिक्त यहां अन्य भी कुछ प्रकरण अनूदित जैसे उपलब्ध होते हैं।

(३) **आबाधाकाण्डकप्ररूपणा**में यह बतलाया गया है कि पंचेन्द्रिय संज्ञी आदि जीव आयुकर्मको छोड़कर शेष ७ कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे आबाधाके एक एक समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे आकर एक आबाधाकाण्डकको करते हैं। उदाहरणार्थ विवक्षित जीव आबाधाके अन्तिम समयमें ज्ञानावरणादिकी उत्कृष्ट स्थितिको भी बांधता है, उससे एक समय कम स्थितिको बांधता है, दो समय कम स्थितिको भी बांधता है, तीन समय कम स्थितिको भी बांधता है, इस क्रमसे जाकर उक्त समयमें ही पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे हीन तक उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है। इस प्रकार आबाधाके अन्तिम समयमें जितनी भी स्थितियाँ बन्धके योग्य हैं उन सबकी एक आबाधाकाण्डक संज्ञा निर्दिष्ट की गयी है। इसी क्रमसे आबाधाके द्विचरमादि समयोंके विवक्षित द्वितीयादिक आबाधाकाण्डकोंको भी समझना चाहिये। यह क्रम जघन्य स्थिति प्राप्त होने तक चालू रहता है। यहाँ श्री वीरसेन स्वामीने चौदह जीवसमासोंमें आबाधास्थानों और आबाधाकाण्डकशलाकाओंके प्रमाणकी भी प्ररूपणा की है।

यहाँ आयु कर्मके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा न करनेका कारण यह है कि अमुक आबाधामें आयुकी अमुक स्थिति बँधती है, ऐसा कोई नियम अन्य कर्मोंके समान आयुकर्मके विषयमें सम्भव नहीं है। कारण कि पूर्वकोटिके त्रिभागको आबाधा करके उसमें तेतीस सागरोपम प्रमाण [उत्कृष्ट] आयु बँधती है, उससे एक समय कम भी बँधती है, दो समय कम भी बँधती है, तीन समय कम भी बँधती है, यहाँ तक कि इसी आबाधामें क्षुद्रभवग्रहण मात्र तक आयुस्थिति बँधती है। यही कारण है कि यहाँ आयुके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गयी।

(४) **अल्पबहुत्व** अनुयोगद्वारमें मूलसूत्रकार द्वारा चौदह जीवसमासोंमें ज्ञानावरणादि ७ कर्मों तथा आयु कर्मकी जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा, आबाधास्थान, आबाधाकाण्डक, नाना-प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर, एक आबाधाकाण्डक, जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्ध तथा स्थितिबन्धस्थान, इन सबके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा विशद रूपसे की गयी है[1]। आगे चलकर यहाँ श्री वीरसेन स्वामीने इस अल्पबहुत्वके द्वारा सूचित स्वस्थान व परस्थान अल्पबहुत्वोंकी भी प्ररूपणा बहुत विस्तारसे की है।

चूलिका २

इस चूलिकाके अन्तर्गत स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी प्ररूपणामें जीवसमुदाहार, प्रकृति-समुदाहार और स्थितिसमुदाहार ये ३ अनुयोगद्वार निर्दिष्ट किये गये हैं।

(१) **जीवसमुदाहार**में यह बतलाया है कि जो जीव ज्ञानावरणादि रूप ध्रुवप्रकृतियोंके बन्धक हैं वे दो प्रकार होते हैं—सातबन्धक, और असातबन्धक। इसका कारण यह है कि

१ तुलनाके लिये देखिये कर्मप्रकृति १-८६ गाथाकी आचार्य मलयगिरिविरचित संस्कृत टीका।

साता व असाता वेदनीयके बन्धके विना उक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव नहीं है। इनमें जो सातबन्धक हैं वे तीन प्रकार हैं—चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक। असातबन्धक भी तीन प्रकार ही हैं—द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक। इनमें साताके चतुःस्थानबन्धक सर्वविशुद्ध (अतिशय मंदकषायी), उनसे उसीके त्रिस्थानबन्धक संक्लिष्टतर होते हैं। असाताके द्विस्थानबन्धक सर्वविशुद्ध, इनसे त्रिस्थानबन्धक संक्लिष्टतर, और इनसे भी उसके चतुःस्थानबन्धक संक्लिष्टतर, होते हैं। साताके चतुःस्थानबन्धक जीव उक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको, त्रिस्थानबन्धक अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिको, तथा द्विस्थानबन्धक उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं। असाताके द्विस्थानबन्धक उपर्युक्त प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको, त्रिस्थानबन्धक अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिको, तथा चतुःस्थानबन्धक उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके साथ ही असाताकी भी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं। तत्पश्चात् साता व असाताके चतुःस्थानबन्धक व द्विस्थानबन्धक आदि जीवोंमें ज्ञानावरणकी जघन्य आदि स्थितियोंको बाँधनेवाले जीव कितने हैं, तथा ज्ञानोपयोग व दर्शनोपयोगसे बंधनेवाली स्थितियाँ कौन कौनसी हैं, इत्यादि बतलाकर छह यवोंके अधस्तन व उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

(२) **प्रकृतिसमुदाहार**में प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ये दो अनुयोगद्वार हैं इनमें प्रमाणानुगमके द्वारा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी स्थितिके बन्धके कारणभूत स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा तथा अल्पबहुत्वके द्वारा उक्त आठों कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

(३) **स्थितिसमुदाहार**में प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्र-मंदता ये तीन अनुयोगद्वार हैं। इनमें प्रगणनाके द्वारा ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंकी जघन्य स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति पर्यन्त पाये जानेवाले स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी संख्या और उनके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। अनुकृष्टिमें उपर्युक्त जघन्य आदि स्थितियोंमें इन्हीं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी समानता व असमानताका विचार किया गया है। तीव्र-मंदता अनुयोगद्वारमें जघन्य स्थिति-आदिके आधारसे स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके अनुभागकी तीव्रता व मंदताका विवेचन किया गया है। इस प्रकार द्वितीय चूलिकाके समाप्त हो जानेपर प्रस्तुत वेदनाकालविधान अनुयोगद्वार समाप्त होता है।

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	५ वेदनाक्षेत्रविधान	
१	वेदनाक्षेत्रविधानमें ज्ञातव्य पदमीमांसा आदि ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख	१
२	क्षेत्रके सम्बन्धमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	२
	(पदमीमांसा)	
३	पदमीमांसामें क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानावरणकी वेदना सम्बन्धी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि १३ पदोंका विचार	३
४	शेष कर्मोंके उक्त पदोंका विचार	११
	(स्वामित्व)	
५	स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश	"
६	जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	"
७	उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	१३
८	क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा	१४
९	क्षेत्रतः अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी अनेक विकल्पोंमें प्ररूपणा	२३
१०	अनुत्कृष्ट क्षेत्रविकल्पोंके स्वामियोंका प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा निरूपण।	२७
११	दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाकी प्ररूपणा ज्ञानावरणीयके समान बतलाकर वेदनीय कर्मकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका निरूपण।	२९
१२	वेदनीय कर्मकी अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा अनुत्कृष्ट क्षेत्रभेदोंके स्वामियोंका निरूपण	३०
१३	वेदनीय कर्मके ही समान आयु, नाम और गोत्रकी उत्कृष्ट क्षेत्रवेदना बतला कर क्षेत्रतः ज्ञानावरणीयकी जघन्य वेदनाके स्वामीका निरूपण	३३
१४	वेदनीय सम्बन्धी अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामियोंकी अनेक भेदोंमें प्ररूपणा करते हुए चौदह जीवसमासोंमे क्रमशः वृद्धिको प्राप्त होनेवाले अवगाहनाभेदोंकी प्ररूपणा	३६
	(अल्पबहुत्व)	
१५	अल्पबहुत्वप्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्य-उत्कृष्ट पदविषयक ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख।	५३
१६	जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंसम्बन्धी जघन्य क्षेत्रवेदनाकी परस्पर समानताका उल्लेख।	"
१७	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी क्षेत्रवेदनाका अल्पबहुत्व।	५४
१८	जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उक्त वेदनाका अल्पबहुत्व।	५५
१९	मूल सूत्रोंद्वारा सब जीवोंमें अवगाहनाभेदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा।	५६

६ वेदनाकालविधान

प्रथम चूलिका

द्वितीय चूलिका

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	वेदनानिक्षेपविधान	वेदनाक्षेत्रविधान
२	२२	वह आकाश है	वह क्षेत्र है
३	३०	पदणावायाभावादो	पदणोवायाभावादो
७	६	विसेसाभादो	विसेसाभावादो
७	१२	उक्कसा	उक्कस्सा
१०	११-१४	सुत्तत्था	सुत्तत्थो
१४	११	मो ण	मोत्तूण
२५	१	एवमगेगास-	एवमेगेगास-
२६	७	,,	,,
२७	१	वणा	परूवणा
३०	९	पुविल्ल	पुव्विल्ल
४८	१	वड्ढावेदव्वा	वड्ढावेदव्वा
९३	६	ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि लब्भंति	ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि ण लब्भंति
९३	२४	पंचेन्द्रियोंमें पाये	पंचेन्द्रियोंमें नहीं पाये
९६	१४	तदियसमओ	बिदियसमओ
९६	३१	तृतीय समय	द्वितीय समय
९७	१७	स्थितिसंतकर्म	स्थितिसत्कर्म
९७	२१	,,	,,
१००	१३	णापुणरुत्तट्ठाणं	ण पुणरुत्तट्ठाणं
१००	२६	समय देखा	समय कम देखा
१००	३१	अपुनरुक्त	पुनरुक्त
१००	३२	ताप्रतौ ' सेसफालीहिंतो ण पुणरुत्तट्ठाणं '	× × ×
१०४	१३	दुसमयूण-	समयूण–[२]
१०४	३२	दो समय	एक समय
१०४	३३	× × ×	२ अ-आ-काप्रतिषु ' दुसमयूण ' इति पाठः।
१०९	२३	शतपृथक्त्व तक	शतपृथक्त्व स्थिति तक
१२७	४	छेदभागहारो।	छेदभागहारो होदि।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	१९	अब इस छेदभागहारको कहते हैं।	इसका छेदभागहार होता है।
१३१	५	पुव्वत्तंसं	पुव्वुत्तंसं
१३९	५	असंखेज्जगुणाओ	संखेज्जगुणाओ[1]
१३९	१२	योगद्दारं[1] संगतो-	-योगद्दारं[2] संगतो-
१३९	१७	असंख्यातगुणी	संख्यातगुणी
१३९	२६	१ अ-आ-काप्रतिषु	१ प्रतिषु 'असंखेज्जगुणाओ' इति पाठः- २-अ-आ-का प्रतिषु
१४०	७	समत्ते	समत्तं
१४७	११	संखेज्जगुणो	असंखेज्जगुणो
१४७	२६	संख्यातगुणो	असंख्यातगुणो
१४७	३१	२ ताप्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'असंखेज्जगुणो'	२ ताप्रतौ 'संखेज्जगुणो'
१५०	१९	उसीसे उसीके...अधिक हैं।	× × ×
१५२	१५	स्थितिबन्धस्थान	स्थितिबन्धस्थानविशेष
१६२	५	तस्स	तस्य
१६४	१	[एवं सण्णिपंचिंदिय-]	[सण्णिपंचिंदिय-]
१६८	६	एवं	उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया। एवं
१६८	२१	हैं। इसी	हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इसी
१७७	३२	है स्व—स्थान	है—स्वस्थान
१९०	२७	चतुरिन्द्रिय	बादर एकेन्द्रिय
१९१	११	तेइंदियपज्जत्तयस्स	तेइंदिय अपज्जत्तयस्स[1]
१९१	२७	त्रीन्द्रिय पर्याप्तक	त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक
१९१	३३	× × ×	प्रतिषु 'तेइंदियपज्ज०' इति पाठः।
१९२	२५	पर्याप्तक	अपर्याप्तक
१९२	२८	आबाधास्थान	आबाधास्थानविशेष
१९७	६	बादरेइंदिय	बेइंदिय
१९७	२१	बादर एकेन्द्रिय	द्वीन्द्रिय
२०७	२३	संक्लेशस्थानोंकी	विशुद्धि परिणामोंकी
२१०	४	अपज्जयस्स	अपज्जत्तयस्स
२२०	२८	५१२	५१२/३
२२२	१५	कधं......असंखेज्जगुणत्तं	कधं......संखेज्जगुणत्तं
२२२	३०	असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२२	३१	१ अ-आ-काप्रतिषु ' संखेज्जागुणत्तं,	१ ताप्रतौ
२२७	२४	२५/३	७५/३
२२८	३१	आबाहा	अबाहा
२२९	६	असंखेज्जगुणो	असंखेज्जगुणो[1]
२२९	१३	अपज्जयस्स	अपज्जत्तयस्स
२३३	१७	एकेन्द्रियके	त्रींद्रियके
२३६	१८	असंख्यात	असंयत
२३६	२५	संज्ञी पंचेन्द्रिय	संज्ञी मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय
२४१	१४	क्षपित-गुणित-घोलमान	क्षपितघोलमान व गुणितघोलमान
२४५	२२	तीस	तेतीस
२५२	८	-मुहुत्तयाबाधं	-मुहुत्तमाबाधं
२६२	२४	है।	है { (१६×१२×४)×१÷(१६×१२)=४ }
२८०	६	कम्माणमाबाहाट्ठाणा	कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि
२८०	८	असंखेज्जगुणाणि	संखेज्जगुणाणि
२८०	२४	असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे
२८०	३२	१ मप्रतिपाठोऽयम्।... इति पाठः।	१ मप्रतौ ' असंखेज्जगुणाणि ' इति पाठः।
२८१	१	असंखेज्जगुणो	संखेज्जगुणो[1]
२८१	१७	असंख्यातगुणा	संख्यातगुणा
२८१	३३		१ प्रतिषु ' असंखेज्जगुणो ' इति पाठः।
२८६	९	असंखेज्जगुणो	संखेज्जगुणो[1]
२८६	२४	असंख्यातगुणा	संख्यातगुणा
२८६	३३	× × ×	१ अ-आ-काप्रतिषु ' असंखेज्जगुणो ' इति पाठः।
३०२	१०	विसेसाहिओ। मोहणीयस्स	विसेसाहिओ। [चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।] मोहणीयस्स
३०२	२७	है। मोहनीयका	है। [चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।] मोहनीयका
३०३	२६	समय तक	समय कम
३०५	१५	उत्पत्तिका	अनुत्पत्तिका
३०६	१९	घन्य	जघन्य
३०८	९	अणिभाग-	अणिओग-
द्वि० ३११	३३	कर्षः त्रिरधानगतः	कर्षः स त्रिस्थानगत :

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
टि० ३१४	२१	सर्वविशुद्धा रसं	सर्वविशुद्धा अन्तवस्ते परावर्तमानशुभ-प्रकृतीनां चतुःस्थानगतं रसं
टि० ३१५	२८	ते तास-	त तासां
३१५	३०	१, ८१	१, ९१
३२९	२६	$\frac{३१}{३२}^{९} \div ४$	$\frac{३१}{३२}^{९} \times ४$
३३२	८	पढमासु	अपढमासु[२]
३३२	२४	प्रथम	अप्रथम
३३२	३१	२ अणगारप्पाउग्गा	२ प्रतिषु ' पढमासु ' इति पाठः । ३ अणगारप्पाउग्गा
३३५	१३	असंखयातगुणे	संख्यातगुणे
३३५	२५	तेभ्योऽपि......३।	यह टिप्पण नं. १ का अंश है जो टिप्पण २ के अन्तर्गत छप गया है।
३३६	२१	देख	देव
३३६	२५	होना है।	अशुभ होना है।
३३८	११	अंतोकोडाकोडिआबाधूणा	अंतोकोडाकोडी आबाधूणा
टि० ३३९	३०	स्थितिर्ग्डायस्थिति	स्थितिर्डायस्थिति-
३४८	३	द्विदिं बंधंताण	द्विदिबंधट्ठाणाण
३४८	१७	शंका-नाम	किन्तु नाम
३४९	१८	संखयातगुणे	असंख्यातगुणे
३५२	८	कदो	कुदो
३५९	१५	रिज्जंति तं	रिज्जति । तं
३५९	१७	रूपेणु	रूपेषु
३६२	२१	अजघन्य	जघन्य
३६३	३	णिव्वग्गणकंदयं[१]	णिव्वग्गणकंदयं
३६३	६	चदियखंडं	तदियखंडं
३६७	३१	समुदहारे	समुदाहारे

———

वेयणखेत्तविहाणणिओगद्दारं

वेयणकालविहाणणिओगद्दारं

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स चउत्थे खंडे वेयणाए

वेदणाखेत्तविहाणाणिओगद्दारं

वेयणखेत्तविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

वेदणाणिक्खित्तल्लियाखेत्तं णिक्खिविदव्वं । किमट्ठं खेत्तणिक्खेवो कीरदे ? अवगदखेत्तट्ठाणपडिसेहं कादूण पयदखेत्तट्ठपरूवणट्ठं । उक्तं च —

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।
समयविणासणट्ठं तच्चत्थवहारणट्ठं च ॥ १ ॥

वेदनानिक्षेपविधान यह जो अनुयोगद्वार है उसमें ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं ॥ १ ॥

वेदनामें निक्षिप्त क्षेत्रका यहां निक्षेप करना चाहिये ।

शंका — क्षेत्रका निक्षेप किसलिये करते हे ?

समाधान— अप्रकृत क्षेत्रस्थानका प्रतिषेध करके प्रकृत क्षेत्रकी अर्थप्ररूपणा करनेके लिये क्षेत्रका निक्षेप करते हैं। कहा भी है —

अप्रकृतका निवारण करनेके लिये, प्रकृतकी प्ररूपणा करनेके लिये, संशयको नष्ट करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

तत्थ खेत्तं चउव्विहं णामखेत्तं ट्ठवणखेत्तं दव्वखेत्तं भावखेत्तं चेदि । तत्थ णाम-ट्ठवणखेत्ताणि सुगमाणि । दव्वखेत्तं दुविहमागम-णोआगमदव्वखेत्तभेएण । तत्थ आगम-दव्वखेत्तं णाम खेत्तपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो । णोआगमदव्वखेत्तं तिविहं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेदेण । तत्थ जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वखेत्ताणि सुगमाणि । तव्वदिरित्त[1]-णोआगमखेत्तमागासं । तं दुविहं लोगागासमलोगागासमिदि । तत्थ—लोक्यन्ते उपलभ्यन्ते यस्मिन् जीवादयः पदार्थाः स लोकस्तद्विपरीतस्त्वलोकः । कधमागासस्स खेत्तववएसो ? क्षीयन्ति निवसन्त्यस्मिन् जीवादय इति आकाशस्य क्षेत्रत्वोपपत्तेः । भावखेत्तं दुविहं आगम-णोआगम-भावखेत्तभेएण । तत्थ खेत्तपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावखेत्तं । सव्वदव्वाणमप्पप्पणो भावो णोआगमभावखेत्तं । कधं भावस्स खेत्तववएसो ? तत्थ सव्वदव्वावट्ठाणादो ।

एत्थ णोआगमदव्वखेत्तेण अहियारो । अट्ठविहकम्मदव्वस्स वेयणे त्ति सण्णा[2] । वेयणाए खेत्तं वेयणाखेत्तं, वेयणाखेत्तस्स विहाणं वेयणाखेत्तविहाणमिदि पंचमस्स अणिओगद्दारस्स गुणणामं । इदिसद्दो ववच्छेदफलो । तत्थ वेयणखेत्तविहाणे इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि

क्षेत्र चार प्रकार है— नामक्षेत्र, स्थापनाक्षेत्र, द्रव्यक्षेत्र और भावक्षेत्र । उनमें नामक्षेत्र और स्थापनाक्षेत्र सुगम हैं । द्रव्यक्षेत्र आगम और नोआगम द्रव्यक्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है । उनमें क्षेत्रप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगम-द्रव्यक्षेत्र कहलाता है । नोआगमद्रव्यक्षेत्र ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकार है । उनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यक्षेत्र सुगम हैं । तद्-व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यक्षेत्र आकाश है । वह दो प्रकार है – लोकाकाश और अलोकाकाश । इनमें जहां जीवादिक पदार्थ देखे जाते हैं या जाने जाते हैं वह लोक है । उससे विपरीत अलोक है ।

शंका— आकाशकी क्षेत्र संज्ञा कैसे है ?

समाधान— 'क्षीयन्ति अस्मिन्' अर्थात् जिसमें जीवादिक रहते हैं वह अकाश है, इस निरुक्तिके अनुसार अकाशको क्षेत्र कहना उचित ही है ।

भावक्षेत्र आगम और नोआगम भावक्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है । उनमें क्षेत्र-प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावक्षेत्र है । सब द्रव्योंका अपना अपना भाव नोआगमभावक्षेत्र कहलाता है ।

शंका— भावकी क्षेत्र संज्ञा कैसे हो सकती है ?

समाधान— उसमें सब द्रव्योंका अवस्थान होनेसे भावकी क्षेत्र संज्ञा बन जाती है ।

यहां नोआगमद्रव्यक्षेत्रका अधिकार है । आठ प्रकारके कर्मद्रव्यकी वेदना संज्ञा है । वेदनाका क्षेत्र वेदनाक्षेत्र, वेदनाक्षेत्रका विधान वेदनाक्षेत्रविधान । यह पांचवें अनुयोगद्वारका गुणनाम है । सूत्रमें स्थित 'इति' शब्द व्यवच्छेद करनेवाला है । उस वेदनाक्षेत्रविधानमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं ।

---

१ प्रतिषु 'तव्वदिरित्त वि-' ताप्रतौ 'तव्वदिरित्त [म] वि' इति पाठः । २ प्रतिषु '-दव्वस्स कम्मवेयणा त्ति' इति पाठः ।

हवंति। एत्थ अहियारा तिण्णि चेव किमट्ठं परूविज्जंति ? ण, अण्णेसिमेत्थ संभवाभावादो। कुदो ? [ण] संखा-ट्ठाण-जीवसमुदाहाराणमेत्थ संभवो, उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णभेद-भिण्णसामित्ताणिओगद्दारे एदेसिमंतब्भावादो। ण ओज-जुम्माणिओगद्दारस्स वि संभवो, तस्स पदमीमांसाए पवेसादो। ण गुणगाराणिओगद्दारस्स वि संभवो, तस्स अप्पाबहुए पवेसादो। तम्हा तिण्णि चेव अणिओगद्दाराणि होंति त्ति सिद्धं।

पदमीमांसा सामित्तं अप्पाबहुए त्ति ॥ २ ॥

पढमं चेव पदमीमांसा किमट्ठमुच्चदे ? ण, पदेसु अणवगएसु सामित्तप्पाबहुआणं परूवणोवायाभावादो[2]। तदणंतरं सामित्ताणिओगद्दारमेव किमट्ठं वुच्चदे ? ण, अणवगए पदप्पमाणे तदप्पाबहुगाणुववत्तीदो। तम्हा एसेव अहियारविण्णासक्कमो इच्छियव्वो, णिरवज्जत्तादो।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो किं उक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥

शंका— यहां केवल तीन ही अधिकारोंकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है।

समाधान— नहीं, क्योंकि, और दूसरे अधिकार यहां सम्भव नहीं हैं। कारण कि संख्या, स्थान और जीवसमुदाहार तो यहां सम्भव नहीं हैं, क्योंकि, इनका अन्तर्भाव उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य व अजघन्य भेदसे भिन्न स्वामित्वअनुयोगद्वारमें होता है। ओज-युग्मानुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका प्रवेश पदमीमांसामें है। गुणकार अनुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका प्रवेश अल्पबहुत्वमें है। इस कारण तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह सिद्ध है।

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार यहां ज्ञातव्य हैं ॥ २ ॥

शंका— पदमीमांसाको पहिले ही किसलिये कहा जाता है ?

समाधान— चूंकि पदोंका ज्ञान न होनेपर स्वामित्व और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की नहीं जा सकती, अत एव पहिले पदमीमांसाकी प्ररूपणा की जा रही है।

शंका— उसके पश्चात् स्वामित्व अनुयोगद्वारको ही किसलिये कहते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पदप्रमाणका ज्ञान न होनेपर उनका अल्पबहुत्व बन नहीं सकता। इस कारण निर्दोष होनेसे उक्त अधिकारोंके इसी विन्यासक्रमको स्वीकार करना चाहिये।

पदमीमांसामें— ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

---

१ ताम्रतौ 'पदे [से] सु' इति पाठः। २ प्रतिषु 'पदणाबायामावादो' इति पाठः।

एत्थ णाणावरणग्गहणेण सेसकम्माणं पडिसेहो कदो । दव्व-काल-भावादिपडिसेहट्ठं खेत्तणिद्देसो कदो । एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ एदेण सूचिदाओ । तम्हा णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा, किमणुक्कस्सा, किं जहण्णा, किमजहण्णा, किं सादिया, किमणादिया, किं धुवा, किमद्धुवा, किमोजा, किं जुम्मा, किमोमा, किं विसिट्ठा, किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति वत्तव्वं । एवं णाणावरणीयवेयणाए विसेसाभावेण सामण्णरूवाए सामण्णं[1] विसेसाविणाभावि त्ति कट्टु तेरस पुच्छाओ परूविदाओ । एदेणेव सुत्तेण सूचिदाओ अण्णाओ तेरसपदविसयपुच्छाओ वत्तव्वाओ । तं जहा — उक्कस्सा णाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा, किं जहण्णा, किमजहण्णा, किं सादिया, किमणादिया, किं धुवा, किमद्धुवा, किमोजा, किं जुम्मा, किमोमा, किं विसिट्ठा, किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति बारस पुच्छाओ उक्कस्सपदस्स हवंति । एवं सेसपदाणं पि बारस पुच्छाओ पादेक्कं कायव्वाओ । एत्थ सव्वपुच्छासमासो एगूण-सत्तरिसदमेत्तो | १६९ | । तम्हा एदम्हि देसामासियसुत्ते अण्णाणि तेरस सुत्ताणि दट्ठव्वाणि त्ति ।

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥४॥

एदं पि[2] देसामासियसुत्तं । तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि । देसामासियत्तादो चेव सेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतब्भावो वत्तव्वो । तत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा —

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण करके शेष कर्मोंका प्रतिषेध किया गया है। द्रव्य, काल और भाव आदिका प्रतिषेध करनेके लिये क्षेत्रका निर्देश किया है। यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा अन्य नौ पृच्छाएं सूचित की गई हैं। इस कारण ज्ञानावरणकी वेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है, ऐसा कहना चाहिये। इस प्रकार सामान्य चूंकि विशेषका अविनाभावी है अतः विशेषका अभाव होनेसे सामान्य स्वरूप ज्ञानावरणीयवेदनाके विषयमें इन तेरह पृच्छाओंकी प्ररूपणा की गई है। इसी सूत्रसे सूचित अन्य तेरह पद विषयक पृच्छाओंको कहना चाहिये। यथा — उत्कृष्ट ज्ञानावरणवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है, ये बारह पृच्छाएं उत्कृष्ट पदके विषयमें होती हैं। इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदके विषयमें बारह पृच्छाएं करना चाहिये। यहां सब पृच्छाओंका जोड़ एक सौ उनत्तर (१६९) मात्र होता है। इसी कारण इस देशामर्शक सूत्रमें अन्य तेरह सूत्रोंको देखना चाहिये।

उक्त वेदना उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य भी है, और अजघन्य भी है ॥४॥

यह भी देशामर्शक सूत्र है। इसलिये यहां शेष नौ पदोंको कहना चाहिये। देशामर्शक होनेसे ही इस सूत्रमें शेष तेरह सूत्रोंका अन्तर्भाव कहना चाहिये। उनमें पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है — ज्ञानावरणीयकी वेदना

१ प्रतिषु 'सामण्ण' इति पाठः। २ प्रतिषु 'एदं वि' इति पाठः।

णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो सिया उक्कसा, अट्ठरज्जूण मुक्कमारणंतियमहामच्छम्मि उक्कस्सखेत्तुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा, अण्णत्थ अणुक्कस्सखेत्तदंसणादो । सिया जहण्णा, तिसमयआहारय-तिसमयतब्भवत्थसुहुमणिगोदम्हि जहण्णखेत्तुवलंभादो । सिया अजहण्णा, अण्णत्थ अजहण्णखेत्तदंसणादो । सिया सादिया, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे सव्वखेत्ताणं सादित्तुवलंभादो । सिया अणादियाँ, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अणादित्तदंसणादो । सिया धुवा, दव्वट्ठियणयं पडुच्च णाणावरणीयखेत्तस्स सव्वलोगस्स धुवत्तुवलंभादो । सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियं पडुच्च अद्धुवत्तदंसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि खेत्तविसेसे कलितेजोजसंखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया जुम्मा, कत्थ वि खेत्तविसेसे कद-बादरजुम्माणं संखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया ओमा, कत्थ वि खेत्तविसेसे परिहाणिदंसणादो । सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढिदंसणादो । सिया णोम-णोविसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढि-हाणीहि विणा खेत्तस्स अवट्ठाणदंसणादो | १३ | ।

संपहि बिदियसुत्तत्थो उच्चदे । तं जहा— उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णाँ अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खत्तादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमासेसखेत्तवियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो । सिया सादिया,

क्षेत्रकी अपेक्षा कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, आठ राजुओंमें मारणान्तिक समुद्घातको करनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्र पाया जाता है । कथंचित् वह अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, महामत्स्यको छोड़कर अन्यत्र अनुत्कृष्ट क्षेत्र देखा जाता है । कथंचित् वह जघन्य है, क्योंकि, त्रिसमयवर्ती आहारक व त्रिसमयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म निगोद जीवके जघन्य क्षेत्र पाया जाता है । कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, उक्त सूक्ष्म निगोद जीवको छोड़कर अन्यत्र अजघन्य क्षेत्र देखा जाता है । कथंचित् वह सादिक है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका आश्रय करनेपर सब क्षेत्रोंके सादिता पायी जाती है । कथंचित् वह अनादिक है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करनेपर अनादिपना देखा जाता है । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मका क्षेत्र जो सब लोक है वह ध्रुव देखा जाता है । कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा उक्त क्षेत्रके अध्रुवपना भी देखा जाता है । कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कलिओज और तेजोज संख्याविशेष पायी जाती हैं । कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कृतयुग्म और बादरयुग्म ये विशेष संख्यायें पायी जाती हैं । कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें हानि देखी जाती है । कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धि देखी जाती है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धि और हानिके विना क्षेत्रका अवस्थान देखा जाता है (१३) ।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना जघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं है, क्योंकि, वे उसके प्रतिपक्षभूत हैं । कथंचित् वह अजघन्य भी है, क्योंकि, जघन्यसे ऊपरके समस्त विकल्पोंमें रहनेवाले अजघन्य पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्भव है । कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट

१ प्रतिषु 'अद्ध' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणादि' इति पाठः।
३ अ-काप्रत्योः 'जहण्णा अजहण्णा', ताप्रतौ 'जहण्णाजहण्णा' इति पाठः।

अणुक्कस्सादो उक्कस्सखेत्तुप्पत्तीए। सिया अद्धुवा, उक्कस्सपदस्स सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। सिया कदजुम्मा, उक्कस्सखेत्तम्मि बादरजुम्म-कलि-तेजोजसंखाविसेसाणमणुवलंभादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, वड्ढिदे हाइदे च उक्कस्सत्तविरोहादो। एवं उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पंचपदप्पिया[1] |५|।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण सेसहेट्ठिमासेसवियप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स [वि] संभवादो। सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स अजहण्णाविणाभावित्तादो। सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पत्तीदो अणुक्कस्सादो[3] वि अणुक्कस्सविसेसुप्पत्तिदंसणादो च। अणादिया ण होदि, अणुक्कस्सपदविसेसस्स विवक्खियत्तादो। अणुक्कस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्कस्सादो अणुक्कस्सपदपदिदं पडि सादित्तदंसणादो। ण च णिच्चणिगोदेसु अणादित्तं लब्भदि, तत्थ अणुक्कस्सपदाणं पल्लट्टणेण सादित्तुवलंभादो। सिया अद्धुवा, अणुक्कस्सेक्कपदविसेसस्स सव्वदा अवट्ठाणाभावादो। सामण्णे अस्सिदे वि धुवत्तं णत्थि, अणुक्कस्सादो उक्कस्सपदं पडिवज्जमाणजीवदंसणादो। सिया ओजा, कत्थ वि पदविसेसे अवट्ठिददुविहविसमसंखुवलंभादो। सिया जुम्मा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविहसमसंखदंसणादो। सिया ओमा, कत्थ

क्षेत्रसे उत्कृष्ट क्षेत्रकी उत्पत्ति है। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट पद सर्वदा नहीं रहता। कथंचित् वह कृतयुग्म भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट क्षेत्रमें बादरयुग्म, कलिओज और तेजोज रूप विशेष संख्यायें नहीं पायी जातीं। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है क्योंकि, वृद्धि और हानिके होनेपर उत्कृष्टपनेका विरोध है। इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पांच (५) पद स्वरूप है।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्टको छोड़कर शेष सब नीचेके विकल्प रूप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है। कथंचित् वह अजघन्य भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट अजघन्यका अविनाभावी है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुत्कृष्ट पदकी उत्पत्ति है, तथा अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है। वह अनादिक नहीं है, क्योंकि, यहां अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा है। अनुत्कृष्ट सामान्यकी विवक्षा करनेपर भी वह अनादि नहीं हो सकती, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्ट पदमें गिरनेकी अपेक्षा सादिपना देखा जाता है। यदि कहा जाय कि नित्य निगोद जीवोंमें उसका अनादिपना पाया जाता है, सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि, उनमें भी अनुत्कृष्ट पदोंके पलटनेसे सादिपना पाया जाता है। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, सर्वदा एक अनुत्कृष्ट पदविशेष रह नहीं सकता। सामान्यका आश्रय करनेपर भी ध्रुवपना सम्भव नहीं है, क्योंकि, अनुत्कृष्टसे उत्कृष्ट पदको प्राप्त होनेवाले जीव देखे जाते हैं। कथंचित् वह ओज भी है, क्योंकि किसी पदविशेषमें अवस्थित दोनों प्रकारकी विषम संख्या पायी जाती है। कथंचित् वह युग्म भी है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी सम संख्या देखी जाती है। कथंचित् वह

१ प्रतिषु 'संका' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'पंचपदंसिया' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अणुक्क- [स्सा] दो' इति पाठः।

वि हाणीदो' समुप्पण्णअणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, अणुक्कस्स-जहण्णम्मि अणुक्कस्सपदविसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं णाणावरणाणुक्कस्सवेयणा णवपदप्पिया |९|। एवं तदियसुत्तपरूवणा कदा।

संपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा— जहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण विसेसाभावादो। सिया सादिया, अजहण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए। सिया अद्धुवा, सासदभावेण' अवट्ठाणाभावादो। अणादिय-धुवपदाणि णत्थि, जहण्णक्खेत्तविसेसम्मि अणादिय-धुवत्ताणुवलंभादो। सिया जुम्मा, चदुहि अवहिरिज्जमाणे णिरग्गत्तदंसणादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, तत्थ वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं जहण्णक्खेत्तवेयणा पंचपयारा सरूवेण छप्पयारा वा |५|। एवं चउत्थसुत्तपरूवणा कदा।

संपहि पंचमसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा— अजहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस्स ओघुक्कस्सादो पुधत्ताणुवलंभादो। सिया अणुक्कस्सा, तदविणाभावादो। सिया सादिया, पल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाणमवट्ठाणाभावादो। सिया अद्धुवा। कारणं सुगमं। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा।

ओम भी है, क्योंकि, कहींपर हानिसे भी उत्पन्न अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। कथंचित् वह विशिष्ट भी है, क्योंकि, कहींपर वृद्धिसे अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्यमें अथवा अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा करनेपर वृद्धि और हानि नहीं पायी जाती है। इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्ट वेदना नौ (९) पदात्मक है। इस प्रकार तीसरे सूत्रकी अर्थप्ररूपणा की गई है।

अब चतुर्थ सूत्रकी अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—जघन्य ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्य ओघजघन्यसे भिन्न नहीं है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, उसका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता। अनादि और ध्रुव पद उसके नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य क्षेत्रविशेषमें अनादि एवं ध्रुवपना नहीं पाया जाता। कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, उसे चारसे अपहृत करनेपर शेष कुछ नहीं रहता। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृद्धि और हानिका अभाव है। इस प्रकार जघन्य क्षेत्रवेदना पांच (५) प्रकार अथवा अपने रूपके साथ छह प्रकार है। इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की है।

अब पांचवें सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—अजघन्य ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कृष्ट ओघउत्कृष्टसे पृथक् नहीं पाया जाता। कथंचित् वह अनुत्कृष्ट भी है, क्योंकि, वह उसका अविनाभावी है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, पलटनेके विना अजघन्य पदविशेषोंका अवस्थान नहीं है। कथंचित् वह अध्रुव भी है। इसका कारण सुगम है। कथंचित् वह ओज भी है, युग्म भी है, ओम भी है, और विशिष्ट भी है। इसका कारण सुगम

१ ताप्रतौ ' कथं ? हाणीदो ' इति पाठः। २ ताप्रतौ ' सासदभावेण ' इति पाठः।

जुम्मं । सिया णोम-णोविसिट्ठा, णिरुद्धपदविसेसत्तादो । एवमजहण्णा णवभंगा दसभंगा वा | ९ | । एसो पंचमसुत्तत्थो ।

सादिया णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अद्भुवा । ण [अणादिया] द्भुवा, सादियस्स अणादिय-धुवत्तविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं सादिय-वेयणाए दस भंगा एक्कारस भंगा वा | १० | । एसो छट्ठसुत्तत्थो ।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । कधमणादियवेयणाए सादित्तं ? ण, वेयणाए सामण्णाविक्खाए अणादियम्मि उक्कस्सादिपदावेक्खाए सादियत्तविरोहाभावादो । सिया धुवा वेयणा, सामण्णस्स विणासाभावादो[1] । सिया अद्भुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो । अणादियत्तम्मि सामण्णविवक्खाए समुप्पण्णम्मि कधं पदविसेससंभवो ? ण, सगंतोक्खित्त-असेसविसेसम्मि सामण्णम्मि अप्पिदे तदविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया

है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है, क्योंकि, यहां पदविशेषकी विवक्षा है । इस प्रकार अजघन्य वेदनाके नौ (९) या दस भंग होते हैं । यह पांचवें सूत्रका अर्थ है ।

सादिकज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, और कथंचित् अध्रुव भी है । वह [अनादि व] ध्रुव नहीं है, क्योंकि, सादि पदके अनादि व ध्रुव होनेका विरोध है । कथंचित् वह ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार सादि वेदनाके दस (१०) भंग अथवा ग्यारह भंग होते हैं । यह छठे सूत्रका अर्थ है ।

अनादिज्ञानावरणवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य और कथंचित् सादिक भी है ।

शंका—अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सामान्यकी अपेक्षा वेदनाके अनादि होनेपर भी उत्कृष्ट आदि पदविशेषोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

कथंचित् वह वेदना ध्रुव है, क्योंकि, सामान्यका कभी विनाश नहीं होता । कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है ।

शंका—सामान्य विवक्षासे अनादित्वके होनेपर पदविशेषकी सम्भावना ही कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी विवक्षा होनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

कथंचित् वह ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और

1 ताप्रतौ ' वि णासामावादो ' इति पाठः ।

ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवमणादिया वेयणा बारसभंगा तेरसभंगा वा |१२|। एसो सत्तमसुत्तत्थो।

धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोसिट्ठा। एवं धुवपदस्स बारस भंगा तेरस भंगा वा |१२|। एसो अट्ठमसुत्तत्थो।

अद्धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम णोविसिट्ठा। एवमद्धुवपदस्स दस भंगा एक्कारस भंगा वा |१०|। एसो णवमसुत्तत्थो।

ओजणाणावरणीयवेयणा उक्कस्स-जहण्णपदेसु णत्थि, कदजुम्मे तेसिमवट्ठाणादो। तदो सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। सिया अणादिया। कुदो? सामण्णविवक्खादो। सिया धुवा, सामण्णविवक्खादो चेव। सिया अद्धुवा, विसेसविवक्खाए। दव्वविहाणे अणादिय-धुवत्तं किण्ण परूविदं? ण, तत्थ सामण्ण-

---

कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार अनादिवेदनाके बारह (१२) भंग अथवा तेरह भंग होते हैं। यह सातवें सूत्रका अर्थ है।

ध्रुवज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार ध्रुव पदके बारह (१२) अथवा तेरह भंग होते हैं। यह आठवें सूत्रका अर्थ है।

अध्रुवज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार अध्रुव पदके दस (१०) अथवा ग्यारह भंग होते हैं। यह नौवें सूत्रका अर्थ है।

ओजज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट और जघन्य पदोंमें नहीं होती, क्योंकि, उनका अवस्थान कृतयुग्म राशिमें है। इसलिये वह कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सादि है। वह कथंचित् अनादि भी है, क्योंकि, सामान्यकी विवक्षा है। कथंचित् वह ध्रुव भी है, क्योंकि, उसी सामान्यकी ही विवक्षा है। कथंचित् वह विशेषकी विवक्षासे अध्रुव भी है।

शंका—द्रव्यविधानमें अनादि और ध्रुव पदोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है?

विवक्खाभावादो। सामण्णविवक्खाए पुण संतीए तत्थ वि एदे दो भंगा वत्तव्वा। सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवमोजस्स णव भंगा दस भंगा वा |९|। एसो दसमसुत्तत्थो।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं जुम्मस्स एक्कारस बारस भंगा वा |११|। एसो एक्कारसमसुत्तत्थो।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। सिया अणादिया, ओमत्तसामण्णविवक्खाए। सिया धुवा तेणेव कारणेण। सिया अद्धुवा। सामण्णविवक्खाए अभावेण दव्वविहाणे ओमस्स अणादिय-धुवत्तं ण परूविदं। सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवमोमपदस्स अट्ठ णव भंगा वा |८|। एसो बारसमसुत्तत्था।

विसिट्ठणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवं विसिट्ठ-पदस्स अट्ठ भंगा णव भंगा वा |८|। एसो तेरसमसुत्तत्था।

समाधान — नहीं, क्योंकि, वहां सामान्यकी विवक्षाका अभाव है। यदि सामान्यकी विवक्षा अभीष्ट हो तो वहां भी इन दो पदोंको कहना चाहिये।

वह कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार ओज पदके नौ (९) भंग अथवा दस भंग होते हैं। यह दसवें सूत्रका अर्थ है।

युग्मज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार युग्म पदके ग्यारह (११) अथवा बारह भंग होते हैं। यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है।

ओमज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सादि भी है। वह कथंचित् अनादि भी है, क्योंकि, ओमत्व सामान्यकी विवक्षा है। इसी कारणसे वह कथंचित् ध्रुव भी है। कथंचित् वह अध्रुव भी है। सामान्यकी विवक्षा न होनेसे द्रव्यविधानमें ओमके अनादि और ध्रुव पद नहीं कहे गये हैं। वह कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है। इस प्रकार ओम पदके आठ (८) अथवा नौ भंग होते हैं। यह बारहवें सूत्रका अर्थ है।

विशिष्टज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है। इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८) अथवा नौ भंग होते हैं। यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है।

---

१ ताप्रतौ 'एक्कारस' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'सिया अद्धुवा सामण्णविवक्खाए अभावेण।' इति पाठः।

णोम-णोविसिट्ठा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। सिया अणादिया। कुदो ? णोम-णोविसिट्ठस-विवक्खाए। सिया धुवा तेणेव कारणेण। सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवं दस भंगा एक्कारस भंगा वा [१०]। एसो चोद्दसमसुत्तत्थो।

एदेसिं भंगाणमंकविण्णासो — | १३ | ५ | ९ | ५ | ९ | १० | १२ | १२ | १० | ९ | ११ | ८[1] | ८ | १० | ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ ५ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सेससत्तण्णं कम्माणं पदमीमांसा कायव्वा। एवमंतोखित्तोजाणियोगद्दारपदमीमांसा[2] समत्ता।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहण्णं चउव्विहं णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावजहण्णमिदि। णामजहण्णं ट्ठवणा-जहण्णं च सुगमं। दव्वजहण्णं दुविहं आगमदव्वजहण्णं णोआगमदव्वजहण्णं चेदि। तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वजहण्णं। णोआगमदव्वजहण्णं तिविहं, जाणुग-

नोम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सादि भी है। कथंचित् वह अनादि भी है, क्योंकि, नोम-नोविशिष्टत्व सामान्यकी विवक्षा है। इसी कारणसे वह कथंचित् ध्रुव भी है। वह कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है। इस प्रकार नोम-नोविशिष्ट पदके दस (१०) भंग अथवा ग्यारह भंग होते हैं। यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है।

इन भंगोंका अंकविन्यास इस प्रकार है— १३ + ५ + ९ + ५ + ९ + १० + १२ + १२ + १० + ९ + ११ + ८ + ८ + १० = १३१।

इसी प्रकार सात कर्मोंकी पदमीमांसा सम्बन्धी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ ५ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी पदमीमांसा की है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये। इस प्रकार ओजानुयोगद्वारगर्भित पदमीमांसा समाप्त हुई।

स्वामित्व दो प्रकार है— जघन्य पदरूप और उत्कृष्ट पदरूप ॥ ६ ॥

उनमें जघन्य पद चार प्रकार है—नामजघन्य, स्थापनाजघन्य, द्रव्यजघन्य और भावजघन्य। इनमें नामजघन्य और स्थापनाजघन्य सुगम है। द्रव्यजघन्य दो प्रकार है—आगमद्रव्यजघन्य और नोआगमद्रव्यजघन्य। इनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यजघन्य कहा जाता है। नोआगमद्रव्यजघन्य

१ ताप्रतौ १० | १२ | १० | ९ | १० | ८ | इति पाठः। २ प्रतिषु 'एवमंतोखेत्तो –' इति पाठः।

सरीर-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहण्णभेदेण । जाणुगसरीरं भवियं गदं । तव्वदिरित्तं णोआगमदव्वजहण्णं दुविहं– ओघजहण्णमादेसेण जहण्णं चेदि । तत्थ ओघजहण्णं चउव्विहं — दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वजहण्णमेगो परमाणू । खेत्तजहण्णं दुविहं कम्म-णोकम्मखेत्तजहण्णभेदेण । तत्थ सुहुमणिगोदस्स जहण्णिया ओगाहणा कम्मखेत्तजहण्णं । णोकम्मखेत्तजहण्णमेगो आगासपदेसो । कालजहण्ण-मेगो समओ । भावजहण्णं परमाणुम्हि णिद्धत्तादिगुणो । आदेसजहण्णं पि दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेहि चउव्विहं । तत्थ दव्वदो आदेसजहण्णं उच्चदे । तं जहा — तिपदेसियं खंधं दट्ठूण दुपदेसियखंधो आदेसदो दव्वजहण्णं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिपदेसोगाढदव्वं दट्ठूण दुपदेसोगाढदव्वं खेत्तदो आदेसजहण्णं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिसमयपरिणदं दट्ठूण दुसमयपरिणदं दव्वमादेसदो कालजहण्णं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिगुणपरिणदं दव्वं दट्ठूण दुगुणपरिणदं दव्वं भावदो आदेसजहण्णं ।

भावजहण्णं दुविहं आगम-णोआगमभावजहण्णभेदेण । तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावजहण्णं । सुहुमणिगोदजीवलद्धिअपज्जत्तयस्स जं सव्वजहण्णणाणं तं

तीन प्रकार है– ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी अवगत हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य दो प्रकार है— ओघजघन्य और आदेशजघन्य। इनमें ओघजघन्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। उनमें द्रव्यजघन्य एक परमाणु है। क्षेत्रजघन्य कर्मक्षेत्रजघन्य और नोकर्मक्षेत्रजघन्यके भेदसे दो प्रकार है। उनमें सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना कर्मक्षेत्रजघन्य है। नोकर्मक्षेत्रजघन्य एक आकाशप्रदेश है। एक समय कालजघन्य है। परमाणुमें रहनेवाला स्निग्धत्व आदि गुण भावजघन्य है।

आदेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके भेदसे चार प्रकार है। उनमें द्रव्यसे आदेशजघन्यको बतलाते हैं। वह इस प्रकार है— तीन प्रदेशवाले स्कन्धको देखकर दो प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशसे द्रव्यजघन्य है। इसी प्रकार शेष स्कन्धोंमें (चार प्रदेशवालेकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला, पांच प्रदेशवालेकी अपेक्षा चार प्रदेशवाला स्कन्ध इत्यादि) भी ले जाना चाहिये। तीन प्रदेशोंको अवगाहनकरनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा दो प्रदेशोंको अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रकी अपेक्षा आदेशजघन्य है। इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन समय परिणत द्रव्यको देखकर दो समय परिणत द्रव्य आदेशसे कालजघन्य है। इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन गुण परिणत द्रव्यको देखकर दो गुण परिणत द्रव्य भावसे आदेशजघन्य है।

भावजघन्य आगमभावजघन्य और नोआगमभावजघन्यके भेदसे दो प्रकार है। उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघन्य है। सूक्ष्म निगोद जीव लब्ध्यपर्याप्तकका जो सबसे जघन्य ज्ञान है वह नोआगमभावजघन्य है।

---

१ प्रतिषु 'णिद्धत्तादिगुणो' इति पाठः।

णोआगमभावजहण्णं । एत्थ ओघजहण्णखेत्तेण पयदं, णाणावरणीयखेत्तेसु सव्वजहण्णखेत्तगहणादो । सव्वजहण्णखेत्तमेगो आगासपदेसो त्ति एत्थ ण घेत्तव्वं, णाणावरणीयखेत्तेसु तदभावादो ।

उक्कस्सं चउव्विहं णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावुक्कस्सभेएण । तत्थ णाम-ट्ठवणुक्कस्साणि सुगमाणि । दव्वुक्कस्सं दुविहं आगम-णोआगमदव्वुक्कस्सभेएण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो आगमदव्वुक्कस्सं । णोआगमदव्वुक्कस्सं तिविहं जाणुगसरीर-भवियतव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सभेदेण । जाणुगशरीर-भवियणोआगमदव्वुक्कस्साणि सुगमाणि । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सं दुविहं— ओघुक्कस्समादेसुक्कस्सं चेदि । तत्थ ओघुक्कस्सं चउविहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो उक्कस्सं महाखंधो । खेत्तुक्कस्सं दुविहं — कम्मक्खेत्तं णोकम्मक्खेत्तमिदि । कम्मखेत्तुक्कस्सं लोगागासं । णोकम्मक्खेत्तुक्कस्सं आगासदव्वं । कालदो उक्कस्समणंता लोगा । भावदो उक्कस्सं सव्वुक्कस्सवण्ण-गंध-रस-पासा । आदेसुक्कस्सं पि चउव्विहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो एगपरमाणुं दट्ठूण दुपदेसियक्खंधो आदेसुक्कस्सं । दुपदेसियखंधं दट्ठूण तिपदेसियक्खंधो वि आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । खेत्तदो एयक्खेत्तं दट्ठूण

यहां ओघजघन्य क्षेत्र प्रकृत है, क्योंकि, ज्ञानावरणीयके क्षेत्रोंमें सर्वजघन्य क्षेत्रका ग्रहण है । यहां सर्वजघन्य क्षेत्ररूप एक आकाशप्रदेशको नहीं लेना चाहिये, क्योंकि, ज्ञानावरणीयके क्षेत्रोंमें उसका (सर्वजघन्य क्षेत्रका) अभाव है ।

उत्कृष्ट नामउत्कृष्ट, स्थापनाउत्कृष्ट, द्रव्यउत्कृष्ट और भावउत्कृष्टके भेदसे चार प्रकार है । उनमें नामउत्कृष्ट और स्थापनाउत्कृष्ट सुगम हैं । द्रव्यउत्कृष्ट आगमद्रव्यउत्कृष्ट और नोआगमद्रव्यउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यउत्कृष्ट है । नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकार है । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट दो प्रकार है— ओघउत्कृष्ट और आदेशउत्कृष्ट । इनमें ओघउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें द्रव्यसे उत्कृष्ट महास्कन्ध है । क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट दो प्रकार है— कर्मक्षेत्र और नोकर्मक्षेत्र । लोकाकाश कर्मक्षेत्रउत्कृष्ट है । आकाश द्रव्य नोकर्मक्षेत्रउत्कृष्ट है । अनन्त लोक कालसे उत्कृष्ट हैं । भावसे उत्कृष्ट सर्वोत्कृष्ट वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं ।

आदेशउत्कृष्ट भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । इनमें एक परमाणुको देखकर दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यसे आदेशउत्कृष्ट है । दो प्रदेशवाले स्कन्धको देखकर तीन प्रदेशवाला स्कन्ध भी आदेश उत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष स्कन्धोंमें भी ले जाना चाहिये । क्षेत्रकी अपेक्षा एक क्षेत्रप्रदेशको देखकर दो क्षेत्रप्रदेश

दोक्खेत्तपदेसा आदेसदो उक्कस्सं खेत्तं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । कालदो एगसमयं दट्ठूण दोसमया आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । भावदो एगगुणजुत्तं दट्ठूण दुगुणजुत्तं दव्वमादेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । भावुक्कस्सं दुविहं— आगम-णोआगमभावुक्कस्स-भेदेण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावुक्कस्सं । णोआगमभावुक्कस्सं केवलणाणं । एत्थ ओघखेत्तुक्कस्सेण अहियारो, अप्पिदकम्मखेत्तेसु उक्कस्सखेत्तग्गहणादो । ओघुक्कस्समागासदव्वं, तस्स गहणं किण्ण कदं ? ण, कम्मक्खेत्तेसु तदभावादो । एगं सामित्तं जहण्णपदे, अण्णेगमुक्कस्सपदे, एवं दुविहं चेव सामित्तं होदि; अण्णस्सासंभवादो ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स ? ॥ ७ ॥

जहण्णपदपडिसेहट्ठं उक्कस्सपदणिद्देसो कदो । णाणावरणग्गहणं सेसकम्मपडिसेहफलं । खेत्तग्गहणं दव्वादिपडिसेहफलं । पुव्वाणुपुव्विं मो त्तूण पच्छाणुपुव्वीए उक्कस्सखेत्तस्स परूवणा किमट्ठं कीरदे ? ण, महल्लपरिवाडीए परूवणट्ठं कीरदे ।

आदेशकी अपेक्षा उत्कृष्ट क्षेत्र हैं । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । कालकी अपेक्षा एक समयको देखकर दो समय आदेशउत्कृष्ट हैं । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । भावकी अपेक्षा एक गुण युक्त द्रव्यको देखकर दो गुण युक्त द्रव्य आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगमभाव-उत्कृष्ट केवलज्ञान है । यहां ओघक्षेत्रउत्कृष्टका अधिकार है, क्योंकि, विवक्षित कर्मक्षेत्रोंमें उत्कृष्ट क्षेत्रका ग्रहण किया गया है ।

शंका— ओघउत्कृष्ट आकाश द्रव्य है, उसका ग्रहण क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कर्मक्षेत्रोंमें आकाशद्रव्यका अभाव है ।

एक स्वामित्व जघन्य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकारसे दो प्रकारका ही स्वामित्व है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ७ ॥

जघन्य पदके प्रतिषेधके लिये सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश किया है । ज्ञानावरणका ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करता है । क्षेत्र पदके ग्रहणका फल द्रव्य आदिका प्रतिषेध करना है ।

शंका— पूर्वानुपूर्वीको छोड़कर पश्चादानुपूर्वीसे उत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे अच्छिदो ॥ ८ ॥

जो मच्छो जोयणसहस्सओ त्ति एदेण सुत्तवयणेणंगुलस्स असंखेज्जदिभागमादिं कादूण जा उक्कस्सेण पदेसूणजोयणसहस्स त्ति आयामेण जे ट्ठिदा मच्छा तेसिं पडिसेहो कदो। उस्सेह-विक्खंभेहि महामच्छसरिसलद्धमच्छेसु गहिदेसु वि ण कोच्छि दोसो अत्थि, तदो तेसिं गहणं किण्ण कीरदे ? ण एस दोसो, महामच्छायाम-विक्खंभुस्सेहेसु अणवगएसु लद्धमच्छायामविक्खंभुस्सेहाणं अवगमोवायाभावादो। ण महामच्छायामो अण्णदो अवगम्मदे, सुत्तभूदस्स एदम्हादो जेट्ठस्स अण्णस्सासंभवादो। महामच्छस्स आयामो जोयणसहस्सं १०००। एदस्स विक्खंभुस्सेहा केत्तिया होंति त्ति उत्ते, उच्चदे— एसो महामच्छो पंचजोयणसदविक्खंभो ५०० पंचासुत्तरबीसदुस्सेहो २५०। सुत्तेण विणा कधमेदं णव्वदे ?

समाधान— नहीं, महान् परिपाटीसे प्ररूपणा करनेके लिये पश्चादानुपूर्वीसे प्ररूपणा की जा रही है। (अर्थात् उद्देश्यके अनुसार यद्यपि पहिले जघन्य पदकी प्ररूपणा करना चाहिये थी, तथापि विस्तृत होनेसे पहिले उत्कृष्ट पदकी प्ररूपणा की जा रही है।)

जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित है ॥ ८ ॥

'जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला है' इस सूत्रांशसे, जो मत्स्य अंगुलके असंख्यातवें भागको आदि लेकर उत्कर्षसे एक प्रदेश कम हजार योजन प्रमाण तक आयामसे स्थित हैं, उनका प्रतिषेध किया गया है।

शंका— उत्सेध और विष्कम्भकी अपेक्षा महामत्स्यके सदृश पाये जानेवाले मत्स्योंका ग्रहण करनेपर भी कोई दोष नहीं है, अतः उनका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जब तक महामत्स्यके आयाम, विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान न हो जावे तब तक प्राप्त मत्स्योंके आयाम, विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान होना किसी प्रकारसे सम्भव नहीं है। महामत्स्यका आयाम किसी अन्य सूत्रसे नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस सूत्रसे ज्येष्ठ प्राचीन सूत्रभूत कोई अन्य वाक्य सम्भव नहीं है।

महामत्स्यका आयाम एक हजार (१०००) योजन प्रमाण है। इसके विष्कम्भ और उत्सेधका प्रमाण कितना है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि उस महामत्स्यका विष्कम्भ पांच सौ (५००) योजन और उत्सेध दो सौ पचास (२५०) योजन मात्र है।

शंका—यह सूत्रके बिना कैसे जाना जाता है ?

आइरियपरंपरागयपवाइज्जंतुवदेसादो। ण च महामच्छविक्खंभुस्सेहाणं सुत्तं णत्थि चेवे त्ति णियमो, देसामासिएण 'जोयणसहस्सिओ' त्ति उत्तेण सूचिदत्तादो। एदे विक्खंभुस्सेहा महामच्छस्स सव्वत्थ सरिसा। मुह-पुच्छेसु विक्खंभुस्सेहाणं पमाणमेत्तियं होदि त्ति, एदेहिंतो पुधभूदविक्खंभुस्सेहाणं परूवयसुत्त-वक्खाणाणमणुवलंभादो जोयणसहस्सणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो च।

के वि आइरिया महामच्छो मुह-पुच्छेसु सुट्ठु सण्हओ त्ति भणंति। एत्थतणमच्छे दट्ठूण एदं ण घडदे, कहल्लिमच्छेगेसुं वियहिचारदंसणादो। अथवा एदे विक्खंभुस्सेहा समकरणसिद्धा त्ति के वि आइरिया भणंति। ण च सुट्ठु सण्णमुहो महामच्छो अण्णेगेजोयणसदोगाहणतिमिंगिलादिगिलणखमो, विरोहादो। तम्हा वक्खाणम्मि उत्तविक्खंभुस्सेहा चेव महामच्छस्स घेत्तव्वा। अथवा मज्झपदेसे चेव उत्तविक्खंभुस्सेहो मच्छो घेत्तव्वो, आदि-मज्झवसाणेसु एदम्हादो तिगुणं विपुंजमाणस्स उक्कस्सखेत्तुप्पत्तिं पडि विरोहाभावादो। 'सयंभुरमणसमुद्दस्से' त्ति सव्वदीव-समुद्दबाहिरसमुद्दस्स गहणट्ठं। सव्वबाहिरो समुद्दो चेव

समाधान — यह आचार्यपरम्पराके प्रवाह स्वरूपसे आये हुए उपदेशसे जाना जाता है। और महामत्स्यके विष्कम्भ व उत्सेधका ज्ञापक सूत्र है ही नहीं, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, 'जोयणसहस्सिओ त्ति' अर्थात् एक हजार योजनवाला इस देशामर्शक सूत्रवचनसे उनकी सूचना की गई है।

ये विष्कम्भ और उत्सेध महामत्स्यके सब जगह समान हैं। मुख और पूंछमें विष्कम्भ एवं उत्सेधका प्रमाण इतने मात्र ही है, क्योंकि, इनसे भिन्न विष्कम्भ और उत्सेधकी प्ररूपणा करनेवाला सूत्र व व्याख्यान पाया नहीं जाता, तथा इसके विना हजार योजनका निर्देश बनता भी नहीं है।

महामत्स्य मुख और पूंछमें अतिशय सूक्ष्म है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। किन्तु यहांके मत्स्योंको देखकर यह घटित नहीं होता, तथा कहीं कहीं मत्स्योंके अंगोंमें व्यभिचार देखा जाता है। अथवा, ये विष्कम्भ और उत्सेध समकरणसिद्ध हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। दूसरी बात यह है कि अतिशय सूक्ष्म मुखसे संयुक्त महामत्स्य एक सौ योजनकी अवगाहनावाले अन्य तिमिंगल आदि मत्स्योंके निगलनेमें समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि, उसमें विरोध आता है। अत एव व्याख्यानमें महामत्स्यके उपर्युक्त विष्कम्भ और उत्सेधको ही ग्रहण करना चाहिये।

अथवा, उक्त विष्कम्भ और उत्सेध महामत्स्यके मध्य प्रदेशमें ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि आदि, मध्य और अन्तमें इससे तिगुणे फैलनेवालेके उत्कृष्ट क्षेत्रकी उत्पत्तिके प्रति कोई विरोध नहीं है।

'सयंभुरमणसमुद्दस्स' इस पदके द्वारा द्वीप-समुद्रोंमें सबसे बाह्य समुद्रका ग्रहण किया गया है।

---

१ प्रतिषु 'मच्छाओहु' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अणेग' इति पाठः।

होदि त्ति कधं णव्वदे ? सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरे[1] दीवे अच्छिदो त्ति अभणिय 'सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे अच्छिदो' त्ति सुत्तादो णव्वदे ? समबाहिरवेइयाए पेरंतो त्ति सयंभुरमणसमुद्दो, तस्स बाहिरिल्लतडो णाम समुद्दपरभूभागदेसो। तत्थ अच्छिदो त्ति घेत्तव्वं। सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लतडो णाम तदवयवभूदबाहिरवेइया, तत्थ महामच्छो अच्छिदो त्ति के वि आइरिया भणंति। तण्ण घडदे, 'कायलेस्सियाए लग्गो[2]' त्ति उवरि भण्णमाणसुत्तेण सह विरोहादो। ण च सयंभुरमणसमुद्दबाहिरवेइयाए संबद्धा तिण्णि वि वादवलया, तिरियलोगविक्खंभस्स एगरज्जुपमाणादो ऊणत्तप्पसंगादो। तं कधं णव्वदे ? जंबूदीवजोयणलक्खविक्खंभदो दुगुणक्कमेण गदसव्वदीव-सागरविक्खंभेसु मेलाविदेसु जगसेडीए सत्तमभागाणुप्पत्तीदो। तं पि कधं णव्वदे ? रूवाहियदीव-सागररूवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं काढूण तत्थ तिण्णि रूवाणि अवणिय जोयणलक्खेण गुणिदे दीव-समुद्दरुद्धतिरियलोगखेत्तायामुप्पत्तीदो। ण च एत्तियो चेव तिरियलोगविक्खंभो, जगसेडीए

शंका—सर्वबाह्य समुद्र ही है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य द्वीपमें स्थित' ऐसा न कहकर स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित' ऐसा जो सूत्र है उसीसे वह जाना जाता है।

अपनी बाह्य वेदिका पर्यन्त स्वयम्भूरमण समुद्र है, उसके बाह्य तटसे अभिप्राय समुद्रके परभूभागप्रदेशका है। वहांपर स्थित, ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटका अर्थ उसकी अंगभूत बाह्य वेदिका है, वहां स्थित महामत्स्य, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर आगे कहे जानेवाले 'तनुवातवलयसे संलग्न हुआ' इस सूत्रके साथ विरोध आता है। कारण कि स्वयम्भूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे तीनों ही वातवलय सम्बद्ध नहीं हैं, क्योंकि, वैसा होनेपर तिर्यग्लोक सम्बन्धी विस्तारप्रमाणके एक राजुसे हीन होनेका प्रसंग आता है।

शंका— वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— चूंकि जम्बूद्वीप सम्बन्धी एक लाख योजन प्रमाण विस्तारकी अपेक्षा दुगुणे क्रमसे गये हुए सब द्वीप-समुद्रोंके विस्तारोंको मिलानेपर जगश्रेणिका सातवां भाग (राजु) उत्पन्न नहीं होता है, अतः इसीसे जाना जाता है कि तीनों वातवलय स्वयम्भूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे सम्बद्ध नहीं है।

शंका — वह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—एक अधिक द्वीप-समुद्र सम्बन्धी रूपोंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमें तीन रूपोंको कम करके एक लाख योजनसे गुणित करनेपर द्वीप-समुद्रों द्वारा रोके गये तिर्यग्लोक क्षेत्रका आयाम उत्पन्न होता है, अतः इसीसे जाना जाता है कि उक्त प्रकारसे जगश्रेणिका सातवां भाग नहीं उत्पन्न होता।

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-काप्रत्योः 'समुद्दयबाहिरे'; ताप्रतौ 'समुद्दे बाहिरे' इति पाठः। २ षट्. भा. ३ पृ. ३७.

सत्तमभागम्मि पंचसुण्णाणुवलंभादो । ण च एदम्हादो रज्जुविक्खंभो ऊणो होदि, रज्जुअब्भंतरसूदस्स चउव्वीसजोयणमेत्तवादरुद्धक्खेत्तस्स बज्झमुवलंभादो । ण च तेत्तियमेत्तं पक्खित्ते पंचसुण्णओ फिट्टंति, तहाणुवलंभादो । तम्हा सयलदीव-सायरविक्खंभादो बाहिं केत्तिएण वि क्खेत्तेण होदव्वं । सयंभुरमणसमुद्दब्भंतरे ट्ठिदमहामच्छो जलचरो कधं तस्स बाहिरिल्लं तडं गदो ? ण एस दोसो, पुव्ववइरियदेवपओगेण तस्स तत्थ गमणसंभवादो ।

वेयणसमुग्घादेण समुहदो ॥ ९ ॥

वेयणावसेण जीवपदेसाणं विक्खंभुस्सेहेहि तिगुणविपुंजणं वेयणासमुग्घादो णाम । ण च एस णियमो सव्वेसिं जीवपदेसा वेयणाए तिगुणं चेव विपुंजंति त्ति, किंतु सगविक्खंभादो तरतमसरूवेण ट्ठिदवेयणावसेण एग-दोपदेसादीहि वि वड्ढी होदि । ते वेयणसमुग्घादा एत्थ ण गहिदा, उक्कस्सेण खेत्तेण अहियारादो । महामच्छो चेव किमिदि वेयणसमुग्घादं णीदो ? महल्लोगाहणत्तादो, जलयरस्स थले क्खित्तस्स उण्हेण दज्झमाणंगस्स संचियबहुपावकम्मस्स महावेयणुप्पत्तिदंसणादो च ।

तिर्यग्लोकका विस्तार इतने मात्र ही हो, सो भी नहीं है; क्योंकि, जगश्रेणिके सातवें भागमें पांच शून्य नहीं पाये जाते । और इससे राजुविष्कम्भ हीन भी नहीं है, क्योंकि, राजुके अन्तर्गत चौबीस योजन प्रमाण वायुरुद्ध क्षेत्र बाह्यमें पाया जाता है । दूसरे, उतने मात्र क्षेत्रको मिलानेपर पांच शून्य नष्ट भी नहीं होते, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता । इसी कारण समस्त द्वीप-समुद्र सम्बन्धी विस्तारके बाहिर भी कुछ क्षेत्र होना चाहिये ।

शंका—स्वयम्भूरमण समुद्रके भीतर स्थित महामत्स्य जलचर जीव उसके बाह्य तटको कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पूर्वके वैरी किसी देवके प्रयोगसे उसका वहां गमन सम्भव है ।

वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ ॥ ९ ॥

वेदनाके वशसे जीवप्रदेशोंके विष्कम्भ और उत्सेधकी अपेक्षा तिगुणे प्रमाणमें फैलनेका नाम वेदनासमुद्घात है । परन्तु सबके जीवप्रदेश वेदनाके वशसे तिगुणे ही फैलते हों, ऐसा नियम नहीं है । किन्तु तरतम रूपसे स्थित वेदनाके वशसे अपने विष्कम्भकी अपेक्षा एक दो प्रदेशादिकोंसे भी वृद्धि होती है । परन्तु उन वेदनासमुद्घातोंका यहां ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि, यहां उत्कृष्ट क्षेत्रका अधिकार है ।

शंका—महामत्स्यको ही वेदनासमुद्घातको क्यों प्राप्त कराया है ?

समाधान—क्योंकि, एक तो उसकी अवगाहना बहुत अधिक है, दूसरे जलचर जीवको स्थलमें रखनेपर उष्णताके कारण अंगोंके संतप्त होनेसे बहुत पापकर्मोंके संचयको प्राप्त हुए उसके महा वेदनाकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

कायलेस्सियाए लग्गो ॥ १० ॥

कायलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ। कधं तस्स एसा सण्णा? कागवण्णत्तादो सो कागलेस्सिओ णाम। एत्थ अंधकायलेस्सो ण घेत्तव्वा, तत्थ अंधत्तवेण्णाणुवलंभादो। लोगवड्ढिवसेण लोगनाडीदो परदो संखेज्जजोयणाणि ओसरिय ट्ठिदतदियवादे लोगणालीए अब्भंतरट्ठिदमहामच्छो कधं लग्गदे? सच्चमेदं महामच्छस्स तदियवादेण संपासो णत्थि त्ति। किंतु एसा सत्तमी सामीवे वट्टदि। न च सप्तमी सामीप्ये असिद्धा, गंगायां घोषः प्रतिवसतीत्यत्र सामीप्ये सप्तम्युपलंभात्। तेण काउलेस्सियाए छुत्तदेसो काउलेस्सिया त्ति गहिदो। तीए काउलेस्सियाए जाव लग्गदि ताव वेयणासमुग्घादेण समुहदो त्ति उत्तं होदि। भावत्थो—पुव्ववेरियदेवेण महामच्छो सयंभुरमणबाहिरवेइयाए बाहिरे भागे लोगणालीए समीवे पादिदो। तत्थ तिव्ववेयणावसेण वेयणसमुग्घादेण समुहदो जाव लोगणालीए बाहिरपेरंतो लग्गो त्ति उत्तं होदि।

जो तनुवातवलयसे स्पृष्ट है ॥ १० ॥

काकलेश्याका अर्थ तीसरा वातवलय है।

शंका—उसकी यह संज्ञा कैसे है?

समाधान—तनुवातवलयका काकके समान वर्ण होनेसे उसकी काकलेश्या संज्ञा है।

यहां अंधकाकलेश्या (काला स्याह काकवर्ण) का ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, उसमें अंधत्व अर्थात् काला स्याह वर्ण नहीं पाया जाता।

शंका—लोकनालीके भीतर स्थित महामत्स्य लोकविस्तारानुसार लोकनालीके आगे संख्यात योजन जाकर स्थित तृतीय वातवलयसे कैसे संसक्त होता है?

समाधान—यह सत्य है कि महामत्स्यका तृतीय वातवलयसे स्पर्श नहीं होता, किन्तु यह सप्तमी विभक्ति सामीप्य अर्थमें है। यदि कहा जाय कि सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति असिद्ध है, सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि 'गंगामें घोष (ग्वालबसति) बसता है' यहां सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति पायी जाती है। इसलिये कापोतलेश्यासे स्पृष्ट प्रदेश भी कापोतलेश्या रूपसे ग्रहण किया गया है। उस कापोतलेश्यासे जहां तक संसर्ग है वहां तक वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ, यह उसका अभिप्राय है।

भावार्थ—पूर्वके वैरी किसी देवके द्वारा महामत्स्य स्वयम्भुरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके बाहिर भागमें लोकनालीके समीप पटका गया। वहां तीव्र वेदनाके वश वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त होकर लोकनालीके बाह्य भाग पर्यन्त वह संसक्त होता है, यह अभिप्राय है।

---

१ ताप्रतौ 'अद्धकायलेस्सा' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'अभत्त' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'समीवे' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'ण च सत्तमी सामीप्ये' इति पाठः। ५ ताप्रतौ 'सप्तम्युपलंभादो' इति पाठः। ६ प्रतिषु 'पुत्तीदो'; ताप्रतौ पुत्ती (पदि) दो इति पाठः। ७ प्रतिषु 'समुग्घादो' इति पाठः।

पुणरवि मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो तिण्णि विग्गहकंदयाणि कादूण ॥ ११ ॥

महामच्छो लोगणालीए वायव्वदिसाए पुव्ववेरियदेवसंबंधेण दक्खिणुत्तरायामेण पदिदो । तत्थ मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो । तेण महामच्छेण वेयणसमुग्घादेण मारणंतियसमुग्घादं करेंतेण तिण्णि विग्गहकंदयाणि कदाणि । विग्गहो णाम वक्कत्तं, तेण तिण्णि कदंयाणि कदाणि । तं जहा— लोगणालीवायव्वदिसादो कंडुज्जुवाए गईए सादिरेयअद्धरज्जूमेत्तमागदो दक्खिणदिसाए । तमेगं कंदयं । पुणो तत्तो वलिदूण कंडुज्जुवाए गईए एगरज्जुमेत्तं पुव्वदिसमागदो[1] । तं बिदियं कंदयं । पुणो तत्तो वलिदूण अधो छरज्जुमेत्तद्धाणमुजुगदीए गदो । तं तदिय कंदयं । एवं तिण्णि कंदयाणि[2] कादूण मारणंतियसमुग्घादं गदो । चत्तारि कंदए किण्ण कराविदो ? ण, तसेसु दो विग्गहे मोत्तूण तिण्णिविग्गहाणमभावादो । तं कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो ।

से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उप्पज्जिहिदि त्ति तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥

फिर भी जो तीन विग्रह करके मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ है ॥ ११ ॥

महामत्स्य लोकनालीकी वायव्य दिशामें पूर्वके वैरी देवके सम्बन्धसे दक्षिण-उत्तर आयाम स्वरूपसे गिरा । वहां वह मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ । वेदनासमुद्घातके साथ मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले उक्त महामत्स्यने तीन विग्रहकाण्डक किये । विग्रहका अर्थ वक्रता है, उससे तीन काण्डक किये । वे इस प्रकारसे— लोकनालीकी वायव्य दिशासे बाणके समान ऋजुगतिसे साधिक अर्ध राजु मात्र दक्षिण दिशामें आया । वह एक काण्डक हुआ । फिर वहांसे मुड़कर बाण जैसी सीधी गतिसे एक राजु मात्र पूर्व दिशामें आया । वह द्वितीय काण्डक हुआ । फिर वहांसे मुड़कर नीचे छह राजु मात्र मार्गमें ऋजुगतिसे गया । वह तृतीय काण्डक हुआ । इस प्रकार तीन काण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुआ ।

शंका—चार काण्डकोंको क्यों नहीं कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, त्रसोंमें दो विग्रहोंको छोड़कर तीन विग्रह नहीं होते ।

शंका—वह कैसे ज्ञात होता है ?

समाधान—वह इसी सूत्रसे ज्ञात होता है ।

अनन्तर समयमें वह सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होगा, अतः उसके ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १२ ॥

---

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'पुव्वदिसाववसमागदो', ताप्रतौ 'पुव्वदिसाव (ए) समागदो' इति पाठः ।

२ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'तं तदियकंडयाणि', ताप्रतौ 'तं तदियकंड [यं] । या (ता) णि' इति पाठः ।

सत्तमपुढविं मोत्तूण हेट्ठा णिगोदेसु सत्तरज्जुमेत्तद्धाणं गंतूण किण्ण उप्पाइदो ? णिगोदेसुप्पज्जमाणस्स अइतिव्ववेयणाभावेण सरीरतिगुणवेयणसमुग्घादस्स अभावादो। जदि एवं तो पुव्विल्लविक्खंभुस्सेहेहिंतो वेयणाए जहा विक्खंभुस्सेहा दुगुणा होंति तहा कादूण णिगोदेसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, वड्ढिदक्खेत्तादो परिहीणखेत्तस्स सादिरेयअट्ठगुणत्तुवलंभादो। जदि वि वारुणदिसादो एगरज्जुमेत्तं पुव्वदिसाए गंतूण पुणो हेट्ठा सत्तरज्जुअद्धाणं गंतूण पुणो दक्खिणेण आहुट्ठरज्जुओ गंतूण सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जदि तो वि पुव्विल्लखेत्तादो एदस्स खेत्तं विसेसहीणं चेव, विक्खंभुस्सेहाणं तिगुणत्ताभावादो। सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणस्स महामच्छस्स विक्खंभुस्सेहा तिगुणा ण होंति, दुगुणा विसेसाहिया वा होंति त्ति कधं णव्वदे ? अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु से काले उप्पज्जिहिदि त्ति सुत्तादो णव्वदे। संतकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पाइदो, णेरइएसु उप्पज्जमाणमहामच्छो व्व सुहुमणिगोदेसु

शंका—सातवीं पृथिवीको छोड़कर नीचे सात राजु मात्र अध्वान जाकर निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके अतिशय तीव्र वेदनाका अभाव होनेसे विवक्षित शरीरसे तिगुणा वेदनासमुद्घात सम्भव नहीं है।

शंका—यदि ऐसा है तो वेदनासमुद्घातमें पूर्वोक्त विष्कम्भ और उत्सेधसे जिस प्रकार दुगुणा विष्कम्भ व उत्सेध होता है वैसा करके निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उसके वृद्धिंगत क्षेत्रकी अपेक्षा हानिको प्राप्त क्षेत्र साधिक आठगुणा पाया जाता है।

यद्यपि पश्चिम दिशासे एक राजु मात्र पूर्व दिशामें जाकर, फिर नीचे सात राजु अध्वान जाकर, फिर दक्षिणसे साढ़े तीन राजु जाकर सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होता है, तो भी पूर्वके क्षेत्रसे इसका क्षेत्र विशेष हीन ही है, क्योंकि, इसमें विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणे नहीं हैं।

शंका—सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यका विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणा नहीं होता, किन्तु दुगुणा अथवा विशेष अधिक होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—"नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें वह अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा" इस सूत्रसे जाना जाता है।

सत्कर्मप्राभृतमें उसे निगोद जीवोंमें उत्पन्न कराया है, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके समान सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाला महामत्स्य

उप्पज्जमाणमहामच्छो वि तिगुणसरीरबाहल्लेण मारणंतियसमुग्घादं गच्छदि त्ति। ण च एदं जुज्जदे, सत्तमपुढवीणेरइएसु असादबहुलेसु उप्पज्जमाणमहामच्छवेयणा-कसाएहिंतो सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणमहामच्छवेयण-कसायाणं सरिसत्ताणुववत्तीदो। तदो एसो चेव अत्थो पहाणो त्ति घेत्तव्वो। 'लोगणालीए अंते सत्तमपुढवीए सेडिबद्धो अत्थि त्ति' एदेण सुत्तेण णव्वदे, अण्णहा तिण्णि विग्गहप्पसंगादो। से काले उप्पज्जिहिदि[1] त्ति किमट्ठं उच्चदे? ण, णेरइएसुप्पण्णपढमसमए उवसंहरिदपढमदंडस्स य उक्कस्सखेत्ताणुववत्तीदो। एत्थ संदिट्ठी– (चित्र) सादिरेयमद्धट्ठरज्जुपमाणं[2] के वि आइरिया एवं होदि[3] त्ति भणंति। तं जहा— अवरदिसादो मारणंतियसमुग्घादं कादूण पुव्वदिसमागदो जाव लोगणालीए अंतं पत्तो त्ति। पुणो विग्गहं करिय हेट्ठा छरज्जुपमाणं गंतूण पुणरवि विग्गहं करिय वारुणदिसाए अद्धरज्जुपमाणं गंतूण अवहिट्ठाणम्मि उप्पण्णस्स खेत्तं होदि त्ति। एदं ण घडदे, उववादट्ठाणं वोलेदूण गमणं णत्थि त्ति पवाइज्जंतउवदेसेण सिद्धत्तादो।
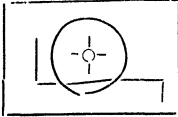
भी विवक्षित शरीरकी अपेक्षा तिगुणे बाहल्यसे मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त होता है। परन्तु यह योग्य नहीं है, क्योंकि, अत्यधिक असाताका अनुभव करनेवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी वेदना और कषायकी अपेक्षा सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी वेदना और कषाय सदृश नहीं हो सकतीं। इस कारण यही अर्थ प्रधान है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। "लोकनालीके अन्तमें सातवीं पृथिवीका श्रेणिबद्ध है" इस सूत्रसे जाना जाता है, क्योंकि, इसके बिना तीन विग्रहोंका प्रसंग आता है।

शंका— अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा, यह किसलिये कहते हैं?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें प्रथम दण्डका उपसंहार हो जानेसे उसका उत्कृष्ट क्षेत्र नहीं बन सकता।

यहां संदृष्टि—(मूलमें देखिये)।

साधिक साढ़े सात राजुका प्रमाण इस (निम्न) प्रकार होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। यथा—" पश्चिम दिशासे मारणान्तिकसमुद्घातको करके लोकनालीका अन्त प्राप्त होने तक पूर्वदिशामें आया। फिर विग्रह करके नीचे छह राजु मात्र जाकर पुनः विग्रह करके पश्चिम दिशामें आध राजु प्रमाण जाकर अवधिस्थान नरकमें उत्पन्न होनेपर उसका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है।" किन्तु यह घटित नहीं होता, क्योंकि, वह 'उपपादस्थानका अतिक्रमण करके गमन नहीं होता' इस परम्परागत उपदेशसे सिद्ध है।

१ अप्रतौ 'उप्पज्जदि', ताप्रतौ 'उप्पज्जहिदि' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'सादिरेयमद्धयरज्जुपमाणं' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'होंति' इति पाठः।

एत्थ उवसंहारो उच्चदे । तं जहा— एगरज्जुं ठविय सादिरेयअद्धट्ठमरूवेहि गुणेदूण पुणो तिगुणिदविक्खंभेण |१५००| तिगुणिदउस्सेहगुणिदेण |७५०| गुणिदे णाणावरणीयस्स उक्कस्सखेत्तं होदि ।

तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा ॥ १३ ॥

उक्कस्समहामच्छखेत्तादो वदिरित्तं खेत्तं तव्वदिरित्तं णाम । सा अणुक्कस्सा खेत्तवेयणा । सा च असंखेज्जवियप्पा । तिस्से सामी किण्ण परूविदो ? ण, उक्कस्ससामी चेव अणुक्कस्सस्स वि सामी होदि त्ति पुधसामित्तपरूवणाकरणादो, सेसवियप्पाणं पि एदम्हादो चेव सिद्धीदो च । तं जहा—मुहम्मि एगागासपदेसेणूणुक्कस्सोगाहणमहामच्छेण पुव्ववेरियदेवसंबंधेण लोगणालीए वायव्वदिसाए णिवदिय वेयणसमुग्घादेण पुव्वविक्खंभुस्सेहेहिंतो तिगुणविक्खंभुस्सेहे आवण्णेण मारणंतियसमुग्घादेण तिण्णि कंदयाणि कादूण सत्तमपुढविं पत्तेण अणुक्कस्सुक्कस्सक्खेत्तं कदं । तेण एदस्स अणुक्कस्सुक्कस्सक्खेत्तस्स महामच्छो चेव सामी । पुणो मुहपदेसे दोहि आगासपदेसेहि ऊणओ महामच्छो वेयणसमुग्घादेण समुहदो होदूण तिण्णि विग्गहकंडयाणि कादूण मारणंतियसमुग्घादेण सत्तमपुढविं गदो बिदियअणुक्कस्सखेत्तस्स सामी होदि । पुणो तीहि आगासपदेसेहि परिहीणमुहो

यहां उपसंहार कहते हैं । वह इस प्रकार है—एक राजुको स्थापित करके साधिक साढ़े सात रूपोंसे गुणित करके पश्चात् तिगुणे उत्सेध (२५० × ३ = ७५०) से गुणित तिगुणे विष्कम्भ (५०० × ३ = १५००) के द्वारा गुणित करनेपर ज्ञानावरणीयका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है ।

महामत्स्यके उपर्युक्त उत्कृष्ट क्षेत्रसे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना है ॥ १३ ॥

उत्कृष्ट महामत्स्यक्षेत्रसे भिन्न क्षेत्र तद्व्यतिरिक्त है । वह अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदना है । वह असंख्यात विकल्प रूप है ।

शंका—उसके स्वामीकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्कृष्टका स्वामी ही चूंकि अनुत्कृष्टका भी स्वामी होता है, अतः उसके स्वामित्वकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गई है, तथा शेष विकल्प भी इसीसे सिद्ध होते हैं । यथा—मुखमें एक प्रदेशसे हीन उत्कृष्ट अवगाहनासे संयुक्त, पूर्ववैरी देवके सम्बन्धसे लोकनालीकी वायव्य दिशामें गिरकर वेदनासमुद्घातसे पूर्व विष्कम्भ व उत्सेधकी अपेक्षा तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको प्राप्त, तथा मारणान्तिकसमुद्घातसे तीन काण्डकोंको करके सातवीं पृथिवीको प्राप्त हुआ महामत्स्य अनुत्कृष्ट-उत्कृष्ट क्षेत्रको करता है । इस कारण इस अनुत्कृष्ट-उत्कृष्ट क्षेत्रका महामत्स्य ही स्वामी है ।

पुनः मुखप्रदेशमें दो आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त होकर तीन विग्रहकाण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्घातसे सातवीं पृथिवीको प्राप्त होता हुआ द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है । फिर तीन

महामच्छो पुव्वविहिणा चेव मारणंतियसमुग्घादेण सत्तमपुढविं गदो तदियखेत्तस्स सामी। मुहम्मि चत्तारिआगासपदेसूणमहामच्छो मारणंतियसमुग्घादेण सादिरेयअद्धट्ठमरज्जुआयदो चउत्थखेत्तस्स सामी। एवमेदेण कमेण महामच्छमुहपदेसे ऊणे करिय संखेज्जपदरंगुलमेत्ता अणुक्कस्सक्खेत्तवियप्पा उप्पादेदव्वा।

एत्थतणसव्वपच्छिमखेत्तं केण सरिसं होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे — ओघुक्कस्सोगाहण-महामच्छस्स वेयणसमुग्घादेण तिगुणविक्खंभुस्सेहे गंतूण पदेसूणद्धट्ठमरज्जूण मुक्कमारणंतियस्स खेत्तेण सरिसं होदि। पुणो वि महामच्छमुहवियप्पे अस्सिदूण पदेसूणद्धट्ठमरज्जूणं मारणंतियं मेल्लाविय संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तपरूवणा कायव्वा। एत्थ अंतिमक्खेत्तवियप्पो केण सरिसो होदि त्ति उत्ते, उच्चदे— ओघुक्कस्सोगाहणामहामच्छस्स पुव्वविहाणेण दुपदे-सूणद्धट्ठमरज्जूण मुक्कमारणंतियस्स खेत्तेण सरिसो। पुणो एदं मारणंतियखेत्तायामं धुवं कादूण महामच्छमुहवियप्पे अस्सिदूण संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तपरूवणं कायव्वं। पुणो एत्थ सव्वपच्छिमवियप्पो तिपदेसूणद्धट्ठमरज्जूणं[1] मुक्कमारणंतियखेत्तेण सरिसो।

आकाशप्रदेशोंसे हीन मुखवाला महामत्स्य पूर्व विधिसे ही मारणान्तिकसमुद्घातसे सातवीं पृथिवीको प्राप्त होकर तृतीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है। मुखमें चार आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य मारणान्तिकसमुद्घातसे साधिक साढ़े सात राजु मात्र आयामसे युक्त होता हुआ चतुर्थ अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है। इस प्रकार इस क्रमसे महामत्स्यके मुखप्रदेशोंको हीन करके संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण अनुत्कृष्ट क्षेत्रके विकल्पोंको उत्पन्न कराना चाहिये।

शंका — यहांका सबसे अन्तिम क्षेत्र किसके सदृश होता है ?

समाधान — इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि यह क्षेत्र सामान्योक्त उत्कृष्ट अवगाहनावाले और वेदनासमुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको प्राप्त होकर एक प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है।

फिरसे भी महामत्स्यके मुख सम्बन्धी विकल्पोंका आश्रय करके प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको छुड़ाकर संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये।

शंका — यहां अन्तिम विकल्प किसके सदृश होता है ?

समाधान — इस प्रकार पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वह क्षेत्र ओघोक्त उत्कृष्ट अवगाहनासे संयुक्त और पूर्व विधिके अनुसार दो प्रदेशोंसे हीन साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको छोड़नेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है।

फिर इस मारणान्तिकक्षेत्रके आयामको अवस्थित करके महामत्स्यके मुख-विकल्पोंका आश्रय कर संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। यहां सबसे अन्तिम विकल्प तीन प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिक-

१ ताप्रतौ ' - वियप्पो त्ति पदेसूण - ' इति पाठः।

एवमेगेगागासपदेसूणाओ कमेण मारणंतियं मेलाविय अणुक्कस्सखेत्ताणं सामित्तपरूवणं कायव्वं। सत्तमपुढवि मारणंतियं मेल्लमाणजीवाणं मारणंतियखेत्तायामो सव्वेसिं किण्ण सरिसो? ण, मारणंतियं मेल्लिदूण[1] पुणो मूलसरीरं पविसिय कालं करेंताणं मारणंतियखेत्तायामाणमणेगवियप्पत्तं पडि विरोहाभावादो। समुप्पत्तिक्खेत्तमपाविय कयमारणंतियसमुग्घादजीवा पल्लट्टिय मूलसरीरं पविसंति त्ति कधं णव्वदे? पवाइज्जंतउवदेसादो। सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणमहामच्छे अस्सिदूण किण्ण सामित्तं उच्चदे? ण, तेसु तिव्ववेयणाकसायविवज्जिएसु एक्कसराहेण महामच्छुक्कस्समारणंतियखेत्तादो अणेगरज्जुमेत्तखेत्तपदेसूणेसु महामच्छुक्कस्सखेत्तादो पदेसूणादिखेत्तवियप्पाणुवलंभादो। सुहुमणिगोदेसुप्पज्जमाणमहामच्छस्स उक्कस्समारणंतियखेत्तसमाणं सत्तमपुढविम्हि समुप्पज्जमाणमहामच्छमारणंतियखेत्तप्पहुडि हेट्ठिमखेत्तवियप्पा सुहुमणिगोदेसु सत्तमपुढवीए च उप्पज्जमाणमहामच्छे अस्सिदूण उप्पादेदव्वा। अहवा, महामच्छं चेव एगादिएगुत्तरागासपदेसकमेण पुरदो

समुद्घातको छोड़नेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है। इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशकी हीनताके क्रमसे मारणान्तिकसमुद्घातको छुड़ाकर अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये।

शंका—सातवीं पृथिवीमें मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले सब जीवोंके मारणान्तिकक्षेत्रोंका आयाम समान क्यों नहीं होता?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घातको करके फिर मूल शरीरमें प्रवेश कर मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवों सम्बन्धी मारणान्तिकक्षेत्रोंके आयामोंके अनेक विकल्प रूप होनेमें कोई विरोध नहीं है।

शंका—उत्पत्तिक्षेत्रको न पाकर मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले जीव पलटकर मूल शरीरमें प्रविष्ट होते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—वह परम्परागत उपदेशसे जाना जाता है।

शंका—सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीव्र वेदना व कषायसे रहित होनेके कारण एक साथ पूर्वोक्त महामत्स्यके उत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्रकी अपेक्षा अनेक राजु प्रमाण क्षेत्रप्रदेशोंसे हीन उक्त निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंमें, सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे एक प्रदेश कम दो प्रदेश कम इत्यादि क्षेत्रविकल्प नहीं पाये जाते।

सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्रके समान सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके मारणान्तिकक्षेत्रको आदि लेकर अधस्तन क्षेत्रके विकल्पोंको सूक्ष्म निगोद जीवोंमें और सातवीं पृथिवीमें भी उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके उत्पन्न करना चाहिये। अथवा,

[1] अ-काप्रत्योः 'मेछिदोण', ताप्रतौ 'मेछिदो ण' इति पाठः।

ओगाहिय अणुक्कस्सखेत्ताणं परूवणा कायव्वा । एवं णेदव्वं जाव वेयणसमुग्घादेण समुहद-महामच्छखेत्तं त्ति ।

पुणो एदेण खेत्तेण कम्हि महामच्छे मारणंतियखेत्तं सरिसमिदि उत्ते उच्चदे, तं जहा— जो महामच्छो वेयणसमुग्घादेण विणा मूलायामेण सह णवजोयणसहस्साणि मारणंतियं मेल्लिदि, तस्स खेत्तं सरिसं होदि । पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण खेत्तस्स सामित्तपरूवणं कायव्वं । तं जहा— मुहम्मि एगागासपदेसेण ऊणमहामच्छेण णवजोयण-सहस्साणि मुक्कमारणंतिए मेलाविय अणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्समारणंतियखेत्तं होदि । एवमेगे-गासपदेसं मुहम्मि ऊणं करिय णवजोयणसहस्साणि मारणंतियं मेल्लाविय संखेज्जपदरं-गुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तपरूवणं कायव्वं । एवं परिहाइदूण ट्ठिदपच्छिमखेत्तेण ओघुक्कस्सो-गाहणाए पदेसूणणवजोयणसहस्साणि मुक्कमारणंतियमहामच्छखेत्तं सरिसं होदि । एवं आणिदूण पदेसूणादिकमेण सेसखेत्ताणं पि सामित्तपरूवणं कायव्वं जाव महामच्छस्सद्धाणु-क्कस्सोगाहणे त्ति । पुणो पदेसूणुक्कस्सोगाहणमहामच्छो तदणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्सखेत्त-सामी । एवमेगेगं खेत्तपदेसं णिरंतरं ऊणं करिय णेयव्वं जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेय-

---

महामत्स्यको ही एकको आदि लेकर एक अधिक आकाशप्रदेशके क्रमसे आगे बढ़ाकर अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त महामत्स्यके क्षेत्र तक ले जाना चाहिये ।

शंका— इस क्षेत्रसे कौनसे महामत्स्यका क्षेत्र सदृश है ?

समाधान - इस शंकाका उत्तर कहते हैं । वह इस प्रकार है—जो महामत्स्य वेदनासमुद्घातके बिना मूल आयामके साथ नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करता है उसका क्षेत्र इस क्षेत्रके सदृश होता है ।

अब पूर्वके क्षेत्रको छोड़कर व इसे ग्रहण कर स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । वह इस प्रकार है—मुखमें एक आकाशप्रदेशसे हीन होकर नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यका अनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट मारणा-न्तिकक्षेत्र होता है । इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशको मुखमें कम करके नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको कराकर संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार हीन होकर स्थित अन्तिम क्षेत्रसे ओघोक्त उत्कृष्ट अवगाहनामें एक प्रदेश कम नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यका क्षेत्र सदृश होता है । इस प्रकार एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि क्रमसे महामत्स्यके अध्वानमें उत्कृष्ट अवगाहना तक शेष क्षेत्रोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये । पुनः एक प्रदेश कम उत्कृष्ट अवगाहनावाला महामत्स्य उससे अनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है । इस प्रकार एक एक क्षेत्रप्रदेशको निरन्तर कम करके बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीरकी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त

---

१ अप्रतौ '-मेगेगासपदेसं', ताप्रतौ '-मेगेगागासपदेस-' इति पाठः । २ प्रतिषु 'खेत्तस्स' इति पाठः ।

सरीरउक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो तत्तो एगेगपदेसूणं करिय णेदव्वं जाव बेइंदिय-णिव्वत्तिपज्जत्तउक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो तत्तो णिरंतरं पदेसूणादिकमेण णेदव्वं जाव चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो तत्तो पदेसूणादिकमेण णेदव्वं जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो एगेगपदेसूणादिकमेण णेदव्वं जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स अजहण्णमणुक्कस्समेगघणंगुलोगाहणं पत्तमिदि। एवं णिरंतरकमेण एगेगपदेसूणं करिय णेयव्वं जाव सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं पत्तमिदि। एवमसंखेज्जसेडिमेत्ताणमणुक्कस्सखेत्तवियप्पाणं सामित्तपरूवणा कदा।

संपहि एदेसिं खेत्तवियप्पाणं जे सामिणो जीवा तेसिं परूवणाए कीरमाणाए तत्थ छअणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तत्थ परूवणा उच्चदे। तं जहा— उक्कस्सए ठाणे अत्थि जीवा। एवं णेदव्वं जाव जहण्णट्ठाणे त्ति। वणा गदा।

उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा केत्तिया ? असंखेज्जा। एवं तसकाइयपाओग्गखेत्त-वियप्पेसु असंखेज्जजीवा त्ति वत्तव्वं। थावरकाइयपाओग्गेसु वि असंखेज्जलोगा। णवरि वणप्फइकाइयपाओग्गेसु अणंता। एवं पमाणपरूवणा गदा।

सेडी अवहारो च ण सक्कदे णेदुमुवदेसाभावादो। णवरि एइंदिएसु जहण्णट्ठाण-

---

होने तक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश कम करके द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे निरन्तर एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि क्रमसे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे प्रदेश हीनादिके क्रमसे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश हीनादिके क्रमसे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी अजघन्य-अनुत्कृष्ट एक घनांगुल मात्र अवगाहनाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार निरन्तर क्रमसे एक एक प्रदेश हीन करके सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार असंख्यात श्रेणि मात्र अनुत्कृष्ट क्षेत्र सम्बन्धी विकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है।

अब इन क्षेत्रविकल्पोंके जो जीव स्वामी हैं उनकी प्ररूपणा करते समय वहां छह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं—[प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व]। उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारको कहते हैं। वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट स्थानमें जीव हैं। इस प्रकार जघन्य स्थान तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव कितने हैं ? वे वहां असंख्यात हैं। इस प्रकार त्रसकायिकों-के योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें असंख्यात जीव हैं, ऐसा कहना चाहिये। स्थावरकायिकोंके योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें भी असंख्यात लोक प्रमाण जीव हैं। विशेष इतना है कि वनस्पति-कायिक योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें अनन्त जीव हैं। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणि और अवहारकी प्ररूपणा नहीं की जा सकती, क्योंकि, उनका उपदेश प्राप्त नहीं है। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंकी

जीवेहिंतो बिदियट्ठाणजीवा विसेसाहिया विसेसहीणा वा अंतोमुहुत्तपडिभागेण ।

उक्कस्सट्ठाणजीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो । जहण्णए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । अजहण्णअणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जा भागा । एवं भागाभागपरूवणा गदा ।

सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा । जहण्णए ट्ठाणे अणंतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । अजहण्णए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया ।

अधवा अप्पाबहुगं तिविहं— जहण्णयमुक्कस्सयमजहण्णमणुक्कस्सयं चेदि । तत्थ जहण्णए पयदं— सव्वत्थोवा जहण्णए ट्ठाणे । अजहण्णए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा । उक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा । अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा । जहण्णए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा असंखेज्जगुणा । अजहण्णए

अपेक्षा द्वितीय स्थान सम्बन्धी जीव अन्तर्मुहूर्त प्रतिभागसे विशेष अधिक अथवा विशेष हीन हैं ।

उत्कृष्ट स्थानके जीव सब स्थान सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । जघन्य स्थानमें जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं । इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं । उनसे जघन्य स्थानमें वे अनन्तगुणे हैं । उनसे अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं ।

शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—गुणकार अंगुलका असंख्यातवां भाग है ।

उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।

अथवा, अल्पबहुत्व तीन प्रकार है— जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्य-अनुत्कृष्ट । उनमें जघन्य अल्पबहुत्व प्रकृत है— जघन्य स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अजघन्य स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है— उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है—उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं । जघन्य स्थानमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं ।

ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया ।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं ॥ १४ ॥

एदेसिं तिण्हं घादिकम्माणं जहा णाणावरणीयउक्कस्साणुक्कस्सखेत्तपरूवणा कदा तहा कादव्वं, विसेसाभावादो ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स[1] ? ॥ १५ ॥

उक्कस्सपदे त्ति णिद्देसेण जहण्णपदपडिसेहो कदो । वेदणीयवेदणा त्ति णिद्देसेण सेसकम्मवेयणाए पडिसेहो कदो । खेत्तणिद्देसेण दव्वादिवेयणाणं पडिसेहो कदो । कस्से त्ति किं देवस्स, किं णेरइयस्स, किं तिरिक्खस्स, किं मणुस्सस्स होदि त्ति पुच्छा कदा ।

अण्णदरस्स केवलिस्स केवलिसमुग्घादेण समुहदस्स सव्वलोगं गदस्स तस्स वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सा ॥ १६ ॥

अण्णदरस्से त्ति णिद्देसेण ओगाहणाविसेसाणं भरहादिक्खेत्तविसेसाणं च पडिसेहा-

---

उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मके भी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट वेदनाक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १४ ॥

जैसे ज्ञानावरणीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही इन तीन घाति कर्मोंके उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ १५ ॥

' उत्कृष्ट पदमें ' इस निर्देशसे जघन्य पदका प्रतिषेध किया गया है । ' वेदनीय कर्मकी वेदना ' इस निर्देशसे शेष कर्मोंकी वेदनाका प्रतिषेध किया है । क्षेत्रका निर्देश करनेसे द्रव्यादि वेदनाओंका प्रतिषेध किया गया है । ' किसके होती है ? ' इससे उक्त वेदना क्या देवके, क्या नारकीके, क्या तिर्यंचके और क्या मनुष्यके होती है; यह पृच्छा की गई है ।

अन्यतर केवलीके, जो केवलिसमुद्घातसे समुद्घातको व उसमें भी सर्वलोक अर्थात् लोकपूरण अवस्थाको प्राप्त हैं, उनके वेदनीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १६ ॥

' अन्यतर ' पदके निर्देशसे अवगाहनाविशेषोंके और भरतादिक क्षेत्रविशेषोंके

---

१ अ-काप्रत्योः ' तस्स ' इति पाठः ।

भावो परूविदो। केवलिस्से त्ति णिद्देसेण छदुमत्थाणं पडिसेहो कदो। केवलिसमुग्घादेण समुहदस्से त्ति[1] णिद्देसेण सत्थाणकेवलिपडिसेहो कदो। सव्वलोगं गदस्से त्ति णिद्देसेण दंड-कवाड-पदरगदाणं पडिसेहो कदो। सव्वलोगपूरणे वट्टमाणस्स उक्कस्सिया वेयणीयवेयणा होदि त्ति उत्तं होदि। एत्थ उवसंहारो सुगमो।

तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा ॥ १७ ॥

एदम्हादो उक्कस्सखेत्तवेयणादो वदिरित्ता खेत्तवेयणा अणुक्कस्सा होदि। तत्थ-तणउक्कस्सियाए खेत्तवेयणाए पदरगदो केवली सामी, एदम्हादो अणुक्कस्सखेत्तेसु महल्ल-खेत्ताभावादो। एदं च उक्कस्सखेत्तादो विसेसहीणं, वादवलयब्भंतरे जीवपदेसाणमभावादो। सव्वमहल्लोगाहणाए कवाडं गदो केवली तदणंतरअणुक्कस्सखेत्तट्ठाणसामी। णवरि पुव्विल्ल-अणुक्कस्सखेत्तादो बिदियमणुक्कस्सक्खेत्तमसंखेज्जगुणहीणं, संखेज्जसूचीअंगुलबाहल्लजग-पदरपमाणकवाडखेत्तं पेक्खिदूण मंथक्खेत्तस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। पदेसूणुक्कस्स-विक्खंभोगाहणाए कवाडं गदो केवली तदियक्खेत्तसामी। णवरि बिदियमणुक्कस्सक्खेत्तं पेक्खिदूण तदियमणुक्कस्सखेत्तं विसेसहीणं होदि, पुव्विल्लक्खेत्तादो जगपदरमेत्तखेत्त-परिहाणिदंसणादो। दुपदेसूणुक्कस्सविक्खंभेण कवाडं गदो चउत्थखेत्तसामी। एदं पि

प्रतिषेधका अभाव बतलाया गया है। 'केवली' पदका निर्देश करके छद्मस्थोंका प्रतिषेध किया गया है। 'केवलिसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त' इस निर्देशसे स्वस्थानकेवलीका प्रतिषेध किया है। 'सर्व लोकको प्राप्त' इस निर्देशसे दण्ड, कपाट और प्रतर समुद्घातको प्राप्त हुए केवलियोंका प्रतिषेध किया है। सर्वलोकपूरण समुद्घातमें रहनेवाले केवलीके उत्कृष्ट वेदनीयवेदना होती है, यह उसका अभिप्राय है। यहां उपसंहार सुगम है।

उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट है ॥ १७ ॥

इस उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट होती है। अनुत्कृष्ट क्षेत्र-वेदनाविकल्पोंमें उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामी प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवली हैं, क्योंकि, अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंमें इससे और कोई बड़ा क्षेत्र नहीं है। यह क्षेत्र उत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा विशेष हीन है, क्योंकि, इस क्षेत्रमें जीवके प्रदेश वातवलयोंके भीतर नहीं रहते। सबसे बड़ी अवगाहना द्वारा कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवली तदनन्तर अनुत्कृष्ट क्षेत्रस्थानके स्वामी हैं। विशेष इतना है कि पूर्वके अनुत्कृष्ट क्षेत्रसे द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यातगुणा हीन है, क्योंकि, संख्यात सूच्यंगुल बाहल्य रूप जगप्रतर प्रमाण कपाटक्षेत्रकी अपेक्षा मंथक्षेत्र असंख्यातगुणा पाया जाता है। एक प्रदेश कम उत्कृष्ट विष्कम्भ युक्त अवगाहनासे कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवली तृतीय क्षेत्रके स्वामी हैं। विशेष इतना है कि द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा तृतीय अनुत्कृष्ट क्षेत्र विशेष हीन है, क्योंकि, इसमें पूर्वके क्षेत्रकी अपेक्षा एक जगप्रतर मात्र क्षेत्रकी हानि देखी जाती है। दो प्रदेश कम उत्कृष्ट विष्कम्भसे कपाटको प्राप्त केवली चतुर्थ अनुत्कृष्ट क्षेत्रके स्वामी

१ अ-काप्रत्योः 'समुहदस्से त्ति' इति पाठः।

अणंतरपुव्विल्लखेत्तं पेक्खिदूण विसेसहीणं दोजगपदरमेत्तेण । एवं सांतरकमेण खेत्तसामित्तं परूवेदव्वं जाव आहुट्ठरयणिउस्सेहओगाहणाए विक्खंभेणूणपंचधणुसद-पणुवीसुत्तरुस्सेह-ओगाहणविक्खंभमेत्तकवाडखेत्तवियप्पा त्ति । पुणो एदेण सव्वजहण्णपच्छिमक्खेत्तेण सरिस-मुत्तराहिमुहकवाडक्खेत्तं घेत्तूण पुणो तत्तो एगेगपदेसं विक्खंभम्मि ऊणं करिय कवाडं णेदूण खेत्तवियप्पाणं सामित्तं परूवेदव्वं जाव उत्तराभिमुहकेवलिजहण्णकवाडक्खेत्तं पत्तो त्ति । पुणो तदणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्सखेत्तसामी महामच्छो तिण्णिविग्गहकंदएहि सत्तमपुढविमारणं-तियसमुग्घादेण समुहदो सामी, अण्णस्स कवाडजहण्णखेत्तादो ऊणस्स अणुक्कस्सखेत्तस्स अणुवलंभादो । णवरि कवाडजहण्णक्खेत्तादो महामच्छस्स उक्कस्समसंखेज्जगुणहीणं ।

एत्तो प्पहुडि उवरिमक्खेत्तवियप्पाणं घादिकम्माणं भणिदविहाणेण सामित्तपरूवणं कायव्वं । दंडगयकेवलिखेत्तट्ठाणाणि संखेज्जपदरंगुलमेत्ताणि महामच्छक्खेत्ततो णिवदंति त्ति पुध ण परूविदाणि । केवली दंडं करेमाणो सव्वो सरीरतिगुणबाहल्लेणं [ण] कुणदि, वेयणाभावादो । को पुण सरीरतिगुणबाहल्लेण दंडं कुणइ? पलियंकेण णिसण्णकेवली ।

हैं । यह भी अव्यवहित पूर्वके क्षेत्रकी अपेक्षा दो जगप्रतर मात्रसे विशेष हीन है । इस प्रकार सान्तरक्रमसे साढ़े तीन रत्नि उत्सेध युक्त अवगाहनाके विष्कम्भसे हीन पांच सौ पच्चीस धनुष उत्सेध युक्त अवगाहनाके विष्कम्भ प्रमाण कपाटक्षेत्रके विकल्पों तक क्षेत्रस्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । फिर इस सर्वजघन्य अन्तिम क्षेत्रके सदृश उत्तराभिमुख कपाटक्षेत्रको ग्रहण करके पश्चात् उसके विष्कम्भमें एक एक प्रदेश कम करके कपाटसमुद्घातको लेकर उत्तराभिमुख केवलीके जघन्य कपाटक्षेत्रको प्राप्त होने तक क्षेत्रविकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । पुनः तीन विग्रहकाण्डकों द्वारा सातवीं पृथिवीमें मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त महामत्स्य तदनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी है, क्योंकि, उक्त जघन्य कपाटक्षेत्रसे हीन और दूसरा अनुत्कृष्ट क्षेत्र पाया नहीं जाता । विशेष इतना है कि जघन्य कपाटक्षेत्रसे महामत्स्यका उत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यातगुणा हीन है ।

अब यहांसे आगे पूर्वोक्त घातिकर्मोंके विधानसे उपरिम क्षेत्रविकल्पोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । दण्डगत केवलीके संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रस्थान चूंकि महामत्स्यक्षेत्रके भीतर आजाते हैं, अतः उनकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गई है । दण्डसमुद्घातको करनेवाले सभी केवली शरीरसे तिगुणे बाहल्यसे उक्त समुद्घातको नहीं करते, क्योंकि, उनके वेदनाका अभाव है ।

शंका – तो फिर कौनसे केवली शरीरसे तिगुणे बाहल्यसे दण्डसमुद्घातको करते हैं ?

समाधान— पल्यंक आसनसे स्थित केवली उक्त प्रकारसे दण्डसमुद्घातको करते हैं ।

---

१ अ-काप्रत्योः 'बाहिल्लेण' इति पाठः ।

एदेसिं खेत्ताणं सामिजीवाणं परूवणे कीरमाणे छअणिओगद्दाराणि हवंति। तत्थ परूवणाए वेयणीयसव्वक्खेत्तवियप्पेसु अत्थि जीवा। परूवणा गदा।

उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा केत्तिया ? संखेज्जा। एवं णेयव्वं जाव कवाडगदकेवलि-जहण्णक्खेत्तवियप्पे त्ति। उवरि महामच्छउक्कस्सखेत्तप्पहुडि तसपाओग्गक्खेत्तेसु असंखेज्जा। वणप्फदिकाइयपाओग्गेसु अणंता। एवं पमाणपरूवणा गदा। सेडिपरूवणा ण सक्कदे णेदुं, पवाइज्जंतुवदेसाभावादो।

अवहारो उच्चदे— उक्कस्सट्ठाणजीवपमाणेण सव्वट्ठाणजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? अणंतेण कालेण। एवं णेदव्वं जाव तसकाइय-पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयपाओग्गट्ठाणे त्ति। सुहुम-बादरवणप्फदिकाइयपाओग्गट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? असंखेज्जेण।

भागाभागो वुच्चदे— उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो। जहण्णए ट्ठाणे सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। अजहण्णुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जा भागा। भागाभागपरूवणा गदा।

इन क्षेत्रोंके स्वामी जीवोंकी प्ररूपणा करनेमें छह अनुयोगद्वार हैं। उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी अपेक्षा वेदनीय कर्मके सब क्षेत्रविकल्पोंमें जीव हैं। प्ररूपणा समाप्त हुई।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव कितने हैं ? संख्यात हैं। इस प्रकार, कपाटसमुद्घातगत केवलीके जघन्य क्षेत्रविकल्प तक ले जाना चाहिये। आगे महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे लेकर त्रस योग्य क्षेत्रोंमें असंख्यात जीव हैं। वनस्पतिकायिक योग्य क्षेत्रोंमें अनन्त जीव हैं। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा बतलाना शक्य नहीं है, क्योंकि, उसके विषयमें प्रवाह स्वरूपसे प्राप्त हुए परम्परागत उपदेशका अभाव है।

अवहारकी प्ररूपणा करते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं ? वे उक्त प्रमाणसे अनन्त कालमें अपहृत होते हैं। इस प्रकार त्रसकायिक, पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक और वायुकायिक योग्य स्थानों तक ले जाना चाहिये। सूक्ष्म व बादर वनस्पतिकायिक योग्य स्थानों सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात कालमें अपहृत होते हैं।

भागाभागकी प्ररूपणा करते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं। जघन्य स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। अजघन्योत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं। भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई।

अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो— सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा। जहण्णए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा। अजहण्णअणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा। अजहण्णए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया।

एवमाउव–णामा–गोदाणं ॥ १८ ॥

जहा वेदणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्सक्खेत्तपरूवणा कदा तहा आउव-णामा-गोदाणं पि खेत्तपरूवणं कायव्वं, विसेसाभावादो। एवमुक्कस्साणुक्कस्सखेत्तपरूवणा समत्ता।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १९ ॥

जहण्णपदणिद्देसो सेसपदपडिसेहफलो। णाणावरणीयणिद्देसो सेसकम्मपडिसेहफलो। खेत्तणिद्देसो दव्वादिपडिसेहफलो। कस्से त्ति देव-णेरइयादिविसयपुच्छा।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स तिसमयआहारयस्स तिसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा ॥ २० ॥

अल्पबहुत्वको कहते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे जघन्य स्थानमें जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं।

इसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट वेदनाक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये ॥ १८ ॥

जिस प्रकार वेदनीय कर्मके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके भी उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार उत्कृष्ट-अनुत्कृष्टक्षेत्रप्ररूपणा समाप्त हुई।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १९ ॥

जघन्य पदका निर्देश शेष पदोंके प्रतिषेधके लिये किया है। ज्ञानावरणीयका निर्देश शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेवाला है। क्षेत्रका निर्देश द्रव्यादिकका प्रतिषेध करता है। 'किसके होती है' इस निर्देशसे देव व नारकी आदि विषयक पृच्छा प्रगट की गई है।

अन्यतर सूक्ष्म निगोद जीव लब्ध्यपर्याप्तक, जो कि त्रिसमयवर्ती आहारक है, तद्भवस्थ होनेके तृतीय समयमें वर्तमान है, जघन्य योगवाला है, और शरीरकी सर्वजघन्य अवगाहनामें वर्तमान है; उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ २० ॥

---

१ अ-काप्रत्योः 'जीवा' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते।

२ सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि। अंगुलअसंखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे॥ गो. जी. ९७. क. ११-५.

सुहुमणिगोदा अणंता अत्थि, तत्थ एक्कस्स गहणट्ठमण्णदरस्स सुहुमणिगोद-जीवस्से त्ति उत्तं। तत्थ पज्जत्तणिराकरणट्ठमपज्जत्तस्से त्ति उत्तं। पज्जत्तणिराकरणं किमट्ठं कीरदे ? अपज्जत्तजहण्णोगाहणादो पज्जत्तजहण्णोगाहणाए बहुत्तुवलंभादो। विग्गहगदीए जहण्णोगाहणा वि पुव्विल्लोगाहणाए सरिसा त्ति तप्पडिसेहट्ठं तिसमयआहारयस्से त्ति भणिदं। उजुगदीए उप्पण्णो त्ति जाणावणट्ठं तिसमयतब्भवत्थस्से त्ति भणिदं। एग-दो-तिण्णि वि विग्गहे कादूण उप्पाइय छसमयतब्भवत्थस्स जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण, पंचसु समएसु असंखेज्जगुणाए सेडीए वड्ढिदेण एगंताणुवड्ढिजोगेण वड्ढमाणस्स बहुओगाहणप्पसंगादो[1]। पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णक्खेत्तसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण, तत्थ आयदचउरस्सक्खेत्तागारेण[2] ट्ठिदम्मि ओगाहणाए त्थोवत्ताणुववत्तीदो। उजुगदीए उप्पण्णपढमसमयम्मि आयदचउरंससरूवेण जीवपदेसा चिट्ठंति त्ति कधं णव्वदे ? पवाइ-

सूक्ष्म निगोदिया जीव अनन्त हैं, उनमेंसे एकका ग्रहण करनेके लिये 'अन्यतर सूक्ष्म निगोद जीवके' ऐसा कहा है। उनमें पर्याप्तका निराकरण करनेके लिये 'अपर्याप्तके' ऐसा निर्देश किया है।

शंका— पर्याप्तका निराकरण किसलिये किया जा रहा है ?

समाधान— अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे चूंकि पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना बहुत पायी जाती है, अतः उसका निषेध किया गया है।

विग्रहगतिमें चूंकि जघन्य अवगाहना भी पूर्व अवगाहनाके सदृश है, अतः उसका निषेध करनेके लिये 'त्रिसमयवर्ती आहारक' ऐसा कहा है। ऋजुगतिसे उत्पन्न हुआ, इस बातके ज्ञापनार्थ 'तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ' ऐसा कहा है।

शंका— एक, दो अथवा तीन भी विग्रह करके उत्पन्न कराकर षष्ठसमयवर्ती तद्भवस्थ निगोद जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पांच समयोंमें असंख्यातगुणित श्रेणिसे वृद्धिको प्राप्त हुए एकान्तानुवृद्धियोगसे बढ़नेवाले उक्त जीवके बहुत अवगाहनाका प्रसंग आता है।

शंका— प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए निगोद जीवके जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उस समय आयतचतुरस्र क्षेत्रके आकारसे स्थित उक्त जीवमें अवगाहनाका स्तोकपना बन नहीं सकता।

शंका— ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयतचतुरस्र स्वरूपसे जीवप्रदेश स्थित रहते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

१ तर्हि ऋजुगत्यागतस्यैव कथमुक्तम् ? विग्रहगतौ योगवृद्धियुक्तत्वेन तदवगाहवृद्धिसम्भवात्। गो. जी. (जी. प्र.) ९४.
२ प्रतिषु 'चउरस्सं खेत्तागारेण' इति पाठः।

ज्जंतुवदेसादो। बिदियसमयआहारय-बिदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण, तत्थ समचउरंससरूवेण जीवपदेसाणमवट्ठाणादो। बिदियसमए विक्खंभसमो आयामो जीवपदेसाणं होदि त्ति कुदो णव्वदे? परमगुरूवदेसादो। तदियसमयआहारयस्स तदियसमयतब्भवत्थस्स चेव जहण्णक्खेत्तसामित्तं किमट्ठं दिज्जदे? ण एस दोसो, चउरंसखेत्तस्स चत्तारि वि कोणे संकोडिय वट्टुलागारेण जीवपदेसाणं तत्थावट्ठाणदंसणादो[1]। तत्थ वट्टुलागारेण जीवावट्ठाणं कधं णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो। उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जहण्णउववादजोग-जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगेहि चेव तिसु वि समएसु पयट्टो त्ति जाणावणट्ठं जहण्णजोगिस्से त्ति भणिदं। तदियसमए अजहण्णाओ वि ओगाहणाओ अत्थि त्ति तप्पडिसेहट्ठं सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्से त्ति भणिदं। एवंविहविसेसणेहि विसेसि-

समाधान — वह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है।

शंका — द्वितीय समयवर्ती आहारक और तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्तमान जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते?

समाधान — नहीं, क्योंकि, उस समयमें भी जीवप्रदेश समचतुरस्र स्वरूपसे अवस्थित रहते हैं।

शंका — द्वितीय समयमें जीवप्रदेशोंका विष्कम्भके समान आयाम होता है, यह कहांसे जाना जाता है?

समाधान — वह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

शंका — तृतीय समयवर्ती आहारक और तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ निगोद जीवके ही जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना किसलिये देते हैं?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उस समयमें चतुरस्र क्षेत्रके चारों ही कोनोंको संकुचित करके जीवप्रदेशोंका वर्तुल अर्थात् गोल आकारसे अवस्थान देखा जाता है।

शंका — उस समय जीवप्रदेश वर्तुल आकारसे अवस्थित होते हैं, यह कैसे जाना जाता है।

समाधान — वह इसी सूत्रसे जाना जाता है।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जघन्य उपपादयोग और जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगसे ही तीनों समयोंमें प्रवृत्त होता है, इस बातको जतलानेके लिये 'जघन्य योगवालेके' ऐसा सूत्रमें निर्देश किया है। तृतीय समयमें अजघन्य भी अवगाहनायें होती हैं, अतः उनका प्रतिषेध करनेके लिये 'शरीरकी सर्वजघन्य अवगाहनमें वर्तमान' यह कहा है। इन विशेषणोंसे विशेषताको प्राप्त हुए सूक्ष्म निगोद

1 ननूत्पन्नतृतीयसमये एव सर्वजघन्यावगाहनं कथं सम्भवेत् इति चेत्- प्रथमसमये निगोदजीवशरीरस्यायतचतुरस्रत्वात् द्वितीयसमये समचतुरस्रत्वात् तृतीयसमये कोणापनयनेन वृत्तत्वात् तदेव [तदैव] तदवगाहनस्याल्पत्वसम्भवात्। गो. जी (जी. प्र.) ९४.

यस्स सुहुमणिगोदजीवस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा । एत्थ उवसंहारो उच्चदे— एगउस्सेहघणंगुलं ठविय तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे णाणावरणीयस्स जहण्णक्खेत्तं होदि ?

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २१ ॥

तत्तो जहण्णक्खेत्तादो वदिरित्ता खेत्तवेयणा अजहण्णा । सा च बहुपयारा । तासिं सामित्तपरूवणं कस्सामो । तं जहा— पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं विरलेदूण घणंगुलं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं पावदि । पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तरोगाहणाए तत्थेव ट्ठिदो अजहण्ण-जहण्णक्खेत्तस्स सामी । एत्थ काए वड्ढीए वड्ढिदो बिदियक्खेत्तवियप्पो ? असंखेज्जभागवड्ढीए[1] । तं जहा— जहण्णोगाहणं हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एगागासपदेसो पावदि । पुणो एत्तियमेत्तेण अहियमुवरिमएगरूवधरिदमिच्छामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणाए सरिसच्छेदं कादूण सोहिदे अजहण्ण-जहण्णोगाहणाए भागहारो होदि ।

जीवके ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रसे जघन्य होती है । यहां उपसंहार कहते हैं— एक उत्सेधघनांगुलको स्थापित करके तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर ज्ञानावरणीयका जघन्य क्षेत्र होता है ।

उससे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ २१ ॥

उससे अर्थात् जघन्य क्षेत्रसे भिन्न क्षेत्रवेदना अजघन्य है । वह अनेक प्रकार है । उन बहुविध क्षेत्रवेदनाओंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— पल्योपमके असंख्यातवें भागका विरलन करके घनांगुलको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवकी जघन्य अवगाहना प्राप्त होती है । पश्चात् इसके आगे एक प्रदेश अधिक अवगाहनासे वहां (निगोद पर्यायमें) ही स्थित जीव अजघन्य क्षेत्रवेदनाके जघन्य स्थानका स्वामी होता है ।

शंका— यहां द्वितीय क्षेत्रविकल्प कौनसी वृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत हुआ है ?

समाधान— वह असंख्यातभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत हुआ है । वह इस प्रकारसे— जघन्य अवगाहनाका नीचे विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक आकाशप्रदेश प्राप्त होता है । अब इतने मात्रसे अधिक उपरिम एक रूपधरित राशिकी चूंकि इच्छा है, अतः एक रूपसे अधिक अधस्तन विरलनमें यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन राशिमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करके लब्धको समच्छेद करके उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर अजघन्य जघन्य अवगाहनाका भागहार होता है ।

---

1 अवरुवरि इगिपदेसे जुदे असंखेज्जभागवड्ढीए । आदी णिरंतरमदो एगेगपदेसपरिवड्ढी ॥ गो. जी. १०२.

जहण्णखेत्तस्सुवरि दोआगासपदेसे[1] वड्डिय ट्ठिदो बिदियअजहण्णखेत्तस्स सामी[2]। एत्थ वि असंखेज्जभागवड्डी चेव। तं जहा— हेट्ठिमविरलणाए दुभागेण रूवाहिएण उवरिमविरलणं खंडिय तत्थ एगखंडेण उवरिमविरलणाए अवणिदे बिदियक्खेत्तभागहारो होदि। तिपदेसुत्तरजहण्णोगाहणाए वट्टमाणो जीवो तदियखेत्तसामी। एत्थ वि भागहारपरिहाणी पुव्वं व कायव्वा। णवरि हेट्ठिमविरलणाए तिभागो रूवाहियो उवरिमविरलणाए भागहारो होदि। एवमेगेगागासपदेसं वड्ढाविय णेदव्वं जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तागासपदेसा वड्डिदा त्ति। एत्थ भागहाराणयणं उच्चदे— जहण्णपरित्तासंखेज्जेणोवट्टिदहेट्ठिमविरलणाए रूवाहियाए उवरिमविरलणमोवट्टिय तत्थुवलद्धे तत्थेव अवणिदे तदित्थखेत्तभागहारो होदि। एवं पदेसेसु एगादिएगुत्तरकमेण वड्डमाणेसु केत्तिए अद्धाणे गदे उवरिमविरलणाए एगरूवपरिहाणी[3] लब्भदे ? रूवूणुवरिमविरलणाए जहण्णोगाहणाए खंडिदाए तत्थ एगखंडमेत्तेसु अजहण्णखेत्तवियप्पेसु अदिक्कंतेसु एगरूवपरिहाणी लब्भदि। तं जहा— रूवूणुवरिमविरलणं हेट्ठा विरलिय जहण्णखेत्तं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि वड्डिरूवाणि पावेंति। पुणो एदाणि उवरि दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं उच्चदे— रूवाहिय-

जघन्य क्षेत्रके ऊपर दो आकाशप्रदेशोंको बढ़ाकर स्थित जीव द्वितीय अजघन्य क्षेत्रका स्वामी होता है। यहां भी असंख्यातभागवृद्धि ही है। यथा— अधस्तन विरलनके रूपाधिक द्वितीय भागसे उपरिम विरलन राशिको खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डको उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर द्वितीय क्षेत्रका भागहार होता है।

तीन प्रदेश अधिक जघन्य अवगाहनामें रहनेवाला जीव तृतीय क्षेत्रका स्वामी है। यहांपर भी भागहारकी हानिको पहिलेके समान ही करना चाहिये। विशेष इतना है कि अधस्तन विरलनका रूपाधिक तृतीय भाग उपरिम विरलनका भागहार होता है। इस प्रकार एक एक आकाश प्रदेशको बढ़ाकर जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण आकाशप्रदेशोंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिये। यहां भागहार लानेकी विधि कहते हैं— जघन्य परीतासंख्यातसे अपवर्तित रूपाधिक अधस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनको अपवर्तित करके जो वहां उपलब्ध हो उसे उसीमेंसे घटा देनेपर वहांके क्षेत्रका भागहार होता है।

शंका— इस प्रकार एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे प्रदेशोंके बढ़नेपर कितना अध्वान आनेपर उपरिम विरलनमें एक रूपकी हानि पायी जाती है ?

समाधान— रूप कम उपरिम विरलनसे जघन्य अवगाहनाको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण अजघन्य क्षेत्रके विकल्पोंके बीत जानेपर एक रूपकी हानि पायी जाती है। वह इस प्रकारसे— रूप कम उपरिम विरलनको नीचे विरलित कर जघन्य क्षेत्रको समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्रति वृद्धिरूप प्राप्त होते हैं। अब इनको ऊपर देकर समकरण करते समय हीन रूपोंके प्रमाणको

१ अ-काप्रत्योः '- पदेसो' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः '- अजहण्णखेत्तस्सुवरि सामी' इति पाठः।
३ अ-काप्रत्योः 'एगरूवपरिहाणी', ताप्रतौ 'एग [रू] वपरिहाणी' इति पाठः।

विरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवमागच्छदि । तम्मि उवरिमविरलणाए अवणिदे तदित्थखेत्तवियप्पभागहारो होदि । एवं गंतूण जहण्णोगाहणं[1] जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडे वड्डिदे वि असंखेज्जभागवड्डी चेव । एत्थ समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणयणं उच्चदे— रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तद्धाणम्मि जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि आगच्छंति । पुणो ताणि उवरिमविरलणाए अवणिदे तदित्थअजहण्णखेत्तट्ठाणभागहारो होदि । पुणो एदिस्से ओगाहणाए उवरि[2] पदेसुत्तरं वड्डिय ट्ठिदजीवो तदणंतरउवरिमखेत्तसामी होदि । एत्थ वि असंखेज्जभागवड्डी चेव, उक्कस्ससंखेज्जेण जहण्णोगाहणं[3] खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तपदेसाणं वड्डीए अभावादो[4] । एवं गंतूण उक्कस्ससंखेज्जेण जहण्णोगाहणं खंडिय तत्थेगखंडे जहण्णोगाहणाए उवरि वड्डिदे संखेज्जभागवड्डीए आदी असंखेज्जभागवड्डीए परिसमत्ती च जादा[5] ।

एत्थ भागहारो उच्चदे । तं जहा— उक्कस्ससंखेज्जं विरलिय उवरिमएगरूव-

कहते हैं— रूपाधिक विरलन राशि प्रमाण अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक रूप आता है। उसको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर वहांके क्षेत्रविकल्पका भागहार होता है। इस प्रकार जाकर जघन्य अवगाहनाको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड मात्र वृद्धि हो जानेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही रहती है।

यहां समकरण करते समय हीन रूपोंके लानेके विधानको कहते हैं— रूपाधिक जघन्य परीतासंख्यात मात्र अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर हीन रूपोंका प्रमाण आता है। उनको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर वहांके अजघन्य क्षेत्रस्थानका भागहार होता है। पुनः इस अवगाहनाके ऊपर एक प्रदेश अधिक क्रमसे बढ़कर स्थित जीव तदनन्तर उपरिम क्षेत्रका स्वामी होता है। यहां भी असंख्यातभागवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, उत्कृष्ट संख्यातसे जघन्य अवगाहनाको खण्डित कर उसमें एक खण्ड मात्र प्रदेशोंकी वृद्धिका अभाव है। इस प्रकार जाकर जघन्य अवगाहनाको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड मात्र जघन्य अवगाहनाके ऊपर वृद्धि हो चुकनेपर संख्यातभागवृद्धिकी आदि और असंख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है।

यहां भागहार कहते हैं। वह इस प्रकार है— उत्कृष्ट संख्यातका विरलन

१ अ-काप्रत्योः ' जहण्णोगाहणा ', ताम्रतौ ' जहण्णोगाहणा (णं) ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' उवरिम ' इति पाठः ।
३ काप्रतौ ' जहण्णोगाहणा ' इति पाठः । ४ प्रतिषु ' वड्डी-अभावादो '; ताम्रतौ ' वड्डिअभावादो ' इति पाठः ।
५ अवरोग्गाहणमाणे जहण्णपरिमिदअसंखरासिहिदे । अवरस्सुवरिं उड्ढे जेट्ठमसंखेज्जभागस्स ॥ गो. जी. १०३.

परिदं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि वड्ढिपदेसपमाणं पावदि । पुणो एदं उवरिम-रूवधरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे णट्ठरूवाणं पमाणं उच्चदे— रूवाहियहेट्ठिमविरलण-मेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहीणरूवोवलद्धी होदि। पुणो लद्धरूवेसु उवरिम-विरलणाए अवणिदेसु तदित्थभागहारो होदि। एत्तो प्पहुडि उवरि संखेज्जभागवड्ढी चेव होदूण गच्छदि जाव उवरिमविरलणाए अद्धं चेट्ठदे त्ति। तत्थ संखेज्जगुणवड्ढीए आदी संखेज्जभागवड्ढीए परिसमत्ती च जादो।

संपहि पुणरवि तदो प्पहुडि पदेसुत्तर-दुपदेसुत्तरकमेण खेत्तवियप्पेसु वड्ढमाणेसु जहण्ण-खेत्तमेत्तपदेसेसु वड्ढिदेसु तिगुणवड्ढी होदि। तिस्से ओगाहणाए भागहारो जहण्णोगाहण-भागहारस्स तिभागो होदि। तत्तो एग दोपदेसुत्तरादिकमेण जहण्णोगाहणमेत्तपदेसेसु वड्ढिदेसु चदुगुणवड्ढी होदि। तत्थ भागहारो जहण्णोगाहणाए भागहारस्स चदुभागो होदि। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्ससंखेज्जमेत्तो जहण्णोगाहणाए गुणगारो जादो त्ति। तिस्से ओगाहणाए पुण भागहारो जहण्णोगाहणाभागहारं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो होदि। पुणो

करके उपरिम एक रूपधरित राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलनरूपके प्रति वृद्धिगत प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर इसको उपरिम रूपधरित राशियोंपर देकर समकरण करते समय नष्ट रूपोंका प्रमाण कहा जाता है – रूपाधिक अधस्तन विरलन मात्र अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है, तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर परिहीन रूप प्राप्त होते हैं। पश्चात् प्राप्त रूपोंको उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर वहांका भागहार होता है। यहांसे लेकर ऊपर संख्यातभागवृद्धि ही होकर जाती है जब तक उपरिम विरलनका अर्ध भाग स्थित रहता है। वहां संख्यातगुणवृद्धिकी आदि और संख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है।

अब वहांसे लेकर फिर भी एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक क्रमसे क्षेत्रविकल्पोंकी वृद्धि होकर जघन्य क्षेत्र प्रमाण प्रदेशोंके बढ़ जानेपर तिगुणी वृद्धि होती है। उस अवगाहनाका भागहार जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारके तृतीय भाग प्रमाण होता है। पश्चात् एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे जघन्य अवगाहना मात्र प्रदेशोंकी वृद्धि होनेपर चतुर्गुणी वृद्धि होती है। वहां भागहार जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण होता है। इस प्रकार जघन्य अवगाहना सम्बन्धी गुणकारके उत्कृष्ट संख्यात मात्र हो जाने तक ले जाना चाहिये। उस अवगाहनाका भागहार, जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्डके बराबर होता है। पश्चात्

१ अप्रतौ 'विरलणरूवं परि वड्ढी' इति पाठः। २ गो. जी. १०६-७.

तिस्से उवरि पदेसुत्तर-दुपदेसुत्तरादिकमेण एगजहण्णोगाहणमेत्तपदेसेसु वड्ढिदेसु असंखेज्जगुणवड्ढीए आदी संखेज्जगुणवड्ढीए परिसमत्ती च होदि[1]। तिस्से ओगाहणाए जहण्णोगाहणभागहारे[2] जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो भागहारो होदि। पुणो एत्तोप्पहुडि उवरि पदेसुत्तर-दुपदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जगुणवड्ढीए गच्छमाणाए सुहुमणिगोदजहण्णोगाहणाए सुत्तमणिदआवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगारे पविट्ठे सुहुमवाउकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सओगाहणा होदि।

संपहि सुहुमणिगोदोगाहणं मोत्तूण वाउकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव सुहुमतेउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी सुहुवाउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सओगाहणा आदो[3] त्ति। पुणो तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो तं मोत्तूण सुहुमआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चउहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव सुहुमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी

उसके ऊपर एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे एक जघन्य अवगाहना मात्र प्रदेशोंके बढ़ जानेपर असंख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ और संख्यातगुणवृद्धिका अन्त होता है। उस अवगाहनाका भागहार, जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्डके बराबर होता है।

पश्चात् यहांसे लेकर आगे एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहनामें सूत्रोक्त आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारके प्रविष्ट हो जानेपर सूक्ष्म वायुकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश सूक्ष्म निगोद जीव लब्ध्यपर्याप्तककी अजघन्य-अनुत्कृष्ट अवगाहना होती है।

अब सूक्ष्म निगोद जीवकी अवगाहनाको छोड़कर और सूक्ष्म वायुकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म वायुकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी अजघन्य-अनुत्कृष्ट अवगाहनाके सूक्ष्म तेजकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके समान हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। तत्पश्चात् उसको छोड़कर और इसे ग्रहण करके प्रदेश अधिक क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म जलकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर उसको छोड़कर और सूक्ष्म जलकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक

१ गो. जी. १०८-९. २ प्रतिषु 'भागहार' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'आदो' इति पाठः।

जादा त्ति । पुणो तं मोत्तूण सुहुमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादि-कमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरवाउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाह-णाए सरिसी जादा त्ति । णवरि एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? परत्थाणगुणगारादो । पुणो तं मोत्तूण बादरवाउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरतेउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? बादरादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो[1] पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सुत्तवयणादो[2] । इमं मोत्तूण बादरतेउक्काइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरआउक्काइय[3]लद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । पुणो इमं मोत्तूण[4] बादरआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावे-दव्वं जाव बादरपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । पुणो

बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़ करके और सूक्ष्म पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर वायुकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, वह परस्थानगुणकार है । फिर उसको छोड़कर और वायुकायिक लब्ध्य-पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर तेजकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां भी गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि, बादरसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, ऐसा सूत्रवचन है । अब इसको छोड़कर और बादर तेजकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर जलकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये । पश्चात् इसको छोड़कर और बादर जलकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़कर और

१ ताप्रतौ 'बादरस्स गुणगारो' इति पाठः । २ क्षेत्रविधान ९८. सुहमेदरगुणगारो आवलि-पल्ला असंखभागो दु । सट्ठाणे सेढिगया अहिया तत्थेगपडिभागो ॥ गो. जी. १०१. ३ अ-काप्रत्योः 'वाउक्काइय', ताप्रतौ 'बा (आ) उ०' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'घेत्तूण', ताप्रतौ 'घे (मो) त्तूण' इति पाठः ।

तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरणिगोदलद्धि-अपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव णिगोदपदिट्ठिदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। [1]तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति[2]। एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि

इसे ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। पश्चात् उसे छोड़कर और इसको ग्रहण करके प्रदेशाधिकक्रमसे चार वृद्धियोंके द्वारा निगोदप्रतिष्ठित लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। अब उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर लब्ध्यपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहांपर भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारणका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये। अब उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा द्वीन्द्रिय लब्ध्य-पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहांपर भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये। अब उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके चार वृद्धियों द्वारा त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहांपर भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारण पहिलेके समान कहना चाहिये। अब उसको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहांपर भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारण इसका पहिलेके ही समान कहना चाहिये। पश्चात्

१ द्वीन्द्रियलब्ध्यपर्याप्तसम्बन्धी प्रबन्धोऽयं ताप्रतौ [ ] एतत्कोष्ठकान्तर्गतो दर्शितः। २ चतुरिन्द्रियलब्ध्यपर्याप्त-सम्बन्धी प्रबन्धोऽयं ताप्रतौ नोपलभ्यते।

वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव पंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति[1]। एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं।

पुणो पंचिंदियलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण[2] पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कुदो? बादरादो सुहुमस्स ओगाहणागुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति सुत्तणिद्देसादो[3]। पुणो सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदओगाहणाए सुहुमणिगोदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा सरिसा होदि। पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण एदं चेव ओगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं जाव अहियं होदि ताव वड्ढावेदव्वं। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदओगाहणा सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसा होदि। पुणो एदमोगाहणं[4] पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं पत्तं ति। पुणो एत्थ गुणगारो आवलियाए

उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहांपर भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारण इसका पहिलेके ही समान कहना चाहिये।

तत्पश्चात् पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म निगोद जीव निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, बादरसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है। अब सूक्ष्म निगोद जीव निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित अवगाहना सूक्ष्म निगोद निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश होती है। पश्चात् पूर्व अवगाहनाको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इसी अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण जब तक वह अधिक न हो जावे तब तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित अवगाहना सूक्ष्म निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवकी उत्कृष्ट अवगाहनाके समान होती है। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये। परन्तु यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग

१ पंचेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्तसम्बन्धी प्रबन्धोऽयं ताप्रतौ पुर्नार्लेखितः। २ 'पुणो पंचिंदियलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण' इत्येतस्य स्थाने ताप्रतौ 'तं मोत्तूण इमं घेत्तूण' इति पाठः। ३ क्षेत्रविधान ९७. ४ प्रतिषु 'एवमोगाहणं' इति पाठः।

असंखेज्जदिभागो। कुदो ? सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति सुत्तवयणादो[1]। एसो गुणगारो सुहुमेसु सव्वत्थ वत्तव्वो। पुणो इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण इमिस्से ओगाहणाए उवरि एदं चेव ओगाहणमावलियाए असंखेज्जभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं। एवं वड्ढाविदे सुहुमवाउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा होदि। पुणो पदेसुत्तरादिकमेण तं चेव ओगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्ते वड्ढिदे सुहुमवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पावदि। पुणो तत्थ पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं पत्तं ति। पुणो एदमोगाहणं पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमतेउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तं त्ति। पुणो एदं पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसा[2] जादा त्ति। पुणो पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि इमा ओगाहणा वड्ढावेदव्वा जाव आउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स[3] जहण्णो-

है, क्योंकि, सूक्ष्मसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रमें निर्देश किया गया है। यह गुणकार सूक्ष्म जीवोंमें सर्वत्र कहना चाहिये। पश्चात् इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इस अवगाहनाके ऊपर इसी अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ानेपर सूक्ष्म वायुकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना होती है। पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे उक्त अवगाहनाको ही आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वृद्धि हो जानेपर सूक्ष्म वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होती है। पश्चात् उसको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना न प्राप्त हो जावे। पश्चात् इसको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके समान नहीं हो जाती। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके

१ क्षेत्रविधान ९५. २ ताप्रतौ 'सरिसी' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अपज्ज०' इति पाठः।

वड्ढाए सरिसी जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्ता वड्ढावेदव्वा जाव सुहुमवाउक्काइयणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादि-कमेण असंखेज्जभागवड्ढीए इममोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमपुढविकाइय-णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादि-कमेण असंखेज्जभागवड्ढीए अप्पिदोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए अप्पिदोगाहण-मावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्ता वड्ढावेदव्वा जाव सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्ति-पज्जत्तयस्स[1] उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाह-

सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। फिर इस अवगाहनाके ऊपर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा इसी अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्ति-पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती । तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना

१ प्रतिषु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठः ।

णाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सुत्तवयणादो[1] । तदो इमा ओगाहणा[2] पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए अप्पिदोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण इमा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेग-खंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसा जादा त्ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सुत्तवयणादो । तदो पदेसुत्तरादिकमेण इमा ओगाहणा असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादो त्ति । तदो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेग-

चाहिये । यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, सूक्ष्मसे बादरका अवगाहनागुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रवाक्य है । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर वायुकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इस अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, बादरसे बादरका अवगाहनागुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इस अवगाहनाको असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर तेजकायिक निर्वृत्त्य-पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक भाग प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि

१ क्षेत्रविधान ९६. २ अ-काप्रत्योः 'ओगाहणाए', ताप्रतौ 'ओगाहणा [ए]' इति पाठः ।

खंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसा जादा त्ति। तदो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसा जादा त्ति। एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं। तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए इममोगाहणमावलियाए असंखेज्जभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरआउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए[1] ओगाहणाए सरिसा जादा त्ति। तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए अप्पिदोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो इमा ओगाहणा पदसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। पुणो पदेसुत्तरादिकमेण अप्पिदोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण

वह बादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारणकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा इस अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर जलकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यात भाग वृद्धि द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारणकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये। फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र इस अवगाहनाको

---

१ प्रतिषु ' उक्कस्सिया ' इति पाठः।

खंडिदेगखंडमेत्तमिमा ओगाहणा वड्ढावेदव्वा जाव बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिअपज्ज-त्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो पदेसुत्तरादिकमेण इमा ओगाहणा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादर-पुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरणिगोद-णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ गुणगारो पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो। पुणो पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरणिगोदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव बादरणिगोद-णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। तदो पदेसुत्तरादि-कमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। एत्थ ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। पुणो पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण

बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर निगोद निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है। तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा उसके निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। यहां अवगाहनागुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये

खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव णिगोदपदिट्ठिदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वा जाव णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चदुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

संपहि उस्सेहघणंगुलस्स भागहारो संखेज्जरूवमेत्तो जादो । उवरि एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा त्ति । एत्थ गुणगारो संखेज्जा समया । कुदो ? बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया त्ति सुत्तवयणादो । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । पुणो इमा

जब तक कि वह निगोदप्रतिष्ठित निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा उसके बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

अब उत्सेधघनांगुलका भागहार संख्यात रूपों प्रमाण हो जाता है । इसके आगे इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार संख्यात समय है, क्योंकि, बादरसे बादरका अवगाहनागुणकार संख्यात समय है, ऐसा सूत्रमें निर्देश है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर इस अवगाहनाको

ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। तदो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव बीइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव बादरवणप्फदि-काइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव पंचिंदियणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो वि एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। पुणो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि वड्डावेदव्वा जाव बेइंदियणिव्वत्ति-पज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति। तदो इमा ओगाहणा पदे-

---

एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर भी इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों

सुत्तरादिकमेण तीहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वा जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्ति-पज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा त्ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्ढीहि इमा ओगाहणा[1] वड्ढावेदव्वा जाव पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सो-गाहणाए सरिसी जादा त्ति ।

पुणो अण्णेगेण[2] विक्खंभुस्सेहेहि महामच्छसमाणेण महामच्छायामादो संखेज्जगुण-हीणायामेण मुहप्पदेसे वड्ढिदेगागासपदेसेण लद्धमच्छेण पुव्विल्लायामेण सह जोयणसहस्सस्स वेयणाए विणा मारणंतियसमुग्घादे कदे महामच्छोगाहणादो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरा होदि, मुहम्मि वड्ढिदएगागासपदेसेण अहियत्तुवलंभादो । पुणो एदेणेव लद्धमच्छेण मुहम्मि वड्ढिददोआगासपदेसेण जोयणसहस्समारणंतियसमुग्घादे कदे पुव्विल्लक्खेत्तादो [दो-] पदेसुत्तरवियप्पो होदि । एवमेदेण कमेण संखेज्जपदरंगुलमेत्ता आगासपदेसा वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदखेत्तेण पदेसुत्तरजोयणसहस्सस्स मारणंतियसमुग्घादे कदे[3] लद्धमच्छखेत्तं सरिसं होदि । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण मुहम्मि संखेज्जपदरंगुलाणि पुव्वं व वड्ढिय ट्ठिदखेत्तेण दुपदेसुत्तरजोयणसहस्सस्स कदमारणंतियसमुग्घादक्खेत्तं सरिसं होदि । एवं एदेण कमेण णेदव्वं जाव आयामो सादिरेयअद्धट्ठमरज्जुमेत्तो जादो त्ति । एदेण खेत्तेण

द्वारा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा इस अवगाहनाको पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये ।

फिर विष्कम्भ व उत्सेधकी अपेक्षा महामत्स्यके सदृश व महामत्स्यके आयामसे संख्यातगुणे हीन आयामवाले तथा मुखप्रदेशमें एक आकाशप्रदेशकी वृद्धिको प्राप्त हुए अन्य एक प्राप्त मत्स्यके द्वारा पूर्व आयामके साथ वेदनाके विना एक हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घात किये जानेपर महामत्स्यकी अवगाहनासे यह अवगाहना एक प्रदेश अधिक होती है, क्योंकि, वह मुखमें वृद्धिको प्राप्त हुए एक आकाशप्रदेशसे अधिक पायी जाती है । पश्चात् इसी प्राप्त मत्स्यके द्वारा मुखमें दो आकाश प्रदेशोंसे वृद्धिंगत होकर एक हजार योजन मारणान्तिक समुद्घात किये जानेपर पूर्वके क्षेत्रकी अपेक्षा [दो] प्रदेशोंसे अधिक विकल्प होता है । इस प्रकार इस क्रमसे संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण आकाशप्रदेशोंको बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित क्षेत्रसे एक प्रदेश अधिक एक हजार योजन मारणा-न्तिकसमुद्घात करनेपर प्राप्त मत्स्यका क्षेत्र समान होता है । पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे मुखमें पूर्वके समान संख्यात प्रतरांगुल बढ़कर स्थित क्षेत्रसे दो प्रदेश अधिक एक हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घात करनेवालेका क्षेत्र समान होता है । इस प्रकार इस क्रमसे आयामके साधिक साढ़े सात राजु प्रमाण हो

१ अ-काप्रत्योः 'इमाओ वड्ढीओ' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'अणेगेण' इति पाठः ।
३ प्रतिषु '-समुग्घादं कद-' इति पाठः ।

लोयणालीए वायव्वदिसादो तिण्णि विग्गहकंदयाणि कादूण मारणंतियसमुग्घादेण सत्तम-पुढवीणेरइएसु सेकाले उप्पज्जहिदि त्ति ट्ठिदस्स खेत्तं सरिसं होदि। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च अण्णेगो वेयणसमुग्घादेण तिगुणविक्खंभुस्सेहं काऊण मारणंतियसमुग्घादेण अद्धट्ठम-रज्जूणं णवमभागं गंतूण ट्ठिदो च ओगाहणाए सरिसा। पुणो वि पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण णिरंतर-सांतरकमेण पुव्वं व वड्ढावेदव्वं जाव आयामो अद्धट्ठमरज्जुमेत्तं पत्तो त्ति। एवं वड्ढाविदे णाणावरणीयस्स अजहण्णसव्वखेत्तवियप्पाणं सामित्तपरूवणा कदा होदि।

अथवा सित्थमच्छो चेव मारणंतियसमुग्घादेण तिण्णि विग्गहकंदयाणि कादूण सादिरेयअद्धट्ठमरज्जुआयामस्स[2] णेदव्वो। पासखेत्ते वड्ढाविज्जमाणे एक्कसराहेण पासम्मि वड्ढिदअद्धट्ठमरज्जूओ पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तमायामम्मि अवणिय सरिसं कादूण पुणो सांतर-णिरंतरकमेण ऊणक्खेत्तं वड्ढाविदव्वं। एवं पुणो पुणो पासखेत्तं[3] वड्ढाविय पुव्विल्लखेत्तेण सरिसं करिय पुणो ऊणवखेत्तं वड्ढाविय णेदव्वं जाव महामच्छुक्कस्ससमुग्घादखेत्तेण सरिसं जादं ति। एवं णाणावरणीयस्स अजहण्णसामित्त-परूवणा कदा होदि।

आने तक ले जाना चाहिये। इस क्षेत्रसे, जो लोकनालीकी वायव्य दिशासे तीन विग्रहकाण्डक करके मारणान्तिकसमुद्घातसे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें अनन्तर समयमें उत्पन्न होनेके सन्मुख स्थित है उसका, क्षेत्र समान है। इस प्रकार बढ़कर स्थित तथा दूसरा एक वेदनासमुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको करके मारणान्तिकसमुद्घातसे साढ़े सात राजुओंके नौवें भागको प्राप्त होकर स्थित हुआ, ये दोनों जीव अवगाहनाकी अपेक्षा समान हैं। फिरसे भी पहिलेको छोड़कर और इसे ग्रहणकर निरन्तर-सान्तर क्रमसे आयामके साढ़े सात राजु प्रमाणको प्राप्त होने तक पहिलेके ही समान बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ानेपर ज्ञानावरणीयके सब अजघन्य क्षेत्रविकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त हो जाती है।

अथवा सिक्थ मत्स्यको ही मारणान्तिकसमुद्घातसे तीन विग्रहकाण्डकोंको कराकर साधिक साढ़े सात राजु आयामको प्राप्त कराना चाहिये। पार्श्वक्षेत्रके बढ़ाते समय एक साथ पार्श्वक्षेत्रमें वृद्धिको प्राप्त साढ़े सात राजुओंको प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्डप्रमाणको आयाममेंसे कम करके सदृश कर फिर सान्तर-निरन्तर क्रमसे कम किये गये क्षेत्रको बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बार बार पार्श्वक्षेत्रको बढ़ाकर पूर्व क्षेत्रके समान करके पश्चात् कम किये गये क्षेत्रको बढ़ाकर महामत्स्यके उत्कृष्ट समुद्घातक्षेत्रके सदृश हो आने तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार ज्ञानावरणीयके अजघन्य क्षेत्र सम्बन्धी स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त होती है।

---

१ प्रतिषु 'सिद्ध' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'सादिरेया अद्धट्ठमरज्जू आयामस्स' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'पासयत्तं' इति पाठः।

एत्थ खेत्तट्ठाणसामिजीवपरूवणाए परूवणा पमाणं सेडी अवहारो भागाभागं अप्पाबहुगमिदि छ अणिओगद्दाराणि। एदेसिं छण्णमणिओगद्दाराणमुक्कस्साणुक्कस्सट्ठाणेसु जहा परूवणा कदा तहा कायव्वा।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २२ ॥

जहा णाणावरणीयस्स जहण्णाजहण्णक्खेत्तपरूवणा कदा तहा सत्तण्णं कम्माणं कायव्वं, विसेसाभावादो। एवं सामित्तपरूवणा सगंतोक्खित्तसंख ट्ठाण-जीवसमुदाहारा समत्ता।

अप्पाबहुए त्ति। तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि— जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ २३ ॥

एत्थ तिण्णि चेव अणिओगद्दाराणि त्ति संखाणियमो किमट्ठं कीरदे? ण एस दोसो, अण्णेसिमेत्थ अणिओगद्दाराणं संभवाभावादो।

जहण्णपदे अट्ठण्णं पि कम्माणं वेयणाओ तुल्लाओ ॥ २४ ॥

यहां क्षेत्रस्थानोंके स्वामिभूत जीवोंकी प्ररूपणामें प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, ये छह अनुयोगद्वार हैं। इन छह अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंमें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जघन्य व अजघन्य क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २२ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके जघन्य व अजघन्य क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार अपने भीतर संख्या, स्थान और जीवसमुदाहारको रखनेवाली स्वामित्वप्ररूपणा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्व अधिकृत है। उसकी प्ररूपणामें ये तीन अनुयोगद्वार हैं— जघन्य पदमें, उत्कृष्ट पदमें और जघन्योत्कृष्ट पदमें ॥ २३ ॥

शंका— यहां तीन ही अनुयोगद्वार हैं, ऐसा संख्याका नियम किसलिये किया जाता है?

यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, और दूसरे अनुयोगद्वारोंकी यहां सम्भावना नहीं है।

जघन्य पदमें आठों ही कर्मोंकी वेदनायें समान हैं ॥ २४ ॥

कुदो ? तदियसमयआहारय-तदियसमयतब्भवत्थसुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयम्मि जहण्णजोगिम्हि[1] अट्ठण्णं पि कम्माणं जहण्णक्खेत्तुवलंभादो। तम्हा जहण्णपदप्पाबहुगं णत्थि त्ति भणिदं होदि।

उक्कस्सपदे णाणावरणीय-दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं वेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ थोवाओ ॥ २५ ॥

कधमेदेसिं तुल्लत्तं ? एगसामित्तादो। सादिरेयअद्धट्ठमरज्जूहि संखेज्जपदरंगुलेसु गुणिदेसु घादिकम्माणमुक्कस्सखेत्तं होदि। एदं थोवमुवरिभण्णमाणखेत्तादो त्ति उत्तं होदि।

वेयणीय-आउअ-णामा-गोदवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ २६ ॥

एत्थ गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो ? संखेज्जपदरंगुलगुणिद-जगसेडिमेत्तेण घादिकम्माणं उक्कस्सक्खेत्तेण घणलोगे भागे हिदे जगपदरस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो।

इसका कारण यह है कि तृतीय समयवर्ती आहारक और तद्भवस्थ होनेके तीसरे समयमें वर्तमान सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तक जीवके जघन्य योगके होनेपर आठों ही कर्मोंका जघन्य क्षेत्र पाया जाता है। इसीलिये जघन्य पदमें अल्पबहुत्व नहीं है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है।

उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय, इन कर्मोंकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही समान व स्तोक हैं ॥ २५ ॥

शंका— इन वेदनाओंके समानता कैसे है ?

समाधान— इसका कारण यह है कि उनका स्वामी एक है।

साधिक साढ़े सात राजुओं द्वारा संख्यात प्रतरांगुलोंको गुणित करनेपर घातिया कर्मोंका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है। यह आगे कहे जानेवाले क्षेत्रसे स्तोक है, यह सूत्रका अभिप्राय है।

वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र, इनकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही समान व पूर्वकी वेदनाओंसे असंख्यातगुणी हैं ॥ २६ ॥

यहां गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, घातिकर्मोंका जो उत्कृष्ट क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित जगश्रेणिके बराबर है उसका घनलोकमें भाग देनेपर जगप्रतरका असंख्यातवां भाग पाया जाता है।

---

1 ताप्रतौ 'जहण्णजोगेहि' इति पाठः।

जहण्णुक्कस्सपदेण अट्ठण्णं पि कम्माणं वेदणाओ खेत्तदो जहण्णियाओ तुल्लाओ थोवाओ ॥ २७ ॥

सुगममेदं।

णाणावरणीय-दंसणाणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ २८ ॥

एत्थ गुणगारो जगसेडीए असंखेज्जदिभागो। कुदो? अट्ठण्णं कम्माणं जहण्णक्खेत्तेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घादिकम्मुक्कस्सखेत्ते भागे हिदे[1] वि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण जगसेडीए खंडिदाए तत्थ एगखंडुवलंभादो।

वेयणीय-आउअ-णामा-गोदवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ २९ ॥

एत्थ गुणगारो सुगमो, पुव्वं परूविदत्तादो। एदमप्पाबहुगसुत्तं सव्वजीवसमासाओ अस्सिदूण ण परूविदं ति कट्टु संपहि सव्वजीवसमासाओ[2] अस्सिदूण णाणावरणादिकम्माणं जहण्णुक्कस्सखेत्तपरूवणट्ठमप्पाबहुगदंडयं भणदि—

जघन्योत्कृष्ट पदसे आठों ही कर्मोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य वेदनायें तुल्य व स्तोक हैं ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही तुल्य व पूर्वोक्त वेदनाओंसे असंख्यातगुणी हैं ॥ २८ ॥

यहां गुणकार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, आठों कर्मोंका जो जघन्य क्षेत्र अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है उसका घातिकर्मोंके उत्कृष्ट क्षेत्रमें भाग देनेपर भी अंगुलके असंख्यातवें भागसे जगश्रेणिको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड पाया जाता है।

वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र कर्मकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही तुल्य व पूर्वोक्त वेदनाओंसे असंख्यातगुणी हैं ॥ २९ ॥

यहां गुणकार सुगम है, क्योंकि, उसकी पहिले प्ररूपणा की जा चुकी है। यह अल्पबहुत्वसूत्र चूंकि सब जीवसमासोंका आश्रय करके नहीं कहा गया है, अत एव अब सब जीवसमासोंका आश्रय करके ज्ञानावरणीय आदि कर्मोंके जघन्य व उत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा करनेके लिये अल्पबहुत्वदण्डक कहा जाता है।

---

१ प्रतिषु 'हिदेसु' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सव्वा' इति पाठः।

एत्तो सव्वजीवेसु ओगाहणमहादंडओ कायव्वो भवदि[1] ॥ ३० ॥

सुगममेदं ।

सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा ॥ ३१ ॥

एगमुस्सेहघणंगुलं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे एदिस्से जहण्णोगाहणाए पमाणं होदि ।

सुहुमवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अपज्जत्ते त्ति उत्ते लद्धिअपज्जत्तस्स गहणं, णिव्वत्तिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए उवरि परूविज्जमाणत्तादो ।

सुहुमतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३३ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ लद्धिअपज्जत्तयस्सेव गहणं कायव्वं ।

सुहुमआउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

यहांसे आगे सब जीवसमासोंमें यह अवगाहनादण्डक करने योग्य है ॥ ३० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवकी जघन्य अवगाहना सबसे स्तोक है ॥ ३१ ॥

एक उत्सेधघनांगुलमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर इस जघन्य अवगाहनाका प्रमाण होता है ।

सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ३२ ॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । ' अपर्याप्त ' कहनेपर उससे लब्ध्यपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, निर्वृत्त्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना आगे कही जानेवाली है ।

उससे सूक्ष्म तेजकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३३ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । यहां लब्ध्यपर्याप्तकका ही ग्रहण करना चाहिये ।

उससे सूक्ष्म जलकायिक अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३४ ॥

---

१ अ-काप्रत्योः ' भणदि ' इति पाठः ।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ वि लद्धिअपज्जत्तयस्स गहणं कायव्वं ।

सुहुमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बादरवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥

एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरतेउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३७ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरआउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३८ ॥

एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥

गुणकार क्या है? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। यहां भी लब्ध्यपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ३५ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है।

उससे बादर वायुकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥३६॥

यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।

उससे बादर तेजकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥३७॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।

उससे बादर जलकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥३८॥

यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।

उससे बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है॥३९॥

एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४० ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

णिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४१ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४३ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४४ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

यहां भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर निगोद जीव अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥४०॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥४१॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ४२ ॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥४३॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ४४ ॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४५ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

पंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४६ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदाओ पुव्वं परूविदसव्वजहण्णोगाहणाओ लद्धिअपज्जत्ताणं ति घेत्तव्वाओ । संपहि उवरि भण्णमाणाओ णिव्वत्तिपज्जत्ताणं णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं [च] वेत्तव्वाओ ।

सुहुमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ४८ ॥

तस्सेव त्ति उत्ते णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स गहणं, अण्णेण सह पच्चासत्तीए अभावादो। केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । तस्स को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । केसिंचि आइरियाणमहिप्पाएण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ४५ ॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यतागुणी है ॥ ४६ ॥

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । ये पूर्व प्ररूपित सब जघन्य अवगाहनायें लब्ध्यपर्याप्तकोंकी ग्रहण करना चाहिये । अब आगे कही जानेवाली निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी और निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंकी समझना चाहिये ।

उससे सूक्ष्म निगोद जीव निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है॥४७॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ४८ ॥

'उसके ही' ऐसा कहनेपर निर्वृत्त्यपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, और किसी दूसरेके साथ प्रत्यासत्ति नहीं है । विशेषका प्रमाण कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग उसका प्रतिभाग है । किन्हीं आचार्योंके अभिप्रायसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ४९ ॥

एत्थ वि तस्सेवे त्ति वयणेण णिव्वत्तीए गहणं । केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमवाउक्काइयपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ५० ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ पज्जत्ते त्ति उत्ते णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स गहणमण्णस्सासंभवादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ५३ ॥

उसके ही पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ४९ ॥

यहांपर भी 'उसके ही' इस निर्देशसे निर्वृत्तिका ग्रहण किया गया है। विशेषका प्रमाण कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है।

उससे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥५०॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। यहां 'पर्याप्तक' ऐसा कहनेपर निर्वृत्तिपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, दूसरेकी सम्भावना नहीं है।

उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५१ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५२ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उससे सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५३ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो।

सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५८ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है।

उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५४ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५५ ॥

विशेष कितना है ? वह आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उससे सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५७ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स[1] असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६३ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६० ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६१ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६३ ॥

---

१ प्रतिषु ' पलिदोवमस्स ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६४ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ६५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥६६॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

विशेष कितना है । वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यात गुणी है ॥ ६८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स[1] जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७३ ॥

गुणकार कितना है ? वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७० ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ७१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥७२॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७३ ॥

---

१ प्रतिषु ' णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

बादरणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ७४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ७७ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपजत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

उससे बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥७४॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७५ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७६ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ७७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७८ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ८१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा[1] ॥ ८२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

उससे उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७९ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ८० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ८१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

---

१ प्रतिषु ' असंखेज्जगुणा ' इति पाठः ।

पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८६ ॥

[को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।]

बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८६ ॥

[गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।]

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८८ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-ज्जगुणा ॥ ८९ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-ज्जगुणा ॥ ९० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-ज्जगुणा ॥ ९१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्ज-गुणा ॥ ९२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्क-स्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

संपधि पुव्वपरूविदअप्पाबहुगम्मि गुणगारपमाणपरूवणट्ठं उवरिमसुत्ताणि भणदि–

सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥ ९५ ॥

सुहुमादो अण्णस्स सुहुमस्स ओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति जत्थ जत्थ भणिदं तत्थ तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो ।

सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९६ ॥

सुहुमेइंदियओगाहणादो जत्थ बादरोगाहणमसंखेज्जगुणमिदि भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति घेत्तव्वं ।

बादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

बादरोगाहणादो जत्थ सुहुमेइंदियओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो ।

उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

अब पहिले कहे गये अल्पबहुत्वमें गुणकारोंके प्रमाणको बतलानेके लिये आगेके सूत्र कहते हैं—

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ॥ ९५ ॥

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी है, ऐसा जहां जहां कहा गया है वहां वहां आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये ।

सूक्ष्मसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ॥ ९६ ॥

सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहनासे जहां बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है, वहां पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

बादरसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ॥ ९७ ॥

बादरकी अवगाहनासे जहां सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है वहां आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखे-ज्जदिभागो ॥ १८ ॥

एत्थ बादरा त्ति उत्ते जेण बादरणामकम्मोदइल्लाणं जीवाणं गहणं तेण बीइंदिया-दीणं पि गहणं होदि । बादरओगाहणादो अण्णा बादरओगाहणा जत्थ असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो ।

बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया ॥१९॥

बीइंदियादिणिव्वत्तिअपज्जत्तएसु तेसिं पज्जत्तएसु च ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया त्ति घेत्तव्वो । पुव्विल्लसुत्तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारे पत्ते तप्पडिसेहट्ट-मिदं सुत्तमारद्धं, तेण ण दोण्णं पि सुत्ताणं विरोहो । एदे एत्थ गुणगारा होंति त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो णव्वदे । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्था-पसंगादो । णाणावरणादीणमट्ठण्णं पि कम्माणमोगाहणपरूवणट्ठं खेत्ताणियोगद्दारे परूविज्ज-माणे जीवसमासाणमोगाहणपरूवणा किमट्ठमेत्थ परूविदा ? एत्थ परिहारो उच्चदे । एसो

बादरसे बादरका अवगाहनागुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ॥ १८ ॥

यहां सूत्रमें 'बादरसे' ऐसा कहनेपर चूंकि बादर नामकर्मके उदय युक्त जीवोंका ग्रहण है, अत: उनसे द्वीन्द्रियादिक जीवोंका भी ग्रहण होता है । बादरकी अवगाहनामें जहां दूसरे बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है वहां पल्योपमका असं-ख्यातवां भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये,

बादरसे दूसरे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है ॥ १९ ॥

द्वीन्द्रिय आदिक निर्वृत्त्यपर्याप्तकों और उनके पर्याप्तकोंमें अवगाहनाका गुण-कार संख्यात समय है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । पूर्व सूत्रसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारके प्राप्त होनेपर उसका प्रतिषेध करनेके लिये यह सूत्र रचा गया है । इसीलिये उपर्युक्त दोनों सूत्रोंमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— ये यहां गुणकार होते हैं, ऐसा कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह इसी सूत्रसे जाना जाता है । कारण कि एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता है, क्योंकि, वैसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है ।

शंका— ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोंकी अवगाहनाके प्ररूपणार्थ क्षेत्रानुयोग-द्वारकी प्ररूपणा करते समय जीवसमासोंकी अवगाहनाकी प्ररूपणा यहां किस-लिये की गई है ?

समाधान— यहां इस शंकाका उत्तर कहते हैं— यह अवगाहना सम्बन्धी

१ ताप्रतौ ' परूवणा [कीरदे] किमट्ठ- ' इति पाठः ।

ओगाहणप्पाबहुअदंडओ जीवसमासाणं ण परूविदो, अप्पाबहुअस्स असंबद्धप्पसंगादो। किंतु अट्ठण्णं पि कम्माणं जीवसमासेहिंतो अभेदेण लद्धजीवसमाससव्वएसाणमोगाहणप्पाबहुअदंडओ एसो परूविदो त्ति। किमट्ठमेसा अप्पाबहुगपरूवणा कदा? समुग्घादेण विणा णाणावरणादीणमट्ठण्णं पि कम्माणं सत्थाणोगाहणाणं जीवसमासभेदेण भिण्णाणं माहप्पपरूवणट्ठं कदा, णाणावरणादीणमजहण्ण-अणुक्कस्ससत्थाणखेत्तट्ठाणपरूवणट्ठं वा। एवमप्पाबहुगं सगंतोक्खित्तगुणगारहियारं समत्तं। एवं वेयणखेत्तविहाणे त्ति समत्तमणियोगद्दारं।
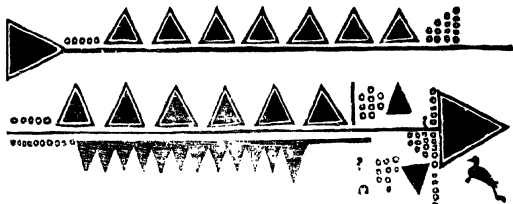
एदाओ सोलस उवरिमाओ ओगाहणाओ तिसमयआहारय-तिसमयतब्भवत्थलद्धि-अपज्जत्तयाणं जहण्णाओ घेत्तव्वाओ[1]। आदिप्पहुडि सत्तारस ओगाहणाओ पदेसुत्तरकमेण

अल्पबहुत्वदण्डक जीवसमासोंका नहीं कहा गया है, क्योंकि, वैसा करनेसे उक्त अल्पबहुत्वके असंगत होनेका प्रसंग आता है। किन्तु यह जीवसमासोंसे अभिन्न होनेके कारण जीवसमास संज्ञाको प्राप्त हुए आठों कर्मोंकी ही अवगाहनाका अल्पबहुत्व-दण्डक कहा गया है।

शंका— यह अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है?

समाधान— जीवसमासके भेदसे भेदको प्राप्त हुए ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोंकी समुद्घात रहित स्वस्थान अवगाहनाओंके माहात्म्यको बतलानेके लिये उक्त प्ररूपणा की गई है। अथवा, ज्ञानावरणादिक कर्मोंके अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्वस्थान क्षेत्रस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उपर्युक्त प्ररूपणा की गई है। इस प्रकार अपने भीतर गुणकार अधिकारको रखनेवाला अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इस प्रकार वेदनाक्षेत्रविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

ये उपरिम सोलह अवगाहनायें त्रिसमयवर्ती आहारक और त्रिसमयवर्ती तद्भवस्थ लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंकी जघन्य ग्रहण करना चाहिये। आदिसे लेकर सत्तरह

---

१ ताप्रतौ 'घेत्तव्वाओ०' इति पाठः। अवरमपुण्णं पढमं सोलं पुण पढम-बिदिय-तदियोली। पुण्णिदर-पुण्णियाणं जहण्णमुक्कस्समुक्कस्सं॥ गो. जी. ९९.

णिरंतरं वड्ढावेदव्वाओ। पुणो जत्थ जिस्से ओगाहणा समप्पदि तक्काले ठविदोगाहण-सलागासु रूवमवणेदव्वं, हेट्ठिल्लोगाहणाहि सह हेट्ठा णिरंतरमागंतूण उवरि गमणाभावादो। पुणो जत्थ जत्थ जहण्णोगाहणाओ पदंति तत्थ तत्थ पुव्वट्ठविदसलागासु रूवं पक्खिविदव्वं, हेट्ठिल्लोगाहणवियप्पसलागासु एदिस्से णत्थि त्ति[2]। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

एदाओ एक्कारस उक्कस्सोगाहणाओ उवरिमाओ णिव्वत्तिअपज्जत्ताणमुक्कस्साओ। एदाओ कस्स हवंति[3]? से काले पज्जत्तो होहदि त्ति ट्ठिदस्स होंति। लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा किण्ण गहिदा[4]? ण, लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणादो णिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए विसेसाहियभावेण विणा असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। हेट्ठिमाओ सुहुमणिगोदाओ[5] णिव्वत्तिपरंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदाणं घेत्तव्वाओ। ताओ कत्थ होंति त्ति उत्ते पज्जत्तयदपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णउववाद-एयंताणुवड्ढिजोगेहि आगंतूण जहण्णपरिणामजोगे जहण्णोगाहणाए च वट्टमाणस्स[6] एक्कारस वि होंति। पुणो णिव्वत्ति-

अवगाहनाओंको प्रदेश अधिक क्रमसे निरन्तर बढ़ाना चाहिये। फिर जहां जिसकी अवगाहना समाप्त होती है उस कालमें स्थापित अवगाहनाशलाकाओंमेंसे एक रूपको कम करना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाओंके साथ नीचे निरन्तर आकर ऊपर गमनका अभाव है। फिर जहां जहां जघन्य अवगाहनायें पड़ती हैं वहां वहां पूर्व स्थापित शलाकाओंमें एक रूपको मिलाना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाके विकल्पभूत शलाकाओंमें इसकी शलाका नहीं है। शेष जानकर कहना चाहिये।

ये उपरिम ग्यारह उत्कृष्ट अवगाहनायें निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट हैं।

शंका—ये किसके होती हैं?

समाधान—जो जीव अनन्तर कालमें पर्याप्त होनेवाला है उसके वे अवगाहनायें होती हैं।

शंका—लब्ध्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाको क्यों नहीं ग्रहण किया?

समाधान—नहीं, क्योंकि, लब्ध्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनासे निर्वृत्त्य-पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिकताके विना असंख्यातगुणी पायी जाती है।

सूक्ष्म निगोदसे लेकर अधस्तन [ग्यारह जघन्य अवगाहनायें] निर्वृत्ति-परम्परा पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवोंकी ग्रहण करना चाहिये।

शंका—वे अवगाहनायें कहांपर होती हैं?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि जो पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें वर्तमान है तथा जघन्य उपपादयोग और जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगसे आकर जघन्य परिणामयोग व जघन्य अवगाहनामें रहनेवाला है उसके वे ग्यारह ही अवगाहनायें होती हैं।

१ ताम्रतौ 'हेट्ठिल्लोगाहणादि-सह' इति पाठः। २ प्रतिषु 'एदिस्से णत्थि'; ताम्रतौ 'एदिस्से त्ति' इति पाठः। ३ अ-आ-प्रत्योः पाठोऽयम्। प्रतिषु 'हवदि', ताम्रतौ 'हवदि (होंति)' इति पाठः। ४ ताम्रतौ 'लहिदा' इति पाठः। ५ ताम्रतौ 'णिगोदाओ (ण)' इति पाठः। ६ ताम्रतौ 'वट्टामणस्स' इति पाठः।

पज्जत्ताणं हेट्ठिमाओ एक्कारस उक्कस्सओगाहणाओ उक्कस्सजोगिस्स उक्कस्सओगाहणाए[1] वट्टमाणस्स परंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स होंति । एदाओ ओगाहणाओ अप्पप्पणो जहण्णादो उक्कस्साओ विसेसाहियाओ होंति । सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणप्पहुडि सव्वजहण्णुक्कस्सोगाहणाओ जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तजहण्णोगाहणं पावेंति ताव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो । बीइंदियादिपज्जत्ताणं जहण्णोगाहणाओ अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तीयो[2] । बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा अणुंधरिम्हि होदि । तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा कुंथुम्हि होदि । चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा काणमच्छियाए । पंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा सित्थमच्छम्मि होदि[3] । तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा तिण्णिगाउअप्पमाणा । सा कम्हि होदि ? गोम्हिम्हि । चउरिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा चत्तारिगाउअप्पमाणा । सा कत्थ ? भमरम्मि । बीइंदियस्स पज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा बारस जोयणाणि । सा कत्थ ? संखम्मि । एइंदियउक्कस्सोगाहणा संखेज्जाणि जोयणाणि । सा कत्थ ? जोयणसहस्सायाम-

निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी अधस्तन ग्यारह उत्कृष्ट अवगाहनायें उत्कृष्ट अवगाहनामें वर्तमान व परम्परा पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उत्कृष्ट योगवाले जीवके होती हैं। ये अवगाहनायें अपने अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक होती हैं।

सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनासे लेकर सब जघन्य व उत्कृष्ट अवगाहनायें जब तक बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहनाको प्राप्त होती हैं तब तक अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र रहती हैं। द्वीन्द्रियादिक पर्याप्त जीवोंकी जघन्य अवगाहनायें अंगुलके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना अनुन्धरीके होती है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कुंथुके होती है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कानमक्षिकाके होती है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना सिक्थ मत्स्यके होती है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना तीन गव्यूति प्रमाण है। वह किसके होती है ? वह गोम्हीके होती है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना चार गव्यूति प्रमाण है। वह कहांपर होती है ? वह भ्रमरके होती है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना बारह योजन प्रमाण है। वह कहांपर होती है ? वह शंखके होती है। एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात योजन प्रमाण है। वह कहां होती है ? वह एक हजार योजन आयाम और एक योजन विस्तार-

१ ताप्रतौ 'ओगाहणाओ' इति पाठः। २ अप्रतौ 'असंखेज्जदिभागमेत्तीयो' इति पाठः। ३ बि-ति-च-पुण्णजहण्णं अणुंधरी-कुंथु-काणमच्छीसु । सिच्छयमच्छे विंदंगुलसंखं संखगुणिदकमा ॥ गो. जी. ९६.

जोयणविक्खंभपउमम्मि । पंचेंदियउक्कस्सोगाहणा संखेज्जाणि जोयणसहस्साणि । सा कत्थ ? पंचजोयणसदुस्सेह-तदद्धविक्खंभ-जोयणसहस्सायामम्मच्छम्मि[1] । एदेसिमपज्जत्ताणं तप्पडिभागो होदि ।

वाले पद्मके होती है । पंचेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात हजार योजन है । वह कहां होती है ? वह पांच सौ योजन प्रमाण उत्सेध, इससे आधे विस्तार और एक हजार योजन आयामसे युक्त मत्स्यके होती है । इनके अपर्याप्तोंकी अवगाहनायें उक्त प्रमाणके प्रतिभाग मात्र होती हैं ।

१ साहियसहस्समेकं वारं कोसूणमेकमेक्कं च । जोयणसहस्सदीहं पम्मे वियले महामच्छे ॥ गो. जी. ९५.

६
वेयणकालविहाणे

वेयणकालविहाणे त्ति। तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

एत्थ कालो सत्तविहो— णामकालो ट्ठवणकालो दव्वकालो सामाचारकालो अद्धाकालो पमाणकालो भावकालो चेदि। तत्थ णामकालो णाम कालसद्दो। ठवणकालो सो एसो त्ति बुद्धीए एगत्तं काऊण ठविददव्वं। दव्वकालो दुविहो— आगमदव्वकालो णोआगमदव्वकालो चेदि। कालपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वकालो। तत्थ णोआगमदव्वकालो तिविहो— जाणुगसरीरणोआगमदव्वकालो भवियणोआगमदव्वकालो जाणुगसरीर-भवियतव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो चेदि। जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वकाला सुगमा। तव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो दुविहो— पहाणो अप्पहाणो चेदि। तत्थ पहाणदव्वकालो णाम लोगागासपदेसपमाणो सेसपंचदव्वपरिणमणहेदुभूदो रयणरासि व्व पदेसपचयविरहियो अमुत्तो अणाइणिहणो। उत्तं च—

> कालो परिणामभवो परिणामो दव्वकालसंभूदो।
> दोण्णं एस सहाओ कालो खणभंगुरो णियदो ॥ १ ॥

वेदनकालविधान अनुयोगद्वार प्रारम्भ होता है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार जानने योग्य हैं ॥ १ ॥

यहां काल सात प्रकार है— नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, सामाचारकाल, अद्धाकाल, प्रमाणकाल और भावकाल। उनमें 'काल' शब्द नामकाल कहा जाता है। 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे अभेद करके स्थापित द्रव्य स्थापनाकाल है। द्रव्यकाल दो प्रकार है— आगमद्रव्यकाल और नोआगमद्रव्यकाल। कालप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यकाल है। नोआगमद्रव्यकाल तीन प्रकार है— ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यकाल, भावी नोआगमद्रव्यकाल और ज्ञायकशरीर-भाविव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकाल। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यकाल ये दोनों सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकाल दो प्रकार है— प्रधान और अप्रधान। उनमें जो प्रदेशोंकी अपेक्षा लोकके बराबर है, शेष पांच द्रव्योंके परिवर्तनमें कारण है, रत्नराशिके समान प्रदेशप्रचयसे रहित है, अमूर्त व अनादिनिधन है; वह प्रधान द्रव्यकाल है। कहा भी है—

समयादि रूप व्यवहारकाल चूंकि जीव व पुद्गलके परिणमनसे जाना जाता है, अतः वह उससे उत्पन्न कहा जाता है; और जीव व पुद्गलका परिणाम चूंकि द्रव्यकालके होनेपर होता है, अत एव वह द्रव्यकालसे उत्पन्न कहा जाता है। यह उन दोनों अर्थात् व्यवहार और निश्चय कालका स्वभाव है। इनमें व्यवहारकाल क्षणक्षयी और निश्चयकाल अविनश्वर है ॥ १ ॥

---

१ अ-काप्रत्योः 'ठवण', ताप्रतौ 'ट्ठवण (रयण)' इति पाठः। २ पंचा. १००.

ण य परिणमइ सयं सो ण य परिणामेइ अण्णमण्णेसिं ।
विविहपरिणामियाणं हवइ हु हेऊ सयं कालो[1] ॥ २ ॥
लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का ।
रयणाणं रासी इव ते कालाणू मुणेयव्वा[2] ॥ ३ ॥
कालो त्ति य ववएसो सब्भावपरूवओ हवइ णिच्चो ।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई[3] ॥ ४ ॥ त्ति ।

अप्पहाणदव्वकालो तिविहो— सच्चित्तो अच्चित्तो मिस्सओ चेदि । तत्थ सच्चित्तो— जहा दंसकालो मसयकालो इच्चेवमादि, दंस-मसयाणं चेव उवयारेण कालत्त-विहाणादो । अच्चित्तकालो— जहा धूलिकालो चिक्खल्लकालो उण्हकालो वरिसाकालो सीदकालो इच्चेवमादि । मिस्सकालो— जहा सदंस-सीदकालो इच्चेवमादि । सामाचारकालो दुविहो— लोइओ लोउत्तरीयो चेदि । तत्थ लोउत्तरीओ सामाचारकालो— जहा वंदणकालो णियमकालो सज्झयकालो[4] झाणकालो इच्चेवमादि । लोगियसामाचारकालो— जहा कसणकालो लुणणकालो ववणकालो इच्चेवमादि । आदावणकालो रुक्खमूलकालो बाहिरसयणकालो इच्चादीणं कालाणं लोगुत्तरीयसामाचारकाले अंतब्भावो कायव्वो, किरिया-

---

वह काल न स्वयं परिणमता है और न अन्य पदार्थको अन्य स्वरूपसे परिणमाता है । किन्तु स्वयं अनेक पर्यायोंमें परिणत होनेवाले पदार्थोंके परिणमनमें वह उदासीन निमित्त मात्र होता है ॥ २ ॥

लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर जो रत्नराशिके समान एक एक स्थित हैं उन्हें कालाणु जानना चाहिये ॥ ३ ॥

'काल' यह नाम निश्चयकालके अस्तित्वको प्रगट करता है, जो द्रव्य स्वरूपसे नित्य है । दूसरा व्यवहार काल यद्यपि उत्पन्न होकर नष्ट होनेवाला है, तथापि वह [समयसन्तानकी अपेक्षा व्यवहार नयसे आवली व पल्य आदि स्वरूपसे] दीर्घ काल तक स्थित रहनेवाला है ॥ ४ ॥

अप्रधान द्रव्यकाल तीन प्रकार है—सचित्त, अचित्त और मिश्र । उनमें दंशकाल, मशककाल इत्यादि सचित्त काल हैं, क्योंकि, इनमें दंश व मशकके ही उपचारसे कालका विधान किया गया है । धूलिकाल, कर्दमकाल, उष्णकाल, वर्षाकाल एवं शीतकाल इत्यादि सब अचित्तकाल हैं । सदंश शीतकाल इत्यादि मिश्रकाल है ।

सामाचारकाल दो प्रकार है— लौकिक और लोकोत्तरीय । उनमें वन्दनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल व ध्यानकाल इत्यादि लोकोत्तरीय सामाचारकाल हैं । कर्षणकाल, लुननकाल व वपनकाल इत्यादि लौकिक सामाचारकाल हैं । आतापनकाल, वृक्षमूलकाल व बाह्यशयनकाल, इत्यादिक कालोंका लोकोत्तरीय सामाचारकालमें अन्तर्भाव करना चाहिये, क्योंकि, क्रियाकालके प्रति कोई भेद नहीं है अर्थात्

---

१ गो. जी. ५६९. २ गो. जी. ५८८. ३ पंचा. १०१. ४ ताप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'संज्ञयकालो' इति पाठः ।

कालत्तं पडि विसेसाभावादो।

अद्धाकालो तिविहो— अदीदो अणागओ वट्टमाणो चेदि। पमाणकालो पल्लोवम-सागरोवम-उस्सप्पिणी-ओसप्पिणी-कप्पादिभेदेण बहुप्पयारो। भावकालो दुविहो— आगमदो णोआगमदो चेदि। तत्थ कालपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावकालो। णोआगमभावकालो ओदइयादिपंचण्णं भावाणं सरूवं। एदेसु कालेसु पमाणकालेण पयदं। कालस्स विहाणं कालविहाणं, वेयणाए कालविहाणं वेयणाकालविहाणं। तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि भवंति। कुदो? संखा-गुणयार-ट्ठाण-जीवसमुदाहार-ओज जुम्माणियोगद्दाराणमेत्थेव अंतब्भावदंसणादो। ताणि काणि त्ति उत्ते उत्तरसुत्तमागयं—

पदमीमांसा-सामित्तमप्पाबहुए त्ति ॥ २ ॥

तिसु अणियोगद्दारेसु पदमीमांसा चेव पढमं किमट्ठं उच्चदे? ण, पदेसु अणवगएसु पदसामित्त-पदप्पाबहुआणं परूवणोवायाभावादो। तदणंतरं सामित्तपरूवणं किमट्ठं कीरदे? ण, पमाणे अणवगए पदप्पाबहुगाणुववत्तीदो। तम्हा एसो चेव अणियोगद्दारक्कमो होदि, णिरवज्जत्तादो।

क्रियाकालकी अपेक्षा इनमें कोई विशेषता नहीं है।

अद्धाकाल तीन प्रकार है—अतीत, अनागत और वर्तमान। प्रमाणकाल पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी और कल्पादिके भेदसे बहुत प्रकार है। भावकाल दो प्रकार है— आगमभावकाल और नोआगमभावकाल। उनमें कालप्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावकाल है। नोआगमभावकाल औदयिक आदि पांच भावों स्वरूप है।

इन कालोंमें प्रमाणकाल प्रकृत है। कालका जो विधान है वह कालविधान है, वेदनाका कालविधान वेदनाकालविधान कहा जाता है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि संख्या, गुणकार, स्थान, जीवसमुदाहार, ओज और युग्म, इन अनुयोगद्वारोंका उक्त तीनों अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भाव देखा जाता है। वे तीन अनुयोगद्वार कौनसे हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर सूत्र प्राप्त होता है—

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये वे तीन अनुयोगद्वार हैं ॥ २ ॥

शंका— इन तीन अनुयोगद्वारोंमें पहिले पदमीमांसाका ही निर्देश किसलिये किया है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पदोंके अज्ञात होनेपर पदस्वामित्व और पद-अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है।

शंका— पदमीमांसाके पश्चात् स्वामित्वप्ररूपणा किसलिये की जाती है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, प्रमाणका ज्ञान न होनेपर पदोंका अल्पबहुत्व बन नहीं सकता। इस कारण यही अनुयोगद्वारक्रम ठीक है, क्योंकि, उसमें कोई दोष नहीं है।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा कालदो किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥

एत्थ णाणावरणग्गहणं सेसकम्मपडिसेहफलं। कालणिद्देसो दव्व-खेत्त-भावपडिसेहफलो। एदं पुच्छासुत्तं जेण देसामासियं तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ सूचेदि। णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति। पुणो एदेणेव सुत्तेण अण्णाओ तेरस पदविसयपुच्छाओ सूचिदाओ। काओ त्ति पुच्छिदे उच्चदे— उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति उक्कस्सपदम्मि बारस पुच्छाओ। एवं सेसपदाणं पि पादेक्कं बारस पुच्छाओ वत्तव्वाओ। एत्थ सव्वपुच्छासमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो । १६९ ।। तम्हा एदं देसामासियसुत्तं तेरससुत्तप्पयं। एदेसिं सुत्ताणं परूवणा उत्तरदेसामासियसुत्तेण कीरदे—

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥ ४ ॥

पदमीमांसा अधिकारमें ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये किया है। कालका निर्देश द्रव्य, क्षेत्र व भावका प्रतिषेध करनेवाला है। यह पृच्छासूत्र चूंकि देशामर्शक है, अतः वह सूत्रोक्त चार पृच्छाओंके अतिरिक्त नौ दूसरी पृच्छाओंको भी सूचित करता है। ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है ? इसके अतिरिक्त इसी सूत्रके द्वारा दूसरी तेरह पदविषयक पृच्छायें सूचित की गई हैं। वे कौनसी हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं—उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है; ये बारह पृच्छायें उत्कृष्ट पदके विषयमें हैं। इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदके विषयमें बारह पृच्छाओंको कहना चाहिये। यहां सब पृच्छाओंका योग एक सौ उनत्तर (१६९) मात्र है। इस कारण यह देशामर्शक सूत्र तेरह सूत्रों स्वरूप है। इन सूत्रोंकी प्ररूपणा अगले देशामर्शक सूत्रके द्वारा की जाती है।

उक्त ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य भी है और अजघन्य भी है ॥ ४ ॥

एदं पि देसामासियसुत्तं । तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि। देसामासियत्तादो चेव सेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतब्भावो वत्तव्वो । एत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— णाणावरणीयवेयणा कालदो सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा । सिया सादिया, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे णाणावरणीयसव्वट्ठिदीण सादित्तुवलंभादो । सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अणादित्तदंसणादो । सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे णाणावरणीयकालवेयणाए विणासाणुवलंभादो । सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियणयप्पणाए अद्धुवत्तदंसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि कालविसेसे कलि-तेजोजसंखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया जुम्मा, कत्थ वि कालविसेसे कद-बादर-जुम्माणं संखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया ओमा, कत्थ वि कालविसेसे परिहाणिदंसणादो । सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढिदंसणादो । सिया णोम-णोविसिट्ठा, कत्थ वि बंधवसेण कालस्स अवट्ठाणदंसणादो |१३| ।

संपहि बिदियसुत्तस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा— उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खत्तादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमासेस-

---

यह भी देशामर्शक सूत्र है । इसलिये यहां शेष नौ पदोंको और कहना चाहिये। देशामर्शक होनेसे ही शेष तेरह सूत्रोंका इसमें अन्तर्भाव बतलाना चाहिये । उनमें यहां पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य और कथंचित् अजघन्य है । वह कथंचित् सादि भी है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी सभी स्थितियां सादि पायी जाती हैं। कथंचित् वह अनादि भी है, क्योंकि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी वेदनामें अनादिता देखी जाती है । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी कालवेदनाका विनाश नहीं पाया जाता है। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर उसकी अस्थिरता देखी जाती है । कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें कलिओज और तेजोज संख्याविशेष पाये जाते हैं । कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें कृतयुग्म और बादरयुग्म संख्याविशेष पाये जाते हैं। कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें हानि देखी जाती है। कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें वृद्धि देखी जाती है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर बन्धके वशसे कालका अवस्थान देखा जाता है । [इस प्रकार ज्ञानावरणीयकालवेदना तेरह (१३) पद स्वरूप है]।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना जघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं होती, क्योंकि, ये उससे विरुद्ध हैं। कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, जघन्यसे ऊपरके समस्त कालविकल्पोंमें अवस्थित अजघन्य

कालवियप्पाबहिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो। सिया सादिया, अणुक्कस्स-कालादो उक्कस्सकालुप्पत्तीए। धुवपदं णत्थि, उक्कस्सट्ठिदीए सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। दव्वट्ठियणए अवलंबिदे[1] वि ण धुवपदमत्थि, चदुसु वि गदीसु कयाइं उक्कस्सपदस्स संभवादो। सिया अद्धुवा, उक्कस्सपदस्स सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। सिया कदजुम्मा, उक्कस्सकालम्मि बादरजुम्म-कलि-तेजोजसंखाविसेसाणमभावादो। सिया णोम-णोमविसिट्ठा, वड्ढिदे हाइदे च उक्कस्सत्तविरोहादो। एवमुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पंचपदप्पिया [५]।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण हेट्ठिमसेसवियप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स वि संभवादो। सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स[2] अजहण्णाविणाभावित्तादो। सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पत्तीए अणुक्कस्सादो वि अणुक्कस्स-विसेसुप्पत्तिदंसणादो च। सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स बंधाभावादो। सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स विणासाभावादो। सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स धुवत्ताभावादो। सिया ओजा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविहविसमसंखुवलंभादो। सिया जुम्मा, अणुक्कस्स-

---

पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्भव है। कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट कालसे उत्कृष्ट काल उत्पन्न होता है। ध्रुव पद नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका सब कालमें अवस्थान नहीं रहता। द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी ध्रुव पद सम्भव नहीं है, क्योंकि, चारों ही गतियोंमें उत्कृष्ट पद कदाचित् ही सम्भव होता है। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदका सब कालमें अवस्थान नहीं रहता। कथंचित् वह कृतयुग्म है, क्योंकि, उत्कृष्ट कालमें बादरयुग्म, कलिओज और तेजोज संख्या-विशेषोंका अभाव है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, वृद्धि व हानिके होनेपर उत्कृष्टपनेका विरोध है। इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पांच (५) पद रूप है।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्टको छोड़कर अधस्तन समस्त विकल्पों रूप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है। कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पद अजघन्य पदका अविनाभावी है। कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुत्कृष्ट पद उत्पन्न होता है, तथा अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है। कथंचित् वह अनादि है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पदका बन्ध नहीं होता। कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पदका विनाश नहीं होता। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक-नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पद ध्रुव नहीं है। कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी विषम संख्यायें देखी जाती हैं। कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी

---

१ प्रतिषु 'अवलंबिअदे' इति पाठः। २ प्रतिषु 'अणुकस्स' इति पाठः।

पदविसेसे दुविहसमसंखदंसणादो । सिया ओमा, कत्थ वि हाणीदो समुप्पण्णअणुक्कस्सपदु-वलंभादो । सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्सपदुप्पत्तीए । सिया णोम-णोविसिट्ठा, अणुक्कस्सजहण्णम्मि अणुक्कस्सपदविसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं णाणावर-णाणुक्कस्सवेयणा एक्कारसपदप्पिया [११]। एवं तदियसुत्तपरूवणा कदा ।

संपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— जहण्णणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण एगत्तदंसणादो । सिया सादिया, अज-हण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए । सिया अणादिया त्ति णत्थि, सुहुमसांपराइयचरिमसमय-बंधम्मि[1] चरिमसमयखीणकसायसंतम्मि य दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे वि अणादित्ताणुव-लंभादो । सिया अद्धुवा । सिया कलिओजा, खीणकसायचरिमसमयट्ठिदिग्गहणादो । सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं जहण्णकालवेयणा पंचपयारा सरूवेण छप्पयारा वा [५]। एवं चउत्थसुत्तपरूवणा कदा ।

संपहि पंचमसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— अजहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस्स ओघुक्कस्सादो पुधत्ताणुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा, तद-

सम संख्यायें देखी जाती हैं । कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, कहींपर हानिसे उत्पन्न हुआ अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धिसे अनुत्कृष्ट पद उत्पन्न होता है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्टभूत जघन्य पदकी अथवा अन्य अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा करनेपर वृद्धि और हानिका अभाव रहता है । इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्टवेदना ग्यारह (११) पद स्वरूप है । इस प्रकार तीसरे सूत्रकी प्ररूपणा की गई है ।

अब चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—जघन्य ज्ञानावरणीय-वेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्यकी ओघजघन्यसे एकता देखी जाती है । कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है । कथंचित् अनादि यह पद नहीं है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय सम्बन्धी बन्ध और क्षीणकषायके अन्तिम समय सम्बन्धी सत्त्वमें द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी अनादिपना नहीं पाया जाता । कथंचित् वह अध्रुव है । कथंचित् वह कलिओज है, क्योंकि, क्षीणकषायके अन्तिम समय सम्बन्धी स्थितिका ग्रहण किया गया है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार जघन्य कालवेदना पांच (५) प्रकार अथवा अपने साथ छह प्रकार भी है । इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की गई है ।

अब पांचवें सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—अजघन्य ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कृष्ट ओघ उत्कृष्टसे पृथक् नहीं पाया जाता है । कथंचित् वह अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, वह उसका

१ अ-काप्रत्योः ' चरिमसमयसमयबंधम्मि ' इति पाठः ।

विणाभावित्तादो। सिया सादिया, पदंतरपल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाणमवट्ठाणाभावादो। सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे बंधाभावादो। सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अजहण्णपदस्स विणासाभावादो। सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे धुवत्ताभावादो। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा। सुगमं। सिया णोम-णोविसिट्ठा, णिरुद्धपदविसेसत्तादो। एवमजहण्णा एक्कारसभंगा [११]। एसो पंचमसुत्तत्थो।

सादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अद्धुवा। धुवा ण होदि, सादियस्स अणादिय-धुवत्तविरोहादो। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं सादियवेदणाए दसभंगा [१०]। एसो छट्ठसुत्तत्थो।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। कधमणादियवेयणाए सादियत्तं? ण, वेयणासामण्णावेक्खाए अणादियम्मि उक्कस्सादिपदविवक्खाए सादियत्तं पडि विरोहाभावादो। सिया धुवा,

---

अविनाभावी है। कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, दूसरे पदोंके पलटनेके विना अजघन्य पदविशेष रहते नहीं है। कथंचित् वह अनादि है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर इस पदका बन्ध नहीं होता। कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अजघन्य पदका विनाश नहीं होता। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर उसके ध्रुवपना नहीं पाया जाता। कथंचित् वह ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, और कथंचित् वह विशिष्ट है। यह सब सुगम है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, पदविशेषकी विवक्षा है। इस प्रकार अजघन्य वेदनाके ग्यारह (११) भंग होते हैं। यह पांचवें सूत्रका अर्थ है।

सादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, और कथंचित् अध्रुव है। वह ध्रुव नहीं है, क्योंकि, सादि पदका अनादि और ध्रुव पदके साथ विरोध है। वह कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार सादिवेदनाके दस (१०) भंग होते हैं। यह छठे सूत्रका अर्थ है।

अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य और कथंचित् सादि है।

शंका—अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनासामान्यकी अपेक्षा उसके अनादि होनेपर भी उत्कृष्ट आदि पदोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है।

वेयणासामण्णस्स विणासाभावादो । सिया अद्धुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो । अणादियत्तम्मि सामण्णविवक्खाए समुप्पण्णम्मि कधं पदविसेससंभवो ? ण, सगंतोखित्तअसेसविसेसम्मि सामण्णम्मि अप्पिदे तदविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमणादियपदस्स बारस भंगा [१२] । एसो सत्तमसुत्तत्थो ।

धुवणाणावरणीवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं धुवपदस्स बारस भंगा [१२] । एसो अट्ठमसुत्तत्थो ।

अद्धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमद्धुवपदस्स दस भंगा [१०] । एसो णवमसुत्तत्थो ।

ओजणाणावरणीयवेयणा उक्कस्सा ण होदि, उक्कस्सट्ठिदीए कदजुम्मे अवट्ठाणादो । सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया, सामण्णविवक्खादो । सिया धुवा, सिया अद्धुवा, विसेसविवक्खाए । सिया ओमा, सिया

कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, वेदनासामान्यका कभी विनाश नहीं होता। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है ।

शंका— सामान्य विवक्षासे अनादिताके स्वीकार करनेपर उसमें पदविशेषकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी विवक्षा करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

वह कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अनादि पदके बारह (१२) भंग होते हैं। यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

ध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ध्रुव पदके बारह भंग होते हैं । यह आठवें सूत्रका अर्थ है ।

अध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अध्रुव पदके दस (१०) भंग होते हैं । यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओज ज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट नहीं होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका अवस्थान कृतयुग्ममें है । वह कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, व कथंचित् सादि है । सामान्यकी विवक्षासे वह कथंचित् अनादि है। वह कथंचित् ध्रुव है । वह कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, विशेषकी विवक्षा है। वह कथंचित् ओम,

विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमोजपदस्स दस भंगा |१०| । एसो दसमसुत्तत्थो ।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं जुम्मपदस्स दस भंगा |१०| । एसो एक्कारसमसुत्तत्थो ।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवमोमपदस्स अट्ठ भंगा |८| । एसो बारसमसुत्तत्थो ।

विसिट्ठणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं विसिट्ठपदस्स अट्ठभंगा |८| । एसो तेरसमसुत्तत्थो ।

णोम-णोविसिट्ठणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सिया, सिया अणुक्कस्सिया, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं दस भंगा |१०| । एसो चोद्दसमसुत्तत्थो ।

एदेसिं भंगाणमंकविण्णासो एसो— |१३|५|११|५|११|१०|१२|१२| १०|१०|१०|८|८|१०| ।

कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ओज पदके दस (१०) भंग होते हैं । यह दसवें सूत्रका अर्थ है ।

युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार युग्म पदके दस (१०) भंग होते हैं । यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है ।

ओम ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार ओम पदके आठ (८) भंग होते हैं । यह बारहवें सूत्रका अर्थ है ।

विशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८) भंग होते हैं । यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है ।

नोम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार उसके दस (१०) भंग होते हैं । यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है ।

इन भंगोंके अंकोंका विन्यास यह है— १३ + ५ + ११ + ५ + ११ + १० + १२ + १२ + १० + १० + १० + ८ + ८ + १० = १३५ ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ ५ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सत्तण्णं कम्माणं कायव्वा, विसेसाभावादो। एवमंतोकयओजाणियोगद्दारा पदमीमांसा त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहण्णं चउव्विहं— णाम ट्ठवणा-दव्व-भावजहण्णं चेदि। णामजहण्णं ट्ठवणाजहण्णं च सुगमं। दव्वजहण्णं दुविहं— आगमदव्वजहण्णं णोआगमदव्वजहण्णं चेदि। तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वजहण्णं। णोआगमदव्वजहण्णं तिविहं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहण्णभेएण। जाणुगसरीरं भविय गदं। तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहण्णं दुविहं— ओघजहण्णमादेसजहण्णं चेदि। तत्थ ओघजहण्णं चउव्विहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि। तत्थ दव्वजहण्णमेगो परमाणू। खेत्तजहण्णमेगो आगासपदेसो। कालजहण्णमेगो समओ। भावजहण्णं परमाणुम्हि एगो णिद्धत्तगुणो। आदेसजहण्णं पि दव्व-खेत्त-काल-भावेहि चउव्विहं। तत्थ दव्वदो आदेसजहण्णं उच्चदे। तं जहा— तिपदेसियक्खंधं दट्ठूण दुपदेसियक्खंधो आदेसदो दव्व-

---

इसी प्रकार शेष सातों कर्मोंके उत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥५॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणकी पदमीमांसा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार ओजानुयोगद्वारगर्भित पदमीमांसा नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

स्वामित्व दो प्रकार है—जघन्य पदमें और उत्कृष्ट पदमें ॥ ६ ॥

उनमेंसे जघन्य पद चार प्रकार है—नामजघन्य, स्थापनाजघन्य, द्रव्यजघन्य और भावजघन्य। इनमें नामजघन्य और स्थापनाजघन्य सुगम हैं। द्रव्यजघन्य दो प्रकार है— आगमद्रव्यजघन्य और नोआगमद्रव्यजघन्य। उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यजघन्य है। नोआगमद्रव्यजघन्य तीन प्रकार है— ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यजघन्य, भावी नोआगमद्रव्यजघन्य और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यजघन्य विदित हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य दो प्रकार है ओघजघन्य और आदेशजघन्य। उनमें द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षासे ओघजघन्य चार प्रकार है। इनमेंसे एक परमाणुको द्रव्यजघन्य कहा जाता है। एक आकाशप्रदेश क्षेत्रजघन्य है। कालजघन्य एक समय है। परमाणुमें रहनेवाला एक स्निग्धत्व गुण भावजघन्य है।

आदेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। इनमें द्रव्यसे आदेशजघन्यकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— तीन प्रदेश-

जहण्णं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। तिपदेसोगाढदव्वं दट्ठूण दुपदेसोगाढदव्वं खेत्तदो आदेस-जहण्णं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। तिसमयपरिणदं दट्ठूण दुसमयपरिणदं दव्वमादेसदो कालजहण्णं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। तिगुणपरिणदं दव्वं दट्ठूण दुगुणपरिणदं दव्वं भावदो आदेसजहण्णं। भावजहण्णं दुविहं— आगमभावजहण्णं णोआगमभावजहण्णं चेदि। तत्थ जहण्णपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावजहण्णं। सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स जं सव्व-जहण्णं णाणं तं णोआगमभावजहण्णं। एत्थ ओघजहण्णकालेण पयदं, सव्वजहण्णट्ठिदीए अहियारादो।

उक्कस्सं चउव्विहं णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावउक्कस्सभेएण। तत्थ णाम ट्ठवणुक्कस्साणि सुगमाणि। दव्वुक्कस्सं दुविहमागमदव्वुक्कस्सं णोआगमदव्वुक्कस्सं चेदि। तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वुक्कस्सं। णोआगमदव्वुक्कस्सं तिविहं जाणुग-सरीर-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सभेएण। जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वुक्क-स्साणि सुगमाणि। तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सं दुविहं— ओघुक्कस्समादेसुक्कस्सं चेदि। तत्थ ओघुक्कस्सं चउव्विहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि। तत्थ दव्वदो उक्कस्सं महाखंधो। खेत्तदो उक्कस्समागासं। कालदो उक्कस्सं सव्वकालो। भावदो उक्कस्सं

वाले स्कन्धकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशद्रव्यजघन्य है। इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा दो प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रसे आदेशजघन्य है। इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन समयोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो समयोंमें परिणत द्रव्य आदेशसे कालजघन्य है। इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन गुणोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो गुणोंमें परिणत द्रव्य भावसे आदेशजघन्य है।

भावजघन्य दो प्रकार है— आगमभावजघन्य और नोआगमभावजघन्य। उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघन्य है। सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकका जो सबसे जघन्य ज्ञान है वह नोआगमभावजघन्य है। यहां ओघ जघन्यकाल प्रकृत है, क्योंकि, यहां सर्वजघन्य स्थितिका अधिकार है।

नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे उत्कृष्ट चार प्रकार है। उनमें नाम-उत्कृष्ट और स्थापनाउत्कृष्ट सुगम हैं। द्रव्य उत्कृष्ट दो प्रकार है— आगमद्रव्य उत्कृष्ट और नोआगमद्रव्य उत्कृष्ट। उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यउत्कृष्ट है। नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट तीन प्रकार है— ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्य-उत्कृष्ट सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट दो प्रकार है— ओघउत्कृष्ट और आदेशउत्कृष्ट। उनमें ओघउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। उनमें द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट महा स्कन्ध है। क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट आकाश है। कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट सर्व काल है। भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट सर्वोत्कृष्ट वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शसे युक्त द्रव्य है।

सव्वुक्कस्सवण्ण-गंध-रस-फासदव्वं । आदेसुक्कस्सं चउव्विहं — दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो एगपरमाणुं दट्ठूण दुपदेसिओ खंधो आदेसुक्कस्सं । दुपदेसियं खंधं दट्ठूण तिपदेसियक्खंधो वि आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । खेत्तदो एयक्खेत्तं दट्ठूण दोखेत्तपदेसा आदेसदो उक्कस्सखेत्तं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । कालदो एगसमयं दट्ठूण दोसमइयं आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । भावदो एगगुणजुत्तं दट्ठूण दुगुणजुत्तं दव्वमादेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । भावुक्कस्सं दुविहं— आगम-णोआगमभावुक्कस्सभेएण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावुक्कस्सं । णोआगम-भावुक्कस्सं केवलणाणं । एत्थ ओघकालुक्कस्सेण अहियारो । एत्थ कालदो ओघुक्कस्सं सव्वकालो त्ति भणिदं, तस्सेत्थ गहणं ण कायव्वं; कम्मट्ठिदीए तदसंभवादो । जहण्णपदे एगं सामित्तं अण्णेगमुक्कस्सपदे, एवं सामित्तं दुविहं चेव होदि; अण्णस्सासंभवादो ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्क-स्सिया कस्स ? ॥ ७ ॥

उक्कस्सपदणिद्देसो जहण्णपदपडिसेहफलो । णाणावरणणिद्देसो सेसकम्मपडिसेहफलो ।

आदेशउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें एक परमाणुकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यकी अपेक्षा आदेशउत्कृष्ट है । दो प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला स्कन्ध भी द्रव्यसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंके विषयमें ले जाना चाहिये । एक प्रदेश रूप क्षेत्रकी अपेक्षा दो क्षेत्रप्रदेश क्षेत्रसे आदेशउत्कृष्ट हैं । इसी प्रकार शेष क्षेत्रप्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । एक समयकी अपेक्षा दो समय परिणत द्रव्य कालसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । एक गुण युक्त द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण युक्त द्रव्य भावसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगम-भावउत्कृष्ट केवलज्ञान है । यहां ओघउत्कृष्ट कालका अधिकार है । यहां कालकी अपेक्षा ओघउत्कृष्ट सब काल कहा गया है, उसका यहां ग्रहण नहीं करना चाहिये; क्योंकि, कर्मस्थितिमें उसकी सम्भावना नहीं है । एक स्वामित्व जघन्य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकार स्वामित्व दो प्रकार ही है; क्योंकि, इनके अतिरिक्त और दूसरे स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ७ ॥

सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश जघन्य पदके प्रतिषेधके लिये किया गया है । ज्ञानावरण पदका निर्देश शेष कर्मोंके प्रतिषेधके लिये है । कालका निर्देश क्षेत्र आदिका

कालणिद्देसो खेत्तादिपडिसेहफलो । कस्से त्ति किं देवस्स किं णेरइयस्स किं मणुस्सस्स किं तिरिक्खस्से त्ति पुच्छा ।

अण्णदरस्स पंचिंदियस्स सण्णिस्स मिच्छाइट्ठिस्स सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स अकम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा संखेज्जवासाउअस्स वा असंखेज्जवासाउअस्स वा देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्खस्स वा णेरइयस्स वा इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा जलचरस्स वा थलचरस्स वा खगचरस्स वा सागार-जागार-सुदोवजोगजुत्तस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसे वट्टमाणस्स, अधवा ईसिमज्झिमपरिणामस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सा ॥८॥

अण्णदरस्से त्ति णिद्देसो ओगाहणादीणं पडिसेहाभावपदुप्पायणफलो । पंचिंदियस्से त्ति णिद्देसो विगलिंदियपडिसेहफलो ? णाणावरणीयस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं पंचिंदिया चेव बंधंति, णो विगलिंदिया इदि जं वुत्तं होदि । ते च पंचिंदिया दुविहा — सण्णिणो अस-

... .

प्रतिषेध करनेवाला है । 'किसके होती है' इससे वह क्या देवके होती है, क्या नारकीके होती है, क्या मनुष्यके होती है, और क्या तिर्यंचके होती है, इस प्रकार पृच्छा की गई है ।

अन्यतर पंचेन्द्रिय जीवके— जो संज्ञी है, मिथ्यादृष्टि है, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त है; कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज अथवा कर्मभूमिप्रतिभागोत्पन्न है; संख्यातवर्षायुष्क अथवा असंख्यातवर्षायुष्क है; देव, मनुष्य, तिर्यंच अथवा नारकी है; स्त्रीवेद, पुरुषवेद अथवा नपुंसकवेदमेंसे किसी भी वेदसे संयुक्त है; जलचर, थलचर अथवा नभचर है; साकार उपयोगवाला है, जागृत है, श्रुतोपयोगसे युक्त है, उत्कृष्ट स्थिति के बन्ध योग्य उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेशमें वर्तमान है, अथवा कुछ मध्यम संक्लेश परिणामसे युक्त है, उसके ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ ८ ॥

सूत्रमें अन्यतर पदका निर्देश अवगाहना आदिकोंके प्रतिषेधके अभावको सूचित करता है । पंचेन्द्रिय पदका निर्देश विकलेन्द्रियका प्रतिषेध करता है । इससे यह फलित होता है कि ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिको पंचेन्द्रिय जीव ही बांधते हैं, विकलेन्द्रिय नहीं बांधते । वे पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं— संज्ञी और असंज्ञी

ण्णिणो चेदि । तत्थ असण्णिणो उक्कस्सियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सण्णिस्से त्ति णिद्दिट्ठं । ते च सण्णिपंचिंदिया गुणट्ठाणभेएण चोद्दसविहा । तत्थ सासणादओ उक्कस्सियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणवणट्ठं मिच्छाइट्ठिस्से त्ति णिद्दिट्ठं । ते च मिच्छाइट्ठिणो पज्जत्तयदा अपज्जत्तयदा चेदि दुविहा । तत्थ अपज्जत्तयदा उक्कस्सियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्से त्ति भणिदं । पंचिंदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो कम्मभूमा अकम्मभूमा चेदि दुविहा । तत्थ अकम्मभूमा उक्कस्सट्ठिदिं ण बंधंति, पण्णारसकम्मभूमीसु उप्पण्णा चेव उक्कस्सट्ठिदिं बंधंति त्ति जाणावणट्ठं कम्मभूमियस्स वा त्ति भणिदं । भोगभूमीसु उप्पण्णाणं व देव-णेरइयाणं सयंपहणगेंदपव्वदस्स बाहिरभागप्पहुडि जाव सयंभूरमणसमुद्दो त्ति एत्थ कम्मभूमिपडिभागम्मि उप्पण्णतिरिक्खाणं च उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहे पत्ते तण्णिराकरणट्ठं अकम्मभूमिस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा त्ति भणिदं । अकम्मभूमिस्स वा त्ति उत्ते देव-णेरइया घेत्तव्वा । कम्मभूमिपडिभागस्स वा त्ति उत्ते सयंपहणगिंदपव्वदस्स बाहिरे भागे समुप्पण्णाणं गहणं । संखेज्जवासाउअस्स वा त्ति उत्ते अड्ढाइज्जदीव-समुद्दुप्पण्णस्स कम्मभूमिपडिभागुप्पण्णस्स च गहणं । असंखेज्जवासाउअस्स वा त्ति उत्ते देव-णेरइयाणं गहणं, ण समयाहियपुव्वकोडिप्पहुडि-उवरिमआउअतिरिक्ख-मणुस्साणं गहणं, पुव्वसुत्तेण तेसिं विहिदपडिसेहत्तादो । देव-

उनमें असंज्ञी पंचेन्द्रिय उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ संज्ञी पदका निर्देश किया है । वे संज्ञी पंचेन्द्रिय गुणस्थानोंके भेदसे चौदह प्रकार हैं । उनमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश किया है । वे मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो प्रकार हैं । उनमें अपर्याप्तक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ' ऐसा कहा है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिज और अकर्मभूमिज इस तरह दो प्रकारके हैं । उनमें अकर्मभूमिज उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, किन्तु पन्द्रह कर्मभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं; इस बातके ज्ञापनार्थ 'कर्मभूमिज' पदका निर्देश किया है । भोगभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान देव-नारकियोंके तथा स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागसे लेकर स्वयम्भूरमण समुद्र तक इस कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए तिर्यंचोंके भी उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उसका निराकरण करनेके लिये 'अकर्मभूमिजके अथवा कर्मभूमिप्रतिभागोत्पन्न जीवके' ऐसा कहा है । अकर्मभूमिज पदसे देव-नारकियोंका ग्रहण करना चाहिये । कर्मभूमिप्रतिभाग पदका निर्देश करनेपर स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागमें उत्पन्न हुए जीवोंका ग्रहण किया गया है । 'संख्यातवर्षायुष्क' कहनेपर अढ़ाई द्वीप-समुद्रोंमें उत्पन्न हुए तथा कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए जीवका ग्रहण करना चाहिये । 'असंख्यातवर्षायुष्क' से देव-नारकियोंका ग्रहण किया गया है । इस पदसे एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि उपरिम आयुविकल्पोंसे संयुक्त तिर्यंचों व मनुष्योंका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, पूर्व सूत्रसे उनका

णेरइएसु संखेज्जवासाउअत्तमिदि भणिदे सच्चं ण ते असंखेज्जवासाउआ, किंतु संखेज्ज-वासाउआ चेव; समयाहियपुव्वकोडिप्पहुडिउवरिमआउअवियप्पाणं असंखेज्जवासाउअत्त-ब्भुवगमादो। कधं समयाहियपुव्वकोडीए संखेज्जवासाए असंखेज्जवासत्तं ? ण, रायरुक्खो व्व रूढिबलेण परिचत्तसमट्ठस्स असंखेज्जवस्ससद्दस्स[2] आउअविसेसम्मि वट्टमाणस्स गहणादो।

चउग्गइसण्णिपंचिंदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्खस्स वा णेरइयस्स वा त्ति उत्तं। तिसु वि वेदेसु उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहो णत्थि त्ति जाणावणट्ठमित्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा त्ति भणिदं। चरणविसेसाभावपदुप्पायणट्ठं जलचरस्स वा थलचरस्स वा खग-चरस्स वा त्ति भणिदं। तत्थ मच्छ-कच्छवादओ जलचरा, सीहै-वय-वग्घादओ थलचरा, गद्ध-ढेंक-सेणादओ खगचरा। दंसणोवजोगजुत्ता उक्कस्सट्ठिदिं ण बंधंति, णाणोवजोगजुत्ता चेव बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सागारणिद्देसो कदो। सुत्तो उक्कस्सट्ठिदिं ण बंधदि, जग्गंतो

प्रतिषेध किया जा चुका है।

शंका—देव व नारकी तो संख्यातवर्षायुष्क ही होते हैं, फिर यहां उनका ग्रहण असंख्यातवर्षायुष्क पदसे कैसे सम्भव है ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि सचमुचमें वे असंख्यातवर्षायुष्क नहीं हैं, किन्तु संख्यातवर्षायुष्क ही हैं; परन्तु यहां एक समय अधिक पूर्वकोटिको आदि लेकर आगेके आयुविकल्पोंको असंख्यातवर्षायुके भीतर स्वीकार किया गया है।

शंका—एक समय अधिक पूर्वकोटिके संख्यातवर्षरूपता होते हुए भी असंख्यातवर्षरूपता कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, राजवृक्ष (वृक्ष विशेष) के समान 'असंख्यातवर्ष' शब्द रूढि वश अपने अर्थको छोड़कर आयुविशेषमें रहनेवाला यहां ग्रहण किया गया है।

चारों गतियोंके संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ देवके, मनुष्यके, तिर्यंचके अथवा नारकीके, ऐसा कहा है। तीनों ही वेदोंमें उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'स्त्रीवेदीके, पुरुषवेदीके अथवा नपुंसकवेदीके' ऐसा कहा है। चरण अर्थात् गमनविशेषका अभाव बतलानेके लिये 'जलचरके, थलचरके अथवा नभचरके' ऐसा कहा है। उनमें मत्स्य और कच्छप आदि जीव जलचर, सिंह, वृक और वाघ आदि थलचर; तथा गृद्ध, ढेंक और श्येन आदि नभचर जीव हैं। दर्शनोपयोगसे सहित जीव उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, किन्तु ज्ञानोपयोग युक्त जीव ही उसे बांधते हैं; इस बातके जतलानेके लिये 'साकार' पदका निर्देश किया गया है। सोया हुआ जीव उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधता है, किन्तु जागृत जीव ही

---

१ ताम्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'समाहिय' इति पाठः। २ प्रतिषु '-सदस्स', ताम्रतौ 'सद (द्द) स्स' इति पाठः।
३ ताम्रतिपाठोऽयम्। अ-काप्रत्योः 'जलचरा सीह-'; आप्रतौ 'जलचरासि सीह-' इति पाठः।

चेव बंधदि त्ति जाणावणट्ठं जागारग्गहणं कदं । सुदोवजोगजुत्तो चेव उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि, ण मदिउवजोगजुत्तो त्ति जाणावणट्ठं सुदोवजोगजुत्तस्से त्ति भणिदं ।

उक्कस्सियाए ट्ठिदीए बंधपाओग्गसंकिलेसट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि अत्थि । तत्थ चरिमसंकिलेसट्ठाणेण उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि त्ति जाणावणट्ठं उक्कस्सट्ठिदीए उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसे[1] वट्टमाणस्से त्ति भणिदं । उक्कस्सट्ठिदिबंधपाओग्गसेससंकिलेसट्ठाणेहि उक्कस्सट्ठिदिबंधस्स पडिसेहे पत्ते तेहि वि बंधदि त्ति जाणावणट्ठं ईसिमज्झिमपरिणामस्से त्ति उत्तं । अधवा, उक्कस्सट्ठिदिबंधपाओग्गअसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेसट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ चरिमखंडस्स उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसो णाम । तत्थ वट्टमाणस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो होदि । सेसदुचरिमादिखंडेहि उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहे पत्ते तेहि वि उक्कस्सट्ठिदिबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठमीसिमज्झिमपरिणामस्से त्ति उत्तं । एवंविहेण जीवेण णाणावरणीयस्स तीसंसागरोवमकोडाकोडिट्ठिदिबंधे पबद्धे तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सा ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ ९ ॥

उसे बांधता है; इस बातके ज्ञापनार्थ 'जागृत' पदका ग्रहण किया है। श्रुतोपयोग युक्त जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, न कि मतिउपयोग युक्त जीव; इस बातके ज्ञापनार्थ 'श्रुतोपयोग युक्त जीवके' ऐसा कहा है।

उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य संक्लेशस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं। उनमेंसे अन्तिम संक्लेशस्थानके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेशमें वर्तमान' ऐसा कहा है। अब इससे उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य शेष संक्लेशस्थानोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका निषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, इस बातको जतलानेके लिये 'कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके' ऐसा कहा गया है। अथवा, उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य असंख्यात लोक प्रमाण संक्लेशस्थानोंके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र खण्ड करके उनमें अन्तिम खण्डका नाम उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेश है। इस अन्तिम खण्डमें रहनेवाले जीवके उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होता है। अब इससे शेष द्विचरम आदिक खण्डोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होता है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके' ऐसा कहा है। उपर्युक्त विशेषणोंसे विशिष्ट जीवके द्वारा ज्ञानावरणीयके तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिबन्धके बांधनेपर उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है ॥ ९ ॥

---

१ प्रतिषु 'उक्कस्सए ट्ठिदिसंकिलेसे' इति पाठः ।

तदो वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, उक्कस्सट्ठिदिबंधवदिरित्ता[1] अणुक्कस्सट्ठिदिवेयणा होदि त्ति उत्तं होदि। सा च अणेयप्पयारा त्ति तिस्से सामिणो वि अणेयविहा होंति। तेसिं परूवणं कस्सामो। तं जहा— तिण्णिवाससहस्समाबाधं कादूण तीसंसागरोवमकोडाकोडिट्ठिदीए पबद्धाए उक्कस्सट्ठिदी होदि। पुणो अण्णेण जीवेण समऊणतीसंसागरोवमकोडाकोडीसु बद्धासु पढममणुक्कस्सट्ठाणं होदि। एत्थ उक्कस्सट्ठिदिपमाणं संदिट्ठीए चत्तालीसरूवाहियदुसदमेत्तं |२४०|। अणुक्कस्सुक्कस्सट्ठिदीए गुणचालीसरूवाहियदुसदमेत्ता |२३९|। तदो अण्णेण जीवेण दुसमऊणुक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए बिदियमणुक्कस्सट्ठाणं होदि। तस्स पमाणमेदं |२३८|। एदेण कमेण आबाधाकंदएणूणउक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए अण्णमणुक्कस्सट्ठाणं होदि। एत्थ आबाधाकंदयपमाणं तीसरूवाणि |३०|। एदम्मि उक्कस्सट्ठिदिम्मि सोहिदे तदित्थट्ठिदिबंधट्ठाणमेत्तियं होदि |२१०|।

संपहि उक्कस्साबाहा समऊणा होदि। कुदो? आबाहाचरिमसमए पढमणिसेयणिवादादो। संदिट्ठीए उक्कस्साबाधापमाणमट्ठ |८|। पुणो समयाहियआबाधाकंदएणूणउक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्ठाणवियप्पो होदि |२०९|। एदेण कमेण दोआबाधाकंदएहि ऊणुक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्ठिदिवियप्पो |१८०|।

उससे व्यतिरिक्त अर्थात् उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे भिन्न अनुत्कृष्ट स्थितिवेदना होती है, यह सूत्रका अर्थ है। वह चूंकि अनेक प्रकारकी है, अतः उसके स्वामी भी अनेक प्रकारके हैं। उनकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—तीन हजार वर्ष आबाधा करके तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र स्थितिके बांधनेपर उत्कृष्ट स्थिति होती है। फिर अन्य जीवके द्वारा एक समय कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिके बांधनेपर प्रथम अनुत्कृष्ट स्थान होता है। यहांपर उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण संदृष्टिमें दो सौ चालीस (२४०) अंक है। अनुत्कृष्ट उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण दो सौ उनतालीस (२३९) अंक है। उससे अन्य जीवके द्वारा दो समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट स्थान होता है। उसका प्रमाण यह है—२३८। इस क्रमसे आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अनुत्कृष्ट स्थान होता है। यहां आबाधाकाण्डकका प्रमाण तीस अंक (३०) है। इसको उत्कृष्ट स्थितिमेंसे घटा देनेपर वहांका स्थितिबन्धस्थान इतना होता है—२४० - ३० = २१०।

अब उत्कृष्ट आबाधा एक समय कम हो जाती है, क्योंकि, आबाधाके अन्तिम समयमें प्रथम निषेक निर्जीर्ण हो चुका है। संदृष्टिमें उत्कृष्ट आबाधाका प्रमाण आठ (८) है। पश्चात् एक समय अधिक आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर वह अन्य अनुत्कृष्ट स्थानविकल्प होता है — २४० - (३० + १) = २०९। इस क्रमसे दो आबाधाकाण्डकोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर वह अन्य अनुत्कृष्ट स्थितिविकल्प होता है — २४० - ६० = १८०। इस प्रकार इसी क्रमसे एक समय कम दो

[1] प्रतिषु 'बंधवदिरित्तो' इति पाठः।

एवमेदेण कमेण समऊण-बिसमऊणादिकमेण णिरंतरट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव समऊणाबाहकंदयब्भहियधुवट्ठिदि त्ति । तिस्से पमाणं सट्ठी |६०| । एदम्हादो समऊण-बिसमऊणादिकमेण बंधाविय ओदारेदव्वं जाव सव्वविसुद्धसण्णिपंचिंदियधुवट्ठिदि त्ति । पुणो धुवट्ठिदिं बंधमाणस्स अण्णो अपुणरुत्तट्ठिदिवियप्पो होदि । एत्थ धुवट्ठिदिपमाणमेक्कत्तीसं |३१| ।

संपहि एदिस्से हेट्ठा सण्णिपंचिंदिएसु ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि लब्भंति । कुदो ? सव्वविसुद्धेण सण्णिपंचिंदियपज्जत्तेण बद्धजहण्णट्ठिदीए जहण्णट्ठिदिसंतसमाणाए धुवट्ठिदि त्ति गहणादो । तदो पंचिंदिएसु ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एत्तियाणि चेव लब्भंति ।

संपहि एदिस्से हेट्ठा बंधं मोत्तूण ट्ठिदिसंतं घादिय एइंदिएसु ट्ठिदिसंतट्ठाणपरूवणं कस्सामो । एत्थ संदिट्ठी —

० ०　　०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
०००　　००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
० ०　　०१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
०००　　१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
०००　　०००१००.१०००१०००१०००१०००१०००१०००

धुवट्ठिदि त्ति एक्कत्तीस |३१|, एगट्ठिदिखंडे त्ति संदिट्ठीए चत्तारि |४|, उक्कीरणकालो चत्तारि |४| । एवं ठविय ट्ठिदिट्ठाणुप्पत्तिं भणिस्सामो । तं जहा—

एगो तसजीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियधुवट्ठिदिसंतकम्मेण एइंदिएसु पविट्ठो ।

समय कम इत्यादि क्रमसे एक समय कम आबाधाकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थिति तक निरन्तर स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये । उसका प्रमाण साठ (३०-१=२९; ३१+२९=६०) है । इसमेंसे एक समय कम दो समय कम इत्यादि क्रमसे बन्ध कराकर सर्वविशुद्ध संज्ञी पंचेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति तक उतारना चाहिये । पश्चात् ध्रुवस्थितिको बांधनेवाले जीवका अन्य अपुनरुक्त स्थितिविकल्प होता है । यहां ध्रुवस्थितिका प्रमाण इकतीस (३१) है ।

अब इसके नीचेके स्थितिबन्धस्थान संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें पाये जाते हैं, क्योंकि, सर्वविशुद्ध संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके द्वारा बांधी गई जघन्य स्थितिसत्त्व समान जघन्य स्थितिको ध्रुवस्थिति रूपसे ग्रहण किया गया है । इसलिये पंचेन्द्रियोंमें स्थितिबन्धस्थान इतने ही पाये जाते हैं ।

अब इसके नीचे बन्धको छोड़कर स्थितिसत्त्वका घात करके एकेन्द्रियोंमें स्थितिसत्त्वस्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं । यहां संदृष्टि (मूलमें देखिये) । संदृष्टिमें ध्रुवस्थितिका प्रमाण ३१, एक स्थितिकाण्डकका प्रमाण ४, और उत्कीरणकालका प्रमाण ४ है । इस प्रकार स्थापित करके स्थितिस्थानोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यथा—

एक त्रस जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्त्वसे

पुणो बिदिओ जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियसमयाहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो। तदो अण्णो तदिओ जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियदुसमयाहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो। पुणो चउत्थो जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियतिसमयाहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो। पुणो अण्णो जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए चदुसमयाहियधुवट्ठिदीए च एइंदिएसु उववण्णो। एवं समऊणुक्कीरणद्धाए एगेगसमयाहियधुवट्ठिदीए च ताव उप्पादेदव्वं जाव समऊणुक्कीरणद्धाए एगसगलट्ठिदिखंडएण च अब्भहियधुवट्ठिदीए एइंदिएसु पविट्ठो त्ति। एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा एगसमएण एइंदिएसु पवेसिदव्वा।

पुणो एदेसु रूवाहियट्ठिदिकंदयमेत्तजीवेसु ट्ठिदिघादं करेमाणेसु धुवट्ठिदीए हेट्ठा ट्ठिदिसंतट्ठाणुप्पत्तीए भण्णमाणाए समऊणुक्कीरणद्धाए अहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उप्पण्णेण पढमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदं ट्ठिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं, धुवट्ठिदीए उवरि समुप्पत्तीदो। पुणो बिदियफालिपदिदसमए चेव उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि पुणरुत्तं चेव। एवं[1] णेदव्वं जाव ट्ठिदिखंडयचरिमफालिमपादिय उक्कीरणद्धाए चरिमसमयं धरेदूण ट्ठिदो त्ति। पुणो एदमेवं[2] चेव ट्ठविय समऊणु-

एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट हुआ। फिर दूसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और एक समयसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। उससे अन्य तीसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और दो समयोंसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः चतुर्थ जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और तीन समयोंसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः अन्य जीव एक समय कम उत्कीरणकाल और चार समय अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल और एक एक समय अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एक समय कम उत्कीरणकाल और एक सम्पूर्ण स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट होने तक उत्पन्न कराना चाहिये। इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र जीवोंको एक समयसे एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट कराना चाहिये।

पुनः एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र इन जीवोंके द्वारा स्थितिघात करते रहनेपर ध्रुवस्थितिके नीचे स्थितिसत्त्वस्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते समय एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित कराये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, उसकी ध्रुवस्थितिके ऊपर उत्पत्ति है। पुनः द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको पतित न कराकर उत्कीरणकालके अन्तिम समयको लेकर स्थित जीव तक ले जाना चाहिये।

१ प्रतिषु ' एदं ' इति पाठः। २ प्रतिषु ' एक्मेवं ' इति पाठः।

क्कीरणद्धाए समलेगट्ठिदिखंडएण च अहियधुवट्ठिदीए एइंदिएसु उप्पण्णजीवेण पढमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं ट्ठिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं होदि, धुवट्ठिदीदो अहियत्तादो । बिदियफालिपदिदसमए चेव उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि ट्ठाणं पुणरुत्तं चेव । तदियफालिपदिदसमए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । ट्ठिदि-संतट्ठाणं पुणरुत्तं होदि । एवं णेदव्वं जाव अंतोमुहुत्तमेत्तट्ठिदिउक्कीरणसमयाणं दुचरिम-समओ त्ति । पुणो ट्ठिदिउक्कीरणकालचरिमसमए गलिदे पढमट्ठिदिखंडयस्स चरिमफाली पददि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, धुवट्ठिदिं पेक्खिदूण समऊणट्ठाणादो ।

पुणो समऊणुक्कीरणद्धाए समऊणट्ठिदिखंडएण च अहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उप्पण्णजीवेण पढमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गळदि । एदं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि । बिदियफालीए सह उक्कीरणद्धाए बिदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदियफालीए सह उक्कीरणद्धाए तदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं णेदव्वं जाव समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ पदिदाओ त्ति ।

पुणो ट्ठिदिकंडयचरिमफालीए पदिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदम-पुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? ट्ठिदिकंडयचरिमफालीए पदिदाए सेसट्ठिदिसंतं समऊणधुव-

---

फिर इसको इसी प्रकार ही स्थापित करके एक समय कम उत्कीरणकाल और सम्पूर्ण एक स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिको पतित करानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, वह ध्रुवस्थितिसे अधिक है। द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। तृतीय फालिके पतित होनेके समयमें उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितिके उत्कीरणकालके समयोंमें द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये। पश्चात् स्थितिउत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि पतित हो चुकती है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिकी अपेक्षा यह स्थान एक समय कम है।

पुनः एक समय कम उत्कीरणकालसे और एक समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह स्थान पुनरुक्त है। द्वितीय फालिके साथ उत्कीरणकालके द्वितीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है। तृतीय फालिके साथ उत्कीरणकालके तृतीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल मात्र फालियोंके पतित होने तक ले जाना चाहिये।

तत्पश्चात् स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर शेष स्थितिसत्त्व एक समय कम ध्रुवस्थिति प्रमाण होकर फिर

ट्ठिदिमेत्तं होदूण पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमए गलिदे उवगयदुसमऊणधुवट्ठिदित्तादो।

पुणो तदियजीवेण समऊणुक्कीरणद्धाए दुरूऊणट्ठिदिकंदएण च अब्भहियधुवट्ठिदि-संतकम्मिएण पढमट्ठिदिकंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एसो अणुक्कस्सट्ठिदिवियप्पो पुणरुत्तो होदि। पुणो तेणेव बिदियफालीए अवणिदाए ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। [एदं] ट्ठिदिट्ठाणं पुणरुत्तं होदि। तेणेव जीवेण पुणो तस्सेव ट्ठिदिखंडयस्स तदियफालीए अवणिदाए उवकीरणद्धाए तदियसमओ गलदि। एवमेदेण कमेण समऊणुक्कीरणद्धामेत्तसमएसु गलिदेसु त्तत्तियमेत्ताओ चेव फालीओ पदंति पुणरुत्तट्ठाणाणि च उप्पज्जंति। पुणो एदेणेव जीवेण पढमट्ठिदिखंडयस्स चरिमुक्कीरण-समएण सह चरिमफालीए अवणिदाए अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स ति-रूवूणधुवट्ठिदिपमाणत्तदंसणादो।

पुणो चउत्थजीवेण समऊणुक्कीरणद्धाए तिरूऊणट्ठिदिखंडएण अहियधुवट्ठिदि-संतकम्मिएण पढमट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि, पुणरुत्तट्ठिदिट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो तेणेव तस्स बिदियफालीए अवणिदाए उवकीरण-द्धाए तदियसमओ गलदि। एदं पि ट्ठाणं पुणरुत्तमेव। एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तपुणरुत्त-

---

उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गल जानेपर दो समय कम ध्रुवस्थिति पायी जाती है।

पुनः एक समय कम उत्कीरणकाल और दो रूप कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्त्व संयुक्त तृतीय जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डक सम्बन्धी प्रथम फालिके अलग करनेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह अनुत्कृष्ट स्थितिविकल्प पुनरुक्त है। पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग करनेपर स्थितिकाण्डक-उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह स्थितिस्थान पुनरुक्त है। उक्त जीवके द्वारा फिरसे उसी स्थितिकाण्डककी तीसरी फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका तीसरा समय गलता है। इस प्रकार इस क्रमसे एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण समयोंके गल जानेपर उतनी ही फालियां पतित होती हैं और पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होते हैं। पश्चात् इसी जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डकके अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, शेष स्थितिसत्त्व तीन रूपोंसे हीन ध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है।

पुनः चतुर्थ जीवके द्वारा एक समय कम उत्कीरणकालसे और तीन समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्त्वकर्मिक होकर प्रथम स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है और पुनरुक्त स्थितिस्थान उत्पन्न होता है। पश्चात् उसी जीवके द्वारा उक्त स्थितिकाण्डककी द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त

ट्ठाणेसु उप्पण्णेसु पुणो पढमट्ठिदिकंदयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिम-समओ गलदि। ताधे अपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। कुदो? घादिदसेसट्ठिदिसंतकम्मस्स चदु-रूवूणधुवट्ठिदिपमाणत्तुवलंभादो। एवमेदेण कमेण ट्ठिदिखंडयमेत्तअपुणरुत्तट्ठाणाणि उप्पादिय पुणो उक्कीरणदाए चरिमसमएण सह चरिमफालिं घेत्तूण ट्ठिदजीवेण चरिमफालीए अव-णिदाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? घादिदसेसट्ठिदिसंतकम्मस्स रूवाहियट्ठिदिखंडएणूण-धुवट्ठिदिपमाणत्तदंसणादो। एवं कदे रूवाहियट्ठिदिखंडयमेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि हवंति। घादिदसेससव्वजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण पढमट्ठिदिखंडयं घादिय ट्ठविदसेसुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं ट्ठिदिकंदयमेत्तेण अहियं होदि। पुणो एवं ट्ठिदिसंतकम्म-ट्ठाणाणं बिदियट्ठिदिकंदयमास्सिदूण अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। तं जहा— एगेग-समउत्तरकमेण ट्ठिदिसंतं घेत्तूण ट्ठिदरूवाहियकंदयमेत्तजीवेसु सव्वजहण्णट्ठिदिसंतकम्मि-एण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। ताधे अपुणरुत्तट्ठाणं उप्पज्जदि, पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मादो एदस्स ट्ठिदिसंतकम्मस्स सम-ऊणत्तदंसणादो। पुणो एदेणेव बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ पादिय सम-

स्थानोंके उत्पन्न होनेपर पुनः प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। तब अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, उस समय घातनेसे शेष रहा स्थितिसत्त्वकर्म चार रूपोंसे कम ध्रुवस्थिति प्रमाण पाया जाता है। इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डक प्रमाण अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, घातनेसे शेष रहा स्थितिसत्त्वकर्म एक अधिक स्थितिकाण्डकसे हीन ध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है। ऐसा करनेपर एक अधिक स्थितिकाण्डकके बराबर ही अपुनरुक्त स्थान प्राप्त होते हैं। घातनेसे शेष रहे समस्त जघन्य स्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा प्रथम स्थितिकाण्डकका घात करके स्थापित किया हुआ शेष उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म स्थितिकाण्डक मात्रसे अधिक होता है।

अब इस प्रकारसे स्थितिसत्कर्मस्थानोंके द्वितीय स्थितिकाण्डकका आश्रय करके अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्तिको कहते हैं। यथा—एक एक समयकी अधिकताके क्रमसे स्थिति-सत्त्वको लेकर स्थित एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र जीवोंमेंसे सर्वजघन्यस्थितिसत्क-र्मिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्की-रणकालका प्रथम समय गलता है। उस समय अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, पूर्वके स्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा यह स्थितिसत्कर्म एक समय कम देखा जाता है। फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल

१ ताप्रतावत: प्राक् 'एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तट्ठाणं होदि' इत्यधिकः पाठः।

ऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि । पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमएण बिदियट्ठिदिखंडयचरिमफालिं धरेदूण ट्ठिदं जीवमेवं चेव ट्ठविय पुणो एदेसु जीवेसु सव्वुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिएण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए पढमसमओ गलदि । एदं ठाणं पुणरुत्तं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तमेव । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्ताणि चेव ट्ठाणाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेणेव बिदियट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? पुव्वं ठविदूणागदट्ठिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण एदस्स ट्ठिदिसंतकम्मस्स समऊणत्तदंसणादो । पुणो एदम्हादो बिदियजीवेण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तमेव । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीसु पदमाणियासु[1] पुणरुत्ताणि चेव ट्ठाणाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेणेव बिदियट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एवं

प्रमाण फालियोंको अलग करके एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये। पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवको इसी प्रकार स्थापित करके फिर इन जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर प्रथम समय गलता है। यह स्थान पुनरुक्त है। द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां जब तक अलग होती हैं तब तक पुनरुक्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं। फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, पहिले स्थापित करके आये हुए स्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा यह स्थितिसत्कर्म एक समय कम देखा जाता है।

तत्पश्चात् इस जीवकी अपेक्षा द्वितीय जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह पुनरुक्त स्थान होता है। द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियोंके अलग होने तक पुनरुक्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं। पश्चात् इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। इस प्रकार अन्तिम समयके

---

१ प्रतिषु ' पदमाणियासु ' इति पाठः ।

[चरिमसमए] गलिदे एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, चरिमफालीए पादिदाए पुव्विल्लजीवट्ठिदिसंतेण सेसट्ठिदिसंतं समाणं[1] होदूण पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमए गलिदे तत्तो समऊणं होदि त्ति। एदमत्थपदं उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

पुणो तत्तो तदियजीवेण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । गलिदे पुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्तट्ठाणाणि चेव उप्पज्जंति । पुणो एदेणेव चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? चरिमफालीए पदिदाए पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तं पत्तस्स सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स उक्कीरणद्धाए चरिमसमयगलणेण समऊणत्तदंसणादो ।

पुणो तत्तो चउत्थजीवेण बिदियट्ठिदिकंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए [बिदियसमओ गलदि। पुणो तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए] तदियसमओ गलदि। एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि।

गलनेपर यह अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके अलग होनेपर पूर्वोक्त जीवके स्थितिसत्त्वसे शेष स्थितिसत्त्व समान हो करके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर उससे एक समय कम हो जाता है। यह अर्थपद आगे सब जगह कहना चाहिये ।

तत्पश्चात् उससे तीसरे जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । उसके गलनेपर पुनरुक्त स्थान होता है। द्वितीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्त स्थान है। फिर तृतीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार जब तक एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां पतित होती हैं तब तक पुनरुक्त स्थान ही उत्पन्न होते हैं। पश्चात् इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके पतित होनेपर पहिले जीवके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्कर्म उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है ।

पुनः उससे चतुर्थ जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका [द्वितीय समय गलता है। पश्चात् तृतीय फालिके विघटित

---

१ प्रतिषु 'सेसट्ठिदिसंतसमाणं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सरिसत्तं ⌵ पि तस्सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स'; ताप्रतौ 'सरिसत्तं पत्तसट्ठिदिसंतकम्मस्स' इति पाठः।

एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्ताणि चेव ट्ठाणाणि उप्पज्जंति। पुणो चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? चरिमफालीए अवणिदाए पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तमुवगयस्स सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स उक्कीरणद्धाचरिमसमयगलणेण समऊणत्तदंसणादो । एवमेदेण कमेण ट्ठिदिकंदयमेत्ताणि समऊणुक्कीरणद्धाए अहियाणि अपुणरुत्तट्ठिदिसंतट्ठाणाणि उप्पाइय पुणो पच्छा पुव्विल्लट्ठविदजीवादो अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्ती वत्तव्वा । तं जहा — तेण पुव्वणिरुद्धजीवेण चरिमफालीए अवणिदाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? चरिमफालीए पदिदाए पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तमुवगयस्स ट्ठिदिसंतकम्मस्स अधट्ठिदिगलणेण समऊणत्तदंसणादो । एवं बिदियपरिवाडी गदा ।

संपहि तदियपरिवाडिं वत्तइस्सामो । तं जहा— एदेसु रूवाहियट्ठिदिकंदयमेत्त-जीवेसु सव्वजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिएण तदियट्ठिदिकंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, अधट्ठिदिगलणेण पुव्विल्लट्ठिदिं पडुच्च समऊणत्तदंसणादो । चरिमफालिं मोत्तूण सेसफालीहिंतो णापुणरुत्तट्ठाणं[1] उप्पज्जदि,

---

किये जानेपर उत्कीरणकालका] तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां जब तक पतित होती हैं तब तक पुनरुक्त स्थान ही उत्पन्न होते हैं । पश्चात् अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पूर्व स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्कर्म उत्कीरणकाल सम्बन्धी अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है । इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डक प्रमाण व एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक अपुनरुक्त स्थितिसत्त्वस्थानोंको उत्पन्न कराकर फिर पश्चात् पहिले स्थापित जीवकी अपेक्षा अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्ति कही जाती है । यथा— उक्त विवक्षित पूर्व जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पहिलेके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ स्थितिसत्कर्म अधःस्थितिके गलनेसे एक समय देखा जाता है । इस प्रकार द्वितीय परिपाटी समाप्त हुई ।

अब तृतीय परिपाटीको कहते हैं । यथा— इन एक अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण जीवोंमेंसे सर्वजघन्यस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अधःस्थितिके गलनेसे पूर्वोक्त स्थितिकी अपेक्षा यह स्थिति एक समय कम देखी जाती है । अन्तिम फालिको छोड़ शेष फालियोंसे अपुनरुक्त

---

1 काप्रतौ 'सेसफालीहिंतो एगं पुणरुत्तट्ठाणं', ताप्रतौ 'सेसफालीहिंतो ण पुणरुत्तट्ठाणं' इति पाठः ।

तत्थ ट्ठिदीणमायामस्स घादाभावादो। पुणो तेणेव बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि। एदं अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि चेव ट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि उप्पादेदव्वाणि।

पुणो उक्कीरणद्धाचरिमसमएण ट्ठिदिकंदयचरिमफालिं तधा चेव ट्ठविय पुणो एदेसु अप्पिदजीवेसु सव्वुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मियजीवेण तदियट्ठिदिकंदयपढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि। बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं। तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि। एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि पुणरुत्तट्ठाणाणि गच्छंति। पुणो तदियट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? चरिमफालीए अवणिदाए सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तं पत्तस्स अधट्ठिदिगलणेण[1] समऊणत्तदंसणादो।

पुणो एदम्हादो बिदियजीवेण तदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्की-

स्थान नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि, उनमें स्थितियोंके आयामका घात सम्भव नहीं है। पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। तृतीय फालिके अलग होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये।

अब उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको उसी प्रकार स्थापित करके फिर इन विवक्षित जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्टस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह पुनरुक्त स्थान है। द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्त स्थान है। तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकालके बराबर पुनरुक्त स्थान जाते हैं। पश्चात् तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर शेष स्थितिसत्कर्म पूर्वके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त स्थितिसत्कर्म अधःस्थितिके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है।

तत्पश्चात् इससे दूसरे जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके

[1] प्रतिषु 'अवट्ठिदिगलणेण' इति पाठः।

रणद्धाए [पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए] बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तेसु पुणरुत्तट्ठाणेसु । पुणो एदेणेव तदियट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।

पुणो तदियजीवेण तदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एदेणेव तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तेसु पुणरुत्तट्ठाणेसु गदेसु तदो तदियकंदयचरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं सुगमं ।

पुणो चउत्थजीवेण तदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए [अवणिदाए] पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं

अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका [प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका] द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके अलग होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । यही क्रम एक समय कम उत्कीरण काल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंमें चालू रहता है । पश्चात् इसी जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है ।

पुनः तृतीय जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । पश्चात् द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इसी जीवके द्वारा तृतीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतनेपर फिर तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

तत्पश्चात् चतुर्थ जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके

पि' पुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं ताव पुणरुत्तट्ठाणाणि उप्पज्जंति जाव समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ पदिदाओ त्ति। पुणो चरिमफालीए [अवणिदाए] उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कारणं सुगमं। एवं जाणिदूण रूवूणुक्कीरणद्धाए अहियट्ठिदिखंडमेत्तट्ठाणाणि [णेदव्वाणि]। पुणो अंतिमजीवेण पुव्वं ठविदूणागदचरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं तदियपरिवाडी परूविदा। एवं धुवट्ठिदीदो समुप्पज्जमाणपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिखंडयाणि अस्सिदूण णिरंतरट्ठाणपरूवणा कादव्वा।

संपहि संपुण्णुक्कीरणद्धाए एगट्ठिदिखंडएण च अहियएइंदियट्ठिदिबंधमेत्तट्ठिदिसंतकम्मिएण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए एगो समओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि। एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं रूवूणुक्कीरणद्धामेत्तेसु अपुणरुत्तट्ठाणेसु समुप्पण्णेसु। एदमेवं चेव ट्ठविय पुणो एदेसु णिरुद्धजीवेसु सव्वुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिएण अप्पिदट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदं पुणरुत्त-

---

विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार तब तक पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होते हैं जब तक एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां विघटित नहीं हो जातीं। पश्चात् अन्तिम फालिके [विघटित होनेपर] उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। इसका कारण सुगम है। इस प्रकार जानकर एक कम उत्कीरणकालसे अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण स्थानोंको [ले जाना चाहिये]। तत्पश्चात् अन्तिम जीवके द्वारा पूर्वमें स्थापित करके आयी हुई अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार तृतीय परिपाटीकी प्ररूपणा की है। इस प्रकार ध्रुवस्थितिसे उत्पन्न होनेवाले पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिकाण्डकोंका आश्रय करके निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये।

अब सम्पूर्ण उत्कीरणकालसे और एक स्थितिकाण्डकसे अधिक एकेन्द्रिय स्थितिबन्धके बराबर स्थितिसत्कर्म युक्त जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका एक समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी अपुनरुक्त स्थान है। तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह भी अपुनरुक्त स्थान है। यही क्रम एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण अपुनरुक्त स्थानोंके उत्पन्न होने तक चालू रहता है। अब इसे यों ही स्थापित करके पश्चात् इन विवक्षित जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्टस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा विवक्षित स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय

---

१ प्रतिषु 'हि' इति पाठः।

ट्ठाणं होदि । एदेणेव बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तेसु पुणरुत्तट्ठाणेसु गदेसु । पुणो अप्पिदट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, चरिमफालीए गदाए पुव्विल्लअपुणरुत्तट्ठिदिसंतेण समाणत्तमुवगयस्स ट्ठिदिसंतस्स अधट्ठिदिगलणेण तत्तो समऊणत्तदंसणादो ।

पुणो बिदियजीवेण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । बिदियफालीए अवणिदाए तिस्से बिदियसमओ गलदि । तदियफालीए अवणिदाए तदियसमओ गलदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तेसु पुणरुत्तट्ठाणेसु गदेसु चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

पुणो तदियजीवेण[1] पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । बिदियफालीए अवणिदाए तिस्से बिदियसमओ गलदि । तदियफालीए अवणिदाए तिस्से तदियसमओ गलदि । एवं दुसमयूणउक्कीरणद्धामेत्तेसु पुणरुत्तट्ठाणेसु गदेसु पुणो एदेणेव

गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । इसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । यही क्रम एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतने तक चालू रहता है । फिर विवक्षित स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके बीतनेपर पूर्वके अपुनरुक्त स्थितिसत्त्वसे समानताको प्राप्त हुआ वह स्थितिसत्त्व अधःस्थितिके गलनेसे उसकी अपेक्षा एक समय कम देखा जाता है ।

तत्पश्चात् द्वितीय जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उसका द्वितीय समय गलता है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उसका तृतीय समय गलता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतनेपर जब अन्तिम फालि विघटित की जाती है तब उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसके कारणका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये ।

पुनः तृतीय जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उसका द्वितीय समय गलता है । तृतीय फालिके विघटित किये जानेपर उसका तृतीय समय गलता है । इस प्रकार दो समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतनेपर फिर

---

१ प्रतिषु 'तदियफालीए अवणिदाए जीवेण' इति पाठः ।

चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कारणं सुगमं।

पुणो चउत्थजीवेण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि। बिदियाए फालीए अवणिदाए तिस्से बिदियसमओ गलदि। तदियाए अवणिदाए तिस्से तदियसमओ गलदि। एदेणेव कमेण रूवूणुक्कीरणद्धामेत्तेसु पुणरुत्तट्ठाणेसु उप्पण्णेसु पुण पच्छा एदेणेव चरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कारणं सुगमं।

एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवे अस्सिदूण रूवूणुक्कीरणद्धाए अहियकंदयमेत्तअपुणरुत्तट्ठाणाणि उप्पाइय पुणो पुव्विल्लंतिमट्ठविदजीवमस्सिदूण अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। तं जहा— अंतिमजीवेण अप्पिदट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि जं सेसमेइंदियउक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं होदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं, पुव्वमणुप्पण्णत्तादो। एत्थ एइंदियट्ठिदी णाम संदिट्ठीए दो

इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। इसका कारण सुगम है।

पुनः चतुर्थ जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह पुनरुक्त स्थान है। द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उसका द्वितीय समय गलता है। तृतीय फालिके विघटित होनेपर उसका तृतीय समय गलता है। इसी क्रमसे एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके उत्पन्न हो जानेपर फिर पीछे इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। इसका कारण सुगम है।

इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीवोंके आश्रयसे एक कम उत्कीरणकालसे अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराके फिर पूर्वमें स्थापित अन्तिम जीवका आश्रय करके अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं। यथा— अन्तिम जीवके द्वारा विवक्षित स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है जो कि एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिमें शेष होता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, उसकी उत्पत्ति पूर्वमें नहीं हुई है। यहां संदृष्टिमें (मूलमें देखिये) एकेन्द्रियस्थितिके लिये दो

१ प्रतिषु 'पुव्वं' इति पाठः।

बिंदू, अंकेण पुण सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा। पुणो एदम्हादो ट्ठिदिसंतादो एइंदियबंधमस्सिदूण अणुक्कस्सट्ठिदिवियप्पा उप्पादेदव्वा। तं जहा— बादरेइंदियपज्जत्तएण समऊणुक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दुसमऊणाए पबद्धाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसमऊणाए पबद्धाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं चदु-पंचसमऊणादिकमेण ओदारेदव्वं जाव बादरेइंदियपज्जत्तएण सव्वविसुद्धेण बद्धजहण्णसंतसमाणट्ठिदि त्ति।

```
 ०
 ००
 ०००
 ००००
 ००००
```

संपहि एइंदिएसु लद्धसव्वट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव। कुदो? तत्थ वीचारट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव होंति त्ति गुरूवदेसादो। पुणो एदिस्से ट्ठिदीए हेट्ठा खवगसेढिमस्सिदूण अण्णाणि अंतोमुहुत्तट्ठाणाणि लब्भंति। तं जहा— एगो जीवो खवगसेडिं चडिय अणियट्टिखवगो जादो। तदो अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु असण्णिट्ठिदिबंधेण सरिसं संतकम्मं कुणदि। पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण चदुरिंदियट्ठिदिबंधेण सरिसं संतकम्मं कुणदि। पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण तेइंदियट्ठिदिबंधेण सरिसं संतकम्मं कुणदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बेइंदियट्ठिदिबंधेण सरिसं ट्ठिदिसंतकम्मं कुणदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियट्ठिदि-

---

बिन्दु हैं, जो कालकी अपेक्षा सागरोपमके तीन बटे सात भाग ($\frac{3}{7}$) के सूचक हैं। इस स्थितिसत्त्वसे एकेन्द्रियके स्थितिबंधका आश्रय करके अनुत्कृष्ट स्थिति-विकल्पोंको उत्पन्न कराना चाहिये। यथा— बादर एकेन्द्रिय जीवके द्वारा एक समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार चार-पांच आदि समयोंकी हीनताके क्रमसे सर्वविशुद्ध बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके द्वारा बांधी गई जघन्य स्थितिके सत्त्व समान स्थितिके होने तक उतारना चाहिये।

अब एकेन्द्रियोंमें प्राप्त सब स्थान पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र ही हैं, क्योंकि "उनमें वीचारस्थान पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र ही होते हैं" ऐसा गुरुका उपदेश है। इस स्थितिके नीचे क्षपकश्रेणिका आश्रय करके अन्य अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थान प्राप्त होते हैं। यथा— एक जीव क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ होकर अनिवृत्तिकरण क्षपक हुआ। पश्चात् अनिवृत्तिकरणकालके संख्यात बहुभागोंके बीतनेपर वह असंज्ञी जीवके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल बिताकर चतुरिन्द्रियके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है। पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल बिताकर वह त्रीन्द्रिय जीवके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है। पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल जाकर वह द्वीन्द्रिय जीवके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तके बीतनेपर एकेन्द्रिय जीवके स्थितिबन्धके समान स्थिति-

बंधेण सरिसं ट्ठिदिसंतकम्मं कुणदि । एवमेदाणि खवगसेडिम्हि भणिदूणागदसव्वट्ठिदिसंतकम्मट्ठाणाणि पुणरुत्ताणि चेव, एइंदियजहण्णबंधं पेक्खिदूण पदासिं ट्ठिदीणं बहुत्तुवलंभादो ।

पुणो एइंदियट्ठिदिसंतकम्मम्मि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिखंडयमागाएदि । तं जाव पददि ताव अंतोमुहुत्तट्ठाणाणि अधट्ठिदिगलणेण लब्भंति । ताणि पुणरुत्ताणि, एइंदिसु लद्धट्ठाणेसु पवेसादो । पुणो आगाइदकंदयस्स चरिमफालीए पदिदाए एइंदियवीचारट्ठाणेहिंतो असंखेज्जगुणमोसरिदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो बिदियसमए अण्णं ट्ठिदिखंडयमागाएदि । तस्स ट्ठिदिखंडयस्स उक्कीरणकालम्मि एगसमए गलिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियसमए गलिदे बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदियसमए गलिदे तदियमपुणरुत्तणिरंतरट्ठाणं होदि । एवं णिरंतरट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव उक्कीरणकालदुचरिमसमओ त्ति । पुणो चरिमफाली पददि । तीए पदिदाए पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमंतरियूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो अण्णं ट्ठिदिकंदयमागाएदि । तस्स ट्ठिदिकंदयस्स उक्कीरणकालम्मि एगसमए गलिदे अण्णमपुणरुत्तणिरंतरट्ठाणं होदि । बिदियसमए गलिदे अण्णमपुणरुत्तणिरंतरट्ठाणं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि अपुणरुत्तणिरंतरट्ठाणाणि लब्भंति । पुणो उक्कीरणकालचरिमसमए गलिदे चरिमफालि-

सत्त्वको करता है। इस प्रकार क्षपकश्रेणिमें कहकर आये हुए ये सभी स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त ही हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवके जघन्य बन्धकी अपेक्षा ये स्थितियां बहुत पायी जाती हैं।

पुनः एकेन्द्रियके स्थितिसत्त्वमेंसे पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र स्थितिकाण्डकको ग्रहण करता है। वह जब तक विघटित होता है तब तक अधःस्थितिके गलनेसे अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थान प्राप्त होते हैं। वे पुनरुक्त हैं, क्योंकि, वे एकेन्द्रियोंमें प्राप्त स्थानोंके अन्तर्गत हैं। पश्चात् ग्रहण किये गये स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर एकेन्द्रिय सम्बन्धी वीचारस्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणा हटकर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें दूसरे स्थितिकाण्डकको ग्रहण करता है। उस स्थितिकाण्डकके उत्कीरणकालमेंसे एक समयके गलनेपर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। द्वितीय समयके गलनेपर द्वितीय अपुनरुक्त स्थान होता है। तृतीय समयके गलनेपर तृतीय अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है। इस प्रकार उत्कीरणकालके द्विचरम समय तक निरन्तर स्थान पाये जाते हैं। फिर अन्तिम फालि विघटित होती है। उसके विघटित हो जानेपर पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र अन्तर करके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तत्पश्चात् अन्य स्थितिकाण्डकको ग्रहण करता है। उस स्थितिकाण्डकके उत्कीरणकालमेंसे एक समयके गलनेपर अन्य अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है। द्वितीय समयके गलनेपर अन्य अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण अपुनरुक्त निरन्तर स्थान पाये जाते हैं। पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके

१ का-ताप्रत्योः 'असंखेज्जदि-' इति पाठः ।

मेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूण अपुणरुत्तट्ठाणं उप्पज्जदि । एवं णिरंतर-सांतरकमेण ट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव खीणकसायकालस्स संखेज्जा भागा गदा त्ति । तदो खीणकसायचरिम-ट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए पदिदाए खीणकसायकालस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि उदय-क्खएण णिरंतरअपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । एत्थ खवगसेडिम्हि लद्धणिरंतरट्ठाणाणि अंतोमुहुत्तमेत्ताणि, रूवूणुक्कीरणद्धं संखेज्जसहस्सरूवेहि गुणिदे खवगसेडिसमुप्पण्णसव्वणिरंतरट्ठाणुप्पत्तीदो । सांतरट्ठाणाणि पुण संखेज्जाणि चेव, खवगसेडीसु संखेज्जाणं चेव ट्ठिदिखंडयाणं पदणोवलंभादो । संखेज्जपलिदोवममेत्तट्ठाणाणि ण लद्धाणि । एदेसु अलद्धट्ठाणेसु कम्मट्ठिदिम्हि सोहिदेसु जं सेसं तेत्तियमेत्ता अणु-क्कस्सट्ठाणवियप्पा ।

एदेसिं ट्ठाणाणं सामिणो जे जीवा तेसिं छहि अणियोगद्दारेहि परूवणं कस्सामो । तं जहा — एत्थ ताव तसजीवे अस्सिदूण भण्णमाणे जहण्णए ट्ठाणे अत्थि जीवा । एवं णेयव्वं जावुक्कस्सट्ठाणे त्ति । एवं परूवणा गदा ।

ओघजहण्णट्ठाणे जहण्णेण एगो, उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसदजीवा । एवं खवगसेडीए लद्धसव्वट्ठाणेसु जीवपमाणं वत्तव्वं । सण्णिपंचिंदियमिच्छाइट्ठिजहण्णट्ठिदीए जीवा पदरस्स

गलनेपर अन्तिम फालि प्रमाण स्थानोंका अन्तर करके अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार निरन्तर और सान्तर क्रमसे स्थान तब तक पाये जाते हैं जब तक क्षीणकषाय गुणस्थानके कालका संख्यात बहुभाग वीतता है । पश्चात् क्षीणकषाय जीवके अन्तिम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर क्षीणकषायके अन्तिम समय तक क्षीणकषायकालके संख्यातवें भाग मात्र उदयक्षयसे निरन्तर अपुनरुक्त स्थान पाये जाते हैं । यहां क्षपकश्रेणिमें प्राप्त निरन्तर स्थान अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होते हैं, क्योंकि, एक कम उत्कीरणकालको संख्यात हजार रूपोंसे गुणित करनेपर क्षपकश्रेणिमें उत्पन्न समस्त निरन्तर स्थान प्राप्त होते हैं । परन्तु सान्तर स्थान संख्यात ही हैं, क्योंकि, क्षपकश्रेणिमें संख्यात ही स्थितिकाण्डकोंका विघटन पाया जाता है । संख्यात पल्योपम प्रमाण स्थान यहां नहीं पाये जाते । यहां न प्राप्त होनेवाले इन स्थानोंको कर्मस्थितिमेंसे कम कर देनेपर जो शेष रहता है उतना अनुत्कृष्ट स्थानके विकल्पोंका प्रमाण होता है ।

जो जीव इन स्थानोंके स्वामी हैं उनकी छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्ररूपणा करते हैं । यथा — यहां पहिले त्रस जीवोंका आश्रय करके प्ररूपणा करनेपर जघन्य स्थानमें जीव हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थान तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

ओघ जघन्य स्थानमें जघन्यसे एक और उत्कर्षसे एक सौ आठ जीव पाये जाते हैं । इस प्रकार क्षपकश्रेणिमें प्राप्त सभी स्थानोंमें जीवोंका प्रमाण कहना चाहिये । संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिकी जघन्य स्थितिमें जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

असंखेज्जदिभागमेत्ता। बिदियाए वि ट्ठिदीए पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि। तत्थ अणंतरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स बिट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा च जीवा णाणावरणीयस्स सग-सगजहण्णियाए ट्ठिदीए थोवा। बिदियाए ट्ठिदीए विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तेण। तदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव जवमज्झं। तेण परं विसेसहीणा। एवं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमसदपुधत्तं। सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए थोवा। बिदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया। तदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसदपुधत्तं। तेण परं विसेसहीणा। एवं विसेसहीणा विसेस-हीणा जाव सादस्स असादस्स [य] उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति। एवमणंतरोवणिधा समत्ता।

परंपरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स बिट्ठाणबंधा

. . ...

द्वितीय स्थितिमें भी वे प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। उनमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव तथा असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें स्तोक हैं। द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक हैं। कितने प्रमाणसे अधिक हैं? पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वे एक खण्डसे अधिक हैं। उनसे तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार वे यवमध्य तक विशेष अधिक विशेष अधिक होते गये हैं। उसके आगे वे विशेष हीन हैं। इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे विशेष हीन विशेष हीन हैं। सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक और असातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें स्तोक हैं। द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं। तृतीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं। इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण स्थिति तक वे उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक हैं। इससे आगेकी स्थितिमें वे उत्तरोत्तर विशेष हीन हैं। इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे विशेष हीन विशेष हीन हैं। इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी

तिट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवेहिंतो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्डिदा[1] जाव जवमज्झं। तेण परं पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागं गंतूण दुगुणहीणा। एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सागरोवमसदपुधत्तं। सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवेहिंतो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्डिदा। एवं दुगुणवड्डिदा दुगुणवड्डिदा जाव सागरोवमसदपुधत्तं। तेण परं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा। एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सादस्स असादस्स य उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति। एयजीवदुगुणवड्डि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि। णाणाजीवदुगुणवड्डि-हाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। णाणाजीवदुगुणवड्डि-हाणिट्ठाणं-तराणि थोवाणि। एयजीवदुगुणवड्डि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं। एवं परंपरोवणिधा समत्ता।

जहण्णट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? असंखेज्ज-गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति। बिदियट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा असंखेज्ज-गुणहाणिमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जंति। एवं णेदव्वं जाव जवमज्झे त्ति। जवमज्झ-जीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? किंचूणतिण्णिगुणहाणिट्ठाणं-

---

जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उससे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर यवमध्य तक दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हैं। उसके आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त हैं। इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे दुगुणे हीन दुगुणे हीन हैं। सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव और असातावेदनीयके चतुःस्थान-बन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा उनसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं। इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं। इससे आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त हैं। इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे दुगुणे-दुगुणे हीन हैं। एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यात वर्गमूल प्रमाण है। नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं। एकजीवदुगुणवृद्धि-हानि-स्थानान्तर उनसे असंख्यातगुणा है। इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई।

जघन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे समस्त जीव कितने कालसे अप-हृत होते हैं? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात-गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं। द्वितीय स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे वे समस्त जीव असंख्यात गुणहानि मात्र कालसे अपहृत होते हैं। इस प्रकार यवमध्य तक ले जाना चाहिये। यव-मध्यके जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने काल द्वारा अपहृत होते हैं? कुछ कम

---

१ प्रतिषु '-दुगुणवड्डिदाए' इति पाठः।

तरेण कालेण अवहिरिज्जंति । एवं जवमज्झादो उवरिं पि जाणिदूण वत्तव्वं । एवमवहार-परूवणा गदा ।

जहण्णए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । एवं सव्वट्ठाणजीवाणं जाणिदूण भागाभागपरूवणा कायव्वा ।

सव्वत्थोवा जवमज्झाणं उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा । जहण्णए ट्ठाणे जीवा असं-खेज्जगुणा । गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जवमज्झादो हेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासी । जवमज्झादो हेट्ठिमजहण्णट्ठाण-जीवेहिंतो उवरिमसव्वजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ढ [गुणहाणीओ] गुणगारो । जवमज्झादो हेट्ठिमजीवा विसेसाहिया । जवमज्झादो उवरिमजीवा विसेसाहिया । सव्वजीवा विसेसाहिया । एवमप्पाबहुगपरूवणा गदा ।

एवमेइंदिय-विगलिंदियाणं पि परूवेदव्वं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तएइंदिय-वीचारट्ठाणेसु तस्सेव संखेज्जदिभागमेत्तविगलिंदियवीचारट्ठाणेसु च । णवरि सादासादाणं बिट्ठाणजवमज्झं चेव, तत्थ तिट्ठाण-चउट्ठाणाणुभागाणं बंधाभावादो । किंतु सण्णिपंचिं-दियगुणहाणिसलागाहिंतो तत्थतणगुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ

तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे वे अपहृत होते हैं। इसी प्रकार यवमध्यके आगे भी जानकर कहना चाहिये। इस प्रकार अवहारप्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थानमें स्थित जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं। वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इस प्रकार सब स्थानोंके जीवोंको जानकर भागा-भागकी प्ररूपणा करना चाहिये।

यवमध्योंके उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे जघन्य स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। उनसे यवमध्य-के जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? यवमध्यसे नीचेकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। यवमध्यसे नीचेके जघन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा ऊपरके सब जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ़ गुणहानियां हैं। यवमध्यसे नीचेके जीव उनसे विशेष अधिक हैं। उनसे यवमध्य-के उपरिम जीव विशेष अधिक हैं। उनसे सब जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार अल्पबहुत्वप्ररूपणा समाप्त हुई।

इसी प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंमें और उसके ही संख्यातवें भाग प्रमाण विकलेन्द्रियके वीचारस्थानोंमें एकेन्द्रिय एवं विकलेन्द्रिय जीवोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि साता व असाता वेदनीयके द्विस्थानसम्बन्धी यवमध्य ही है, क्योंकि, वहां त्रिस्थान और चतुःस्थान अनुभागोंका बन्ध नहीं होता। किन्तु संज्ञी पंचेन्द्रियकी गुणहानिशलाकाओंसे वहांकी गुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हीन

च । पमाणं पुण एइंदिया अणंता । सण्णिपंचिंदियधुवट्ठिदीदो हेट्ठिमाणं असण्णिपंचिंदिय-उक्कस्सट्ठिदीदो उवरिमाणं संतट्ठाणाणं जीवसमुदाहारो कादुं ण सक्किज्जदे, उवदेसाभावादो।

एवं छण्णं कम्माणं ॥ १० ॥

जहा णाणावरणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्ससामित्तं परूविदं तहा सेसछकम्माणं परूवेदव्वं । णवरि मोहणीयस्स उक्कस्सट्ठिदी सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता । अणुक्कस्स-सामित्ते भण्णमाणे सण्णिपंचिंदियमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव चरिमसमयसुहुमसांपराइयो ताव सामिओ त्ति वत्तव्वं । णामा-गोदाणं उक्कस्सट्ठिदी वीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता । एदेसि-मणुक्कस्सट्ठिदिसामित्ते भण्णमाणे सण्णिपंचिंदियमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव चरिमसमयअजोगि त्ति वत्तव्वं । एवं वेयणीयस्स वि परूवणा कायव्वा । णवरि उक्कस्सट्ठिदी तीसं सागरोवमकोडाकोडिमेत्ता ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया कस्स ? ॥ ११ ॥

सुगमं ।

व संख्यातगुणी हीन हैं। प्रमाण— एकेन्द्रिय जीव अनन्त हैं। संज्ञी पंचेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिसे नीचेके और असंज्ञी पंचेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिसे ऊपरके सत्त्वस्थानोंका जीवसमुदाहार करनेके लिये शक्य नहीं है, क्योंकि, उसका उपदेश प्राप्त नहीं है।

ज्ञानावरणीयके समान ही शेष छह कर्मोंके उत्कृष्ट स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १० ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्वामित्वकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार शेष छह कर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। अनुत्कृष्ट स्वामित्व-का कथन करते समय संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिसे लेकर अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-साम्परायिक तक स्वामी हैं, ऐसा कहना चाहिये। नाम व गोत्र कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है। इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके स्वामित्वका कथन करते समय संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिसे लेकर अन्तिम समयवर्ती अयोगकेवली तक स्वामी हैं ऐसा कहना चाहिये। इसी प्रकार वेदनीय कर्मकी भी प्ररूपणा कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उसकी उत्कृष्ट स्थिति तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है।

स्वामित्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट पदमें आयुकर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ११ ॥

यह सूत्र सुगम है।

१ आ-ताप्रत्योः ' छण्णं कम्माणं ' इति पाठः

अण्णदरस्स मणुस्सस्स वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वा सण्णिस्स सम्माइट्ठिस्स वा [मिच्छाइट्ठिस्स वा] सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा संखेज्जवासाउअस्स इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा जलचरस्स वा थलचरस्स वा सागार-जागार-तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स वा [तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा] उक्कस्सियाए आबाधाए जस्स तं देव-णिरयाउअं पढमसमए बंधंतस्स आउअवेयणा कालदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥

ओगाहण-कुल-जादि-वण्ण-विण्णास[१]-संठाणादिभेदेहि विसेसाभावपरूवणट्ठमण्णदरस्से त्ति भणिदं। देवाणमुक्कस्साउअस्स मणुसा चेव बंधया, णेरइयाणं उक्कस्साउअस्स मणुस्सा सण्णिपंचिंदियतिरिक्खा वा बंधया त्ति जाणावणट्ठं मणुस्सस्स वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वा सण्णिस्स्से त्ति भणिदं। देवाणं उक्कस्साउअं सम्मादिट्ठिणो चेव बंधंति, णेरइयाणं उक्कस्साउअं मिच्छाइट्ठिणो चेव बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सम्मादिट्ठिस्स वा मिच्छादिट्ठिस्स वा त्ति णिद्दिट्ठं। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा चेव णेरइयाणं उक्कस्साउअं

जो कोई मनुष्य या पंचेन्द्रिय तिर्यंच संज्ञी है, सम्यग्दृष्टि [अथवा मिथ्यादृष्टि] है, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त है, कर्मभूमि या कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुआ है, संख्यात वर्षकी आयुवाला है; स्त्रीवेद, पुरुषवेद या नपुंसकवेदसे संयुक्त है; जलचर अथवा थलचर है, साकार उपयोगसे सहित है, जागरुक है, तत्प्रायोग्य संक्लेश [अथवा विशुद्धि] से संयुक्त है, तथा जो उत्कृष्ट आबाधाके साथ देव व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाला है, उसके बांधनेके प्रथम समयमें आयु कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १२ ॥

अवगाहना, कुल, जाति, वर्ण, विन्यास और संस्थान आदिके भेदोंसे निर्मित विशेषताका अभाव बतलानेके लिये सूत्रमें 'अण्णदरस्स' यह कहा है। देवोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक मनुष्य ही होते हैं तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक मनुष्य अथवा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच होते हैं, यह जतलानेके लिये "मणुस्सस्स वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वा सण्णिस्स" ऐसा कहा है। देवोंकी उत्कृष्ट आयुको सम्यग्दृष्टि ही बांधते हैं तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको मिथ्यादृष्टि ही बांधते हैं, यह प्रगट करनेके लिये "सम्मादिट्ठिस्स वा मिच्छादिट्ठिस्स वा" ऐसा निर्देश किया गया है। जो छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो चुके हैं वे ही नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधते

१ प्रतिषु 'विण्णाण' इति पाठः।

बंधंति त्ति जाणावणट्टं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्से त्ति भणिदं । देवाणं उक्कस्साउअं पण्णारसकम्मभूमीसु चेव वज्झइ, णेरइयाणं उक्कस्साउअं पण्णारसकम्म-भूमीसु कम्मभूमिपडिभागेसु च वज्झदि त्ति जाणावणट्टं कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमि-पडिभागस्स वा त्ति परूविदं । देव-णेरइयाणं उक्कस्साउअमसंखेज्जवासाउवतिरिक्ख-मणुस्सा ण बंधंति, संखेज्जवासाउवा चेव बंधंति त्ति जाणावणट्टं संखेज्जवासाउअस्से त्ति परूविदं । देव-णेरइयाणं उक्कस्साउअबंधस्स तीहि वेदेहि विरोहो णत्थि त्ति जाणावणट्टं इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णवुंसयवेदस्स वा त्ति भणिदं ।

एत्थ भाववेदस्स गहणमण्णहा दव्वित्थिवेदेण वि णेरइयाणमुक्कस्साउअस्स बंधप्प-संगादो । ण च तेण सह तस्स बंधो, आ पंचमी त्ति सीहा इत्थीओ जंति[1] छट्ठिपुढवि त्ति[1] एदेण सुत्तेण सह विरोहादो । ण च देवाणं उक्कस्साउअं दव्वित्थिवेदेण सह वज्झइ, णियमा णिग्गंथलिंगेणे त्ति सुत्तेण[3] सह विरोहादो । ण च दव्वित्थीणं णिग्गंथत्तमत्थि, चेलादिपरिच्चाएण विणा तासिं भावणिग्गंथत्ताभावादो । ण च दव्वित्थि-

---

हैं, यह जतलानेके लिये "सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स" यह कहा है । देवोंकी उत्कृष्ट आयु पन्द्रह कर्मभूमियोंमें ही बंधती है तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयु पन्द्रह कर्मभूमियों और कर्मभूमिप्रतिभागोंमें भी बांधी जाती है, यह बतलानाके लिये "कम्मभूमियस्स कम्मभूमिपडिभागस्स वा" ऐसा कहा है । देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच या मनुष्य नहीं बांधते हैं, किन्तु संख्यात-वर्षायुष्क ही बांधते हैं, यह जतलानेके लिये 'संखेज्जवासाउअस्स' ऐसा निर्देश किया है । देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धका तीनों वेदोंके साथ विरोध नहीं है, यह जतलानेके लिये "इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णवुंसयवेदस्स वा" ऐसा कहा है ।

यहां भाववेदका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, द्रव्यवेदका ग्रहण करनेपर द्रव्य स्त्रीवेदके साथ भी नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धका प्रसंग आता है । परन्तु उसके साथ नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुका बन्ध होता नहीं है, क्योंकि "पांचवीं पृथिवी तक सिंह और छठी पृथिवी तक स्त्रियां जाती हैं" इस सूत्रके साथ विरोध आता है । देवोंकी भी उत्कृष्ट आयु द्रव्य स्त्रीवेदके साथ नहीं बंधती, क्योंकि, अन्यथा "[अच्युत कल्पसे ऊपर] नियमतः निर्ग्रन्थ लिंगसे ही उत्पन्न होते हैं" इस सूत्रके साथ विरोध होता है । और द्रव्य स्त्रियोंके निर्ग्रन्थता सम्भव नहीं है, क्योंकि, वस्त्रादिपरित्यागके विना उनके भाव निर्ग्रन्थताका अभाव है । द्रव्य स्त्रीवेदी व नपुंसकवेदी वस्त्रादिकका त्याग करके निर्ग्रन्थ लिंग धारण

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'आ पंचमा त्ति सीहा इत्थीओ जात्ति छट्ठी' इति पाठः । २ मूलाचार १२-११३.
३ मूलाचार १२-१३४., ति. प. ८,५५९-६१.

णवुंसयवेदाणं चेलादिचागो अत्थि, छेदसुत्तेण सह विरोहादो। देवाणं उक्कस्साउअस्स मणुस्सा संजदा थलचारिणो बंधया, णेरइयाणं उक्कस्साउअस्स थलचारिमणुसमिच्छाइट्ठिणो जल-थलचारिसण्णिपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणो वा बंधया त्ति जाणावणट्ठं जलचरस्स वा थलचरस्स वा त्ति भणिदं। खगचारिणो देव-णेरइयाणं उक्कस्साउअं किण्ण बंधंति? ण, पक्खीणं सत्तमपुढविणेरइएसु अणुत्तरविमाणवासियदेवेसु वा उप्पज्जणं पडि सत्तीए अभावादो। ण विज्जाहराणं खगचरत्तमत्थि, विज्जाए विणा सहावदो चेव गगणगमण-समत्थेसु खगयरत्तप्पसिद्धीदो।

दंसणोवजोगे वट्टंताणं उक्कस्साउअबंधो ण होदि, किंतु णाणोवजोगे वट्टंताणं एवे त्ति जाणावणट्ठं सागारणिद्देसो कदो। सुत्ताणमाउअस्स उक्कस्सबंधो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं जागारणिद्देसो कदो। जहा सेसकम्माणं उक्कस्सट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलेसेण वज्झंति, तहा आउअस्स उक्कस्सट्ठिदी उक्कस्सविसोहीए उक्कस्ससंकिलेसेण वा ण वज्झदि त्ति जाणावणट्ठं तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स वा तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा त्ति भणिदं।

कर सकते हैं, ऐसी आशंका करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर छेदसूत्रके साथ विरोध होता है।

देवोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक स्थलचारी संयत मनुष्य, तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक स्थलचारी मिथ्यादृष्टि मनुष्य एवं जलचारी व स्थलचारी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि हैं, इसके ज्ञापनार्थ "जलचरस्स वा थलचरस्स वा" ऐसा कहा है।

शंका— आकाशचारी जीव देव व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको क्यों नहीं बांधते हैं?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पक्षियोंके सप्तम पृथिवीके नारकियों अथवा अनुत्तर विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होनेकी सामर्थ्य नहीं है। यदि कहा जाय कि विद्याधर भी तो आकाशचारी हैं, वे वहां उत्पन्न हो सकते हैं; तो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विद्याकी सहायताके विना जो स्वभावसे ही आकाशगमनमें समर्थ हैं उनमें ही खगचरत्वकी प्रसिद्धि है।

दर्शनोपयोगमें वर्तमान जीवोंके उत्कृष्ट आयुका बन्ध नहीं होता, किन्तु ज्ञानोपयोगमें वर्तमान जीवोंके ही उसका बन्ध होता है, यह जतलानेके लिये 'साकार' पदका निर्देश किया है। सोये हुए जीवोंके उत्कृष्ट आयुका बन्ध नहीं होता, यह बतलानेके लिये 'जागार' पदका प्रयोग किया है। जिस प्रकार शेष कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितियां उत्कृष्ट संक्लेशसे बंधती हैं वैसे आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्ट विशुद्धि अथवा उत्कृष्ट संक्लेशसे नहीं बंधती, यह जतलानेके लिये "तप्पाओग्गसंकिलिट्ठस्स वा तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा" ऐसा कहा है। उत्कृष्ट आबाधाके विना उत्कृष्ट स्थिति

उक्कस्साबाधाए विणा उक्कस्सट्ठिदी ण होदि त्ति जाणावणट्ठं उक्कस्सियाए आबाहाए इदि भणिदं। बिदियादिसमएसु आबाहा उक्कस्सिया ण होदि त्ति पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण देव-णेरइयाणं उक्कस्साउअं बंधमाणपढमसमए चेव उक्कस्साउअवेयणा होदि त्ति भणिदं।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ १३ ॥

तदो उक्कस्सादो वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, सा अणुक्कस्सा। एसा अणुक्कस्सकालवेयणा असंखेज्जवियप्पा। तेण तिस्से सामित्तं पि असंखेज्जवियप्पं। तं जहा — पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण तेत्तीससागरोवमाउअं जेण बद्धं सो उक्कस्सकालसामी। जेण समऊणं पबद्धं सो अणुक्कस्सकालसामी। जेण [दुसमऊणं पबद्धं सो वि अणुक्कस्सकालसामी। जेण] तिसमऊणं पबद्धं सो वि अणुक्कस्सकालसामी। एवमसंखेज्जभागहाणी होदूण ताव गच्छदि जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जेण उक्कस्साउट्ठिदिं खंडिदूण तत्थ एगखंडं परिहीणो त्ति। पुणो उक्कस्साउअं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण तत्थ एगखंडपरिहीणे असंखेज्जभागहाणीए परिसमत्ती संखेज्जभागहाणीए आदी च होदि। एवं संखेज्जभागहाणी होदूण ताव गच्छदि जाव उक्कस्साउअस्स अद्धं समऊणं परिहीणं ति।

नहीं होती है, यह ज्ञापन करानेके लिये 'उक्कस्सियाए आबाहाए' ऐसा कहा है। चूंकि द्वितीयादिक समयोंमें आबाधा उत्कृष्ट होती नहीं है, अतः पूर्वकोटिके तृतीय भागको आबाधा करके देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाले जीवके बन्धके प्रथम समयमें ही उत्कृष्ट आयुवेदना होती है, ऐसा कहा है।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है ॥ १३ ॥

उससे अर्थात् उत्कृष्टसे विपरीत आयु कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट वेदना होती है। यह अनुत्कृष्ट कालवेदना असंख्यात भेद स्वरूप है। इसीलिये उसके स्वामी भी असंख्य प्रकार हैं। यथा — पूर्वकोटिके तृतीय भागको आबाधा करके तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको जिसने बांधा है वह कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदनाका स्वामी है। जिसने एक समय कम उत्कृष्ट आयुको बांधा है वह अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है। जिसने [दो समय कम उत्कृष्ट आयुको बांधा है वह भी अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है। जिसने] तीन समय कम उत्कृष्ट आयुको बांधा है वह भी अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है। इस प्रकार असंख्यातभागहानि होकर तब तक जाती है जब तक जघन्य परीतासंख्यातसे उत्कृष्ट आयुस्थितिको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण हानि नहीं हो जाती। पश्चात् उत्कृष्ट आयुको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण हानिके हो जानेपर असंख्यातभागहानिकी समाप्ति और संख्यातभागहानिका प्रारम्भ होता है। इस प्रकार संख्यातभागहानि होकर तब तक जाती है जब तक उत्कृष्ट आयुका एक समय कम अर्ध भाग हीन नहीं हो जाता।

पुणो उक्कस्साबाहं काऊण उक्कस्साउअस्स अद्धे पबद्धे संखेज्जगुणहाणी होदि। पुणो समऊणे अद्धे पबद्धे वि संखेज्जगुणहाणी चेव। एवं संखेज्जगुणहाणी ताव गच्छदि जाव उक्कस्साउअं जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडं रूवाहियं सेसं ति। एत्तो प्पहुडि असंखेज्जगुणहाणी चेव होदूण गच्छदि। एवं ताव णेदव्वं जाव पुव्वकोडि-तिभागमाबाहं काऊण देवेसु दसवस्ससहस्साउअं बंधिदूण ट्ठिदो त्ति। पुणो एदेण आउएण समाणमणुस्साउअं घेत्तूण समऊण-दुसमऊणादिकमेण अधट्ठिदिगलणेण णेदव्वं जाव भवसिद्धियचरिमसमओ त्ति। एवं कदे पुव्वकोडितिभागेणब्भहियसमऊणतेत्तीस-सागरोवममेत्तट्ठाणवियप्पा सामित्तवियप्पा च लद्धा होंति।

संपहि एत्थ जीवसमुदाहारो छहि अणियोगद्दारेहि उच्चदे। तं जहा — उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा अत्थि। तदणंतरहेट्ठिमट्ठाणे वि जीवा अत्थि। एवं णेदव्वं जाव अणुक्कस्स-जहण्णट्ठाणे त्ति।

आउअस्स उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जा, णेरइयउक्कस्साउअं बंधमाण-जीवाणमसंखेज्जाणमुवलंभादो। एवं सव्वत्थ णेदव्वं। णवरि एइंदियपाओग्गट्ठाणेसु एक्केक्केसु जीवा अणंता। तत्तो हेट्ठिमेसु खवगसेडीए चेव लब्भमाणेसु संखेज्जा।

पुनः उत्कृष्ट आबाधाको करके उत्कृष्ट आयुके अर्ध भागको बांधनेपर संख्यातगुणहानि होती है। पश्चात् एक समय कम अर्ध भागके बांधनेपर भी संख्यातगुणहानि ही होती है। इस प्रकार संख्यातगुणहानि तब तक जाती है जब तक कि उत्कृष्ट आयुको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक अधिक एक खण्ड शेष रहता है। अब यहांसे असंख्यातगुणहानि ही होकर जाती है। इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक पूर्वकोटिके तृतीय भागको आबाधा करके देवोंमें दस हजार वर्ष प्रमाण आयुको बांधकर स्थित नहीं होता।

पश्चात् इस आयुके समान मनुष्यायुको ग्रहणकर एक समय कम दो समय कम इत्यादि क्रमसे अधःस्थितिके गलनेसे भवसिद्धिकके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये। ऐसा करनेपर पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक व एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण स्थानविकल्प और स्वामित्वविकल्प प्राप्त होते हैं।

अब यहां छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा जीवसमुदाहारको कहते हैं। यथा— उत्कृष्ट स्थानमें जीव हैं। उससे अनन्तर नीचेके स्थानमें भी जीव हैं। इस प्रकार अनुत्कृष्ट-जघन्य स्थान तक ले जाना चाहिये।

आयुके उत्कृष्ट स्थानमें असंख्यात जीव हैं, क्योंकि, नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाले असंख्यात जीव पाये जाते हैं। इसी प्रकार सब स्थानोंमें जानना चाहिये। विशेषता इतनी है कि एकेन्द्रियके योग्य स्थानोंमेंसे एक एक स्थानमें अनन्त जीव हैं। उससे नीचेके क्षपकश्रेणिमें ही पाये जानेवाले स्थानोंमें संख्यात जीव हैं।

सेढी ण सक्कदे णेदुं, विसिट्ठुवएसाभावादो ।

उक्कस्सट्ठाणजीवपमाणेण सव्वट्ठाणजीवा केवडिएण कालेण अवहिरिज्जंति ? अणंतेण कालेण । एवं तसकाइयपाओग्गसव्वट्ठाणजीवाणं वत्तव्वं । एइंदियपाओग्गट्ठाण-जीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? अंतोमुहुत्तेण । एवं सव्वत्थ णेदव्वं ।

उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो । एवं तसपाओग्गसव्वट्ठाणेसु वत्तव्वं । वणप्फदिकाइयपाओग्गेसु ट्ठाणेसु सव्वट्ठाणजीवाणम-संखेज्जदिभागो । एवं सव्वत्थ वणप्फदिपाओग्गट्ठाणेसु वत्तव्वं ।

सव्वत्थोवा जहण्णए ट्ठाणे जीवा । उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा । अज-हण्ण-अणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा अणंतगुणा । अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया । अजहण्णएसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया । एवमुक्कस्स-सामित्तं समत्तं ।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेदणा कालदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १४ ॥

श्रेणिप्ररूपणा करना शक्य नहीं है, क्योंकि, उसके सम्बन्धमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

उत्कृष्ट स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब स्थानोंके जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे अनन्त कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इसी प्रकार त्रसकायिक प्रायोग्य सब स्थानोंके जीवोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । एकेन्द्रिय प्रायोग्य स्थानों सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने काल द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इसी प्रकार सर्वत्र ले जाना चाहिये ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार त्रस प्रायोग्य सब स्थानोंमें कहना चाहिये । वनस्पतिकायिक प्रायोग्य स्थानोंमें सब स्थानोंके जीवोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार सर्वत्र वनस्पतिकायिक प्रायोग्य स्थानोंमें कहना चाहिये ।

जघन्य स्थानमें सबसे स्तोक जीव हैं । उत्कृष्ट स्थानमें उनसे असंख्यात-गुणे जीव हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । अजघन्य स्थानोंमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । सब स्थानोंमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १४ ॥

जहण्णपदे इदि पुव्वुत्तअहियारसंभालणट्ठं णिद्दिट्ठं । सेसकम्मपडिसेहट्ठो णाणावरणीय-णिद्देसो । कालणिद्देसो खेत्तादिपडिसेहफलो । पुव्वाणुपुव्विकमं[1] मोत्तूण पच्छाणुपुव्वीए जहण्णसामित्तपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? ण, तीहि वि आणुपुव्वीहि परूविदे दोसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं तहापरूवणादो । अथवा, जहण्णट्ठाणादो उक्कस्सट्ठाणं संगहिदासेसट्ठाण-वियप्पत्तादो पहाणमिदि जाणावणट्ठं पुव्वमुक्कस्सट्ठाणपरूवणा कदा । सेसं सुगमं ?

अण्णदरस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो जहण्णा ॥ १५ ॥

ओगाहणादिभेदेहि[2] जहण्णकालविरोहाभावपरूवणट्ठमण्णदरस्से त्ति भणिदं । छदुमं णाम आवरणं, तम्हि चिट्ठदि त्ति छदुमत्थो, तस्स छदुमत्थस्से त्ति णिद्देसेण केवलिपडि-सेहो कदो । चरिमसमयछदुमत्थस्से त्ति णिद्देसो दुचरिमादिछदुमत्थपडिसेहफलो । खीण-कसायदुचरिमसमए किण्ण जहण्णसामित्तं दिज्जदे ? ण, तत्थ णाणावरणीयस्स दुसमइयट्ठिदि-

---

'जघन्य पदमें' यह निर्देश पूर्वोक्त अधिकारका स्मरण करानेके लिये कहा है । शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये 'ज्ञानावरणीय' पदका निर्देश किया है । कालके निर्देशका प्रयोजन क्षेत्रादिकोंका प्रतिषेध करना है ।

शंका — पूर्वानुपूर्वीक्रमको छोड़कर पश्चादानुपूर्वीसे जघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा किसलिये की जा रही है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, तीनों ही आनुपूर्वियोंसे प्ररूपणा करनेपर कोई दोष नहीं होता, यह जतलानेके लिये यहां पश्चादानुपूर्वीक्रमसे प्ररूपणा की गई है । अथवा जघन्य स्थानकी अपेक्षा समस्त स्थानभेदोंका संग्रहकर्ता होनेसे उत्कृष्ट स्थान प्रधान है, यह ज्ञात करानेके लिये पहिले उत्कृष्ट स्थानकी प्ररूपणा की गई है ।

शेष कथन सुगम है ।

जो कोई भी जीव छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयमें वर्तमान है उसके कालकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मकी जघन्य वेदना होती है ॥ १५ ॥

अवगाहनादिक भेदोंसे जघन्य कालवेदनाके होनेमें कोई विरोध नहीं है, यह बतलानेके लिये सूत्रमें 'अन्यतर' पदका उपादान किया गया है । छद्म शब्दका अर्थ आवरण है, उसमें जो स्थित है वह छद्मस्थ कहा जाता है । उक्त छद्मस्थका निर्देश करनेसे केवलीका प्रतिषेध किया गया है । 'अन्तिम समय-वर्ती छद्मस्थ' इस निर्देशका फल द्विचरम-त्रिचरम आदि समयोंमें वर्तमान छद्मस्थोंका प्रतिषेध करना है ।

शंका — क्षीणकषाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें जघन्य वेदनाका स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

---

१ प्रतिषु 'कम्मं' इति पाठः । २ प्रतिषु 'ओगाहणभेदेहि' इति पाठः ।

दंसणादो । एवं तिचरिमादिछदुमत्थेसु वि जहण्णसामित्ताभावो जाणिदूण वत्तव्वो । तम्हा खीणकसायचरिमसमए एगसमइयट्ठिदिणाणावरणकम्मक्खंधे जहण्णसामित्तं होदि त्ति घेत्तव्वं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ १६ ॥

एदम्हादो जं वदिरित्तं तमजहण्णा कालवेयणा होदि । तं च अणेयवियप्पं । तेण तब्भेदपरूवणादुवारेण तेसिं ट्ठाणाणं सामित्तपरूवणं कस्सामो । तं जहा— एगो खवगो कम्माणि परिवाडीए खविय चरिमसमयखीणकसाई जादो । तस्स खीणकसायस्स चरिमसमए एगा ट्ठिदी एगसमयकालपमाणा अच्छिदा । तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो जहण्णा । एसो जहण्णकालसामी । पुणो अण्णेगो जीवो पुव्वविधाणेणागंतूण दुचरिमसमय-खीणकसाई जादो । सो अजहण्णकालसामी । एदं[1] बिदियट्ठाणं । पुणो अण्णो जीवो तिचरिमसमयखीणकसाई जादो । एसो वि अजहण्णकालसामी । तं तदियं ट्ठाणं । एवं चउत्थादिकमेण ओदारेदव्वं जाव खीणकसायद्धाए संखेज्जदिभागो त्ति । एदे णिरंतरट्ठाण-सामिणो होंति ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां ज्ञानावरणीयकी दो समय प्रमाण स्थिति देखी जाती है ।

इसी प्रकार त्रिचरम आदि छद्मस्थोंमें भी जघन्य वेदनाके स्वामित्वका अभाव जानकर कहना चाहिये। इसीलिये क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ज्ञानावरण कर्मस्कन्धकी एक समयवाली स्थिति युक्त जीव जघन्य वेदनाका स्वामी होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जघन्य वेदनासे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ १६ ॥

इस जघन्य वेदनासे जो भिन्न है वह कालकी अपेक्षा अजघन्य वेदना है । वह अनेक भेद रूप है । इसलिये उसके भेदोंकी प्ररूपणा करते हुए उन स्थानोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— कोई एक क्षपक परिपाटीसे कर्मोंका क्षपण करके क्षीण-कषायके अन्तिम समयवर्ती हुआ । उक्त जीवके क्षीणकषाय होनेके अन्तिम समयमें एक समय काल प्रमाण एक स्थिति रहती है । उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है । यह जघन्य कालवेदनाका स्वामी है । पुनः एक दूसरा जीव पूर्व विधिसे आ करके क्षीणकषायके द्विचरम समयवर्ती हुआ । वह अजघन्य कालवेदनाका स्वामी है । यह द्वितीय स्थान है । पुनः एक और जीव क्षीणकषायके त्रिचरम समयवर्ती हुआ । यह भी अजघन्य कालवेदनाका स्वामी है । वह तीसरा स्थान है । इसी प्रकार चतुर्थ पंचम आदिके क्रमसे क्षीणकषाय-कालके संख्यातवें भाग तक उतारना चाहिये । ये सब निरन्तर स्थानोंके स्वामी होते हैं ।

[1] प्रतिषु 'एवं' इति पाठः ।

पुणो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेणागंतूण पुव्वणिरुद्धट्ठिदीए तदणंतरहेट्ठिमखीण-कसाई जादो। एदं सांतरमपुणरुत्तट्ठाणं, पुव्विल्लट्ठाणं पेक्खिदूण अंतोमुहुत्तमेत्तट्ठिदीहि अंतरिदूणुप्पण्णत्तादो। तं कधं णव्वदे ? एत्थ चरिमट्ठिदिखंडयचरिमफालीए उवलंभादो, उवरिमट्ठिदिम्मि तदणुवलंभादो। एत्तो प्पहुडि हेट्ठा समऊणुक्कीरणद्धामेत्तणिरंतरट्ठाणेसु समुप्पण्णेसु सइं सांतरट्ठाणमुप्पज्जदि। कुदो ? अप्पिद-अप्पिदट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालि-मेत्तमंतरिदूणुप्पत्तीदो। एवमोदारेदव्वं जाव अणियट्टिअद्धाए संखेज्जदिभागो त्ति। तत्थ-तणअणियट्टिट्ठिदिसंतादो बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णाणावरणजहण्णट्ठिदिसंतं विसेसाहियं पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागेण।

पुणो एदमणियट्टिट्ठिदिसंतं मोत्तूण बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिसंतं घेत्तूण समउत्तरं वड्ढिदूण पबद्धे णिरंतरमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं उप्पज्जदि। पुणो एदं काए वड्ढीए वड्ढिदे त्ति उत्ते असंखेज्जभागवड्ढीए। एदस्स वड्ढिदसमयस्स आगमणट्ठं को भागहारो ? बादरेइंदियधुवट्ठिदी। कुदो ? बादरेइंदियधुवट्ठिदीए बादरेइंदियधुवट्ठिदिमवहरिय लद्धमेग-

पश्चात् दूसरा एक जीव पूर्व विधिसे आकर पूर्वकी विवक्षित स्थितिसे तदनन्तर अधस्तन क्षीणकषायी हुआ। यह सान्तर अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, पूर्वके स्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितियोंके अन्तरसे यह स्थान उत्पन्न हुआ है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, यहां अन्तिम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि पायी जाती है, परन्तु ऊपरकी स्थितिमें वह नहीं पायी जाती।

यहांसे प्रारम्भ होकर नीचे एक समय कम उत्कीरणकालके बराबर निरन्तर स्थानोंके उत्पन्न होनेपर एक वार सान्तर स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, विवक्षित विवक्षित स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि प्रमाण अन्तर करके वह उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार अनिवृत्तिकरणकालके संख्यातवें भाग तक उतारना चाहिये। वहांके अनिवृत्तिकरणके स्थितिसत्त्वसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवके ज्ञानावरणका जघन्य स्थितिसत्त्व पल्योपमके असंख्यातवें भागसे विशेष अधिक है।

पुनः इस अनिवृत्तिकरणके स्थितिसत्त्वको छोड़कर और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य स्थितिसत्त्वको ग्रहण करके एक एक समय बढ़कर बांधनेपर दूसरा निरन्तर अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है।

शंका—यह कौनसी वृद्धि द्वारा वृद्धिंगत हुआ है ?

समाधान—वह असंख्यातभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत हुआ है।

शंका—इस बढ़े हुए समयके निकालनेके लिये भागहार क्या है ?

समाधान—इसके लिये भागहार बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति है, क्योंकि, बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिका बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर जो एक

१ आप्रतौ 'अप्पिद-अणप्पिद' इति पाठः।

समयं तम्मि चेव धुवट्ठिदिं पडिरासिय पक्खित्ते वट्टमाणवड्ढिठाणुप्पत्तीदो[1]। दुसमउत्तरं वड्ढिदूण बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवड्ढिट्ठाणं चेव। कुदो? पुव्विल्लभागहारस्स दुभागेण धुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए दोण्णं समयाणमागमणदंसणादो। तिसमयउत्तरं वड्ढिदूण बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव, धुवट्ठिदीए तिभागेण धुवट्ठिदिमोवट्टिदे तिण्णं वड्ढिदसमयाणमागमणदंसणादो। चदुसमयउत्तरं वड्ढिदूण बंधमाणस्स असंखेज्जदिभागवड्ढी चेव, धुवट्ठिदीए चदुब्भागेण धुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए वड्ढिदचदुरूवाणमागमणदंसणादो। एवं बादरेइंदियधुवट्ठिदीए उवरि बादरेइंदियधुवट्ठिदीए जत्तियाओ पलिदोवमसलागाओ अत्थि, तत्तियमेत्तेसु समएसु वड्ढिदेसु वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि, पलिदोवमेण धुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए वड्ढिदधुवट्ठिदिपलिदोवमसलागमेत्तसमयाणमागमणदंसणादो। पुणो एगसमयं वड्ढिदूण बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव, किंचूणपलिदोवमेण धुवट्ठिदीए भागे हिदाए रूवाहियपलिदोवमसलागमेत्तसमयाणमागमणदंसणादो। धुवट्ठिदिपलिदोवमसलागासु दुगुणमेत्तासु वड्ढिदासु वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि, पलिदोवमदुभागेण धुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए दुगुणधुवट्ठिदिपलिदोवमसलागाणमागमणुवलंभादो[2]। एवं पलिदोवमगुण-

समय लब्ध होता है उसे ध्रुवस्थितिको प्रतिराशि करके मिला देनेपर वर्तमान वृद्धिका स्थान उत्पन्न होता है।

उत्तरोत्तर दो-दो समय बढ़कर बांधनेवाले जीवके भी असंख्यातभागवृद्धिस्थान ही होता है, क्योंकि, पूर्व भागहारके द्वितीय भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर दो समय आते देखे जाते हैं। उत्तरोत्तर तीन-तीन समय बढ़कर बांधनेवालेके भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिके तृतीय भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिगत तीन समयोंकी प्राप्ति देखी जाती है। चार-चार समय उत्तरोत्तर बढ़कर बांधनेवालेके असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिके चतुर्थ भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिप्राप्त चार रूपोंकी उपलब्धि देखी जाती है। इस प्रकार बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिके ऊपर बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें जितनी पल्योपमशलाकायें हैं उतने मात्र समयोंकी वृद्धि हो चुकनेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, पल्योपमका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर ध्रुवस्थितिकी पल्योपमशलाकाओं प्रमाण वृद्धिगत समयोंकी उपलब्धि देखी जाती है। तत्पश्चात् एक समयकी वृद्धि होकर बांधनेवालेके भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, कुछ कम पल्योपमका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर एक अधिक पल्योपमशलाकाओं प्रमाण समयोंकी उपलब्धि देखी जाती है। ध्रुवस्थितिमें जितनी पल्योपमशलाकायें हैं उनसे दूनी वृद्धिके होनेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, पल्योपमके अर्ध भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर दूनी ध्रुवस्थितिकी पल्योपमशलाकायें प्राप्त होती हैं। इस प्रकार पल्योपमकी

१ ताप्रतौ 'वड्ढमाणवड्ढिट्ठाणुप्पत्तीदो' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः '- मागमुवलंभादो' इति पाठः।

गारसलागमेत्तपढमवग्गमूलाणि वड्डिदूण बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवड्डिट्ठाणं चेव होदि। कुदो ? पलिदोवमवग्गमूलेण धुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए धुवट्ठिदिपलिदोवमसलागमेत्तपलिदोवमपढमवग्गमूलाणमागमुवलंभादो। एवं बादरधुवट्ठिदीए भागहारो पलिदोवमबिदियवग्गमूलं होदूण, पुणो कमेण हाइदूण तदियवग्गमूलं होदूण, पुणो आवलियं होदूण जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जं पत्तो त्ति ताव वड्ढावेदव्वो। एवं वड्डिदे वि असंखेज्जभागवड्डी चेव। कुदो ? जहण्णपरित्तासंखेज्जेण बादरेइंदियधुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए वड्डिरूवाणमुवलंभादो। बादरेइंदियवीचारट्ठाणाणि पेक्खिदूण एदे वड्डिदसमया असंखेज्जगुणा होंति, पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागत्तादो, आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमे भागे हिदे बादरेइंदियवीचारट्ठाणाणं पमाणुप्पत्तीदो; बादरेइंदियउक्कस्सट्ठिदीए उवरि समउत्तरादिकमेण बंधो ण लब्भदि त्ति।

संपहि ट्ठिदिघादमस्सिदूण उवरिमट्ठाणाणमुप्पत्ती परूवेदव्वा। तं जहा— बादरेइंदियउक्कस्सट्ठिदीदो समउत्तरं घादिदूण ट्ठविदे असंखेज्जभागवड्डी होदि। उवरिमट्ठिदिं पुणो घादिदूण बादरेइंदियउक्कस्सट्ठिदिबंधादो दुसमउत्तरं कादूण ट्ठविदे तमण्णमपुणरुत्तमसंखेज्जभागवड्डिट्ठाणं होदि। तिसमउत्तरं कादूण ट्ठविदे अण्णमपुणरुत्त-

---

गुणकारभूत शलाकाओं प्रमाण पल्योपम-प्रथमवर्गमूलोंकी वृद्धि होकर बांधनेवालेके भी असंख्यातभागवृद्धिका ही स्थान होता है, क्योंकि, पल्योपमके वर्गमूलका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर ध्रुवस्थितिकी पल्योपमशलाकाओं प्रमाण पल्योपम-प्रथम-वर्गमूलोंकी उपलब्धि पायी जाती है। इस प्रकार बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिका भागहार पल्योपमका द्वितीय वर्गमूल होकर, फिर क्रमसे हीन होकर तृतीय वर्गमूल होकर, फिर आवली होकर, जब तक जघन्य परीतासंख्यात प्राप्त नहीं होता तब तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार भागहारके बढ़नेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातका बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिप्राप्त अंक उपलब्ध होते हैं। ये वृद्धिगत समय बादर एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे पल्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं, आवलीके असंख्यातवें भागका पल्योपममें भाग देनेपर बादर एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंका प्रमाण उत्पन्न होता है तथा बादर एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिके ऊपर एक समयादिकको अधिकताके क्रमसे बन्ध नहीं पाया जाता।

अब स्थितिघातका आश्रय करके उपरिम स्थानोंकी उत्पत्तिकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—बादर एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे एक-एक समय घात करके स्थापित करनेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है। पश्चात् उपरिम स्थितिको फिरसे घातकर बादर एकेन्द्रियके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे दो-दो समय अधिक करके स्थापित करनेपर वह दूसरा अपुनरुक्त असंख्यातभागवृद्धिका स्थान होता है। तीन-तीन समय अधिक करके स्थापित करनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस

द्वाणं होदि। एवं णेदव्वं जाव बादरेइंदियधुवट्ठिदिं जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडेदूण एगखंडमेत्तेण वड्ढिदूणच्छिदट्ठिदि[१] त्ति। पुणो एदस्सुवरि ट्ठिदिघादेण समउत्तरं वड्ढिदे वि असंखेज्जभागवड्ढी होदि।

एदस्स छेदभागहारो। तं जहा— जहण्णपरित्तासंखेज्जं विरलेदूण बादरेइंदिय-धुवट्ठिदिं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगखंड-मागच्छदि। पुणो एदं समयाहियमिच्छामो त्ति एत्थ एगरूवधरिदं हेट्ठा विरलिय तं चेव समखंडं कादूण दिण्णे एगरूवस्स वड्ढिपमाणं पावदि। पुणो एदं उवरि दादूण समकरणं करिय रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागमुवरिमविरलणाए

अच्छेदनस्य राशेः रूपं छेदं वदन्ति गणितज्ञाः।
अंशाभावे नाशं छेदस्याहुस्तदन्येव ॥ ५ ॥

प्रकार बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करके एक खण्ड मात्रसे वृद्धिगत होकर स्थितिके स्थित होने तक ले जाना चाहिये। पश्चात् इसके ऊपर स्थितिघातसे उत्तरोत्तर एक एक समय बढ़नेपर भी असंख्यातभागवृद्धि होती है।

इसके छेदभागहारको कहते हैं। यथा— जघन्य परीतासंख्यातका विरलन करके ऊपर बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको समखण्ड करके देनेपर एक एक विरलन अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर एक खण्ड प्राप्त होता है। फिर चूंकि इसे एक समय अधिक चाहते हैं, अतः एक अंकके प्रति प्राप्त राशिका नीचे विरलन करके ऊपर उसको ही समखण्ड करके देनेपर एक रूपका वृद्धिप्रमाण प्राप्त होता है। फिर इसको ऊपर देकर समकरण करके एक अधिक नीचेके विरलन प्रमाण स्थान जाकर उसको ही समखण्ड करके देने-पर एक रूपका वृद्धिप्रमाण प्राप्त होता है। इसको ऊपर देकर समकरण करके एक अधिक नीचेकी विरलन राशिके बराबर स्थान जाकर यदि एक रूपकी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनके बराबर स्थान जाकर कितनी हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर जो एक रूपका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है उसको ऊपरकी विरलन राशिमेंसे—

जब राशिमें कोई छेद नहीं होता तब गणितज्ञ उसका छेद एक मान लेते हैं (जैसे $३ = \frac{३}{१}$)। और जब अंशका अभाव हो जाता है तब छेदोंका भी नाश समझना चाहिये ($\frac{३}{१०} - \frac{६}{२०} = \frac{६-६}{२०} = \frac{०}{२०} = ०$) ॥ ५ ॥

---

१ अ-काप्रत्योः 'ट्ठिदट्ठिदि' इति पाठः।

एदेण लक्खणेण सरिसछेदं कादूण सेहिदे सुद्धसेसमुक्कस्ससंखेज्जमेगरूवस्स असंखेज्जा भागा च भागहारो होदि । एदेण बादरधुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए इच्छिदट्ठाणस्स वड्ढिसमया आगच्छंति । पुणो ट्ठिदिघादेण दुसमउत्तरं ट्ठिदिं धरेदूण ट्ठिदस्स वि असंखेज्जभागवड्ढीए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एत्थ वि छेदभागहारो चेव । तिसमउत्तरं धरेदूण ट्ठिदस्स असंखेज्जभागवड्ढीए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं ताव छेदभागहारो होदूण गच्छदि जाव बादरेइंदियधुवट्ठिदिं जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडस्सुवरि तं चेव उक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडं रूऊणं वड्ढिदं त्ति । पुणो संपुण्णं वड्ढिदे समभागहारो होदि । कुदो ? उक्कस्ससंखेज्जेण रूवाहिएण जहण्णपरित्तासंखेज्जे भागे हिदे उवरिमविरलणाए अवणेदुमेगरूवुवलंभादो । एत्थ संखेज्जभागवड्ढीए आदी असंखेज्जभागवड्ढीए परिसमत्ती च जादा ।

पुणो एदस्सुवरि अण्णो जीवो ट्ठिदिघादं करेमाणो समउत्तरट्ठिदिं धरेदूण ट्ठिदो । एत्थ वि संखेज्जभागवड्ढी चेव । एदिस्से वड्ढीए छेदभागहारो होदि । तं जहा— उवरिमेगरूवधरिदं हेट्ठा विरलेदूण तं चेव समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगो समओ पावदि । पुणो एदं उवरिमरूवधरिदेसु पक्खिविय समकरणे कीरमाणे परिहीण-

इस नियमके अनुसार समखण्ड करके घटा देनेपर अवशिष्ट उत्कृष्ट संख्यात व एक रूपका असंख्यात बहुभाग भागहार होता है । इसका बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर अभीष्ट स्थानके वृद्धिगत समय प्राप्त होते हैं । फिर स्थितिघातसे उत्तरोत्तर दो समयोंकी अधिकताको प्राप्त स्थितिको ग्रहणकर स्थित हुए जीवके भी असंख्यातभागवृद्धिका अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । यहां भी छेदभागहार ही होता है । तीन तीन समय अधिक स्थितिको ग्रहणकर स्थित जीवके असंख्यात भागवृद्धिका अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार तब तक छेदभागहार होकर जाता है जब तक कि बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डके ऊपर उसको ही उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक अंक कम एक खण्डकी वृद्धि नहीं हो जाती । तत्पश्चात् पूरे खण्ड प्रमाण वृद्धि हो जानेपर समभागहार होता है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातमें एक अधिक उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर ऊपरकी विरलन राशिमेंसे कम करनेके लिये एक रूप उपलब्ध होता है । अब यहां संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ और असंख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

इसके ऊपर अन्य जीव स्थितिघातको करता हुआ एक-एक समय अधिक स्थितिको लेकर स्थित हुआ । यहां भी संख्यातभागवृद्धि ही होती है । इस वृद्धिका छेदभागहार होता है । यथा— ऊपरके एक एक अंकके ऊपर स्थित राशिका नीचे विरलन करके ऊपर उसको ही समखण्ड करके देनेपर हर एक अंकके प्रति एक एक समय प्राप्त होता है । फिर इसको ऊपरके अंकोंपर स्थित राशियोंमें मिलाकर

रूवाणं पमाणं उच्चदे— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि। एदमुक्कस्ससंखेज्जम्मि सोहिदे एगरूवस्स असंखेज्जा भागा रूवूणुक्कस्ससंखेज्जं च भागहारो होदि। पुणो दुसमउत्तरं वड्ढिदे संखेज्जभागवड्ढिट्ठाणं होदि। एदस्स वि छेदभागहारो। तिसमउत्तरं वड्ढिदे वि संखेज्ज-भागवड्ढी चेव। एवं ताव छेदभागहारो होदूण गच्छदि जाव बादरेइंदियधुवट्ठिदिं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण पुणो तत्थेगखंडं रूवूणुक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण तत्थेगखंडं रूवूणं वड्ढिदं ति। संपुण्णं वड्ढिदे समभागहारो होदि। तं च कधं ? रूवूणुक्कस्ससंखेज्जं विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे वड्ढिपमाणं होदि। एदमुवरिमरूव-धरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी होदि त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूवमागच्छदि। तम्मि उवरिमविरलणाए सोहिदे रूवूणुक्कस्ससंखेज्जं भागहारो होदि। पुणो एदेण

समकरण करते हुए हीन रूपोंके प्रमाणको कहते हैं— एक अधिक नीचेकी विरलन राशि प्रमाण अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो ऊपरकी विरलन राशिमें वह कितनी प्राप्त होगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है। इसको उत्कृष्ट संख्यातमेंसे कम करनेपर शेष एक रूपका असंख्यात बहुभाग और एक कम उत्कृष्ट संख्यात भागहार होता है। आगे दो-दो समय बढ़नेपर संख्यातभाग-वृद्धिका स्थान होता है। इसका भी छेदभागहार है। तीन-तीन समय बढ़नेपर भी संख्यातभागवृद्धि ही होती है। इस प्रकार तब तक छेदभागहार होकर जाता है जब तक कि बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके फिर उसमेंसे एक खण्डको एक कम उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक कम एक खण्ड प्रमाण वृद्धि नहीं हो जाती। सम्पूर्ण खण्ड प्रमाण वृद्धि हो चुकनेपर समभागहार होता है।

शंका— वह कैसे ?

समाधान— एक कम उत्कृष्ट संख्यातका विरलन कर उपरिम विरलनके एक रूपपर रखी हुई राशिको समखण्ड करके देनेपर वृद्धिका प्रमाण होता है। इसको उपरिम रूपोंपर रखी हुई राशियोंके ऊपर देकर समकरण करते हुए एक अधिक नीचेकी विरलनराशि प्रमाण अध्वान जाकर चूंकि एक अंककी हानि होती है, अतः एक अधिक नीचेकी विरलन राशिका ऊपरकी विरलन राशिमें भाग देनेपर एक अंक आता है। उसको उपरिम विरलन राशिमेंसे कम करनेपर एक कम उत्कृष्ट संख्यात भागहार होता है।

बादरधुवट्ठिदीए ओवट्टिदाए संखेज्जभागवड्ढिसमया लब्भंति। एवं छेदभागहार-समभाग-हारेहि ट्ठिदिघादमस्सिदूण णेदव्वं जाव धुवट्ठिदिभागहारो दोरूवपमाणो पत्तो त्ति।

पुणो अण्णो जीवो ट्ठिदिघादं करेमाणो समउत्तराए ट्ठिदीए आगदो। तमण्णं संखेज्ज-भागवड्ढिट्ठाणं होदि। पुणो एदस्स छेदभागहारो। तं जहा— उवरिमएगरूवधरिदं विरलेदूण तं चेव समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगसमयपमाणं पावदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिदं घेत्तूण उवरिमएगरूवधरिदम्मि दादूण समकरणे कीरमाणे रूवा-हियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी होदि त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि। एदं सरिसछेदं कादूण दोरूवेसु सोहिदे एगरूवस्स असंखेज्जा भागा सगलमेगरूवं च भागहारो होदि। पुणो एदेण बादरधुवट्ठिदिमोवट्टिय लद्धमेत्ते वड्डाविदे अण्णमपुणरुत्तं संखेज्ज-भागवड्ढिट्ठाणं होदि। पुणो दुसमउत्तरं वड्ढिदे वि संखेज्जभागवड्ढिट्ठाणं होदि। एदस्स वि छेदभागहारो होदि। एदेण कमेण छेदभागहारो ताव गच्छदि जाव बादरधुवट्ठिदिं दोहि रूवेहि खंडेदूण पुणो तत्थ एगखंडं रूऊणं दोहि रूवेहि अवहिरिय

फिर इसका बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर संख्यातभागवृद्धिके समय प्राप्त होते हैं। इस प्रकार छेदभागहार और समभागहारके द्वारा स्थिति-घातका आश्रय करके ध्रुवस्थितिभागहारके दो अंक प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये।

पुनः दूसरा जीव स्थितिघातको करता हुआ उत्तरोत्तर एक-एक समय अधिक स्थितिके साथ आया। वह संख्यातभागवृद्धिका अन्य स्थान होता है। अब इसके छेदभागहारको कहते हैं। यथा— ऊपरके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिका विरलन करके उसे ही समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक समय प्रमाण प्राप्त होता है। फिर इसमेंसे एक अंकके ऊपर रखी हुई राशिको ग्रहण कर उसे उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें देकर समकरण करते हुए एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर चूंकि एक रूपकी हानि होती है, अतः एक अधिक अधस्तन विरलनका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है। इसको समानखण्ड करके दो रूपोंमेंसे घटा देनेपर एक रूपका असंख्यात बहुभाग और एक पूर्ण रूप भागहार होता है। फिर इससे बादर ध्रुवस्थितिको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतना बढ़ानेपर संख्यात-भागवृद्धिका अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः दो दो समय अधिक बढ़नेपर भी संख्यातभागवृद्धिका स्थान होता है। इसका भी छेदभागहार होता है। इस क्रमसे छेदभागहार तब तक जाता है जब तक बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको दो रूपोंसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्डको एक कम करके पुनः दो रूपोंसे खण्डित करनेपर

लद्धरूवूणमेत्तं वड्ढिदं त्ति । संपुण्णे वड्ढिदे सममागहारो होदि । तं जहा— एगरूवं विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं दादूण समकरणं करिय रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूवमागच्छदि । तम्मि दोसु रूवेसु सोहिदे एगरूवं भागहारो होदि । एदेणोवट्टिदबादरधुवट्ठिदीए बादरधुवट्ठिदीएँ उवरि[^1] पक्खित्ताए संखेज्जगुणवड्ढीए आदी होदि, दोरूवेहि बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए उप्पण्णत्तादो । एदस्सुवरि समउत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । दोण्णं रूवाणं उवरि[^2] एगरूववड्ढिणिमित्तपक्खेवो उच्चदे । तं जहा— धुवट्ठिदीए वड्ढमाणाए जदि एगरूवगुणगारो लब्भदि तो एगसमयस्स किं लभामो त्ति धुवट्ठिदीए एगरूवे ओवट्टिदे पक्खेवपमाणं होदि ।

एत्थ धुवट्ठिदि त्ति संदिट्ठीए चत्तारि |४| रूवाणि । एदस्स गुणगारो एत्तिओ होदि $\frac{9}{4}$ । पुणो एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए रूवाहियदुगुणवड्ढिट्ठाणं होदि |९| ।

पुणो दुसमउत्तरं वड्ढिदे वि छेदगुणगारो होदि । एत्थ पुव्वं व तेरासियकमेण च्छेदगुणगारो साहेयव्वो । तस्स पमाणमेदं $\frac{5}{2}$ । एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए दुसमउत्तरदुगुणवड्ढी

जो प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर प्राप्त राशि प्रमाण वृद्धि नहीं हो जाती। पूर्ण लब्ध प्रमाण वृद्धिके होनेपर समभागहार होता है। यथा—

एक रूपका विरलन करके ऊपर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको देकर समकरण करके एक अधिक अधस्तन विरलनका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर एक रूप प्राप्त होता है। उसको दो रूपोंमेंसे कम कर देनेपर एक रूप भागहार होता है। इससे अपवर्तित बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको उसकी ध्रुवस्थितिके ऊपर प्रक्षिप्त करनेपर संख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ होता है, क्योंकि, वह बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको दो अंकोंसे गुणित करनेपर उत्पन्न हुई है। इसके ऊपर उत्तरोत्तर एक एक समयकी वृद्धि होनेपर छेदगुणकार होता है। अब दो रूपोंके ऊपर वृद्धिके निमित्तभूत प्रक्षेपको कहते हैं। यथा— ध्रुवस्थिति प्रमाण वृद्धिके होनेपर यदि एक रूप गुणकार प्राप्त होता है तो एक समयकी वृद्धिमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार ध्रुवस्थितिसे एक रूपको अपवर्तित करनेपर प्रक्षेपका प्रमाण होता है।

यहां संदृष्टिमें ध्रुवस्थितिके लिये ४ अंक है। इसका गुणकार इतना ($\frac{9}{4}$) है। इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर एक अधिक दूनी वृद्धिका स्थान होता है— $4 \times \frac{9}{4} = 9 = 4 \times 2 + 1$। दो समय अधिक वृद्धिके होनेपर भी छेदगुणकार होता है। यहां पहिलेके समान ही त्रैराशिक क्रमसे छेदगुणकारको सिद्ध करना चाहिये। इसका प्रमाण यह है— $\frac{5}{2}$। इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर दो समय अधिक

[^1]: अप्रतौ ' बादरअद्धुवट्ठिदीए ' इति पाठः ।
[^2]: प्रतिषु ' उवरिम ' इति पाठः ।

होदि [१०] । एदेण कमेण छेदगुणगारो होदूण ताव गच्छदि जाव अण्णेगरूवूणधुवट्ठिदि-मेत्तं वड्ढिदे त्ति । पुणो संपुण्णधुवट्ठिदीए वड्ढिदाए तिगुणवड्ढी होदि, बादरधुवट्ठिदिमेत्त-समयाणं जदि एगा गुणगारसलागा लब्भदि तो बादरधुवट्ठिदीए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगगुणगारसलागुवलंभादो । पुणो एदं सलागं दोसु रूवेसु पक्खिविय बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए तिगुणवड्ढिट्ठाणं होदि । तस्स पमाणमेदं [१२] । पुणो एदस्सुवरि समउत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । तं जहा — धुवट्ठिदिमेत्तसमयाणं जदि एगरूवं गुणगारो लब्भदि तो एगसमयस्स किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि $\left[\frac{1}{4}\right]$ । एदम्मि तिसु रूवेसु पक्खित्ते एत्तियं होदि $\left[\frac{13}{4}\right]$ । एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए समयाहियतिगुणवड्ढिट्ठाणं होदि [१३] । पुणो दुसम-उत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । एत्थ गुणगोरं उप्पाइज्जमाणे पुव्विल्लमंसं दुगुणिय तिसु रूवेसु पक्खेवो कायव्वो । $\frac{1}{4}$ । २ । तिसमयउत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । एत्थ पुव्वु-

---

दुगुणी वृद्धि होती है— $४ \times \frac{१०}{४} = १० = ४ \times २ + २$ । इस क्रमसे छेदगुणकार होकर तब तक जाता है जब तक कि अन्य एक अंकसे कम ध्रुवस्थिति प्रमाण वृद्धि नहीं हो जाती। पश्चात् सम्पूर्ण ध्रुवस्थिति प्रमाण वृद्धिके हो जानेपर तिगुणी वृद्धि होती है। कारण यह है कि बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति प्रमाण समयोंके यदि एक गुणकारशलाका पायी जाती है तो बादर ध्रुवस्थितिमें कितनी गुणकारशलाकायें प्राप्त होगीं, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक गुणकारशलाका पायी जाती है। इस शलाकाको दो रूपोंमें मिलाकर उससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर तिगुनी वृद्धि होती है। उसका प्रमाण यह है— $(२ + १) \times ४ = १२$ । इसके ऊपर एक समय अधिक बढ़नेपर छेदगुणकार होता है। यथा— ध्रुवस्थिति प्रमाण समयोंका यदि एक अंक गुणकार प्राप्त होता है तो एक समयका कितना गुणकार प्राप्त होगा, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग आता है— $\frac{१ \times १}{४} = \frac{१}{४}$ । इसको तीन रूपोंमें मिलानेपर इतना होता है— $३ + \frac{१}{४} = \frac{१३}{४}$ । इसके द्वारा बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर एक समय अधिक तिगुणी वृद्धिका स्थान होता है— $४ \times \frac{१३}{४} = १३ = ४ \times ३ + १$ । पश्चात् दो समय अधिक वृद्धिके होनेपर छेदगुणकार होता है। यहां गुणकारको उत्पन्न कराते समय पूर्वके अंशको दुगुणित कर उसे तीन रूपोंमें मिलाना चाहिये। $\frac{१}{४} \times २$ । तीन समय अधिक बढ़नेपर छेदगुणकार होता है। यहां पूर्वके अंशको तीनसे गुणित

---

१ प्रतिषु 'अण्णेगं' इति पाठः ।

संसो तिगुणेदव्वो । $\frac{१}{४}$ । ३ । एदं गुणगारो होदूण ताव गच्छदि जाव पुव्विल्लंसो रूवूणधुवट्ठिदीए गुणेदूण तिसु रूवेसु पक्खित्तो त्ति । पुणो एत्थ वि पुव्विल्लंसं पुण्णधुवट्ठिदीए गुणिय तिसु रूवेसु पक्खित्ते चत्तारिगुणगाररूवाणि होंति । तेहि धुवट्ठिदीए गुणिदाए चदुगुणवड्ढी होदि । १६ । एवं छेद-सम-गुणगारकमेण बंध-संते अस्सिदूण णेदव्वं जाव सण्णिपंचिंदियधुवट्ठिदि त्ति । तिस्से पमाणं संदिट्ठीए अट्ठावीस । २८ । पुणो एदिस्से उवरि समउत्तरं पबद्धे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एदस्स गुणगारपमाणमेदं $\frac{७|१}{४}$ । एदेण धुवट्ठिदीए गुणिदाए सण्णिपंचिंदियस्स समयाहियधुवट्ठिदिट्ठाणं होदि । २९ । एवं छेद-समगुणगारसरूवेण णेदव्वं जाव बादरधुव-ट्ठिदीए उक्कस्सगुणगारसलागाओ रूवूणाओ पविट्ठाओ त्ति । एदमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । २२८ । पुणो एदिस्से उवरि समउत्तरं वड्ढिदूण बद्धे[१] अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एदस्स छेदगुणगारो । तं जहा— बादरधुवट्ठिदिमेत्तसमएसु वड्ढिदेसु जदि एगा गुणगारसलागा लब्भदि तो एगसमए वड्ढिदे किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छमोवट्टिय लद्धे

करना चाहिये $\frac{१}{४}$ × ३ । इस प्रकार छेदगुणकार होकर तब तक जाता है जब तक कि पूर्वका अंश एक कम ध्रुवस्थितिसे गुणित होकर तीन रूपोंमें प्रक्षिप्त नहीं हो जाता। फिर यहां भी पूर्वके अंशको पूर्ण ध्रुवस्थितिसे गुणित कर तीन रूपोंमें मिला देनेपर गुणकार चार अंक होते हैं। उससे ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर चौगुणी वृद्धि होती है—४ × ४ = १६ । इस प्रकार छेदगुणकार और समगुणकारके क्रमसे बन्ध व सत्त्वका आश्रय करके संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवकी ध्रुवस्थिति तक ले जाना चाहिये। उसका प्रमाण संदृष्टिमें अट्ठाईस २८ है । फिर इसके ऊपर एक समयकी वृद्धि होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। उसके गुणकारका प्रमाण यह है— ७$\frac{१}{४}$ । इससे ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवकी एक समयसे अधिक ध्रुव-स्थितिका स्थान होता है – $\frac{४}{१}$ × $\frac{२९}{४}$ = २९ । इस प्रकार छेदगुणकार और समगुणकार स्वरूपसे बादर ध्रुवस्थितिमें एक कम उत्कृष्ट गुणकारशलाकाओंके प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये । यह अन्य अपुनरुक्तस्थान होता है २२८ ।

इसके ऊपर एक समय अधिक बढ़ करके बन्ध होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इसका छेदगुणकार होता है । यथा— बादर ध्रुवस्थिति प्रमाण समयोंके बढ़नेपर यदि एक गुणकारशलाका प्राप्त होती है तो एक समयके बढ़नेपर कितनी गुणकारशलाकायें प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग

---

१ प्रतिषु ' लद्धे ', मप्रतौ ' बंधे ' इति पाठः।

पुविल्लरूवेसु पक्खित्तेसु गुणगारो होदि त्ति |५७ १/४| । पुणो एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए संपहियट्ठाणं होदि |२२९| । दुसमउत्तरं वड्ढिदूण बद्धे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एत्थ पुव्वुत्तंसं दुगुणिय सगलरूवेसु पक्खेवो कायव्वो । १ । २/४ । एदम्मि पुव्विल्लरूवेसु पक्खित्ते एत्तियं होदि |५७ १/२| । एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए दुसमउत्तरट्ठाणं होदि |२३०| । तिसमउत्तरं बंधिदूणागदस्स अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुव्वत्तंसं तिगुणिय |१ । ३/४| । पुव्वुत्तगुणगाररूवेहि सह मेलाविदे एत्तियं होदि |५७ ३/४| । पुणो एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए इच्छिदवड्ढिट्ठाणं होदि |२३१| । एवं छेदगुणगारो होदूण ताव गच्छदि जाव पुव्वुत्तंसस्स रूवूणबादरधुवट्ठिदी गुणगारो जादो त्ति । पुणो समउत्तरं वड्ढिदूण पबद्धे समगुणगारो होदि । तस्स पमाणमट्ठवंचास |५८| । पुणो एदेण बादरधुवट्ठिदीए गुणिदाए चरिमसंखेज्जगुणवड्ढिट्ठाणं होदि । तं च एदं |२३२| । एवं णाणावरणीयस्स तीहि वड्ढीहि अजहण्णपरूपणा बादरधुवट्ठिदिमस्सिदूण कदा । जहण्णट्ठिदिमस्सिदूण पुण

देनेपर जो लब्ध हो उसे पूर्व रूपोंमें मिलानेपर गुणकार होता है—५७ १/४ । इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर साम्प्रतिक स्थान होता है— २२९/४ × ४/१ = २२९ । पश्चात् दो समय अधिक बढ़कर बन्ध होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। यहां पूर्वोक्त अंशको दुगुणित करके समस्त रूपोंमें मिलाना चाहिये— १/४ × २ = २/४ । इसको पूर्व रूपोंमें मिलानेपर इतना होता है— ५७ + २/४ = ५७ २/४ । इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर दो समय अधिक वृद्धिका स्थान होता है— २३०/४ × ४/१ = २३० । तीन समय अधिक बढ़कर आये हुए जीवके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पूर्वोक्त अंशको तिगुणा करके (१/४ × ३) पूर्वोक्त गुणकार रूपोंके साथ मिलानेपर इतना होता है—५७ ३/४ । इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर इच्छित वृद्धिस्थान होता है— २३१/४ × ४/१ = २३१ । इस प्रकार पूर्वोक्त अंशका गुणकार एक कम ध्रुवस्थितिके होने तक छेदगुणकार होकर जाता है। पश्चात् एक समय अधिक बढ़कर बन्ध होनेपर समगुणकार होता है। उसका प्रमाण अट्ठावन ५८ है। इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर संख्यात गुणवृद्धिका अन्तिम स्थान होता है। वह यह है— ५८ × ४ = २३२ । इस प्रकार बादर एकेन्द्रिय जीवकी ध्रुवस्थितिका आश्रय करके तीन वृद्धियोंके द्वारा ज्ञानावरणीयकी अजघन्य स्थितिके स्वामित्वकी प्ररूपणा की है।

संखेज्जगुणवड्डि-असंखेज्जगुणवड्डि त्ति दो चेव वड्डीओ होंति, ओघजहण्णट्ठिदिं पेक्खिदूण ओघुक्कस्सट्ठिदीए असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एवं संखेज्जपलिदोवमेहि ऊण तीससागरोवम-[१] कोडाकोडिमेत्तअजहण्णट्ठाणवियप्पा णाणावरणीयस्स परूविदा। एत्थ जीवसमुदाहारपरूपणा जहा अणुक्कस्सट्ठाणेसु परूविदा तहा परूवेदव्वा।

एवं दंसणावरणीय-अंतराइयाणं ॥ १७ ॥

जहा णाणावरणीयस्स जहण्णाजहण्णट्ठिदिसामित्तपरूवणा कदा तहा दंसणावरणीय-अंतराइयाणं पि कायव्वा, विसेसाभावादो।

सामित्तेण जहण्णपदे वेयणीयवेयणा कालदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १८ ॥

सुगममेदं।

अण्णदरस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स तस्स वेयणीयवेयणा कालदो जहण्णा ॥ १९ ॥

परन्तु जघन्य स्थितिका आश्रय करके संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि ये दो ही वृद्धियां होती हैं, क्योंकि, ओघजघन्य स्थितिकी अपेक्षा ओघउत्कृष्ट स्थिति असंख्यातगुणी पायी जाती है। इस प्रकार संख्यात पल्योपमोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र ज्ञानावरणीयके अजघन्य स्थानभेदोंकी प्ररूपणा की है। यहां जीवसमुदाहारकी प्ररूपणा जैसे अनुत्कृष्ट स्थानोंमें की गई है वैसे ही करनी चाहिये।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय एवं अन्तराय कर्मोंकी जघन्य व अजघन्य स्थितिके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १७ ॥

जैसे ज्ञानावरणीय कर्मकी जघन्य व अजघन्य स्थितिके स्वामित्वकी प्ररूपणा की है वैसे ही दर्शनावरणीय और अन्तराय की भी करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जो कोई जीव भव्यसिद्धिककालके अन्तिम समयमें स्थित है उसके वेदनीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ १९ ॥

---

१ अ-आ-काप्रतिषु '-सागरोवमाणि' इति पाठः।

ओगाहण-संठाणादीहि विसेसो णत्थि त्ति अण्णदरस्से त्ति उत्तं । भवसिद्धिओ णाम अजोगिभडारओ । तस्स चरिमसमए एगा ट्ठिदी एगसमयकाला होदि त्ति भवसिद्धिय-चरिमसमए जहण्णसामित्तं उत्तं । दुचरिमादिसमएसु जहण्णसामित्तं किण्ण भण्णदे ? ण, तत्थ वेयणीयस्स एगसमयट्ठिदीए अणुवलंभादो ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २० ॥

तदो जहण्णादो वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, सा अजहण्णा ट्ठिदिवेयणा होदि । एत्थ जहा णाणावरणीयस्स अजहण्णट्ठाणपरूवणा कदा तहा कायव्वा । णवरि अजोगिचरिम-समयादो ताव णिरंतरट्ठाणपरूवणा कायव्वा जाव अजोगिपढमसमओ त्ति । पुणो सजोगि-चरिमसमए ट्ठिदस्स सांतरमजहण्णट्ठाणं होदि । कुदो ? तत्थ चरिमफालीए अंतोमुहुत्तमेत्तीए दंसणादो । पुणो हेट्ठा रूवूणुक्कीरणद्धामेत्तणिरंतरट्ठाणेसु उप्पण्णेसु सइं सांतरट्ठाणमुप्प-ज्जदि, तत्थंतोमुहुत्तट्ठाणंतरदंसणादो । एवं णेदव्वं जाव लोगपूरणं करिय ट्ठिदसजोगि-केवलि त्ति । तदो पदरगदकेवलिम्हि अण्णमपुणरुत्तसांतरट्ठाणं । कुदो ? लोगपूरणगद-केवलिट्ठिदिसंतादो पदरगदकेवलिट्ठिदिसंतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तदो कवाडगद-

---

अवगाहना व संस्थान आदिकोंसे कोई विशेषता नहीं होती, यह बतलानेके लिये सूत्रमें 'अन्यतर' पदका प्रयोग किया है। भव्यसिद्धिकसे अयोगकेवली भट्टारक विवक्षित हैं। उनके अन्तिम समयमें चूंकि एक समय कालवाली एक स्थिति होती है, अतः भव्यसिद्धिकके अन्तिम समयमें जघन्य स्वामित्व बतलाया गया है।

शंका — अयोगकेवलीके द्विचरमादिक समयोंमें जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं बतलाया जाता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, उक्त समयोंमें वेदनीयकी एक समयवाली स्थिति नहीं पायी जाती।

उससे भिन्न अजघन्य स्थितिवेदना होती है ॥ २० ॥

उससे अर्थात् जघन्य स्थितिवेदनासे जो भिन्न वेदना है वह अजघन्य स्थिति-वेदना है। यहां जैसे ज्ञानावरणीयके अजघन्य स्थानोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही वेदनीयके भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि अयोगकेवलीके अन्तिम समयसे लेकर अयोगकेवलीके प्रथम समय तक निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। फिर सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित जीवके सान्तर अजघन्य स्थान होता है, क्योंकि, वहां अन्तिम फालि अन्तर्मुहूर्त प्रमाण देखी जाती है। पुनः नीचे एक कम उत्कीरणकाल प्रमाण निरन्तर स्थानोंके उत्पन्न होनेपर एक बार सान्तर स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, वहां अन्तर्मुहूर्त स्थानान्तर देखा जाता है। इस प्रकार लोकपूरण समुद्घातको करके स्थित सयोगकेवली तक ले जाना चाहिये। पश्चात् प्रतरसमुद्घातगत केवलीमें अन्य अपुनरुक्त सान्तर स्थान होता है, क्योंकि, लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे प्रतरसमुद्घात-गत केवलीका स्थितिसत्त्व असंख्यातगुणा पाया जाता है। पश्चात् कपाटसमुद्घातगत

केवलिम्हि अण्णं सांतरमपुणरुत्तट्ठाणं, पदरगदकेवलिट्ठिदिसंतादो कवाडगदकेवलिट्ठिदिसंतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। तदो दंडगदकेवलिम्हि सांतरमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं, कवाडगदकेवलिट्ठिदिसंतादो दंडगदकेवलिट्ठिदिसंतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। दंडाहिमुहकेवलिम्हि अण्णं सांतरमपुणरुत्तट्ठाणं, दंडगदकेवलिट्ठिदिसंतादो एदम्हि असंखेज्जगुणट्ठिदिसंतदंसणादो। एत्तो प्पहुडि हेट्ठा णिरंतरट्ठाणाणि ताव उप्पज्जंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। कुदो? एत्थंतरे ट्ठिदिकंदयाभावादो। एत्तो हेट्ठा णिरंतर-सांतरकमेण णाणावरणीयविहाणेण अजहण्णट्ठाणपरूवणा कायव्वा, विसेसाभावादो।

एवं आउअ-णामागोदाणं ॥ २१ ॥

जहा वेयणीयस्स जहण्णाजहण्णसामित्तपरूवणा कदा तहा एदेसिं पि जहण्णाजहण्णसामित्तं वत्तव्वं, विसेसाभावादो। णवरि आउअस्स अजहण्णसामित्तपरूवणम्मि जो विसेसो तं वत्तइस्सामो। तं जहा— भवसिद्धियदुचरिमसमए एगमजहण्णट्ठाणं। पुणो तिचरिमसमए बिदियमजहण्णट्ठाणं। पुणो चदुचरिमसमए तदियमजहण्णट्ठाणं। एत्थ

केवलीमें अन्य सान्तर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, प्रतरगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे कपाटगत केवलीका स्थितिसत्त्व असंख्यातगुणा पाया जाता है। पश्चात् दण्डसमुद्घातगत केवलीमें अन्य सान्तर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, कपाटसमुद्घातगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे दण्डसमुद्घातगत केवलीका स्थितिसत्त्व असंख्यातगुणा पाया जाता है। दण्डसमुद्घातके अभिमुख हुए केवलीमें अन्य सान्तर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, दण्डसमुद्घातगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे उसके अभिमुख हुए केवलीमें असंख्यातगुणा स्थितिसत्त्व देखा जाता है। यहांसे लेकर नीचे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक निरन्तर स्थान उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, इस बीचमें स्थितिकाण्डकका अभाव है। इसके नीचे निरन्तर और सान्तर क्रमसे ज्ञानावरणीयके विधानके अनुसार अजघन्य स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है।

इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मोंके जघन्य एवं अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा है ॥ २१ ॥

जैसे वेदनीय कर्मके जघन्य व अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही इन तीनों कर्मोंके जघन्य व अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। विशेष इतना है कि आयु कर्मके अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणामें जो कुछ विशेषता है उसे कहते हैं। यथा— भव्यसिद्धिक रहनेके द्विचरम समयमें एक अजघन्य स्थान होता है। पश्चात् त्रिचरम समयमें द्वितीय अजघन्य स्थान होता है। चतुश्चरम समयमें तृतीय अजघन्य स्थान होता है। यहां दुगुणी वृद्धि

दुगुणवड्ढी होदि। एत्तो प्पहुडि संखेज्जगुणवड्ढी होदूण ताव गच्छदि जाव उक्कस्स-संखेज्जगुणगारसरूवेण दोण्णं समयाणं पविट्ठं ति। पुणो एदस्सुवरि एगसमए वड्ढिदे संखेज्जगुणवड्ढी चेव, अद्धरूवेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तगुणगारुवलंभादो। पुणो तदणंतरहेट्ठिमसमयम्मि असंखेज्जगुणवड्ढी होदि, तत्थ दोण्णं समयाणं जहण्णपरित्तासंखेज्ज-गुणगारुवलंभादो। एत्तो प्पहुडि असंखेज्जगुणवड्ढीए ताव ओदारेदव्वं जाव समयाहिय-छम्मासो त्ति। पुणो एदेणाउएण सरिसं आउअबंधेण विणा ट्ठिदसव्वट्ठसिद्धिदेवाउअं तेत्तीससागरोवमाणि समयाहियछम्मासूणाणि गालिय ट्ठिदं होदि। पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण समउत्तरादिकमेण णिरंतरं वड्ढाविय णेयव्वं जाव सव्वट्ठसिद्धिसमुप्पण्णदेवपढमसमओ त्ति। पुणो तेत्तीसाउअं बंधिय चरिमसमयमणुस्सो होदूण ट्ठिदसंजदम्मि अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं। मणुसदुचरिमसमयट्ठिदसंजदम्मि अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं। एवमसंखेज्जगुणवड्ढीए ताव ओदारेदव्वं जाव पुव्वकोडितिभागपढमसमयट्ठिदसजदो त्ति। एत्थ जीवसमुदाहारो जाणिय वत्तव्वो।

सामित्तेण जहण्णपदे मोहणीयवेयणा कालदो जहण्णिया कस्स ? ॥ २२ ॥

होती है। यहांसे संख्यातगुणवृद्धि प्रारम्भ होकर तब तक जाती है जब तक कि उत्कृष्ट संख्यात गुणकार स्वरूपसे दो समय प्रविष्ट नहीं हो जाते। पश्चात् इसके ऊपर एक समयकी वृद्धि होनेपर संख्यातगुणवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, वहां अर्ध रूपसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण गुणकार पाया जाता है। तत्पश्चात् उससे अनन्तर अधस्तन समयमें असंख्यातगु वृद्धि होती है, क्योंकि, वहां दो समयोंका जघन्य परीतासंख्यात गुणकार पाया जाता है। इसके आगे एक समय अधिक छह मास स्थिति तक असंख्यातगुणवृद्धिके द्वारा उतारना चाहिये। पश्चात् आयु-बन्धसे रहित होकर स्थित सर्वार्थसिद्धिस्थ देवकी एक समय अधिक छह मासोंसे कम तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको गलाकर स्थित हुए जीवकी आयु इस आयुके सदृश होती है। पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक एक समयकी अधिकताके क्रमसे निरन्तर बढ़ाकर सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न हुए देवकी उत्पत्तिके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये। पुनः तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बांधकर मनुष्य भवके अन्तिम समयमें स्थित संयतके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। मनुष्य भवके द्विचरम समयमें स्थित संयतके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार पूर्वकोटित्रिभागके प्रथम समयमें स्थित संयत तक असंख्यातगुणवृद्धिके द्वारा उतारना चाहिये। यहां जीवसमुदाहारको जानकर कहना चाहिये।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें मोहनीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ २२ ॥

सुगममेदं ।

अण्णदरस्स खवगस्स चरिमसमयसकसाइयस्स मोहणीयवेयणा कालदो जहण्णा ॥ २३ ॥

उवसामगपडिसेहफलो खवगस्से त्ति णिद्देसो । खीणकसायादिपडिसेहफलो सकसाइयस्से त्ति णिद्देसो । दुचरिमादिसकसाइयपडिसेहट्ठं चरिमसमएण सकसाई[1] विसेसिदो । चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स[2] मोहणीयवेयणा कालदो जहण्णिया होदि त्ति उत्तं होदि ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २४ ॥

एदस्सत्थो णाणावरणअजहण्णसुत्तस्सेव परूवेदव्वा । एवं सामित्तं सगंतोक्खित्तट्ठाण-संखा-जीवसमुदाहाराणिओगद्दारं समत्तं ।

अप्पाबहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि—जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ २५ ॥

तिण्णि चेव अणिओगद्दाराणि एत्थ होंति त्ति कधं णव्वदे ? जहण्णुक्कस्सपदेसु एग-दुसंजोगेण तिण्णि भंगे मोत्तूण एत्तो अहियभंगुप्पत्तीए अणुवलंभादो ।

यह सूत्र सुगम है ?

जो कोई क्षपक सकषाय अवस्थाके अन्तिम समयमें स्थित है उसके मोहनीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ २३ ॥

सूत्रमें क्षपक पदके निर्देशका प्रयोजन उपशामकका प्रतिषेध करना है । सकषाय पदके निर्देशका फल क्षीणकषाय आदिकोंका प्रतिषेध करना है । द्विचरम सकषायी आदिकोंका प्रतिषेध करनेके लिये सकषायीको ' चरम समय ' विशेषणसे विशेषित किया गया है । अभिप्राय यह कि सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित जीवके मोहनीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ।

उससे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ २४ ॥

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा करनेवाले सूत्रके समान करना चाहिये । इस प्रकार स्थान, संख्या एवं जीवसमुदाहारसे गर्भित स्वामित्व अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारका अधिकार है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—जघन्य पदमें, उत्कृष्ट पदमें और जघन्य-उत्कृष्ट पदमें ॥ २५ ॥

शंका— इस अधिकारमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— चूंकि जघन्य व उत्कृष्ट पदमें एक व दोके संयोगसे होनेवाले तीन भंगोंको छोड़कर इनसे अधिक भंगोंकी उत्पत्ति नहीं देखी जाती है, अतः इसीसे जाना जाता है कि उसमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु ' सकसाय ' इति पाठः । २ ताप्रतौ ' चरिमसुहुम ' इति पाठः ।

जहण्णपदेण अट्ठण्णं पि कम्माणं वेयणाओ कालदो जहण्णि-याओ तुल्लाओ ॥ २६ ॥

कुदो ? एगाए ट्ठिदीए एगसमयकालाए अट्ठण्णं पि कम्माणं जहण्णकालवेयणाए गहणादो । परमाणुभेदेण कालभेदो एत्थ किण्ण गहिदो ? ण, कालं मोत्तूण एत्थ पदेसाणं विवक्खाभावादो । समयभावेण एगत्तमावण्णसमयविसेसम्मि परमाणुपवेसादो वा । जेणेदाओ अट्ठ वि कालवेयणाओ तुल्लाओ तेण जहण्णपदप्पाबहुअं णत्थि त्ति भावत्थो ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया ॥ २७ ॥

पुव्वकोडितिभागाहियतेत्तीससागरोवमपमाणत्तादो ।

णामा-गोदवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ ॥ २८ ॥

कुदो ? वीससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो । गुणगारो संखेज्जा समया । एग-

---

जघन्य पदकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी कालसे जघन्य वेदनायें तुल्य हैं ॥ २६ ॥

कारण यह कि आठों ही कर्मोंकी एक एक समय कालवाली एक स्थितिको जघन्य कालवेदना ग्रहण किया गया है ।

शंका – परमाणुभेदसे यहां कालके भेदको क्यों नहीं ग्रहण किया गया है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि कालको छोड़कर यहां प्रदेशोंकी विवक्षा नहीं की गई है । अथवा, समय स्वरूपसे अभेदको प्राप्त हुए समयविशेषमें परमाणुओंका प्रवेश होनेसे कालभेदको ग्रहण नहीं किया गया ।

चूंकि ये आठों ही कालवेदनायें परस्पर समान हैं, अतः जघन्य अल्पबहुत्व नहीं है; यह भावार्थ है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कालसे उत्कृष्ट आयु कर्मकी वेदना सबसे स्तोक है ॥ २७ ॥

कारण यह कि वह पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है ।

उससे नाम व गोत्र कर्मकी कालसे उत्कृष्ट वेदनायें दोनों ही तुल्य व संख्यातगुणी हैं ॥ २८ ॥

कारण यह कि वे बीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण हैं । गुणकार यहां संख्यात

रूवस्स असंखेज्जदिभागब्भहियतेत्तीससागरोवमपलिदोवमसलागाहि वीससागरोवमकोडाकोडि-पलिदोवमसलागासु खंडिदासु तत्थ एगभागो गुणगारो होदि त्ति उत्तं होदि ।

णाणावरणीय--दंसणावरणीय--वेयणीय -- अंतराइयवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥२९॥

कुदो ? वीससागरोवमकोडाकोडीहिंतो तीससागरोवमकोडाकोडीणं दुभागाहियत्त-दंसणादो ।

मोहणीयस्स वेयणा कालदो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा ॥३०॥

कुदो ? तीससागरोवमकोडाकोडीहिंतो सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीणं सत्तिभागदोरूव-गुणगारत्तुवलंभादो । एवं उक्कस्सवेयणा समत्ता ।

जहण्णुक्कस्सपदे अट्ठण्णं[1] पि कम्माणं वेयणाओ कालदो जहण्णियाओ तुल्लाओ थोवाओ ॥ ३१ ॥

कुदो ? एगसमयत्तादो ।

समय है । अभिप्राय यह कि एक रूपके असंख्यातवें भागसे अधिक तेतीस सागरोपमोंकी पल्योपमशलाकाओंका बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंकी पल्योपमशलाकाओंमें भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध होता है वह यहां गुणकार है ।

उनसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी कालसे उत्कृष्ट वेदनायें चारों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ॥ २९ ॥

कारण कि बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंसे तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम द्वितीय भाग (½) से अधिक देखे जाते हैं ।

उनसे मोहनीय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना संख्यातगुणी है ॥ ३० ॥

कारण कि तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंसे सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंका एक तृतीय भाग सहित दो अंक गुणकार देखा जाता है । इस प्रकार उत्कृष्ट वेदना समाप्त हुई ।

जघन्य-उत्कृष्ट पदमें कालकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी जघन्य वेदनायें परस्पर तुल्य व स्तोक हैं ॥ ३१ ॥

कारण कि उनका कालप्रमाण एक समय है ।

---

१ प्रतिषु ' अण्णेसिं ' इति पाठः ।

आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया असंखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

कुदो ? एगसमयं पेक्खिदूण पुव्वकोडितिभागाहियतेत्तीससागरोवमेसु असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

णामा-गोदवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ३३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ ३४ ॥

कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

मोहणीयवेयणा कालदो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवमप्पाबहुगाणियोगद्दारं[1] संगतोक्खित्तगुणगाराहियारं समत्तं ।

उनसे आयु कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना असंख्यातगुणी है ॥ ३२ ॥

कारण कि एक समयकी अपेक्षा पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तेतीस सागरोपम असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

उससे कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट नाम व गोत्र कर्मकी वेदनायें दोनों ही तुल्य व असंख्यातगुणी हैं ॥ ३३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है । इसका कारण पहिलेके ही समान बतलाना चाहिये ।

उनसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदनायें चारों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ३४ ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

इनसे मोहनीय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना संख्यातगुणी है ॥ ३५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है । इसका कारण पहिलेके ही समान बतलाना चाहिये ।

इस प्रकार गुणकाराधिकारगर्भित अल्पबहुत्वानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु '-योगद्दाराणि' इति पाठः ।

(चूलिया)

एत्तो मूलपयडिट्ठिदिबंधे पुव्वं गमणिज्जे तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्दाराणि— ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणा णिसेयपरूवणा आबाधाकंदयपरूवणा अप्पाबहुए त्ति ॥ ३६ ॥

पदमीमांसा सामित्तप्पाबहुए त्ति तीहि अणियोगद्दारेहि कालविहाणं परूविदं । तं च समत्तं, तिण्णेव अणियोगद्दाराणि कालविहाणे सुत्तस्सादीए होंति त्ति परूविदत्तादो । अह ण समत्ते, कालविहाणे तिण्णि चेव अणियोगद्दाराणि होंति त्ति भणिदसुत्तस्स अणत्थयत्तं पसज्जेज्ज । ण च सुत्तमणत्थयं होदि, विरोहादो । तदो कालविहाणं समत्तं चेव । एवं समत्ते उवरिमसुत्तारंभो अणत्थओ त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे— तीहि अणियोगद्दारेहि कालविहाणं परूविय समत्तं चेव । किंतु तस्स समत्तस्स वेयणाकालविहाणस्स उवरिमगंथेण चूलिया उच्चदे । चूलिया णाम किं ? कालविहाणेण सूचिदत्थाणं विवरणं चूलिया । जाए अत्थपरूवणाए कदाए पुव्वपरूविदत्थम्मि सिस्साणं णिच्छओ उप्पज्जदि सा चूलिया त्ति भणिदं होदि । तम्हा उवरिमगंथावयारो संबद्धो त्ति घेत्तव्वो ।

आगे मूलप्रकृतिस्थितिबन्ध पूर्वमें ज्ञातव्य है । उसमें ये चार अनुयोगद्वार हैं— स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा, आबाधाकाण्डकप्ररूपणा और अल्पबहुत्व ॥ ३६ ॥

शंका— पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा कालविधानकी प्ररूपणा की जा चुकी है, वह समाप्त भी हो चुकी; क्योंकि, कालविधानमें सूत्रके प्रारम्भमें 'तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं' ऐसा कहा गया है । फिर भी यदि उसको समाप्त न माना जाय तो फिर "कालविधानमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं" इस प्रकार वहां कहे गये सूत्रके अनर्थक होनेका प्रसंग आवेगा । किन्तु सूत्र अनर्थक होता नहीं है, क्योंकि, इसमें विरोध होता है । इस कारण कालविधानको समाप्त ही मानना चाहिये । इस प्रकार उसके समाप्त हो जानेपर आगे सूत्रका प्रारम्भ करना अनर्थक है ?

समाधान— इस शंकाका परिहार करते हैं । तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा उसकी प्ररूपणा हो चुकनेपर वह समाप्त ही हो गया है । किन्तु आगेके ग्रन्थसे समाप्तिको प्राप्त हुए उक्त कालविधानकी चूलिका कही जाती है ।

शंका— चूलिका किसे कहते हैं ?

समाधान— कालविधानके द्वारा सूचित अर्थोंका विशेष वर्णन करना चूलिका कहलाती है । जिस अर्थप्ररूपणाके किये जानेपर पूर्वमें वर्णित पदार्थके विषयमें शिष्योंको निश्चय उत्पन्न हो उसे चूलिका कहते हैं, यह अभिप्राय है । अत एव अग्रिम ग्रन्थका अवतार सम्बद्ध ही है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

मूलपयडिट्ठिदिबंधे त्ति णिद्देसेण उत्तरपयडिट्ठिदिबंधवुदासो कदो। उत्तरपयडिट्ठिदिबंधवुदासो किमट्ठं कदो? ण, मूलपयडिट्ठिदिबंधावगमादो तदवगमो होदि त्ति तव्वुदासकरणादो। पुव्वसद्दो[1] कारणवाचओ किरियाविसेसणभावेण घेत्तव्वो। ण च पुव्वसद्दो[1] कारणत्थभावेण अप्पसिद्धो, मदिपुव्वं सुदमिच्चेत्थ कारणे वट्टमाणपुव्वसद्दुवलंभादो। तीहि अणियोगद्दारेहि पुव्वं परूविदत्थविसयबोहस्स[2] पुव्वं कारणं होदूण गमणिज्जे मूलपयडिट्ठिदिबंधे इमाणि अणियोगद्दाराणि होंति त्ति भणिदं होदि। अथवा, मूलपयडिट्ठिदिबंधो कालविहाणे पुव्वं पढममेव गमणिज्जो[3], ट्ठिदिअद्धाच्छेदादिसु अणवगदेसु सामित्तादिअणिओगद्दाराणमवगमोवायाभावादो। तत्थ इमाणि अणियोगद्दाराणि होंति त्ति भणिदं होदि।

अणुक्कस्स अजहण्णाट्ठिदिट्ठाणाणि पुव्वं परूविदाणि। तेसु[4] ट्ठाणेसु कम्हि कम्हि जीवसमासे तत्थ केत्तियाणि बंधट्ठाणाणि केत्तियाणि वा संतट्ठाणाणि[5] कस्स जीवसमासस्स बंधट्ठाणेहिंतो कस्स वा बंधट्ठाणाणि समाणि अहियाणि ऊणाणि त्ति पुच्छिदे तस्स णिच्छयुप्पायणट्ठं[6] ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणा आगदा। बज्झमाणकम्मपदेसविण्णासो किं पढमसमयप्पहुडि

‘मूलप्रकृतिबन्धस्थान’ इस निर्देशसे उत्तर प्रकृतियोंके स्थितिबन्धका निषेध किया गया है।

शंका — उत्तर प्रकृतियोंके स्थितिबन्धका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है?

समाधान — नहीं, चूंकि मूलप्रकृति-स्थितिबन्धके ज्ञात हो जानेपर उसका ज्ञान हो जाता है, अतः उसका प्रतिषेध किया गया है।

यहां पूर्व शब्दको क्रियाविशेषण स्वरूपसे कारण अर्थका वाचक ग्रहण करना चाहिये। पूर्व शब्द कारण अर्थका वाचक अप्रसिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, “मतिपूर्वं श्रुतम्” इस सूत्रमें कारण अर्थमें वर्तमान पूर्व शब्द देखा जाता है। तीन अनुयोगद्वारोंसे पूर्वमें प्ररूपित अर्थविषयक बोधका पूर्व अर्थात् कारण होनेसे अवगमनीय मूलप्रकृति-स्थितिबन्धमें ये अनुयोगद्वार होते हैं, यह उसका अभिप्राय है। अथवा, मूलप्रकृति-स्थितिबन्ध कालविधानमें पूर्वमें अर्थात् पहिले ही ज्ञातव्य है, क्योंकि, स्थितिअर्धच्छेदादिकोंके अज्ञात होनेपर स्वामित्व आदि अनुयोगद्वारोंके जाननेका कोई उपाय नहीं रहता। उसमें ये अनुयोगद्वार हैं, यह उक्त कथनका निष्कर्ष है।

अनुत्कृष्ट-अजघन्यस्थितिस्थान पूर्वमें कहे जा चुके हैं। उन स्थानोंमेंसे किस किस जीवसमासमें वहां कितने बन्धस्थान हैं व कितने सत्त्वस्थान, किस जीवसमासके बन्धस्थानोंसे किसके बन्धस्थान समान, अधिक अथवा कम हैं; ऐसा पूछनेपर उसका निश्चय उत्पन्न करानेके लिये स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा प्राप्त हुई है।

१ अ-आ-काप्रत्योः ‘पुव्वं सद्दो’ इति पाठः। २ प्रतिषु ‘विसयजादस्स’ इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु ‘गमणिज्जा’; ताप्रतौ ‘गमणिज्जे’ इति पाठः। ४ प्रतिषु ‘तिसु’ इति पाठः। ५ अ-आ-काप्रतिषु ‘बंधट्ठाणाणि’ इति पाठः। ६ अप्रतौ ‘णिच्छउप्पायणट्ठं’; आप्रतौ ‘णिच्छयउप्पायणट्ठं’ इति पाठः।

आहो अण्णहा होदि त्ति पुच्छिदे एवं होदि त्ति आबाधपमाणपरूवणट्ठं णिसिंचमाणकम्म-पदेसाणं णिसेयक्कमपरूवणट्ठं च णिसेयपरूवणा आगदा। एगमाबाधं कादूण किमेक्कं चेव ट्ठिदिबंधट्ठाणं बंधदि, आहो अण्णहा बंधदि त्ति पुच्छिदे एक्काए आबाधाए एत्तियाणि ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि बंधदि, अवराणि ण बंधदि त्ति जाणावणट्ठमाबाधाकंदयपरूवणा आगदा। आबाधाणं आबाधकंदयाणं च थोवबहुत्तजाणावणट्ठमप्पाबहुगपरूवणा आगदा। एवमेत्थ चत्तारि चेव अणियोगद्दाराणि होंति अण्णेसिमेत्थेवं अंतब्भावादो।

ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणदाए सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि ॥ ३७ ॥

एदमप्पाबहुअसुत्तं देसामासियं, सूइदट्ठिदिट्ठाणपरूवणा पमाणाणिओगद्दारत्तादो। ण च अत्थित्त-पमाणेहि अणवगयाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणमप्पाबहुगं संभवदि, विरोहादो। तम्हा ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणदाए परूवणा पमाणप्पाबहुगं चेदि तिण्णि अणियोगद्दाराणि। तत्थ परूवणदाए अत्थि चोद्दसण्णं जीवसमासाणं पुध पुध ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि। एत्थ ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि त्ति उत्ते केसिं गहणं? बध्यत इति बन्धः। स्थितिरेव बन्धः स्थितिबन्धः।

बध्यमान कर्मप्रदेशोंका विन्यास क्या प्रथम समयसे लेकर होता है, अथवा अन्य प्रकारसे होता है, ऐसा पूछनेपर वह इस प्रकारसे होता है, इस प्रकार आबाधा-प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये तथा निषिच्यमान कर्मप्रदेशोंके निषेकक्रमकी प्ररूपणाके लिये निषेकप्ररूपणा प्राप्त हुई है। एक आबाधाको करके क्या एक ही स्थितिबन्धस्थान बंधता है अथवा अन्य प्रकारसे बंधता है, ऐसा पूछनेपर एक आबाधामें इतने स्थितिबन्धस्थानोंको बांधता है, इतर स्थानोंको नहीं बांधता है; यह ज्ञात करानेके लिये आबाधाकाण्डकप्ररूपणा प्राप्त हुई है। आबाधाओं और आबाधाकाण्डकोंके अल्प-बहुत्वको बतलानेके लिये अल्पबहुत्वप्ररूपणा प्राप्त हुई है। इस प्रकार इसमें चार ही अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वारोंका इन्हींमें अन्तर्भाव हो जाता है।

स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणाकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान सबसे स्तोक हैं ॥ ३७ ॥

यह अल्पबहुत्वसूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह स्थितिस्थानोंके प्ररूपणानुयोगद्वार और प्रमाणानुयोगद्वारका सूचक है। इन अनुयोगद्वारोंकी आवश्यकता यहां इसलिये है कि इनके बिना अस्तित्व और प्रमाणसे अज्ञात स्थितिस्थानोंका अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध है। इस कारण स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं। उनमेंसे प्ररूपणाकी अपेक्षा चौदह जीवसमासोंके पृथक् पृथक् स्थितिबन्धस्थान हैं।

शंका— यहां स्थितिबन्धस्थान ऐसा कहनेपर किनका ग्रहण किया गया है?

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अण्णेसमुत्थेव' इति पाठः।

स्थितिबंधस्स स्थानमवस्थाविशेष इति यावत् । एदेसिं ट्ठिदिबंधविसेसाणं गहणं । जहण्ण-ट्ठिदिमुक्कस्सट्ठिदीए सोहिय एगरूवे पक्खित्ते ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि होंति, तेसिं गहणमिदि उत्तं होदि । परूवणा गदा ।

सव्वएइंदियाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? अप्पप्पणो जहण्णाबाहाए समऊणाए अप्पप्पणो समऊणजहण्णट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगमाबाधाकंदय-मागच्छदि । पुणो एदमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तआबाधाट्ठाणेहि गुणिय एगरूवे अवणिदे एइंदिएसु ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो उप्पज्जदि, तत्थ एगरूवे पक्खित्ते ट्ठिदिबंधट्ठाणुप्पत्तीदो । विगलिं-दिएसु ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं पमाणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । कुदो ? सग-सगउक्कस्सा-बाहाए सग-सगउक्कस्सट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगमाबाहकंदयमागच्छदि । पुणो एदमाबाह-ट्ठाणेहि आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेहि गुणिदे पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागट्ठिदिबंधट्ठाणु-प्पत्तिदंसणादो । सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि अंतोकोडाकोडिसागरोवम-मेत्ताणि । कुदो ? सगुक्कस्साबाहाए सगुक्कस्सट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगमाबाहाकंदयमा-

---

समाधान— जो बांधा जाता है वह बन्ध कहा जाता है । स्थिति ही बन्ध, स्थितिबन्ध इस प्रकार यहां कर्मधारय समास है । स्थितिबन्धका स्थान अर्थात् अवस्थाविशेष, इस प्रकार यहां तत्पुरुष समास है । इन स्थितिबन्धविशेषोंका ग्रहण किया गया है । अर्थात् जघन्य स्थितिको उत्कृष्ट स्थितिमेंसे घटा देनेपर जो शेष रहे उसमें एक अंकका प्रक्षेप करनेपर स्थितिबन्धस्थान होते हैं, उनका यहां ग्रहण किया है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

समस्त एकेन्द्रिय जीवोंके स्थितिबन्धस्थान पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, क्योंकि, एक समय कम अपनी अपनी आबाधाका अपनी अपनी एक समय कम जघन्य स्थितिमें भाग देनेपर एक आबाधाकाण्डकका प्रमाण आता है । फिर इसको आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण आबाधास्थानोंसे गुणित करके उसमेंसे एक अंकको घटा देनेपर एकेन्द्रिय जीवोंमें स्थितिबन्धस्थानविशेष उत्पन्न होता है । उसमें एक अंक मिलानेपर स्थितिबन्धस्थान उत्पन्न होता है ।

विकलेन्द्रिय जीवोंमें बन्धस्थानोंका प्रमाण पल्योपमका संख्यातवां भाग है । इसका कारण यह है कि अपनी अपनी उत्कृष्ट आबाधाका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर एक आबाधाकाण्डक आता है । इसको आवलीके संख्यातवें भाग मात्र आबाधास्थानोंसे गुणित करनेपर पल्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिस्थानोंकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं । इसका कारण यह है कि अपनी उत्कृष्ट आबाधाका अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर एक आबाधाकाण्डक आता है । फिर इसको जघन्य आबाधाकी अपेक्षा

गच्छदि । पुणो एदम्हि संखेज्जावलियमेत्तआबाधाट्ठाणेहि जहण्णाबाधादो संखेज्जगुणेहि गुणिदे संखेज्जसागरोवममेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणुप्पत्तीदो । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि णाणावरणादीणं सग-सगसमऊणधुवट्ठिदीए परिहीणसग सगुक्कस्सग-सगमेत्ताणि । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

संपहि बंधट्ठाणाणं अप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा— सव्वत्थोवा सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ३८ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जएसु सुहुमे-इंदियअपज्जत्तपढमचरिमट्ठिदिबंधट्ठाणादो हेट्ठा उवरिं च संखेज्जगुणवीचारट्ठाणाणमुवलंभादो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ३९ ॥

कुदो ? बादरेइंदियअपज्जत्तजहण्णुक्कस्सट्ठिदीहिंतो हेट्ठा उवरिं च बादरेइंदिय-अपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणट्ठिदिबंधट्ठाणाणं सुहुमेइंदियपज्जत्तएसु उवलंभादो ।

संख्यातगुणे संख्यात आवली मात्र आबाधास्थानोंसे गुणित करनेपर संख्यात सागरोपम प्रमाण स्थितिबन्धस्थान उत्पन्न होते हैं ।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके ज्ञानावरणादिकोंके स्थितिबन्धस्थान अपनी अपनी एक समय कम ध्रुवस्थितिसे रहित अपने अपने क्रमसे अपनी अपनी स्थिति प्रमाण होते हैं । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब बन्धस्थानोंका अल्पबहुत्व कहा जाता है । यथा—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवके स्थितिबन्धस्थान सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

उनसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबंधस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ३८ ॥

इसका कारण यह है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके प्रथम व चरम स्थितिबन्धस्थानसे नीचे व ऊपर संख्यातगुणे वीचारस्थान पाये जाते हैं ।

उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिबंधस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ३९ ॥

इसका कारण यह कि बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिसे नीचे व ऊपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थान पाये जाते हैं ।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ४० ॥

कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

बीइंदियअपज्जत्तयट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ४१ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। कुदो ? बीइंदिय-अपज्जत्तयस्स वीचारट्ठाणाणि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । एइंदियाणं पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्ताणि । जेण एत्थ हेट्ठिम-रासिणा उवरिमरासीए ओवट्टिदाए आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि तेण सो गुणगारो होदि त्ति अवगम्मदे ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ४२ ॥

कुदो ? विसोहीए संकिलेसेण च हेट्ठोवरि-मज्झिमट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुण-ट्ठिदिविसेसेसु वीचारदंसणादो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ४३ ॥

कारणं सुगमं । जहा सुहुमेइंदियअपज्जत्त-बादरेइंदियअपज्जत्ताणं[1] ट्ठिदिबंधट्ठाणे-

---

उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४० ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उनसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ४१ ॥

गुणकार क्या है ? वह आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग है, क्योंकि, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके वीचारस्थान पल्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं। परन्तु एकेन्द्रियके वीचारस्थान पल्योपममें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र हैं । चूंकि यहां नीचेकी राशिका ऊपरकी राशिमें भाग देनेपर आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग आता है, अतः वह गुणकार होता है, ऐसा प्रतीत होता है ।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४२ ॥

इसका कारण यह है कि विशुद्धि और संक्लेशसे नीचे, ऊपर और मध्यके स्थितिस्थानोंसे संख्यातगुणे स्थितिविशेषोंमें वीचार देखा जाता है ।

उनसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४३ ॥

इसका कारण सुगम है ।

---

१ अप्रतौ ' सुहुमेइंदियअपज्जत्ताणं ' इति पाठः ।

हिंतो सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि, तधा सव्वविगलिंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो बीइंदियपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि किण्ण संखेज्जगुणाणि ? ण, भिण्णजादित्तादो भिण्णट्ठिदित्तादो च ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४४॥

सुगममेदं ।

चउरिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४५॥

मज्झिमट्ठिदिविसेसेहिंतो हेट्ठा उवरि च संखेज्जगुणाणं वीचारट्ठाणाणमेत्थुवलंभादो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४६॥

एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ४७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४८॥

कारणं सुगमं ।

शंका— जैसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकों तथा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके स्थितिबन्धस्थानोंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, वैसे ही सब विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके स्थितिबन्धस्थानोंसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे क्यों नहीं हैं ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, उनकी जाति व स्थिति उनसे भिन्न है ।

उनसे उसके ही पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४५ ॥

क्योंकि, यहां मध्यम स्थितिविशेषोंसे नीचे व ऊपर संख्यातगुणे वीचारस्थान पाये जाते हैं ।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४६ ॥

यहां कारण पहिलेके ही समान बतलाना चाहिये ।

उनसे असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार यहां संख्यात समय है ।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४८ ॥

इसका कारण सुगम है ।

सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ४९ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तअसण्णिपंचिंदियट्ठिदिबंधट्ठाणेहि अंतोकोडाकोडिमेत्तसण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो।

तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[1] ॥५०॥

कारणं सुगमं। संपहि जेणेसो अव्वोगाढअप्पाबहुगदंडओ देसामासिओ तेणेत्थ अंतब्भूदं चउव्विहप्पमप्पाबहुगं भणिस्सामो। तं जहा— एत्थ अप्पाबहुगं दुविहं मूलपयडिअप्पाबहुगं अव्वोगाढअप्पाबहुगं चेदि। तत्थ अव्वोगाढअप्पाबहुगं दुविहं सत्थाण-परत्थाणभेदेण। तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो[2]। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-बादरेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। बेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

उनसे संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४९ ॥

इसका कारण यह है कि पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र असंज्ञी पंचेन्द्रियके स्थितिबन्धस्थानोंका अन्तःकोड़ाकोड़ि मात्र संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात रूप प्राप्त होते हैं।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ५० ॥

इसका कारण सुगम है। अब चूंकि यह अव्वोगाढअल्पबहुत्वदण्डक देशामर्शक है, अतः इसमें अन्तर्भूत चार प्रकारके अल्पबहुत्वको कहते हैं। वह इस प्रकार है— यहां अल्पबहुत्व मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व और अव्वोगाढअल्पबहुत्वके भेदसे दो प्रकार है। इनमें अव्वोगाढअल्पबहुत्व स्वस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकार है। उनमें स्वस्थानअल्पबहुत्वको कहते हैं। यथा— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष सबसे स्तोक है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उससे जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके भी कहना चाहिये। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष सबसे स्तोक है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उससे जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

---

१ आमतौ 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठः। २ ताप्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'असंखेज्जगुणो' इति पाठः।

एवं बेइंदियपज्जत्त-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं। सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो जहण्णओ ट्ठिदिबंधो। ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एवं सण्णिपज्जत्तयस्स वि वत्तव्वं। एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं।

परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि एगरूवेण। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो[1]। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि।

इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके भी कहना चाहिये। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है। उससे स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। इसी प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके भी कहना चाहिये। इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

परस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं। यथा— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष सबसे स्तोक है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा हैं। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे

१ ताप्रतौ '[अ] संखेज्जगुणो ' इति पाठः।

चउरिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्त-

---

विशेष अधिक हैं। उनसे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उसीके पर्याप्तका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थान-विशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उसीके पर्याप्तका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध

यस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एवमव्वोगाढ-अप्पाबहुगं समत्तं।

मूलपयडिअप्पाबहुगं सत्थाण-परत्थाणभेदेण दुविहं। तत्थ सत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो।

विशेष अधिक है। उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उसीके अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे उसीके स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। इस प्रकार अव्वोगाढ़अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व स्वस्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकार है। उनमेंसे स्वस्थानअल्पबहुत्वको कहते हैं। यथा— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी आयुका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है। उससे स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है।

ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चदुण्णं कम्माणं जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

एवं सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स बादरेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च पत्तेयं पत्तेयं सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। बेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो आउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो। ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ।

उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उसीके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उससे मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उससे मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तकमेंसे प्रत्येकके स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके आयु कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है। उससे स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उनसे चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। उससे स्थितिबन्धस्थान एक

१ अप्रतौ 'एगणामगोदाणं' इति पाठः।

ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

एवं बेइंदियपज्जत्तयस्स तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं असण्णिपंचिंदिय-अपज्जत्ताणं च सत्थाणप्पाबहुगं कायव्वं । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो आउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । कारणं उवरि उच्चिहिदि[1] । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । णामा गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ ...

रूपसे विशेष अधिक हैं । उससे मोहनीय कर्मका स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणा है । उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उससे नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उससे मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तक, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक-अपर्याप्तक तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके भी स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयु कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है । उससे स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । कारण आगे कहेंगे । उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीय कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीय कर्मका

१ अ-आप्रत्योः ' उवरिमव्विहिदि ', काप्रतौ ' उवरिमव्विहि ' इति पाठः ।

ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो आउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ[1] ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

एवं सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स वि सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उवरि पुव्वं व । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयु कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है । स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी स्वस्थानअल्पबहुत्व कहना चाहिये । विशेष इतना है कि आयु कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । आगे पूर्वके समान ही कहना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतावतः प्राक् [उक्क० ट्ठिदिबंधो विसेसाहियाणि] इत्यधिकः पाठः कोष्ठकस्थः समुपलभ्यते ।

एत्तो अट्ठण्णं कम्माणं चोद्दसजीवसमासेसु परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवो[1] चोद्दसण्णं जीवसमासाणं आउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो । बारसण्हं जीवसमासाणं आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । कुदो ? असण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु णिरय-देवाउआणमुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधुवलंभादो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरएइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्य ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंध-

अब यहांसे आगे चौदह जीवसमासोंमें आठ कर्मोंके परस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा— चौदह जीवसमासोंके आयु कर्मका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है । बारह जीवसमासोंके आयु कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है, क्योंकि, असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें नारकायु और देवायुका स्थितिबन्ध उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र पाया जाता है । उससे स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसी जीवके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा

१ अ-काप्रत्योः 'सव्वत्थोवा' इति पाठः ।

ट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बादरएइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। [[1]बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि।] तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्ज-

है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। [द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं।] उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्र

१ कोष्ठकस्थोऽयं पाठ अ-आ-काप्रतिषु नोपलभ्यते, ताप्रतौ तूपलभ्यते स कोष्ठकस्थ एव।

गुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाण-विसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसा-हियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । असण्णि-पंचिंदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि

कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्ध-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके चार कार्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थान-विशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके चार कर्मोंका

एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव मोहणीयस्य ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। सुहुमएइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरएइंदिय-अपज्जत्तयस्य णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरएइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्य णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरएइंदिय-पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरएइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्य चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके उन दोनों कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका

विसेसाहिओ । तस्सेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्य मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमएइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसे-

जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके उनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके उनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उसका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध

साहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णो ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुरिंदियपज्जत्तयस्य णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुरिंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके उनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके उनका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसके ही अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका

तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चदुरिंदियअप-ज्जत्तयस्स[1] चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स[2] चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चदुरिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपचिंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदि-बंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स

जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पज्ज०' इति पाठः। २ काप्रतौ 'अपज्ज०' इति पाठः।

चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स[1] मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंध-

चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष

१ प्रतिषु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठः।

ट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। संपहि एदेण सुत्तेण सूइदचउव्विहमप्पाबहुगं परूविदं।

बध्यत इति बन्धः, स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः, तस्स स्थानं विशेषः स्थितिबन्धस्थानं आबाधस्थानमित्यर्थः। अथवा बन्धनं बन्धः, स्थितेर्बन्धः स्थितिबन्धः, सोऽस्मिन् तिष्ठतीति स्थितिबन्धस्थानम्। तदो आबाधाट्ठाणपरूवणाए वि ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणसण्णा होदि त्ति कट्टु आबाधाट्ठाणपरूवणं परूवणा-पमाणप्पाबहुएहि कस्सामो[2]। तं जहा—चोद्दसण्हं जीवसमासाण-मत्थि आबाहाट्ठाणाणि। आबाहाट्ठाणं णाम किं? जहण्णाबाहमुक्कस्साबाहादो सोहिय सुद्धसेसेम्मि[3] एगरूवे पक्खित्ते आबाहाट्ठाणं। एसत्थो सव्वत्थ परूवेदव्वो। परूवणा गदा।

चदुण्णमेइंदियजीवसमासाणमाबाधाट्ठाणपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो। अट्ठण्णं

अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। इस प्रकार इस सूत्रसे सूचित चार प्रकारके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है।

जो बांधा जाता है वह बन्ध कहलाता है। 'स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः' इस कर्मधारय समासके अनुसार स्थितिको ही यहां बन्ध कहा गया है। उसके स्थान अर्थात् विशेषका नाम स्थितिबन्धस्थान है। अभिप्राय यह कि यहां स्थितिबन्धस्थानसे आबाधास्थानको लिया गया है। अथवा बन्धन क्रियाका नाम बन्ध है, 'स्थितिका बन्ध स्थितिबन्ध' इस प्रकार यहां तत्पुरुष समास है। वह स्थितिबन्ध जहां रहता है वह स्थितिबन्धस्थान कहा जाता है। इसीलिये आबाधास्थानप्ररूपणाकी भी स्थितिबन्धस्थान-प्ररूपणा संज्ञा है। अत एव प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा आबाधास्थानप्ररूपणाको करते हैं। यथा—चौदह जीवसमासोंके आबाधास्थान हैं।

शंका—आबाधास्थान किसे कहते हैं?

समाधान—उत्कृष्ट आबाधामेंसे जघन्य आबाधाको घटाकर जो शेष रहे उसमें एक अंकको मिला देनेपर आबाधास्थान होता है।

इस अर्थकी प्ररूपणा सभी जगह करना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

चार एकेन्द्रिय जीवसमासोंके आबाधास्थानोंका प्रमाण आवलीके असंख्यातवें

१ अ-आ-काप्रतिषु 'आबाधं' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'परूवणा (पमाण) मप्पाबहुए त्ति कस्सामो' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'सुद्धवेसम्मि', ताप्रतौ 'सुद्धवे (से) सम्मि' इति पाठः। ४ प्रतिषु 'समाण' इति पाठः।

विगलिंदियाणमाबाधाट्ठाणपमाणमावलियाए संखेज्जदिभागो। सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणपमाणं संखेज्जावलियाओ। तं च अंतोमुहुत्तं। तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणं संखेज्जाणि वाससहस्साणि। एवं पमाणं गदं।

अप्पाबहुगं दुविहं अव्वोगाढप्पाबहुगं मूलपयडिअप्पाबहुगं चेदि। तत्थ अव्वोगाढ-अप्पाबहुअं पि दुविहं सत्थाणप्पाबहुअं परत्थाणप्पाबहुअं चेदि। तत्थ सत्थाणप्पाबहुअं वत्तइस्सामो— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। जहण्णिया आबाधा असंखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिया। एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-बादरेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं। सव्वत्थोवो बेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। जहण्णिया आबाधा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिया। एवं बेइंदियपज्जत्त-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं[1] च सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। सण्णि-पंचिंदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा। आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। एवं

भाग मात्र है। आठ विकलेन्द्रियोंके आबाधास्थानोंका प्रमाण आवलीके संख्यातवें भाग है। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके आबाधास्थानोंका प्रमाण संख्यात आवलियां है। वह अन्तर्मूहूर्तके बराबर है। उसीके पर्याप्तकके आबाधास्थान संख्यात हजार वर्ष प्रमाण हैं। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है—अव्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व। इनमें अव्वोगाढअल्पबहुत्व भी दो प्रकार है—स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व। इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक हैं। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक जीवोंके भी कहना चाहिये। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।

इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, एवं असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तकके भी स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है। आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इसी

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-प्रतिषु 'पंचिंदियअपज्जत्तापज्जत्ताणं', ताप्रतौ 'पंचिंदियअपज्जत्त-पज्जत्ताणं' इति पाठः।

[एवं सण्णिपंचिंदिय-] पज्जत्तस्स वि वत्तव्वं । सत्थाणं गदं ।

परत्थाणे सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स आबाधा-ट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहि-याणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । एवं चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च णेदव्वं ।

तदो बादरएइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाधा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिआ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिआ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाधा विसेसाहिआ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिआ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिआ ।

प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके भी कहना चाहिये । स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

परस्थानकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक-का आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक तथा अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये ।

उससे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिआ। बादरएइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिआ। बेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिआ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कसिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। एवं चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं पि णेदव्वं। तदो असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णियां आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कसिया आबाहा विसेसाहिया। तदो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। एवमव्वोगाढमप्पाबहुगं समत्तं।

अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये।

इससे आगे असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इस प्रकार अव्वोगाढअल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'उक्क०', ताप्रतौ 'उक० (जह०)' इति पाठः।

मूलपयडिअप्पाबहुगं दुविहं सत्थाणं परत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणे पयदं—सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा असंखेज्जगुणा । आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-बादरेइंदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । बादरेइंदियपज्जत्तएसु सव्वत्थोवो णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाणविसेसो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा असंखेज्जगुणा । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया ... ...

मूलप्रकृति अल्पबहुत्व दो प्रकार है—स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व । उनमें यहां स्वस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयु कर्मकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीय कर्मकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी कहना चाहिये । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उनकी उत्कृष्ट

आबाहा विसेसाहिआ। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिआ । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया।

बेइंदिअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाणविसेसो। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा[1] विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्य जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियअपज्जत्ताणं पि णेदव्वं।

सव्वत्थोवो बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं आबाहाट्ठाणविसेसो। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो।

आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। आबाधास्थान विशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थान-

---

[1] ताप्रतौ 'कम्माणं आबाहा' इति पाठः।

आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाधा संखेज्जगुणा । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा[1] । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं पि णेदव्वं ।

सव्वत्थोवा सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स जहण्णिया आबाहा । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

१. अ-आ-काप्रतिषु 'णामागोदाणं........संखेज्जगुणा' इति पाठो नास्ति, ताप्रतौ त्वस्ति सः ।

सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स आउअस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा। आबाहाट्ठाणं-[1] विसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणियस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। णामा-गोदाणमा-बाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहा-ट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं।

परत्थाणे पयदं— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणबाहाट्ठाणविसेसो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसे-साहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है। आबाधा-स्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थान-

---

१ ताप्रतौ 'जह० आबाहा। [आबाहा] ट्ठाण-' इति पाठः।

कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। बेइंदिय-अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाण-

---

विशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधा-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष असंख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा हैं। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबा-धास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यात-

विसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चउरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। असण्णि[1]पंचिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो।

गुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष

१ अ-आ-काप्रतिषु 'असण्णि-' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते।

आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि[1] । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चोद्दसण्णं जीवसमासाणमाउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सत्तण्णं पि अपज्जत्त-जीवसमासाणमाउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरएइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स[2] णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स[3] णामा-गोदाणं जहण्णिया[4] आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव[5] णामा-गोदाण-

अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधा-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चौदह जीवसमासोंके आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सातों ही अपर्याप्तक जीवसमासोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

१ अप्रतावतोऽग्रे 'मोहणी० आबाहाट्ठाणविसेसो संखे० गुणो' इत्यधिकं वाक्यं समुपलभ्यते । २ अ-आ-काप्रतिषु 'पज्ज०' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'सुहुमेइंदियपज्ज०' इति पाठः । ४ काप्रतौ 'णामा गोदाणमुक्क०' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'सुहुमेइंदियपज्ज० णामा गोदाणं जह० आबाहा विसे० । [बादरेइंदियपज्ज० णामागोदाणं जह० आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदिय० विसे०] । तस्सेव' इति पाठः ।

मुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियअपज्जत्तस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कमाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसा-हिया। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। सुहुमेइंदिय-पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियअपज्जत्तस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उवकस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्त-यस्स मोहणीयस्य उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उनकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके उनकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उनकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी

उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्य चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्य चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स[1] चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माण-मुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया[2] । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्हं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उकस्सिया

उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीक पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय

१ प्रतिषु 'पज्ज०' इति पाठः । २ प्रतिषु नास्तीदं वाक्यम्, मप्रतौ त्वस्ति ।

आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । असंज्ञी

असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा¹-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहा-

पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं।

१ अ-काप्रत्योः 'सण्णिपंचिदियणामा-', आप्रतौ 'सण्णिपंचि० णामा-', ताप्रतौ 'सण्णिपंचिंदिय [पज्ज०] णामा' इति पाठः।

ट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चउरिंदिय-पज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्ज-गुणो। आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। बादरेइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसा-हिया। सण्णि-असण्णिपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया।

संपहि एदेण सुत्तेण परूविददो वि अप्पाबहुअदंडयाणि जुगवं वत्तइस्सामो। तं पि उभयदो अप्पाबहुअं दुविहं— अव्वोगाढअप्पाबहुअं मूलपयडिअप्पाबहुअं चेदि। तत्थ अव्वोगाढप्पाबहुअं दुविहं— सत्थाणं परत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणे पयदं— सव्वत्थोवो

उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधा-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।

अब इस सूत्रसे प्ररूपित दोनों ही अल्पबहुत्वदण्डकोंको एक साथ कहते हैं। वह दोनों प्रकारका अल्पबहुत्व अव्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रकृतिअल्पबहुत्वके भेदसे दो प्रकार है। उनमें अव्वोगाढअल्पबहुत्व दो प्रकार है स्व-स्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व। उनमें स्वस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहण्णिया आबाहा असंखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-बादरेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च णेदव्वो ।

सव्वत्थोवो बेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं बेइंदियपज्जत्त-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च णेदव्वं ।

सव्वत्थोवा सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा । आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सण्णिपज्जत्ताणं पि णेदव्वं ।

आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान विशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तों और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तों व अपर्याप्तोंके भी ले जाना चाहिये ।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य अबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तकों तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों व अपर्याप्तकोंके भी ले जाना चाहिये ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके भी जानना चाहिये ।

परत्थाणे पयदं— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । [[1]तीइंदियअपज्जत्तयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।] तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा- । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया

अब परस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष असंख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। बादर

१ कोष्ठकस्थोऽयं पाठ अ-आ-का-ताप्रतिषु नोपलभ्यते, मप्रतितोऽत्र योजितः सः ।

आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाणं णेदव्वं । असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सेसतिण्णं पदाणं बेइंदियभंगो । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्ज-गुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहि-याणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-

....

एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके ले जाना चाहिये।

आगे असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। आगेके शेष तीन पदोंका अल्पबहुत्व द्वीन्द्रिय जीवोंके समान है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं।

पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका

विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदिय-पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सेसतिण्णिपदाणं बेइंदियभंगो । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सेसतिण्णि[1]पदाणं बेइंदियभंगो । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्ज-गुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवमव्वोगाढमप्पाबहुअं समत्तं ।

मूलपयडिअप्पाबहुअं दुविहं— सत्थाणं परत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणे पयदं—

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थिति-बन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । शेष तीन पदोंकी प्ररूपणा द्वीन्द्रियके समान है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । शेष तीन पदोंकी प्ररूपणा द्वीन्द्रियके समान है । संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थिति-बन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार अव्वोगाढअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व दो प्रकार है— स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व ।

---

१ प्रतिषु ' सेसं तिण्णि- ' इति पाठः ।

सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि[1] । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवा- हियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा असंखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा- विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंध- ट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंध- ट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-

इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। आयुकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है। जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उनकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्ध- स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। इसी प्रकार

[1] ताम्रतौ 'एगरूवेणहियाणि' इति पाठः ।

बादरेइंदियअपज्जत्ताणं च णेदव्वं ।

सव्वत्थोवो बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा असंखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

. . ..

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकों और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके भी जानना चाहिये ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उससे उन्हींकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उत्कृष्ट

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

सव्वत्थोवो बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियअपज्जत्ताणं पि णेयव्वं ।

सव्वत्थोवो बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । आउस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो

चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके भी जानना चाहिये ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष

१ अ-आ-काप्रतिषु 'तेइंदिय-असण्णि', ताप्रतौ 'तेइंदिय [चउरिंदिय] असण्णि' इति पाठः ।

संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ताणं पि[1] णेयव्वं ।

सव्वत्थोवो असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाण-विसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंध-

संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके भी ले जाना चाहिये ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान विशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान

१ अ-का-ताप्रतिषु 'पि' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते ।

ट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाण-विसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। [उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।] मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

सव्वत्थोवा सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स आउअस्स जहण्णिया आबाहा। जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहि-याणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

एक रूपसे अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। [उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।] मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है। जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा

असंखेज्जगुणो। चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाण-विसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवा-हियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

सव्वत्थोवा सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स जहण्णिया आबाहा। तस्सेव जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसा-हिया। आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

है। चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्ध-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है। उसीका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यात-गुणी है। नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध

संखेज्जगुणो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

परत्थाणे पयदं—सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स

संख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष

आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बादरएइंदिय-पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवा-हियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्हं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो

संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष असंख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थान-विशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबा-धास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधा-स्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष

विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चोद्दसण्णं जीवसमासाणमाउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ।

अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा हैं । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थान संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चौदह जीवसमासोंके आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध

सत्तण्णमपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स [णामा-गोदाणं] जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

संख्यातगुणा है । सात अपर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके उसकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके उसकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदिय-पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । एवं सेसाणं छप्पदाणं पि णेदव्वं । बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्क-स्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्य चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्क-स्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया ।

विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार शेष छह पदोंका भी अल्पबहुत्व जानना चाहिये ।

आगे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके नाम गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके

तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्य उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्य चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चउरिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्य जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणी-यस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तसस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव

मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तक-के चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य

अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णियाº आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाण-विसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ ।

आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक

१ ताप्रतौ 'कम्माणं उक्क० (जह०)' इति पाठः ।

आबाहट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्क- स्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्ताण- माउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माण- माबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्त- यस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । पंचिंदियसण्णि-असण्णिपज्जत्ताणमाउअस्स आबाह- ट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा

हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका आबाधास्थान- विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बारह जीवसमासोंके आयुका

विसेसाहिया । बारसण्णं जीवसमासाणमाउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णि-पंचिंदियपज्जत्ताणमाउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बादरेइंदिय-अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बादरेइंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाण-विसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाण-

---

स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके नाम वगोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थान विशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थिति-

विसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाण-विसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बेइंदियअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तेइंदियअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसा-हिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चउरिंदियअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं

बन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोह-नीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थान-विशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्ध-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे

ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । असण्णि-पंचिंदिअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । बादरएइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

विशेष अधिक हैं। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थिति-बन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थान विशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्ध-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व

विसेसाहिओ। बादरेइंदिपअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदिपअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। सेसाणि सत्त पदाणि विसेसाहियाणि णेदव्वाणि[1]। बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। शेष सात पद विशेष अधिक क्रमसे ले जाना चाहिये। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके

१ अप्रतौ 'विसेसाहियाणि त्ति णेदव्वाणि' इति पाठः।

संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एवं सेसाणि तिण्णि पदाणि णेदव्वाणि। तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एवं सेसदोपदाणि विसेसाहियकमेण णेदव्वाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स [2]चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। इसी प्रकार शेष तीन पदोंको ले जाना चाहिये।

आगे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। इसी प्रकार शेष दो पदोंको भी विशेषाधिकके क्रमसे ले जाना चाहिये। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका स्थितिबन्ध-

१ वाक्यमिदं नोपलभ्यत अ-आ-काप्रतिषु। २ ताप्रतौ 'चदुण्णं क० उक्क० (जह०)' इति पाठः।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणमाउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं चउण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाण-मुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

स्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध

विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव पज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो

विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष

संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेसविसोहिट्ठाणाणि ॥५१॥

स्थितयो बध्यन्ते एभिरिति करणे घञुत्पत्तेः[2] कर्मस्थितिबन्धकारणपरिणामानां स्थितिबन्ध इति व्यपदेशः । तेषां स्थानानि अवस्थाविशेषाः स्थितिबन्धस्थानानि । संपहि तेसिं ट्ठिदिबंधकारणपरिणामाणं परूवणा कीरदे । किमट्ठमेदेसिं परूवणा कीरदे ? कारणावगमदुवारेण कम्मट्ठिदिकज्जावगमणट्ठं । ण च कारणे अणवगए कज्जावगमो सम्मत्तं पडिवज्जदे, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो ।

एत्थ परूवणा पमाणमप्पाबहुअमिदि तिण्णि अणियोगद्दाराणि भवंति । सुत्ते

अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थान-विशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थिति-बन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सबसे स्तोक हैं ॥ ५१ ॥

'जिनके द्वारा स्थितियां बंधती हैं' इस विग्रहके अनुसार करण अर्थमें 'घञ्' प्रत्यय होनेसे स्थितिबन्धके कारणभूत परिणामोंको स्थितिबन्ध कहा गया है। उनकी अवस्थाविशेषोंका नाम स्थितिबन्धस्थान हैं। अब स्थितिबन्धके कारणभूत उन परिणामोंकी प्ररूपणा करते हैं।

शंका—इनकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है?

समाधान—कारणपरिज्ञानपूर्वक कर्मस्थितिके रूप कार्यका परिज्ञान करानेके लिये उनकी प्ररूपणा की जा रही है। कारण कि जबतक कार्योत्पादक हेतुका परिज्ञान नहीं हो जाता, तब तक कार्यका परिज्ञान यथार्थताको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, दूसरी जगह वैसा पाया नहीं जाता है।

यहां प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'घञ्युत्पत्ते' इति पाठः।

अप्पाबहुआणियोगद्दारमेक्कमेव किमट्ठं परूविदं ? ण एस दोसो, अप्पाबहुअपरूवणाए तेसिं दोण्हं पि अंतब्भावादो। कुदो ? अणवगयसंत-पमाणेसु परिणामेसु अप्पाबहुगाणुववत्तीदो। तत्थ ताव एगजीवसमासमस्सिदूण संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं परूवणा कीरदे। तं जहा- जहण्णियाए ट्ठिदीए अत्थि संकिलेसट्ठाणाणि। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति। एवं विसोहिट्ठाणाणं पि परूवणा कायव्वा। णवरि उक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि परूवेदव्वं। एवं परूवणा गदा।

जहण्णियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणं पमाणमसंखेज्जा लोगा। बिदियाए ट्ठिदीए वि असंखेज्जा लोगा। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति। एवं विसोहिट्ठाणाणं पि विवरीएण पमाणपरूवणा कायव्वा। एत्थ पमाणाणियोगद्दारेण सूचिदाणं सेडि-अवहार-भागाभागाणं परूवणं कस्सामो। तत्थ सेडिपरूवणा दुविहा- अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि। तत्थ अणंतरोवणिधाए जहण्णट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणेहिंतो बिदियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। को पडिभागो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। बिदियट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणेहिंतो तदियट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। एत्थ पडिभागो

...

शंका—सूत्रमें एक मात्र अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारकी ही प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वे दोनों अल्पबहुत्व प्ररूपणाके अन्तर्गत हैं। कारण यह कि सत्त्व और प्रमाणके अज्ञात होनेपर उक्त परिणामोंके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा सम्भव नहीं है।

उनमें पहिले एक जीवसमासका आश्रय लेकर संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है। यथा—जघन्य स्थितिमें संक्लेशस्थान हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये। इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि उनकी प्ररूपणा उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर करना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक है। द्वितीय स्थितिके भी संक्लेशस्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक ही है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये। इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंके भी प्रमाणकी प्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये।

यहां प्रमाणानुयोगद्वारसे सूचित श्रेणि, अवहार और भागाभागकी प्ररूपणा करते हैं। उनमें श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। उनमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा—जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंसे द्वितीय स्थितिके संक्लेशस्थान विशेष अधिक हैं। प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। द्वितीय स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा तृतीय स्थितिके संक्लेशस्थान विशेष

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एवमणंतरोवणिधा गदा ।

परंपरोवणिधाए जहण्णट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणेहिंतो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-मेत्तद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि । पुणो वि एत्तियमद्धाणमुवरि गंतूण चदुग्गुणवड्ढी होदि । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एत्थ णाणागुणहाणिसलागाओ थोवाओ । एगगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । एवं विसोहिट्ठाणाणं पि सेडिपरूवणं विवरीद-कमेण कायव्वं, उक्कस्सट्ठिदिपरिणामेहिंतो हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठिदिपरिणामाणं विसेसाहियत्तुव-लंभादो । एवं सेडिपरूवणा गदा ।

अवहारो उच्चदे । तं जहा—सव्वसंकिलेसट्ठाणाणि जहण्णट्ठिदिसंकिलेसपमाणेण अवहिरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? असंखेज्जेण कालेण अवहिरिज्जंति । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एवं विसोहिट्ठाणाणं पि वत्तव्वं । अवहारो गदो ।

जहण्णियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि सव्वसंकिलेसट्ठाणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एवं विसोहिट्ठाणाणं[1] भागाभागपरूवणा कायव्वा । एवं भागाभागपरूवणा गदा ।

अधिक हैं । यहां प्रतिभाग पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधासे जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अध्वान जाकर दुगुणी वृद्धि होती है । फिर भी इतना मात्र अध्वान आगे जाकर चतुर्गुणी वृद्धि होती है । इस क्रमसे उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । यहां नाना गुणहानिशलाकायें स्तोक हैं । एक गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंकी भी श्रेणिप्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा नीचे नीचेकी स्थितियोंके परिणाम विशेष अधिक पाये जाते हैं । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अवहारकी प्ररूपणा करते हैं । यथा-समस्त संक्लेशस्थानोंको जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंके प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानोंतक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंके भी अवहारका कथन करना चाहिये । अवहारका कथन समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थान सब संक्लेशस्थानोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे सब संक्लेशस्थानोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके स्थानों तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धस्थानोंके भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ अ-आ-काप्रतिषु ' विसोहिट्ठाणाणि ' इति पाठः ।

संपहि अप्पाबहुअपरूवणाए सुत्तुद्दिट्ठाए विवरणं कस्सामो—सव्वत्थोवा सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि। संपहि संकिलेसट्ठाणाणं विसोहिट्ठाणाणं च को भेदो? परियत्तमाणियाणं साद-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जादीणं सुभपयडीणं बंधकारणभूदकसायट्ठाणाणि विसोहिट्ठाणाणि, असाद-अथिर-असुह-दुभग-[दुस्सर-] अणादेज्जादीणं परियत्तमाणियाणमसुहपयडीणं[२] बंधकारणकसाउदयट्ठाणाणि संकलेसट्ठाणाणि त्ति एसो तेसिं भेदो। वड्ढमाणकसाओ संकिलेसो, हायमाणो विसोहि त्ति किण्ण घेप्पदे? ण, संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं संखाए समाणत्तप्पसंगादो। कुदो? जहण्णुक्कस्सपरिणामाणं जहाकमेण विसोहि-संकिलेसणियमदंसणादो मज्झिमपरिणामाणं च संकिलेस-विसोहिपक्खवुत्तिदंसणादो ण च संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं संखाए समाणत्तमत्थि, संकिलेसट्ठाणेहिंतो विसोहिट्ठाणाणि णियमेण थोवाणि त्ति पवाइज्जमाणगुरूवएसेण सह विरोहादो। उक्कस्सट्ठिदीए[३] विसोहिट्ठाणाणि थोवाणि जहण्णट्ठिदीए

अब सूत्रोद्दिष्ट अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका विवरण करते हैं —सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सबसे स्तोक हैं।

शंका—यहां संक्लेशस्थानों और विशुद्धिस्थानोंमें क्या भेद है?

समाधान—साता, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर और आदेय आदिक परिवर्तमान शुभ प्रकृतियोंके बन्धके कारणभूत कषायस्थानोंको विशुद्धिस्थान कहते हैं और असाता, अस्थिर अशुभ, दुर्भग, [दुस्वर] और अनादेय आदिक परिवर्तमान अशुभ प्रकृतियोंके बन्धके कारणभूत कषायोंके उदयस्थानोंको संक्लेशस्थान कहते हैं, यह उन दोनोंमें भेद है।

शंका—बढ़ती हुई कषायको संक्लेश और हीन होती हुई कषायको विशुद्धि क्यों नहीं स्वीकार करते?

समाधान—नहीं, क्योंकि वैसा स्वीकार करनेपर संक्लेशस्थानों और विशुद्धिस्थानोंकी संख्याके समान होनेका प्रसंग आता है। कारण यह कि जघन्य और उत्कृष्ट परिणामोंके क्रमशः विशुद्धि और संक्लेशका नियम देखा जाता है, तथा मध्यम परिणामोंका संक्लेश अथवा विशुद्धिके पक्षमें अस्तित्व देखा जाता है। परन्तु संक्लेश और विशुद्धि स्थानोंमें संख्याकी अपेक्षा समानता है नहीं, क्योंकि, 'संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा विशुद्धिस्थान नियमसे स्तोक हैं' इस परम्परासे प्राप्त गुरुके उपदेशसे विरोध आता है। अथवा, उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थान थोड़े और जघन्य स्थितिमें वे बहुत

१ अ-आ-काप्रतिषु 'परियत्तवूणियाणि,' ताप्रतौ 'परियत्तमाणियाणि' इति पाठः। सायं थिराइं उच्चं सुर-मणु दो-दो पणिदि चउरंसं। रिसह-पसत्थविहायगइ सोलस परियत्तसुभवग्गो॥ पं. सं. १,८१
२ अ. आ-काप्रतिषु 'परियत्तवूणियाण' इति पाठः। अस्साय थावरदसं नरयदुगं विहगई य अपसत्था। पंचेंदि-रिसभचउरंसगेयरा असुभघोलणिया॥ पं. सं. १,८२. ३ म प्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का प्रतिषु 'एक्कस्स' ताप्रतौ 'ए (उ) क्कस्स' इति पाठः।

बहुवाणि त्ति गुरूवएसादो वा हायमाणकसाउदयट्ठाणाणं विसोहिभावो णत्थि त्ति णव्वदे। सम्मत्तुप्पत्तीए सादद्धाणपरूवणं[1] कादूण पुणो संकिलेस-विसोहीणं परूवणं कुणमाणा वक्खाणाइरिया जाणावेंति जहा हायमाणकसाउदयट्ठाणाणि चेव विसोहिसण्णिदाणि त्ति भणिदे होदु णाम तत्थ तधाभावो, दंसण-चरित्तमोहक्खवणोवसामणासु पुव्विल्लसमए उदयमागद-अणुभागफद्दएहिंतो अणंतगुणहीणफद्दयाणमुदएण जादकसायउदयट्ठाणस्स विसोहित्तमुवगमादो। ण च एस णियमो संसारावत्थाए अत्थि, तत्थ छव्विहवड्ढि-हाणीहि कसाउदयट्ठाणाणं उत्पत्तिदंसणादो। संसारावत्थाए वि अंतोमुहुत्तमणंतगुणहीणकमेण अणुभागफद्दयाणं उदओ अत्थि त्ति वुत्ते होदु, तत्थ वि तधाभावं[3] पडुच्च विसोहित्तब्भुवगमादो। ण च एत्थ अणंतगुणहीणफद्दयाणमुदएण उप्पण्णकसाउदयट्ठाणं विसोहि त्ति घेप्पदे, एत्थ एवंविहविवक्खाभावादो[4]। किंतु सादबंधपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणि विसोही, असादबंधपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणि संकिलेसो त्ति घेत्तव्वमण्णहा विसोहिट्ठाणाणमुक्कस्सट्ठिदीए

होते हैं, इस गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि हानिको प्राप्त होनेवाली कषायके उदयस्थानोंके विशुद्धता सम्भव नहीं है।

शंका—सम्यक्त्वोत्पत्तिमें सातावेदनीयके अध्वानकी प्ररूपणा करके पश्चात् संक्लेश व विशुद्धिकी प्ररूपणा करते हुए व्याख्यानाचार्य यह ज्ञापित करते हैं कि हानिको प्राप्त होनेवाले कषायके उदयस्थानोंकी ही विशुद्धि संज्ञा है?

समाधान—ऐसी आशंका होनेपर उत्तर देते हैं कि वहाँपर वैसा कहना ठीक है, क्योंकि, दर्शन और चारित्र मोहकी क्षपणा व उपशामनामें पूर्व समयमें उदयको प्राप्त हुए अनुभागस्पर्धकोंकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन अनुभागस्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न हुए कषायोदयस्थानके विशुद्धपना स्वीकार किया गया है। परन्तु यह नियम संसारावस्थामें सम्भव नहीं है, क्योंकि, वहाँ छह प्रकारकी वृद्धि व हानियोंसे कषायोदयस्थानकी उत्पत्ति देखी जाती है।

शंका—संसारावस्थामें भी अन्तर्मुहूर्त काल तक अनन्तगुणे हीन क्रमसे अनुभागस्पर्धकोंका उदय है ही?

समाधान—संसारावस्थामें भी उनका उदय बना रहे, वहाँ भी उक्त स्वरूपका आश्रय करके विशुद्धता स्वीकार की गई है। परन्तु यहाँ अनन्तगुणे हीन स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न कषायोदयस्थानको विशुद्धि नहीं ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि, यहाँ इस प्रकारकी विवक्षा नहीं है। किन्तु सातावेदनीयके बन्धयोग कषायोदयस्थानोंको विशुद्धि और असातावेदनीयके बन्धयोग्य कषायोदयस्थानोंको संक्लेश ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इसके बिना उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थानोंकी स्तोकताका विरोध है।

१ प्रतिषु 'सादद्धाणं परूवणं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'जाव' इति पाठः। ३ अ-आ-का प्रतिषु 'तत्थाभावं' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'एवं विधविवक्खाभावादो' इति पाठः।

थोवत्तविरोहादो त्ति । तदो संकिलेसट्ठाणाणि जहण्णट्ठिदिप्पहुडि विसेसाहियवड्ढीए, उक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि विसोहिट्ठाणाणि विसेसाहियवड्ढीए गच्छंति [त्ति] विसोहिट्ठाणेहिंतो संकिलेसट्ठाणाणि विसेसाहियाणि त्ति सिद्धं ।

बादरेइंदियअपज्जयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५२ ॥

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि त्ति सुत्तेहि परूविदाणि । तदो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेसविसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि संखेज्जगुणेहि होदव्वं । तेण असंखेज्जगुणाणि त्ति सुत्तवयणं ण घडदे ? एत्थ परिहारो उच्चदे—जदि सव्वट्ठिदीणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि सरिसाणि चेव होंति तो संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे । ण च सव्वट्ठिदि-संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं सरिसत्तमत्थि, जहण्णुक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जभागवड्ढीए गमणुवलंभादो । तेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदि त्ति घेत्तव्वं[1] ।

अतएव संक्लेशस्थान जघन्य स्थितिसे लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिकके क्रमसे तथा विशुद्धिस्थान उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर विशेष अधिक क्रमसे जाते हैं, इसीलिये विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा संक्लेशस्थान विशेष अधिक हैं, यह सिद्ध होता है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५२ ॥

शंका—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुण हैं, ऐसा सूत्रों (३७-३८) में कहा जा चुका है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धि स्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान संख्यातगुणे होना चाहिये । इसीलिये 'असंखेज्जगुणाणि' यह सूत्रवचन घटित नहीं होता है ?

समाधान—इस शंकाका परिहार कहते हैं—यदि सभी स्थितियोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सदृश ही होते, तो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेशविशुद्धिस्थानोंको संख्यातगुणा कहना उचित था । परन्तु सब स्थितियोंके संक्लेशविशुद्धिस्थान सदृश होते नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर क्रमशः संक्लेश और विशुद्धि स्थानोंका गमन असंख्यातभागवृद्धिके साथ पाया जाता है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश विशुद्धिस्थानोंसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको असंख्यातगुणा कहना उचित है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

१ कथमेवं गम्यते सर्वत्राप्यसंख्येयगुणानि संक्लेशस्थानानीति चेदुच्यते इह सूक्ष्मस्यापर्याप्तस्य

संपहि जदि वि असंखेज्जगुणत्तं बुद्धिमंताणं सिस्साणं सुगमं तो वि मंदमेहावि-सिस्साणमणुग्गहट्ठमसंखेज्जगुणत्तसाहणं वत्तइस्सामो। तं जहा— सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं संदिट्ठीए रचणा कायव्वा। पुणो एदेसिं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं दक्खिणदिसाए बादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणं रचणा कायव्वा। तत्थ बादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणे सुहुमेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि मोत्तूण सेसहेट्ठिम-ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि सुहुमेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणाणि सुहुमेइंदियअपज्जत्त-विसोहीदो बादरेइंदियअपज्जत्तविसोहीए अणंतगुणत्तुवलंभादो। उवरिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणि तत्तो संखेज्जगुणाणि, सुहुमेइंदियअपज्जत्तउक्कस्ससंकिलेसादो बादरेइंदियअपज्जत्त-उक्कस्स-संकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो। एवं च ट्ठिदट्ठिदिबंधट्ठाणेसु जहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणमादिं कादूण जावुक्कस्सट्ठिदिबंधट्ठाणे त्ति ताव पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं

अब यद्यपि बुद्धिमान् शिष्योंके लिये असंख्यातगुणत्वका जानना सुगम है, तथापि मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहार्थ असंख्यातगुणत्वका साधन कहा जाता है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्ध स्थानोंकी संदृष्टिमें रचना करना चाहिये। पश्चात् इन स्थितिबन्धस्थानोंकी दक्षिण दिशामें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्ध स्थानोंकी रचना करना चाहिये। उनमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्ध-स्थानोंमेंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंको छोड़कर अवशिष्ट नीचेके स्थितिबन्धस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंसे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विशुद्धिसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विशुद्धि अनन्तगुणी पायी जाती है। उनसे ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट संक्लेशसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है। इस प्रकार अवस्थित स्थितिबन्धस्थानोंमें जघन्य स्थितिबन्धस्थानको आदि करके उत्कृष्ट स्थितिबन्धस्थान तक प्रत्येक स्थितिबन्धस्थानके

जघन्यस्थितिबन्धारम्भे यानि संक्लेशस्थानानि तेभ्यः समयाधिकजघन्यस्थितिबन्धारम्भे संक्लेशस्थानानि विशेषाधिकानि। तेभ्योऽपि द्विसमयाधिकजघन्य-स्थितिबन्धारम्भेऽपि विशेषाधिकानि। एवं तावद्वाच्यं यावत्तस्यैवोत्कृष्टा स्थितिः। तदुत्कृष्टस्थितिबन्धारम्भे च संक्लेशस्थानानि जघन्यस्थितिसत्कसंक्लेश-स्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि लभ्यन्ते। यदेतदेवं तदा सुतरामपर्याप्तबादरस्य संक्लेशस्थानानि अपर्याप्त-सूक्ष्मसत्कसंक्लेशस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि भवन्ति। तथाहि-अपर्याप्तसूक्ष्मसत्कस्थितिस्थानापेक्षया बादरापर्याप्तस्य स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि। स्थितिस्थानवृद्धौ च संक्लेशस्थानवृद्धिः। ततो यदा सूक्ष्मापर्याप्तस्यापि स्थितिस्थानेष्वतिस्तोकेषु जघन्यस्थितिस्थानसत्कसंक्लेशस्थानापेक्षया उत्कृष्टे स्थितिस्थाने संक्लेशस्थानान्यसंख्येयगुणानि भवन्ति, तदा बादरापर्याप्तस्थितिस्थानेषु सूक्ष्मापर्याप्तस्थितिस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणेषु सुतरां भवन्ति। क. प्र. (मलय.) १,६८-६९.

आदीदो पहुडि कमेण विसेसाहियाणमसंखेज्जणाणागुणवड्ढिसलागसहियाणं दुगुणदुगुणपक्खेवपवेसवसेण अवट्ठिदगुणहाणिपमाणाणं पुध पुध णिव्वग्गणकंडयमेत्तखंडभावं गदाणं रचणा कायव्वा। तत्थ गुणहाणिपमाणमेत्ताणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं बालजणबुद्धिवड्ढावणट्ठमेसा संदिट्ठी—

३२७६८००
१६३८४००
८१९२००
४०९६००
२०४८००
१०२४००
५१२००
२५६००
१२८००
६४००
३२००
१६००
८००
४००
२००
१००

एसा बादरेइंदियअपज्जत्तसंदिट्ठी[2]

२५६००　एसा सुहुमेइंदियअपज्जत्त-[1]
१२८००　संदिट्ठी

किमट्ठं हेट्ठिमगुणहाणिपरिणामेहिंतो अणंतरउवरिमगुणहाणिपरिणामा दुगुणा ? ण एस दोसो, जेण हेट्ठिमगुणहाणिजहण्णट्ठाणपरिणामेहिंतो उवरिमाणंतरगुणहाणिजहण्णपरिणामा दुगुणा बिदियट्ठाणपरिणामेहिंतो उवरिमगुणहाणि-बिदियट्ठाणपरिणामा दुगुणा, तदियट्ठाणपरिणामेहिंतो [उवरिमगुणहाणि-] तदियट्ठाणपरिणामा दुगुणा, एवं णेदव्वं जाव दोण्णं गुणहाणीणं चरिमट्ठिदिबंधट्ठाणे त्ति; तेण हेट्ठिमगुणहाणिसव्वसंकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो अणंतरउवरिमगुणहाणिसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं दुगुणत्तं ण विरुज्झदे।

पढमगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो तदियगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजो चउग्गुणो होदि। एत्थ वि कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं[3]। चउत्थगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजो अट्ठगुणो (८)। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं गंतूण जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीयो उवरि गंतूण ट्ठिदगुणहाणीए सव्वज्झवसाणपुंजो

असंख्यात लोक प्रमाण जो संक्लेशविशुद्धिस्थान आदिसे लेकर क्रमशः विशेष अधिक हैं, असंख्यात नानागुणवृद्धिशलाकाओंसे सहित हैं, दूने दूने प्रक्षेपके प्रवेशवश अवस्थित गुणहानिके बराबर हैं, तथा पृथक् पृथक् निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण खण्ड भावको प्राप्त हैं; उनकी रचना करना चाहिये। उनमें गुणहानि प्रमाण मात्र संक्लेशविशुद्धिस्थानोंकी, बाल जनोंकी बुद्धिके बढ़ानेके हेतु यह संदृष्टि है (मूलमें देखिये)।

शंका—अधस्तन गुणहानिके परिणामोंकी अपेक्षा उससे अव्यवहित आगेकी गुणहानिके परिणाम दूने क्यों हैं ?

१ काप्रतौ ' सुहुमेइंदिय ' इति पाठः। २ काप्रतौ ' बादरेइंदिय ' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का प्रतिषु ' पुव्वं परूवेदव्वं ' ताप्रतौ ' पुव्वं [व] परूवेदव्वं ' इति पाठः।

जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणो, पढमगुणहाणीए एगेगट्ठिदिबंधट्ठाणसंकिलेस-विसोहीहिंतो अप्पिद-गुणहाणीए पढमादिट्ठिदिबंधट्ठाणसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं जहाकमेण जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणमेत्तगुणगारुवलंभादो। एवमुवरिं पि जाणिदूण गुणगारो साहेयव्वो। एवं संदिट्ठिं ठविय एदिस्से अवट्ठंभबलेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदिय-अपज्जत्तसंकिलेसविसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तं भण्णदे। तं जहा—बादरेइंदियअपज्जत्तणाणा-गुणहाणिसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणएहि ओवट्टिय लद्धं विरलेयूण णाणागुण-हाणिसलागाओ समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणाओ पावेंति। एत्थ चरिमजहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वसंकिलेस-विसो

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यतः अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी जघन्य स्थानके परिणामोंसे आगेकी अव्यवहित गुणहानिके जघन्य परिणाम दूने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी द्वितीय स्थानके परिणामोंकी अपेक्षा आगेकी गुणहानिके द्वितीय स्थान सम्बन्धी परिणाम दूने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी तृतीय स्थानके परिणामोंसे अग्रिम गुणहानि सम्बन्धी तृतीय स्थानके परिणाम दूने हैं, इस प्रकार दो गुणहानियोंके अन्तिम स्थितिबन्धस्थान तक ले जाना चाहिये; इसी कारण अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा उससे अव्यवहित आगेकी गुणहानि सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके दूने होनेमें कोई विरोध नहीं है।

प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंजसे तृतीय गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज चौगुणा है। यहाँ भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये। उससे चतुर्थ गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज अठगुणा है। यहाँ भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये। इस प्रकार जाते हुए जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियाँ आगे जाकर स्थित गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसान-पुंज प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंजसे जघन्य-परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, प्रथम गुणहानि सम्बन्धी एक एक स्थितिबन्धस्थानके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे विवक्षित गुणहानि सम्बन्धी प्रथमादिक स्थितिबन्धस्थानके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका गुणकार क्रमशः जघन्य-परीतासंख्यातगुणा मात्र पाया जाता है। इसी प्रकार आगे भी जानकर गुणकारका कथन करना चाहिये।

इस प्रकार उपर्युक्त संदृष्टिको स्थापितकर उसके आश्रयसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश विशुद्धिस्थानोंका असंख्यातगुणत्व बतलाया जाता है? यथा—बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानि-शलाकाओंमें जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका भाग देकर जो प्राप्त हो उसका विरलन कर नानागुणहानिशलाकाओंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य-परीता-संख्यातके अर्धच्छेद प्राप्त होते हैं। यहाँ जघन्य-परीतासंख्यातके अन्तिम अर्धच्छेद प्रमाण गुणहानियोंका समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थानपुंज एक कम विरलन राशिसे गुणित जघन्य

हिट्ठाणपुंजो रूवूणविरलणगुणिदजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तहेट्ठिमगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो असंखेज्जगुणो, विसेसाहियउक्कस्ससंखेज्जगुणगारदंसणादो । कधमेदं णव्वदे ? जुत्तीदो । तं जहा—पढमजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो बिदियजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणाणि, हेट्ठिमपढमादिगुणहाणिअज्झवसाणपुंजादो उवरिमपढमादिगुणहाणिअज्झवसाणपुंजस्स पुध पुध जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तदियजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजो पढमजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गगुणो होदि, जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणए दुगुणिय विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गुप्पत्तीदो । बिदियजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणो होदि, हेट्ठिमट्ठिदिपरिणामेहिंतो उवरिमट्ठिदिपरिणामाणं पुध पुध जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । पुणो हेट्ठिमदोखंडगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणेहिंतो तदियखंडगुण-

परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर अधस्तन गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजसे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, यहाँ गुणकार उत्कृष्ट संख्यातसे विशेष अधिक देखा जाता है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह युक्तिसे जाना जाता है। यथा—जघन्य परीतासंख्यातके प्रथम अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा जघन्य परीतासंख्यातके द्वितीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान जघन्यपरीतासंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अधस्तन प्रथमादिक गुणहानियोंके अध्यवसान पुंजकी अपेक्षा आगेकी प्रथमादिक गुणहानियोंका अध्यवसानपुंज पृथक् पृथक् जघन्य-परीतासंख्यातगुणा पाया जाता है । जघन्य परीता-संख्यातके तृतीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज जघन्य परीतासंख्यातके प्रथम अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका जो प्रमाण हो उससे गुणित है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेदोंको दुगुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके दूनाकर परस्पर गुणित करनेपर जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग उत्पन्न होता है। जघन्य परीतासंख्यातके द्वितीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा [जघन्य परीतासंख्यातके तृतीय अर्धच्छेद मात्र गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज] जघन्य-परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, अधस्तन स्थितियोंके परिणामोंसे उपरिम स्थितियोंके परिणाम पृथक् पृथक् जघन्य-परीतासंख्यातगुणे पाये जाते हैं। पुनः अधस्तन दो खण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंके समस्त अध्यवसान-

हाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजो असंखेज्जगुणो होदि, रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गे भागे हिदे रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवुवलंभादो। पुणो पढमखंडसव्वगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो चउत्थखंडसव्वज्झवसाणपुंजो जहण्णपरित्तासंखेज्जघणगुणो होदि, तिण्णिजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे तिप्पदुप्पण्णपरित्तासंखेज्जुवलंभादो। बिदियखंडज्झवसाणेहिंतो जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गगुणो होदि, दुगुणिदजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गुप्पत्तीदो। तदियखंडज्झवसाणेहिंतो जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणो, एगजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीयो उवरि चडिदूण अवट्ठाणादो। हेट्ठिमतिण्णिखंडसव्वगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो उवरिमचउत्थखण्डज्झवसाणपुंजो असंखेज्जगुणो होदि, जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गेण रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जब्भहिएण जहण्णपरित्तासंखेज्जघणे भागे हिदे एदेण भागहारेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवुवलंभादो।

स्थानोंसे तृतीय खण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज असंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातका जघन्य परीतासंख्यातके वर्गमें भाग देनेपर एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे एक अंकको खण्डित करनेपर प्राप्त हुए एक भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक पाये जाते हैं। प्रथम खण्ड सम्बन्धी सब गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजसे चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज जघन्य परीतासंख्यातका घन करनेपर जो प्राप्त हो उतना गुणा है, क्योंकि, तीन जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर तीन वार उत्पन्न परीतासंख्यात अर्थात् उसका घन पाया जाता है। द्वितीय खण्डकी सब गुणहानियोंके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुंज जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उससे गुणित है, क्योंकि, दो जघन्य परीतासंख्यातके दुगुणे अर्धच्छेदोंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग उत्पन्न होता है। तृतीय खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुंज जघन्य परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियाँ ऊपर जाकर उसका अवस्थान है। अधस्तन तीन खण्ड सम्बन्धी समस्त गुणहानियोंके सब परिणामपुंजकी अपेक्षा आगेका चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी परिणामपुंज असंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे अधिक जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका जघन्य परीतासंख्यातके घनमें भाग देनेपर इस भागहारसे एक अंकको खण्डित करनेपर लब्ध हुए एक खण्डसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक पाये जाते हैं।

एदं पि कधं णव्वदे? जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गं विरलिय तग्घणं समखंडं करिऊण[1] दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जं पावदि, तत्थ एगेगरूवे गहिदे जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गमेत्त-रूवोवलद्धी होदि, ताणि रूवाणि पासे विरलिदजहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स समखंडं कादृण दिण्णेसु रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जं पावदि, पुणो तत्थ रूवधरिदं पडि एगेगरूवे गहिदे जहण्णपरित्तासंखेज्जं उप्पज्जदि, पुणो तत्थ एगरूवमवणिय पासे विरलिदएगरूवस्स दिण्णे उक्कस्ससंखेज्जं पावदि, पुणो अवणिदएगरूवं एदीए विरलणाए खंडेदृण तत्थ एगेगखंडे रूवं पडि दिण्णे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जगुणगारो होदि, तेण णव्वदे।

संपहि पढमखंडज्झवमाणेहिंतो पंचमखंडज्झवसाणा जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गवग्गेण गुणिदमेत्ता होंति, चत्तारिजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे चदुण्णं जहण्णपरित्तासंखेज्जाणमण्णोण्णब्भत्थरासिसमुप्पत्तीदो। एवं सेसखंडाणं पि पुव्वं व गुणगारो साहेयव्वो। संपहि चदुक्खंडसव्वज्झवसाणेहिंतो

शंका—यह भी कैसे जाना जाता है?

समाधान—जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका विरलन कर उसके घनको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यात पाया जाता है। उन विरलित अंकोंमेंसे एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशियोंमेंसे एक एक अंकको ग्रहण करने पर जघन्य परीतासंख्यातके वर्ग प्रमाण अंक पाये जाते हैं। उन अंकोंको पासमें विरलित जघन्य परीतासंख्यातके प्रति समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यात पाया जाता है। फिर उनमेंसे एक एक अंकके ऊपर रखी हुई प्रत्येक राशिमेंसे एक एक रूपके ग्रहण करनेपर जघन्य परीतासंख्यात उत्पन्न होता है। पुनः उनमेंसे एक अंकको कम कर पासमें विरलित एक रूपके प्रति देनेपर उत्कृष्ट संख्यात प्राप्त होता है। पश्चात् कम किये गये एक अंकको इस विरलन राशिसे खण्डित कर उनमेंसे एक एक खण्डको प्रत्येक अंकके प्रति देनेपर एक रूपके असंख्यातवें भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात गुणकार होता है। इसीसे वह जाना जाता है।

प्रथम खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा पंचम खण्डके परिणाम जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उतने गुणे हैं, क्योंकि, चार जघन्य परीतासंख्यातोंके अर्धच्छेदोंको विरलित कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर चार जघन्य परीता-संख्यातोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि उत्पन्न होती है। इसी प्रकार शेष खण्डोंके भी गुणकारका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये।

१ अ-आ-का प्रतिषु 'करियअण' इति पाठः।

पंचमखंडसव्वज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि, जहण्णपरित्तासंखेज्जघणेण रूवाहियजहण्ण-परित्तासंखेज्जसहिदजहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गब्भहिएण जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गवग्गे भागे हिदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवुवलंभादो। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवमुवरिमसव्वखंडेसु एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तो गुणगारो वत्तव्वो। कुदो? पुव्विल्लपरूवणाए उवरिमत्थपरूवणं पडि बीजीभूदत्तादो। उवरिमगुणगारो अण्णहा किण्ण जायदे? ण, गुणहाणिअज्झवसाणट्ठाणाणं दुगुणत्तण्णहाणु-ववत्तीदो। तेण हेट्ठिमसव्वखण्डज्झवसाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चरिमखंडज्झवसाण-ट्ठाणाणि णिच्छएण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति सद्दहेयव्वं। उक्कस्ससंखेज्जादो सादिरेयस्स जहण्णपरित्तासंखेज्जादो किंचूणस्स एदस्स गुणगारस्स कधमसंखेज्जत्तं जुज्जदे? ण, उक्कस्स-संखेज्जमदिक्कंतस्स तदविरोहादो। दुगुणजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीहि एगेग-खंडपमाणं कादूण वा असंखेज्जगुणत्तं साधेदव्वं। बादरेइंदियअपज्जत्तयट्ठिदिबंधट्ठाणाणम-संखेज्जभागाणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो जदि उवरिमअसंखेज्जदिभागस्स संकिलेस-विसोहि

चार खण्डोंके समस्त परिणामोंकी अपेक्षा पांचवें खण्डके सब परिणाम असंख्यात-गुणे हैं, क्योंकि एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे सहित जघन्य परीतासंख्यातका जो वर्ग है उससे अधिक जघन्य परीतासंख्यातके घनका जघन्य परीतासंख्यातके वर्गके वर्गमें भाग देनेपर एक अंकके असंख्यातवें भागके साथ उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक प्राप्त होते हैं। यहांपर भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये। इसी प्रकार आगेके सब खण्डोंमें एक अंकके असंख्यातवें भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण गुणकार जानना चाहिये, क्योंकि, आगेकी अर्थ-प्ररूपणाके प्रति पहिलेकी प्ररूपणा बीजभूत है।

शंका—आगेका गुणकार अन्य प्रकार क्यों नहीं होता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि इसके बिना गुणहानियोंके अध्यवसानस्थान दुगुणे बन नहीं सकते।

इसीलिये अधस्तन सब खण्डोंके अध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान निश्चयसे असंख्यातगुणे हैं, ऐसा श्रद्धान करना चाहिये।

शंका—उत्कृष्ट संख्यातसे साधिक और जघन्य परीतासंख्यातसे कुछ कम इस गुणकारको 'असंख्यात' कहना कैसे उचित है?

समाधान—नहीं, क्योंकि उत्कृष्ट संख्यातका अतिक्रमण कर जो कोई भी संख्या हो उसे 'असंख्यात' कहनेमें कोई विरोध नहीं। अथवा, दूने जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियोंके द्वारा एक एक खण्ड प्रमाण करके असंख्यातगुणत्वको सिद्ध करना चाहिये। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त सम्बन्धी स्थितिबन्धस्थानोंके असंख्यात

ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि होंति तो सुहुमेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेसु बादरेइंदियअपज्जत्त-ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं संखेज्जदिभागेसु जाणि संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि तेहिंतो बादरेइंदिय-अपज्जत्तयस्स सव्वसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि णिच्छएण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति साहेदव्वं। अथवा अण्णेणं पयारेण गुणगारो उच्चदे। तं जहा—सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंध-ट्ठाणादो हेट्ठिमबादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणगयसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं णाणागुणहाणिस-लागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे जो रासी उप्पज्जदि तेण पढमगुणहाणि-दव्वे [१००] गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स पढमगुणहाणिदव्वं होदि। पुणो एदम्मि[2] सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ [२][3] विरलिय विगं करिय अण्णोण्ण-ब्भत्थं कादूण रूवमवणिय सेसेण गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदम्मि चेव पढमगुणहाणिदव्वे [१००] बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णाणागुण-हाणिसलागाओ [१६] विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण रूवमवणिय [६५५३५] सेसेण गुणिदे बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहीए ट्ठाणाणि होंति। पुणो एदेसु सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि भागे हिदेसु पलिदोवमस्स

बहुभाग मात्र स्थानोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा यदि ऊपरके असंख्यातवें भाग मात्र स्थानोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे होते हैं, तो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबंधस्थानोंके संख्यातवेंभागमात्र सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंमें जो संक्लेश-विशुद्धिस्थान हैं उनकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थान निश्चयसे असंख्यातगुणे होते हैं, ऐसा सिद्ध करना चाहिये।

अथवा अन्य प्रकारसे गुणकारका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धस्थानकी अपेक्षा नीचेके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है उससे प्रथम गुण-हानिके द्रव्य (१००) को गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी प्रथम गुणहानिक द्रव्य होता है। पश्चात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी नानागुणहानिशलाकाओं (२) का विरलन करके दूनाकर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उसमेंसे एक अंक कम कर अवशिष्ट राशि (३) से उपर्युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी प्रथम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं (१२८००×३=३८४००)। पश्चात् बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानिशलाकाओं (१६) का विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो (६५५३६) प्राप्त हो उसमेंसे एक अंक कम करके अवशिष्ट राशि (६५५३५) से इसी प्रथम गुणहानि सम्बन्धी द्रव्यको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं (६५५३५×१००=६५५३५००)। इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका

१ ताप्रतौ ' अणेण ' इति पाठः। २ अ-आ-का प्रतिषु ' एगम्मि ', ताप्रतौ ' एग (द) म्मि ' इति पाठः। ३ प्रतिषु (३) इति पाठः।

असंखेज्जदिभागो गुणगारो आगच्छदि बादराणमुवरिमगुणहाणिसलागाणं किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिं सुहुमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिय ताए चेव रूवूणाए ओवट्टिदपमाणत्तादो। एदेण गुणगारेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। अधवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणपमाणेण सुहुमेइंदियजहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणपमाणबादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणप्पहुडि उवरिमट्ठाणेसु कदेसु संखेज्जगुणाणि हवंति। संपहि तत्थ पढमखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणमेत्ताणि होंति। एदासिमेगा गुणगारसलागा [१]। पुणो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स अण्णोण्णब्भत्थरासिणा [४] सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स विदियखंडसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि हवंति। पुणो एदस्स वग्गेण गुणिदेसु तदियखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदस्स घणेण गुणिदेसु चउत्थखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदस्स वग्गवग्गेण गुणिदेसु पंचमखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। एवं णेदव्वं जाव चरिमखंडे त्ति। सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणादो हेट्ठिमाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि, तेसिं सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंकिलेसट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागत्तादो। एदाओ सव्वगुणगारसलागाओ

भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है, क्योंकि उसका प्रमाण बादर जीवोंकी उपरिम गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिको सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करके एक अंकसे कम उसीके द्वारा अपवर्तित करनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्र है। इस गुणकारसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेशविशुद्धिस्थान होते हैं।

अथवा, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धस्थानोंके बराबर जो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान हैं उनको आदि लेकर ऊपरके स्थानोंको सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर वे संख्यातगुणे होते हैं। अब उनमें जो प्रथम खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके बराबर हैं, इनकी एक (१) गुणकारशलाका है। पुनः सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी अन्योन्याभ्यस्त राशि (४) से सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके द्वितीय खण्ड सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। पश्चात् उनको इसके वर्गसे गुणित करनेपर तृतीय खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। फिर इनके घनसे उनको गुणित करनेपर चतुर्थ खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। इसके वर्गके वर्गसे उनको गुणित करनेपर पांचवे खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। इस प्रकार अन्तिम खण्ड तक ले जाना चाहिये। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धस्थानसे नीचेके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका गुणकार एक अंकका असंख्यातवां भाग होता है, क्योंकि, वे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इन सब गुणकारशलाकाओंको मिलाकर उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धि-

मेलाविय सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदेसु सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि ओवट्टिदेसु गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि।

एदेसिं गुणगाराणं मेलावणविहाणं संदिट्ठिमवलंबिय उच्चदे। तं जहा—सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण रूवे अवणिदे एत्तियं होदि [३]। पुणो एदेण अण्णोण्णब्भत्थरासिणा सुहुमउवरिमबादरणाणा-गुणहाणिसलागाओ [७] विरलय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि भागे हिदे भागलद्धमेत्तियं होदि [१२८।३]। पुणो लद्धे एदम्हि [१२८] सरिसच्छेदं करिय पक्खित्ते एत्तियं होदि [५१२।३][1]। पुणो एदेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सुहुमेइंदियसव्वज्झवसाण-ट्ठाणेसु [३८४००] गुणिदेसु बादरअपज्जत्तज्झवसाणट्ठाणाणि पढमगुणहाणिअज्झवसाण-मेत्तेण अहियाणि होंति [६५५३६००]। पुणो एत्तियमेत्तेण [१००] हाइदूण इच्छामो त्ति बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे एत्तियं होदि। तं च एदं [६५५३६]। पुणो एदेण पढमगुणहाणिदव्वे गुणिदे पढमगुणहाणिअज्झवसाणाहियसव्वज्झवसाण[2]पमाणं होदि। तं च एदं [६५५३६००]।

स्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश विशुद्धिस्थान होते हैं। अब इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है।

अब संदृष्टिका आश्रय करके इन गुणकारोंके मिलानेके विधानको कहते हैं। वह इस प्रकार है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणाकर परस्पर गुणा करके जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर इतना होता है — $\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}=४$; ४−१=३। अब सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा बादर जीवकी आगेकी नानागुणहानि-शलाकाओं (१० से १६ तक ७) का विरलनकर दूना करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमें उक्त अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग देनेपर लब्ध इतना होता है— $\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}=१२८$; $१२८\div३=\frac{१२८}{३}$। इस लब्ध राशिमें इस (१२८) को समच्छेद करके मिलानेपर इतना होता है—$१२८=\frac{३८४}{३}$; $\frac{३८४}{३}+\frac{१२८}{३}=\frac{५१२}{३}$। इस पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र उस राशिके सूक्ष्म एकेन्द्रियके समस्त अध्यवसानोंको गुणित करनेपर बादर अपर्याप्तके अध्यवसान प्रथम गुणहानिके अध्यवसानस्थानोंसे अधिक होते हैं— $\frac{३८४००}{३}\times\frac{५१२}{३}=६५५३६००$। अब चूंकि ये इतने (१००) मात्रसे हीन अभीष्ट हैं, अत एव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी समस्त (१६) गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है। वह यह है—६५५३६। इससे प्रथम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर प्रथम गुणहानिके अध्यवसानस्थानोंसे अधिक समस्त अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है। वह यह है—६५५३६×१००=६५५३६००। इस

१ प्रतिषु [५१२] इति पाठः। २ प्रतिषु 'सव्वज्झवसाय' इति पाठः।

एदस्स रासिस्स जदि एत्तियो [५१२।३] गुणगाररासी लब्भदि, तो एत्तियस्स [१००][1] किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि [१।३८४]। पुणो एदम्मि पुव्विल्लगुणगाररासीदो [५१२।३] सरिसच्छेदं काद्रूण अवणिदे गुणगाररासी एत्तियो होदि [६५५३५।३८४][2]। पुणो एदेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वज्झवसाणट्ठाणेसु मेलाविय [३८४००] गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वज्झवसाणट्ठाणाणि होंति। पमाणमेदं [६५५३५००]। एदं गुणगारविहाणं उवरि सव्वत्थ संभविय वत्तव्वं।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५३ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थ गुणगाराणयणविहाणं पुव्वं व परूवेदव्वं। कुदो ? सुहुमेइंदियपज्जत्तो विसुज्झमाणो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणाणि ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरदि, संकिलेसंतो वि तेहिंतो संखेज्जगुणाणि ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि उवरि चडदि त्ति गुरुवदेसादो।

(६५५३६००) राशिकी यदि इतनी ($\frac{५१२}{३}$) मात्र गुणाकार राशि पायी जाती है, तो वह इतने (१००) मात्रकी कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है— $\frac{५१२}{३}×१००÷६५५३६०० = \frac{५१२००}{१९६६०८००} = \frac{१}{३८४}$ इसको समच्छेद करके पूर्वकी गुणकार राशि $\frac{५१२}{३}$ मेंसे घटानेपर इतना होता है— ($\frac{६५५३६}{३८४} - \frac{१}{३८४} = \frac{६५५३५}{३८४}$) पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र उक्त गुणकार राशिसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके समस्त अध्यवसानस्थानोंको मिलाकर गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके समस्त अध्यवसानस्थान होते हैं। उनका प्रमाण यह है—(१२८००+२५६००) × $\frac{६५५३५}{३८४}$ = ६५५३५००। गुणकारकी इस विधिको आगे सब जगह यथासम्भव कहना चाहिये।

उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५३ ॥

यहां गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। यहां गुणकार लानेकी विधिकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव विशुद्ध होता हुआ बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके सब स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थान नीचे हटता है, तथा वहीं संक्लेशको प्राप्त होता हुआ उक्त स्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे स्थान ऊपर चढ़ता है; ऐसा गुरुका उपदेश है।

---

१ प्रतिषु संख्येयं 'लभामो त्ति' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते। २ प्रतिषु ६५५३५ एवंविधात्र संख्या समुपलभ्यते।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ गुणगारसाहणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

बीइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५५ ॥

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो बीइंदियअपज्जत्तयस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि जेण असंखेज्जगुणाणि तेण संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं पि असंखेज्जगुणत्तं ण विरुज्झदे । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बीइंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? विसोहि-संकिलेसाणं वसेण हेट्ठा उवरिं च अप्पिदट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणट्ठिदिबंधट्ठाणाणमुवलंभादो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५७ ॥

कधं पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो अपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं असंखेज्जगुणत्तं[1] ?

उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । यहां गुणकारकी सिद्धिका कथन पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उनसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५५ ॥

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान चूंकि असंख्यातगुणे हैं, अतएव संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके भी असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, विशुद्धि अथवा संक्लेशके वशसे नीचे व ऊपर विवक्षित स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थान पाये जाते हैं ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५७ ॥

शंका—पर्याप्तक जीवके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा अपर्याप्तक जीवके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

---

१ अ-आ-काप्रतिषु ' संखेज्जगुणत्तं ', ताप्रतौ ' [अ] संखेज्जगुणत्तं ' इति पाठः ।

जादिविसेसत्तादो[1] । तेणेव कारणेण संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं पि सिद्धमसंखेज्जगुणत्तं । एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि ।

तीइंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं जाणिय वत्तव्वं ।

चउरिंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५९ ॥

कुदो ? तीइंदियपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो चउरिंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंध-संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तं पि कधं णव्वदे ? जादिविसेसादो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं चिंतिय वत्तव्वं ।

चउरिंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ६० ॥

समाधान—भिन्नजातीय होनेसे उनके संख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है। इसी कारण संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके भी असंख्यातगुणत्व सिद्ध होता है।

यहां भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेशविशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५८ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ? इसका कारण जानकर कहना चाहिये।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५९ ॥

शंका—वे असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

समाधान—चूंकि त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे पाये जाते हैं, अतः उसके संक्लेशविशुद्धि-स्थानोंके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं हैं।

शंका—वह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—भिन्न जातीय होनेसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, यह जाना जाता है।

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। कारण विचार कर कहना चाहिये।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६० ॥

१ ताप्रतौ 'विसेसादो' इति पाठः।

कुदो ? विसोहि-संकिलेसवसेण अप्पिदट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो हेट्ठा उवरिं च संखेज्जगुण-ट्ठिदिबंधट्ठाणेसु वीचारुवलंभादो । एत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ६१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागो । कारणं चिंतिय वत्तव्वं ।

असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागो । कारणं सुगमं ।

सण्णिपंचिदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ६३ ॥

जादिविसेसेण संखेज्जगुणट्ठिदिबंधट्ठाणेसु संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं पि असंखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो । सेसं सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ६४ ॥

इसका कारण यह कि विशुद्धि और संक्लेशके वशसे विवक्षित स्थितिबन्धस्थानोंसे नीचे व ऊपर संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थानोंमें वीचार पाया जाता है । यहां भी गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । शेष कथन सुगम है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारण विचारकर कहना चाहिये ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारण इसका सुगम है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६३ ॥

क्योंकि, जातिभेदसे संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थानोंमें संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । शेष कथन सुगम है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

बध्यते इति बन्धः, स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः, तस्य स्थानमवस्थाविशेषः स्थितिबंधस्थानम् । एदमत्थपदमस्सिदूण परूवणट्ठमुवरिमसुत्तकलाओ आगदो

सव्वत्थोवो संजदस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो[1] ॥ ६५ ॥

जहण्णुक्कस्सट्ठिदिपरूवणा किमट्ठमागदा ? ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एत्तियाणि होंति त्ति पुव्वं परूविदाणि । संपहि तत्थ एगेगट्ठिदिबंधट्ठाणमेत्तिए समए घेत्तूण होदि त्ति परूवणट्ठमागदा । एत्थ जहण्णुक्कस्सट्ठिदिपरूवणाए संतपमाणाणियोगद्दारे मोत्तूण अप्पाबहुगं चेव किमट्ठं परूविदं ? ण एस दोसो, परूवणा-पमाणाविणाभाविअप्पाबहुअं[2] त्ति कट्टु तदपरूवणादो । तम्हा अप्पाबहुअंतब्भूदपरूवणा-पमाणाणि वत्तइस्सामो । तं जहा— चोद्दसण्हं जीवसमासाणमत्थि जहण्णुक्कस्सट्ठिदीयो । परूवणा गदा ।

चदुण्हं पि एइंदियाणं मोहजहण्णट्ठिदी सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणयं । णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदी सागरोवमस्स

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । शेष कथन सुगम है ।

जो बांधा जाता है वह बन्ध है । स्थितिस्वरूप जो बन्ध वह स्थितिबन्ध । [इस प्रकार यहां कर्मधारयसमास है ।] उसके स्थान अर्थात् अवस्थाविशेषका नाम स्थितिबन्धस्थान है । इस अर्थपदका आश्रय करके प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्रकलाप प्राप्त होता है—

संयत जीवका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है ॥ ६५ ॥

शंका—जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिकी प्ररूपणाका अवतार किसलिये हुआ है ?

समाधान—स्थितिबन्धस्थान इतने होते हैं, यह पूर्वमें कहा जा चुका है । अब उनमेंसे एक एक स्थितिबन्धस्थान इतने समयोंको ग्रहण करके होता है, यह बतलानेके लिये इस प्ररूपणाका अवतार हुआ है ।

शंका—इस जघन्य-उत्कृष्टस्थितिप्ररूपणामें सत् (प्ररूपणा) और प्रमाण अनु-अनुयोगद्वारोंको छोड़कर एक मात्र अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अल्पबहुत्व प्ररूपणा और प्रमाणका अविनाभावी है, ऐसा जानकर उन दोनों अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा यहां नहीं की गई है ।

इसी कारण अल्पबहुत्वके अन्तर्गत होनेसे प्ररूपणा और प्रमाण अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं । यथा—चौदह जीवसमासोंके जघन्य व उत्कृष्ट स्थितियां हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

चारों ही एकेन्द्रियोंके मोहकी जघन्य स्थिति पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण है । ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी जघन्य

१ तत्र सूक्ष्मसांपरायस्य जघन्यस्थितिबन्धः सर्वस्तोकः (१) । क. प्र. (मलय) १,८०-८१.
२ अप्रतौ 'पमाणविणाभावि' इति पाठः ।

तिण्णि-सत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया । णामा-गोदाणं [जहण्णट्ठिदी] सागरोवमस्स बे-सत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया । आउअस्स जहण्णट्ठिदी खुद्दाभवग्गहणं[1] ।

एदेसिमुक्कस्सट्ठिदिपमाणं उच्चदे । तं जहा[2] — मोहणीयस्स एगं सागरोवमं [१] णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं सागरोवमस्स तिण्णि-सत्त भागा पडिवुण्णा [३।७] णामा-गोदाणं बे-सत्त भागा पडिवुण्णा [२।७] । णवरि सुहुमेइंदियपज्जत्ता-पज्जत्त-बादरेइंदियअपज्जत्ताणमुक्कस्सट्ठिदिबंधो बादरेइंदियपज्जत्तस्सुक्कस्सट्ठिदिबंधादो[3] पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणो । आउअस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो पुव्वकोडी सग-सगउक्कस्साबाहाए अहिया ।

स्थिति पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण है । नाम और गोत्रकी जघन्य स्थिति पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपमके सात भागोंमें दो भाग ($\frac{2}{7}$) प्रमाण है । आयुकी जघन्य स्थिति क्षुद्रभव ग्रहण प्रमाण है ।

अब इन चारों एकेन्द्रियोंके उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण कहते हैं । यथा — मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति एक (१) सागरोपम प्रमाण है । ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे परिपूर्ण तीन $\frac{3}{7}$ प्रमाण हैं ।

विशेषार्थ — एकेन्द्रियसे लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवोंके आयुको छोड़कर शेष ज्ञानावरणादि कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति मोहनीयके आधारसे निम्न प्रकार त्रैराशिकके द्वारा निकाली जाती है — यदि सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिवाले मोहनीय (मिथ्यात्व) कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्रियके एक सागर प्रमाण बंधती है तो उसके तीस कोड़कोड़ी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति वाले ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी उत्कृष्ट बंधेगी, $\frac{\text{३० को. को. सा.} \times १}{\text{७० को. को. सा.}} = \frac{3}{7}$ सागरोपम । इसी प्रकारसे द्वीन्द्रियादि जीवोंके भी समझना चाहिये । मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका द्वीन्द्रियके २५ सागरोपम, त्रीन्द्रियके ५० सा. चतुरिन्द्रियके १०० सा. और असंज्ञी पंचेन्द्रियके १००० सा. प्रमाण बंध है ।

नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति सागरोपम सात भागोंमेंसे परिपूर्ण दो भाग [$\frac{\text{२० को. सा.} \times १}{\text{७० को. सा.}} = \frac{2}{7}$ सा.] प्रमाण है । विशेष इतना है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त तथा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्ध बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन होता है । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अपनी अपनी उत्कृष्ट आबाधासे अधिक एक पूर्वकोटि प्रमाण है ।

१ तिर्यगायुषो मनुष्यायुषश्च जघन्या स्थितिः क्षुल्लकभवः । तस्य किं मानमिति चेदुच्यते-आवलिकानां द्वे शते षट्पंचाशदधिके । क. प्र. (मलय.) १, ७८. २. ताप्रतौ 'एदेसिमुक्कस्सट्ठिदिपमाणं उच्चदे । तं जहा' इत्येतावानयं पाठस्त्रुटितो जातः । ३. आ-काप्रत्योः 'पज्जत्तस्सुक्कस्सबंधो', ताप्रतौ 'पज्जत्तुक्कस्सट्ठिदिबंधो' इति पाठः ।

बेइंदियादि जाव असण्णिपंचिंदियो त्ति जहाकमेण मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो पणुवीससागरोवमाणि, पण्णासंसागरोवमाणि, सागरोवमसदं, सागरोवमसहस्सं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेणं ऊणयं। णाणावरणादिचदुण्हं कम्माणमेवं चेव वत्तव्वं। णवरि पणुवीस-पण्णासं-सद-सहस्ससागरोवमाणं तिण्णिसत्त भागा पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणया। एवं णामा-गोदाणं। णवरि बे-सत्त भागा त्ति वत्तव्वं। आउअस्स जहण्णट्ठिदिबंधो खुद्दाभवग्गहणं जहण्णाबाहाए अब्भहियं।

उक्कस्सट्ठिदिबंधो बेइंदिएसु मोहणीयस्स पणुवीसं सागरोवमाणि। चदुण्णं कम्माणं पणुवीससागरोवमाणं तिण्णि-सत्त भागा। णामा-गोदाणं पणुवीससागरोवमाणं बे-सत्त भागा २५–१०।५।७; ७।१।७ [४]। आउअस्स उक्कस्सट्ठिदी पुव्वकोडी। तेइंदियस्स जहाकमेण पण्णासंसागरोवमाणं सत्त-सत्त भागा तिण्णि-सत्त भागा बे-सत्त भागा उक्कस्सट्ठिदी होदि ५०–२१।३।७; १४।२।७। आउअस्स पुव्वकोडी। चउरिंदि-

द्वीन्द्रियसे लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक यथाक्रमसे मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध पल्योपमके संख्यातवें भागसे हीन पच्चीस सागरोपम, पचास सागरोपम, सौ सागरोपम और हजार सागरोपम प्रमाण होता है। ज्ञानावरणादि चार कर्मोंकी जघन्य स्थितिबन्धका भी कथन इसी प्रकारसे करना चाहिये। विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्थितिबन्ध द्वीन्द्रियादिकोंके क्रमशः पल्योपमके संख्यातवें भागसे हीन पच्चीस, पचास, सौ और हजार सागरोपमोंके तीन सात भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण होता है [२५×$\frac{3}{7}$, ५०×$\frac{3}{7}$, १००×$\frac{3}{7}$; १०००×$\frac{3}{7}$ सा.]। इसी प्रकार नाम व गोत्र कर्मके भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि यहां दो सात भाग कहना चाहिये [२५×$\frac{2}{7}$, ५०×$\frac{2}{7}$, १००×$\frac{2}{7}$, १०००×$\frac{2}{7}$ सागरोपम (पल्योपमके संख्यातवें भागसे हीन)। आयुका जघन्य स्थितिबन्ध जघन्य आबाधासे सहित क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण है।

द्वीन्द्रिय जीवोंमें मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपम प्रमाण होता है। चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपमोंके तीन सात ($\frac{3}{7}$) भाग प्रमाण होता है — $\left[\frac{\text{३० को. सा.} \times \text{२५}}{\text{७० को. सा.}} = \text{३}\times\frac{\text{२५}}{\text{७}} = \text{१०}\frac{\text{५}}{\text{७}}\right]$ सागरोपम। नाम गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपमोंके दो सात ($\frac{2}{7}$) भाग प्रमाण होता है—
$\frac{\text{२० को. सा.}\times\text{२५}}{\text{७० को. सा.}} = \frac{\text{२}\times\text{२५}}{\text{७}} = \text{७}\frac{\text{१}}{\text{७}}$ सागरोपम। आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक पूर्वकोटि प्रमाण होता है।

त्रीन्द्रिय जीवके मोहनीय, ज्ञानावरणादिक एवं नाम-गोत्र कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति क्रमशः पचास सागरोपमोंके सात-सात भाग ($\frac{7}{7}$), तीन-सात भाग ($\frac{3}{7}$) और दो-सात भाग ($\frac{2}{7}$) प्रमाण है—५०×$\frac{7}{7}$=५०; ५०×$\frac{3}{7}$=२१$\frac{3}{7}$, ५०×$\frac{2}{7}$=१४$\frac{2}{7}$। आयुकी उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटि प्रमाण होती है।

---

१ प्रतिषु 'पण्णारस' इति पाठः। २ प्रतिषु 'असंखेज्जदिभागेण' इति पाठः। ३ एयं पणकदि पण्णं सयं सहस्सं च मिच्छवरबंधो। इगिविगलाणं अवरं पल्लासंखूण-संखूणं ॥ जदि सत्तरिस्स एत्तियमेत्तं किं होदि तीसियादीण। इदि संपाते सेसाणं इगि-विगलेसु उभयठिदी ॥ गो. क. १४५. ४ प. खं. पु. ६ पृ. १९५.

एसु सागरोवमसदस्स सत्त-सत्त भागा तिण्णिसत्त भागा बे-सत्त भागा पडिवुण्णा १००—४२।६।७; २८।४।७। आउअस्स पुव्वकोडी। असण्णिपंचिंदिएसु सागरोवमसहस्सस्स सत्त-सत्त भागा तिण्णि-सत्त भागा बे-सत्त भागा उक्कस्सट्ठिदिबंधो १०००—४२८। ४।७; २८५।५।७। आउअस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[1]। सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स सत्तण्णं कम्माण्णं जहण्णट्ठिदिबंधो उक्कस्सट्ठिदिबंधो च अंतो कोडाकोडीए। सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स वेयणीयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो बारस मुहुत्ता। णामागोदाणमट्ठमुहुत्ता। सेसाणं कम्माणं भिण्णमुहुत्तं। उक्कस्सट्ठिदिबंधो मोहणीयस्स सत्तरि, चदुण्णं कम्माणं तीसं, णामागोदाणं वीसं सागरोवमकोडीयो। आउअस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। एवं पमाणपरूवणा गदा।

संपहि एदेसिं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं[2] अप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा—सव्वत्थोवो संजदस्स जहण्णट्ठिदिबंधो। एत्थ सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदस्स चरिमट्ठिदिबंधो जहण्णो त्ति घेत्तव्वो।

चतुरिन्द्रिय जीवोंमें मोहनीय, ज्ञानावरणादिक एवं नाम गोत्र कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध सौ सागरोपमोंके सात-सात भाग, तीन-सात भाग और दो-सात भाग प्रमाण होता है—१००, ४२$\frac{6}{7}$, २८$\frac{4}{7}$। आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक पूर्वकोटि प्रमाण होता है।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें उपर्युक्त कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध क्रमशः एक हजार सागरोपमोंके सात-सात भाग, तीन-सात भाग और दो-सात भाग प्रमाण होता है—१०००, ४२८$\frac{4}{7}$, २८५$\frac{5}{7}$। आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवके आयुके विना सात कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध और उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अन्तः कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण होता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके वेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध बारह मुहूर्त प्रमाण होता है। नाम एवं गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध उसके आठ अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। शेष कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध उसके अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है। उक्त जीवके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम, ज्ञानावरणादि चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम और नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण होता है। आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण होता है। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

अब इन स्थितिबन्धस्थानोंके अल्पबहुत्वको कहते हैं। यथा—संयतका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है। यहां सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयतके अन्तिम स्थितिबन्धको जघन्य ग्रहण करना चाहिये।

१ आउचउक्कुक्कोसो पल्लासंखेज्जभागममणेसु। सेसाण पुव्वकोडी साउतिभागो आबाहा सिं॥ क. प्र. १, ७४. २ अ-आ-का-प्रतिषु 'ट्ठिदिबंधट्ठाणं' इति पाठः।

उवरि किण्ण घेप्पदे ? ण, तत्थ कसायाभावेण ट्ठिदिबंधाभावादो । खीणकसाए वि एगसमइया ट्ठिदी अंतोमुहुत्तमेत्तसुहुमसांपराइयचरिमट्ठिदिबंधादो असंखेज्जगुणहीणा लब्भदि । सा किण्ण घेप्पदे ? ण, बिदियादिसमएसु अवट्ठाणस्स ट्ठिदि त्ति ववएसादो । ण च उप्पत्तिकाले ट्ठिदी होदि, विरोहादो ।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ॥ ६६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? अंतोमुहुत्तमेत्तसंजदजहण्ण-ट्ठिदिबंधेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवममेत्तबादरेइंदियपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो ॥ ६७ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ६८ ॥

शंका—इससे ऊपरके स्थितिबन्धको जघन्य स्वरूपसे क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऊपर कषायका अभाव होनेसे स्थितिबन्धका अस्तित्व भी नहीं है ।

शंका—क्षीणकषाय गुणस्थानमें भी एक समयवाली स्थिति सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तर्मुहूर्त मात्र अन्तिम स्थितिबन्धकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हीन पायी जाती है । उसका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्वितीयादि समयोंमें स्थित रहनेका नाम स्थिति है । उत्पत्ति समयमें कहीं स्थिति नहीं होती, क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध है ।

उससे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ॥ ६६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संयतके अन्तर्मुहूर्त परिमित स्थितिबन्धका बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके पल्योपमके असंख्यातमें भागसे हीन सागरोपम प्रमाण जघन्य स्थितिबन्धमें भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे वह अधिक है

उससे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ६८ ॥

१ ततो बादरपर्याप्तकस्य जघन्यः स्थितिबन्धोऽसंखेयगुणः (२) । क. प्र. (मलय,) १,८०-८१. (अतोऽग्रे वक्ष्यमाणमिदं सर्वमेवाल्पबहुत्वमत्र यथाक्रमं षट्त्रिंशत्पदेषूपलभ्यते).

केत्तियमेत्तो[1] विसेसो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणवीचारट्ठाणमेत्तो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ६९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधादो सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स हेट्ठिमवीचारट्ठाणमेत्तो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स वीचारट्ठाणमेत्तो ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधादो उवरिमबादरे-इंदियअपज्जत्तवीचारट्ठाणमेत्तो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियअपज्जत्त-उक्कस्सट्ठिदिबंधादो उवरिमेण बादरेइंदियअपज्जत्त-

---

विशेष कितना है ? वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण वीचारस्थानके बराबर है ।

उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? वह बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त सम्बन्धी नीचेके वीचारस्थानके बराबर है ।

उसी अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७० ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके वीचारस्थानके बराबर है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७१ ॥

विशेष कितना है ? वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपरके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थानके बराबर है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७२ ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? वह बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थिति-

---

१ ताम्रतौ ' केत्तिओ ' इति पाठः ।

वीचारट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणेण सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स वीचारट्ठाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७३ ॥

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधादो उवरिमेहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरेइंदियपज्जत्तवीचारट्ठाणेहि विसेसाहिओ ।

बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ७४ ॥

को गुणगारो ? किंचूणपणुवीसरूवाणि । सेसं सुगमं ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७५ ॥

बीइंदियअपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधादो हेट्ठा पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तवीचारट्ठाणाणि ओसरिय बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधस्स अवट्ठाणादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७६ ॥

सगजहण्णट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तवीचारट्ठाणाणि उवरि चडिय सगुक्कस्सट्ठिदिबंधसमुप्पत्तीदो ।

बन्धसे ऊपरके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थानसे संख्यातगुणे व पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके वीचारस्थानसे अधिक है ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७३ ॥

वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके वीचार स्थानोंसे विशेष अधिक है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ७४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम पच्चीस रूप हैं । शेष कथन सुगम है ।

उसी अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७५ ॥

क्योंकि, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धसे नीचे पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र वीचारस्थान हटकर द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

उसी अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७६ ॥

क्योंकि, अपने जघन्य स्थितिबन्धसे पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र वीचारस्थान ऊपर चढ़कर अपना उत्कृष्ट स्थितिबन्ध उत्पन्न होता है ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कसओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥७७॥

बीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिदूण बीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधावट्ठाणादो ।

तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ [1] ॥ ७८ ॥

कत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेणूणपणुवीससागरोवममेत्तो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ७९ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तेण । कुदो ? तीइंदियअपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिदूण तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधावट्ठाणादो ।

तस्सेव उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८० ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागपमाणसगवीचारट्ठाणमेत्तेण ।

तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८१ ॥

उसी पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७७ ॥

क्योंकि, द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान ऊपर जाकर द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७८ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्योपमके संख्यातवें भागसे हीन पच्चीस सागरोपम प्रमाण है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७९ ॥

कितने मात्रसे वह विशेष अधिक है ? वह पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है, क्योंकि, त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धसे पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान नीचे जाकर त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८० ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? वह पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र अपने वीचारस्थानोंके प्रमाणसे अधिक है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८१ ॥

१ ततोऽपि पर्याप्तत्रीन्द्रियस्य जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः (१४) । क. प्र. (मलय.) १, ८०-८१.

तीइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदीदो उवरिमेतइंदियपज्जत्तवीचारट्ठाणेहि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तेहि विसेसाहिओ ।

चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८२ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेणूणपण्णाससागरोवममेत्तो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो । कुदो ? चउरिंदियअपज्जत्त-जहण्णट्ठिदिबंधादो हेट्ठा[1] पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि चउरिंदियअपज्जत्त-ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणाणि ओसरिय चउरिंदियपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधावट्ठाणादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ[2] ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८५ ॥

वह त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपरके पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंसे विशेष अधिक है ।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्योपमके संख्यातवें भागसे हीन पचास सागरोपम है ।

उसी अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्योपमका संख्यातवां भाग है, क्योंकि चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धसे नीचे पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र होकर चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंसे संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थान हटकर चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

उसी अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? वह पल्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसी पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८५ ॥

१ ताप्रतौ 'हेट्ठिम ' इति पाठः । २ अ-आ-का-प्रतिषु ' तस्सेव उक्कस्सओ ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण ? चउरिंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणेण चउरिंदियअपज्जत्त-उक्कस्सट्ठिदिबंधादो उवरिमेण चउरिंदियपज्जत्तवीचारट्ठाणमेत्तेण विसेसाहिओ ।

असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ८६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं सुगमं ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो [1] ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स[2] उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगवीचारट्ठाणमेत्तो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो ।

संजदस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९० ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? वह चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंसे संख्यातगुणे ऐसे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपरके चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके वीचारस्थानप्रमाणसे विशेष अधिक है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ८६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय हैं । इसका कारण सुगम है ।

उसी अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८७ ॥

विशेष कितना है ? वह पल्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

उसी अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८८ ॥

विशेष कितना है ? वह अपने वीचारस्थानके बराबर है ।

उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८९ ॥

विशेष कितना है ? वह पल्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण है ।

संयतका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९० ॥

१ काप्रतौ 'सगवीचारट्ठाणमेत्तो' इति पाठः । २ अ-आ-का-प्रतिषु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठः ।

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कुदो ? सागरोवमसहस्सेण अंतोकोडाकोडीए ओवट्टिदाए संखेज्जसमओवलंभादो ।

संजदासंजदस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९१ ॥

कुदो मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयपमत्तसंजदुक्कस्सट्ठिदिबंधादो वि संजदासंजदजहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो त्ति ? ण, देसघादिसंजलणोदयं पेक्खिदूण सव्वघादिपच्चक्खाणोदयस्स अणंतगुणत्तादो । ण च कारणे थोवे संते कज्जस्स बहुत्तं संभवइ, विरोहादो ।

तस्सेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९२ ॥

कुदो ? मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदउक्कस्सट्ठिदिबंधग्गहणादो ।

असंजदसम्मादिट्ठिपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९३ ॥

कुदो ? उदयगदपच्चक्खाणादो तस्सेव गदअपच्चक्खाणस्स अणंतगुणत्तादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय हैं, क्योंकि, हजार सागरोपमोंका अन्तः कोडाकोडिमें भाग देनेपर संख्यात समय प्राप्त होते हैं ।

संयतासंयतका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९१ ॥

शंका—मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयतके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे भी संयतासंयत जीवका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा क्यों है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देशघाती संज्वलन कषायके उदयकी अपेक्षा सर्वघाती प्रत्याख्यानावरण कषायका उदय अनन्तगुणा है । और कारणके स्तोक होनेपर कार्यका आधिक्य सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध है ।

उक्त जीवका ही उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९२ ॥

कारण कि यहां मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके उत्कृष्ट स्थितिबन्धका ग्रहण किया गया है ।

असंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९३ ॥

कारण कि उसके प्रत्याख्यानावरणके उदयकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानावरणका उदय अनन्तगुणा है ।

उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९४ ॥

---

१ अ-आ-का प्रतिषु 'समयपत्त' इति पाठः ।

कुदो ? अपज्जत्तकाले अइविसोहीए[1] ट्ठिदिबंधापसरणणिमित्ताए अभावादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९५ ॥

अपज्जत्तकाले सव्वविसुद्धेण असंजदसम्मादिट्ठिणा बज्झमाणट्ठिदिबंधादो अपज्जत्तकाले चेव असंजदसम्मादिट्ठिणा सव्वुक्कस्ससंकिलेसेण[2] बज्झमाणट्ठिदीए संखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९६ ॥

कुदो ? अपज्जत्तअसंजदसम्मादिट्ठिसव्वुक्कस्ससंकिलेसादो पज्जत्तअसंजदसम्मादिट्ठिसव्वुक्कस्ससंकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो ।

सण्णिमिच्छाइट्ठिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो[3] ॥ ९७ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिस्स सव्वुक्कस्ससंकिलेसादो सण्णिमिच्छाइट्ठिपंचिंदियपज्जत्तसव्वजहण्णसंकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो, संकिलेसवड्ढीए ट्ठिदिबंधवड्ढिणिमित्तत्तादो । ......

क्योंकि, अपर्याप्तकालमें स्थितिबन्धापसरणमें निमित्तभूत अतिशय विशुद्धिका अभाव है ।

उसीके अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९५ ॥

क्योंकि, अपर्याप्तकालमें सर्वविशुद्ध असंयत सम्यग्दृष्टि जीवके द्वारा बांधे जानेवाले स्थितिबन्धकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें ही सर्वोत्कृष्ट संक्लेशसे संयुक्त असंयत सम्यग्दृष्टिके द्वारा बांधे जानेवाले स्थितिबन्धके संख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९६ ॥

इसका कारण यह है कि अपर्याप्त असंयत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट संक्लेशकी अपेक्षा पर्याप्त असंयत सम्यग्दृष्टिका सर्वोत्कृष्ट संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है ।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९७ ॥

कारण कि असंयत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट संक्लेशकी अपेक्षा संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका सर्वजघन्य संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है, और संक्लेशकी वृद्धि ही स्थितिबन्धवृद्धिका निमित्त है । अथवा, मिथ्यात्वके उदय वश असंयत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट

१ प्रतिषु 'अइसुद्धविसोहीए' इति पाठः । २ अप्रतौ 'सव्वुक्कस्स' इति पाठः । ३ सण्णीपज्जत्तियरे अब्भितरओ य (उ) कोडिकोडीओ । ओघुक्कोसो सण्णिस्स होइ पज्जत्तगस्सेव ॥ क. प्र. १,८२

मिच्छत्तोदयणिमित्तेण वा असंजदसम्माइट्ठिसव्वुक्कस्सट्ठिदिबंधादो संजमाहिमुह-चरिमसमय-मिच्छाइट्ठिस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९८ ॥

कुदो ? संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिसंकिलेसादो अपज्जत्तमिच्छाइट्ठिसव्वज-हण्णसंकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ ९९ ॥

सुगममेदं ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ १०० ॥

अपज्जत्तकालसंकिलेसादो पज्जत्तद्धाए सव्वुक्कस्ससंकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो ।

एवं ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणा त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

णिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि दुवे अणियोगद्दाराणि अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा ॥ १०१ ॥

णिषेचनं निषेकः, कम्मपरमाणुक्खंधणिक्खेवो णिसेगो णाम । तस्स परूवणदाए

स्थितिबन्धकी अपेक्षा संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ।

उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९८ ॥

कारण कि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके संक्लेशकी अपेक्षा अपर्याप्त मिथ्यादृष्टिका सर्वजघन्य संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है ।

उसीके अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १०० ॥

कारण कि अपर्याप्तकालीन संक्लेशकी अपेक्षा पर्याप्तकालीन सर्वोत्कृष्ट संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है ।

इस प्रकार स्थितिबन्धस्थान-प्ररूपणानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निषेकप्ररूपणामें ये दो अनुयोगद्वार हैं—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥१०१॥

'निषेचनं निषेकः' इस निरुक्तिके अनुसार कर्मपरमाणुओंके स्कन्धोंके निक्षेपण करनेका नाम निषेक है । उसके दो अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि, अनन्तर प्ररूपणा और

दुवे अणियोगद्दाराणि होंति, अणंतर-परंपरपरूवणं मोत्तूण तदियपरूवणाए अभावादो !

अणंतरोवणिधाए पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तयाणं णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीयअंतराइयाणं तिण्णिवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तीसं सागरोवमकोडीयो त्ति[1] ॥ १०२ ॥

विगलिंदियपडिसेहट्ठं पंचिंदियणिद्देसो कदो । विगलिंदियपडिसेहो किमट्ठं कीरदे ? तत्थ उक्कस्सट्ठिदीए उक्कस्साबाहाए च अभावादो । णिसेयपरूवणाए कीरमाणाए उक्कस्सट्ठिदिउक्कस्साबाहाणं च परूवणाए को एत्थ संबंधो ? ण केवलं एसा णिसेयपरूवणा चेव, किंतु उक्कस्सट्ठिदि-उक्कस्साबाहा-णिसेगाणं च परूवणत्तादो । ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणाए

परम्परा प्ररूपणाको छोड़कर तीसरी कोई प्ररूपणा नहीं है ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निक्षिप्त है वह बहुत है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निक्षिप्त है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त है वह उसमें विशेष हीन है, इस प्रकार वह उत्कर्षसे तीस कोड़ाकोड़ी सागरोपम तक उत्तरोत्तर विशेष हीन होता गया है ॥ १०२ ॥

विकलेन्द्रिय जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश किया गया है ।

शंका—विकलेन्द्रिय जीवोंका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान—चूँकि उनमें उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट आबाधाका अभाव है, अतः उनका यहाँ प्रतिषेध किया गया है ।

शंका—निषेकप्ररूपणा करते समय यहाँ उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट आबाधाकी प्ररूपणाका क्या सम्बन्ध है ?

समाधान—यह केवल निषेकप्ररूपणा ही नहीं है, किन्तु उत्कृष्ट स्थिति, उत्कृष्ट आबाधा और निषेकोंकी भी यह प्ररूपणा है ।

१ मोत्तूण सगमबाहं (हं) पढमाए ठिइए बहुतरं दव्वं । एत्तो विसेसहीणं जावुक्कोसं ति सव्वसिं ॥ क. प्र. १,८३. । २ अ-आ-काप्रतिषु 'कुदो' इति पाठः ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो उक्कस्सिया आबाहा च परूविदा। पुव्वं तेसिं परूविदाणं पुणो परूवणा एत्थ किमट्ठं कीरदे ? ण एस दोसो, ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणाए सूचिदाणं परूवणाए कीरमाणाए पउणरुत्तियाभावादो। जदि एवं तो एदस्साणियोगद्दारस्स णिसेयपरूवणा त्ति ववएसो कधं जुज्जदे ? ण, णिसेयरचणाए पहाणभावेण[1] तस्स तव्ववएससंभवादो।

असण्णिपडिसेहट्ठं सण्णीणमिदि णिद्देसो कदो। सम्मादिट्ठीसु उक्कस्सट्ठिदिबंध-पडिसेहट्ठं मिच्छाइट्ठीणमिदि णिद्देसो कदो। अपज्जत्तकाले उक्कस्सट्ठिदिबंधो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं पज्जत्तयमिदि णिद्देसो कदो। सेसकम्मपडिसेहट्ठं णाणावरणादिणिद्देसो कदो। उक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणस्स तिसु वाससहस्सेसु पदेसणिक्खेवो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं तिण्णिवाससहस्साणि आबाहं मोत्तूणे त्ति भणिदं।

एत्थ एदेहि दोहि अणियोगद्दारेहि सेडिपरूवणासामण्णेण एगत्तमावण्णेहि सेस-पंचणियोगद्दाराणि जेण कारणेण सूचिदाणि तेण एत्थ परूवणा पमाणं सेडी अवहारो

शंका—स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें उत्कृष्ट स्थितिबन्ध और उत्कृष्ट आबाधाकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है। अतः पूर्वमें प्ररूपित उन दोनोंकी प्ररूपणा यहां फिरसे किस लिये की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्थितिबन्धस्थान प्ररूपणामें उन दोनोंकी सूचना मात्र की गई है। अतः एव उनकी यहां प्ररूपणा करनेमें पुनरुक्ति दोषकी सम्भावना नहीं है।

शंका—यदि ऐसा है तो फिर इस अनुयोगद्वारकी ' निषेक-प्ररूपणा ' यह संज्ञा कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि निषेक-रचनाकी प्रधानता होनेसे उसकी उक्त संज्ञा सम्भव ही है।

असंज्ञियोंका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें ' सण्णीणं ' पदका निर्देश किया गया है। सम्यग्दृष्टि जीवोंमें उत्कृष्ट स्थितिबन्धका निषेध करनेके लिये ' मिच्छाइट्ठीणं ' पदका उपादान किया है। अपर्याप्तकालमें उत्कृष्ट स्थितिबन्ध नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ ' पर्याप्तक ' का ग्रहण किया है। शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये ज्ञानावरणादिकोंका निर्देश किया है। उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जीवके तीन हजार वर्षोंमें प्रदेशोंका निक्षेप नहीं होता, इस बातको बतलानेके लिये ' तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर ' ऐसा कहा है।

यहाँ ' श्रेणिप्ररूपणा ' सामान्यकी अपेक्षा एकत्वको प्राप्त हुए इन दो (अनन्तरोप-निधा और परम्परोपनिधा) अनुयोगद्वारोंके द्वारा चूँकि शेष पाँच अनुयोगद्वारोंकी सूचना की गई है अतः यहाँ प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व,

१ आमतौ ' रचणाए पहावेण पहाणभावेण ' इति पाठः।

भागाभागो अप्पाबहुगं चेदि छ अणियोगद्दाराणि वत्तव्वाणि भवंति । एत्थ ताव परूवणं पमाणं च वत्तइस्सामो । तं जहा—चदुण्णं कम्माणं तिण्णिवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जो उवरिमसमओ तत्थ णिसित्तपदेसग्गमत्थि । तत्तो अणंतरउवरिमसमए णिसित्तपदेसग्गं पि अत्थि । तत्तो उवरिमतदियसमए णिसित्तपदेसग्गं पि अत्थि । एवं णेदव्वं जाव तीसंसागरोवमकोडाकोडीणं चरिमसमओ त्ति । परूवणा गदा ।

पढमाए ट्ठिदीए णिसित्तपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । पमाणपरूवणा गदा ।

सेडिपरूवणा दुविहा—अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा वुच्चदे—तिण्णिवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं । जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं णिसेगभागहारेण खंडिदेगखंडमेत्तेण । जं तिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं रूवूणणिसेगभागहारेण खंडिदेगखंडमेत्तेण । जं चउत्थसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं दुरूवूणणिसेगभागहारेण खंडिदेगखंडमेत्तेण । एवं णेयव्वं जाव पढमणिसेयस्स अद्धं[1] चेट्ठिदं त्ति । पुणो बिदियगुणहाणिपढमणिसेयादो

इन छह अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणाकरने योग्य है । इनमें पहिले प्ररूपणा और प्रमाणका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—चार कर्मोंकी तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो अगला समय है उसमें निषिक्त प्रदेशाग्र है । उससे अव्यवहित आगेके समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र भी है । उससे आगेके तीसरे समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र भी है । इस प्रकार तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रथम स्थितिमें निषिक्त परमाणु अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणे व सिद्धोंके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । [द्वितीय स्थितिमें निषिक्त परमाणु विशेष हीन हैं ।] इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है - अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । इनमें अनन्तरोपनिधाको कहते हैं—

तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रथम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र (२५६) है वह बहुत है । जो द्वितीय समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र है वह निषेकभागहारका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध हो उतने (२५६÷१६=१६) मात्रसे विशेष हीन है । जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त है वह एक अंक कम निषेकभागहारका भाग देनेपर जो एक भाग प्राप्त हो उतने [२४०÷ (१६-१)=१६] मात्रसे विशेष हीन है । चतुर्थ समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है वह दो अंक कम निषेक भागहारका भाग देनेपर जो एक भाग प्राप्त हो उतने [२२४÷ (१६-२)+१६ मात्रसे विशेष हीन है । इस प्रकार प्रथम निषेकके अर्ध भाग तक ले जाना चाहिये ।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अत्थ' इति पाठः ।

तत्थेव विदियणिसेयो विसेसहीणो । केत्तियमेत्तेण ? णिसेगभागहारेण खंडिदेयखंडमेत्तेण । तत्थेव तदियसमए णिसित्तं पदेसग्गं विसेसहीणं रूवूणणिसेगभागहारेण खंडिदेयखंडमेत्तेण । एवं णेयव्वं जाव एत्थतणपढमणिसेयस्स अद्धं[1] चेट्ठिदं त्ति । एवं णेयव्वं जाव चरिमगुणहाणि त्ति । एत्थ संदिट्ठी—

१४४	७२	३६	१८	९
१६०	८०	४०	२०	१०
१७६	८८	४४	२२	११
१९२	९६	४८	२४	१२
२०८	१०४	५२	२६	१३
२२४	११२	५६	२८	१४
२४०	१२०	६०	३०	१५
२५६	१२८	६४	३२	१६

दोगुणहाणिप्पहुडि रूवूणकमेण जाव रूवाहियगुणहाणि त्ति ठवेदूण रूवूणणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा पादेक्कं गुणिय पुणो रूवूणणाणागुणहाणिसलागमेसपडिरासीयो अद्धद्धं काऊण ट्ठवेदव्वाओ । पुणो एदे पक्खेवे सव्वे वि मेलाविय समयपबद्धे भागे हिदे जं लद्धं तेण सव्वपक्खेवेसु पादेक्कं गुणिदेसु इच्छिद-इच्छिदणिसेगा होंति,

प्रक्षेपकसंक्षेपेण विभक्ते यद्धनं समुपलब्धं ।
प्रक्षेपास्तेन गुणा प्रक्षेपसमानि खंडानि ॥ ६ ॥

इति संख्यानशास्त्रे उक्तत्वांत[2] ।

पश्चात् द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेककी अपेक्षा उसका ही द्वितीय निषेक विशेष हीन है। कितने मात्रसे वह विशेष हीन है ? निषेकभागहारका भाग देनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्रसे वह विशेष हीन है। द्वितीय गुणहानिके तृतीय समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र एक अंक कम निषेकभागहारका भाग देनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्रसे विशेष हीन है। इस प्रकार यहाँके प्रथम निषेकका अर्ध भाग स्थित होने तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार अन्तिम गुणहानि तक लेजाना चाहिये। यहाँ संदृष्टि—(मूलमें देखिये)।

दो गुणहानियों (८×२ = १६) को आदि लेकर एक एक अंक कमके क्रमसे एक अधिक गुणहानिप्रमाण (१६, १५, १४, १३, १२, ११, १०, ९) तक स्थापित करना चाहिये। पश्चात् उनमेंसे प्रत्येकको एक कम नानागुणहानिशलाकाओं (५-१) की अन्योन्याभ्यस्तराशि (१६) से गुणित (१६×१६) करके एक कम नानागुणहानिशलाका (४) प्रमाण प्रतिराशियोंको आधी आधी करके (१२८, ६४, ३२, १६) स्थापित करना चाहिये। पश्चात् इन सभी प्रक्षेपोंको मिलाकर प्राप्त राशिका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उससे सब प्रक्षेपोंमेंसे प्रत्येकको गुणित करनेपर इच्छित-इच्छित निषेकोंका प्रमाण होता है, क्योंकि—

प्रक्षेपोंके संक्षेप अर्थात् योगफलका विवक्षित राशिमें भाग देनेपर जो धन प्राप्त हो उससे प्रक्षेपोंको गुणा करनेपर प्रक्षेपोंके बराबर खण्ड होते हैं ॥ ६ ॥

ऐसा गणितशास्त्रमें कहा गया है। (पु. ६, पृ. १५८) देखिये।

१ अ-आ-का-प्रतिषु 'अत्थं' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'संख्यानि रासी उक्तत्वात्' इति पाठः।

संपहि परूवणा-पमाणाणियोगद्दाराणि अणंतरोवणिधाए णिवदंति त्ति ताणि अभणिदूण मोहणीयस्स अणंतरोवणिधापरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तयाणं मोहणीयस्स सत्तवाससहस्साणि आबाहं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सत्तरिसागरोवमकोडाकोडि त्ति ॥ १०३ ॥

पुव्वं णाणावरणादीणं चदुण्णं कम्माणं तिण्णिवाससहस्साणि त्ति आबाहा परूविदा । संपहि मोहणीयस्स सत्तवाससहस्साणि आबाधा त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, सगट्ठिदिपडिभागेण आबाधुप्पत्तीदो । तं जहा—दससागरोवमकोडाकोडीणं वस्ससहस्समाबाहा लब्भदि[1] । कधमेदं णव्वदे ? परमगुरूवदेसादो । जदि दससागरोवमकोडाकोडीणं वस्ससहस्समाबाहा

अब चूंकि प्ररूपणा और प्रमाण ये दो अनुयोगद्वार अनन्तरोपनिधाके अन्तर्गत हैं अतः उनको न कहकर मोहनीय कर्मकी अनन्तरोपनिधाके प्ररूपणार्थ उत्तरसूत्र कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके मोहनीय कर्मकी सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम तक विशेष हीन विशेष हीन होता गया है ॥ १०३ ॥

शंका—पहिले ज्ञानावरणादि चार कर्मोंकी आबाधा तीन हजार वर्ष प्रमाण कही जा चुकी है । अब मोहनीय कर्मकी सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधा किसलिये बतलायी जा रही है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आबाधाकी उत्पत्ति अपनी स्थितिके प्रतिभागसे होती है । यथा—दस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिकी आबाधा एक हजार वर्ष प्रमाण पायी जाती है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

१ उदयं पडि सत्तण्हं आबाहा कोडकोडि उवहीणं । वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्ठिदीणं च ॥ गो. क. १५६. वाससहस्समबाहा कोडाकोडीदसगस्स सेसाणं । अणुवाओ अणुवट्टणगा उम्मासिगुक्कोसो ॥ क. प्र. १,७५

लब्भदि तो सत्तरि-तीस-वीससागरोवमकोडाकोडीणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जहाकमेण सत्त तिण्णि वेण्णि वाससहस्साणि आबाहाओ होंति। मोहणीयस्स आबाधा एसा ७०००। णाणावरणादीणं चदुण्णं कम्माणमाबाहा एत्तिया होदि ३०००। णामागोदाणमाबाहा एत्तिया होदि २०००। एदेण अत्थपदेण सेसउत्तरपयडीणं पि आबाहापरूवणा कायव्वा। एवं कदे सोलसण्णं कसायाणं चत्तारि वाससहस्साणि आबाधा होदि। एवं सेसउत्तरपयडीणं पि जाणिदूण वत्तव्वं। एवमेइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिएसु वि आबाहापरूवणा सग-सगट्ठिदीसु कायव्वा। णवरि आउअस्स आबाधाणियमो णत्थि, पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण खुद्दाभवग्गहणमेत्तट्ठिदीए वि बंधुवलंभादो असंखेपद्धाबाहाए वि तेत्तीससागरोवममेत्तट्ठिदिबंधुवलंभादो। सेसं णाणावरणादि-चदुण्णं कम्माणं जहा परूविदं तहा णिस्सेसं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो।

एत्थ मोहसव्वपयडीणं पदेसपिंडं घेत्तूण किमणंतरोवणिधा वुच्चदे, आहो पुध-पुध-पयडीणं णिसेगस्स अणंतरोवणिधा वुच्चदि त्ति? ण ताव पढमवियप्पो जुज्जदे, चालीस-

यदि दस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिकी एक हजार वर्ष प्रमाण आबाधा पायी जाती है तो सत्तर, तीस और बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितियोंकी आबाधा कितनी होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर क्रमशः उनकी सात, तीन और दो हजार वर्ष प्रमाण आबाधा होती है। मोहनीय कर्मकी आबाधा ७००० वर्ष प्रमाण है। ज्ञानावरणादिक चार कर्मोंकी आबाधा इतनी होती है— ३००० वर्ष। नाम व गोत्रकी आबाधा इतनी होती है — २००० वर्ष। इस अर्थपदसे शेष उत्तर प्रकृतियोंकी भी आबाधाकी प्ररूपणा करना चाहिये। ऐसा करनेपर सोलह कषायोंकी चार हजार वर्ष प्रमाण आबाधा होती है। इसी प्रकार शेष उत्तर प्रकृतियोंके विषयमें भी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये।

इस प्रकार एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें भी अपनी अपनी कर्मस्थितिके अनुसार आबाधाकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि आयु कर्मकी आबाधाका ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण आबाधा करके क्षुद्रभवग्रहण मात्र स्थितिका भी बन्ध पाया जाता है, तथा असंक्षेपाद्धा मात्र आबाधामें भी तेतीस सागरोपम प्रमाण स्थितिका बन्ध पाया जाता है। शेष जैसे ज्ञानावरणादिक चार कर्मोंकी प्ररूपणा की गई है वैसेही पूर्ण रूपसे प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई भेद नहीं है।

शंका— यहां मोहनीय कर्मकी समस्त प्रकृतियोंके प्रदेशपिण्डको ग्रहण करके क्या अनन्तरोपनिधा कही जाती है, अथवा उसकी पृथक् पृथक् प्रकृतियोंके निषेककी अनन्तरोपनिधा कही जाती है? इनमें प्रथम विकल्प तो योग्य नहीं है, क्योंकि, अनन्तरोपनिधाकी

१ प्रतिषु 'सण्णि' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सग-सगट्ठिदी' इति पाठः।

सागरोवमाणि अणंतरोवणिधाए विसेसहीणकमेण गंतूण तदणंतरउवरिमसमए अणंतगुणहीण-पदेसणिसेगप्पसंगादो, देसघादिपदेसपिंडो अणंतगुणहीणो त्ति कसायपाहुडे णिद्दिट्ठत्तादो। ण च अणंतगुणहीणत्तं वोत्तुं जुत्तं, विसेसहीणं सव्वत्थ णिसिंचदि त्ति सुत्तेण सह विरोहादो। ण विदियपक्खो वि, सव्वपयडीणं ठिदीयो अस्सिदूण पुध पुध णिसेयपरूवणापसंगादो। ण च एवं, विसेसहीणा विसेसहीणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीयो त्ति सुत्तेण सह विरोहादो त्ति? एत्थ परिहारो उच्चदे। तं जहा—ण ताव विदियपक्खम्मि वुत्तदोसाणं संभवो, तदब्भुवगमाभावादो[1]। ण पढमपक्खे वुत्तदोससंभवो वि, मिच्छत्तपदेसग्गं चेव घेत्तूण अणंतरोवणिधं परूवेमाणस्स तद्दोससमागमाभावादो। ण च सामण्णे विसेसो णत्थि, विसेसाणुविद्धाणं चेव सामण्णाणमुवलंभादो। ण च सामण्णे अप्पिदे विसेसप्पणा विरुज्झदे, विसेसवदिरित्तसामण्णाभावादो त्ति।

संपहि उवरिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे त्ति सुत्ते वक्खाणिज्जमाणे उक्कस्सियाए ट्ठिदीए बहुगं पदेसग्गं देदि, दुचरिमादिट्ठिदीसु विसेसहीणं देदि त्ति जं भणिदं तमेदेण सुत्तेण सह कधं ण विरुज्झदे? ण, गुणिदकम्मंसियमस्सिदूण सा परूवणा

अपेक्षा विशेषहीन क्रमसे चालीस सागरोपम जाकर उससे अव्यवहित आगेके समयमें अनन्तगुणे हीन प्रदेशवाले निषेकका प्रसंग आता है, क्योंकि, [सर्वघातीकी अपेक्षा] देशघाती प्रकृतियोंका प्रदेशपिण्ड अनन्तगुणा हीन है; ऐसा कसायपाहुड़में कहा गया है। परन्तु अनन्तगुणी हीनताका कथन उचित नहीं है, क्योंकि. सर्वत्र विशेषहीन देता है, इस सूत्रके साथ विरोध होता है। दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, समस्त प्रकृतियोंकी स्थितियोंका आश्रय करके पृथक् पृथक् निषेकोंकी प्ररूपणाका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपम तक वे विशेषहीन विशेषहीन हैं, इस सूत्रके साथ विरोध आता है?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं। वह इस प्रकार है—दूसरे पक्षमें दिये गये दोषोंकी सम्भावना तो है ही नहीं, क्योंकि, वैसा स्वीकार ही नहीं किया गया है। प्रथम पक्षमें कहे हुए दोषोंकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि एक मात्र मिथ्यात्व प्रकृतिके प्रदेशपिण्डको ग्रहण करके अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करनेपर उक्त दोषोंका आना सम्भव नहीं है। सामान्यमें विशेष न हो, ऐसा तो कुछ है नहीं, क्योंकि, विशेषोंसे सम्बद्ध ही सामान्य पाये जाते हैं। सामान्यकी मुख्यता होनेपर विशेषकी विवक्षा विरुद्ध हो, सो भी नहीं है, क्योंकि, विशेषोंसे भिन्न सामान्यका अभाव है।

शंका—अब 'उवरिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे' इस सूत्रका व्याख्यान करते हुए "उत्कृष्ट स्थितिमें बहुत प्रदेशपिण्डको देता है, द्विचरम आदिक स्थितियोंमें विशेषहीन देता है" यह जो कहा है वह इस सूत्रसे कैसे विरुद्ध नहीं होगा?

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'तदब्भुवगमादो' इति पाठः।

कदा, इमा पुण खविदगुणिद-घोलमाणजीवे अस्सिदूण कदा त्ति विरोहाभावादो ।

संपहि सगंतोक्खित्तपरूवणा-पमाणाणियोगद्दारमणंतरोवणिधमाउअस्स परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं सम्मादिट्ठीणं वा मिच्छादिट्ठीणं वा पज्जत्तयाणमाउअस्स पुव्वकोडितिभागमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि त्ति ॥१०४॥

एत्थ पुव्वकोडितिभागमाबाधं ति जं भणिदं तेण अण्णजोगववच्छेदो[1] ण कीरदे, किंतु अजोगववच्छेदो[2] चेव; पुव्वकोडितिभागमादिं कादूण जाव असंखेवद्धा त्ति ताव सव्वाबाधाहि तेत्तीससागरोवममेत्तट्ठिदिबंधसंभवादो । जदि एवं तो उक्कस्साबाहाए चेव किमट्ठं णिसेयपरूवणा कीरदे ? ण, आउअस्स उक्कस्साबाहा एत्तिया चेव होदि, उक्कस्साबाहाए सह

समाधान—नहीं, क्योंकि, वह प्ररूपणा गुणितकर्मांशिकका आश्रय करके की गई है, किन्तु यह प्ररूपणा क्षपित-गुणित-घोलमान जीवोंका आश्रय करके की गई है, अतः उससे विरुद्ध नहीं है ।

अब प्ररूपणा और प्रमाण अनुयोगद्वारोंसे गर्भित आयुकर्मकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मकी एक पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह बहुत है, द्वितीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह उससे विशेष हीन है, तृतीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह विशेष हीन है; इस प्रकार उत्कर्षसे तीस सागरोपम तक वह विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०४ ॥

यहां सूत्रमें 'पुव्वकोडितिभागमाबाधं' यह जो कहा गया है उससे अन्ययोगव्यवच्छेद (अन्य आबाधाओंकी व्यावृत्ति) नहीं किया जा रहा है, किन्तु अयोगव्यवच्छेद ही किया जा रहा है; क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागको आदि लेकर असंक्षेपाद्धा तक समस्त आबाधाओंके साथ तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुकर्मका बन्ध सम्भव है ।

शंका—यदि ऐसा है तो उत्कृष्ट आबाधामें ही किसलिये निषेकप्ररूपणा की जाती है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि आयु कर्मकी उत्कृष्ट आबाधा इतनी ही होती है तथा उत्कृष्ट आबाधाके साथ तेतीस सागरोपम मात्र उत्कृष्ट स्थिति भी होती है, यह बतलानेके

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अण्णजोगववएसो' इति पाठः । २ विशेषणसंगतैवकारअयोगव्यच्छेदबोधकः, यथा शंखः पाण्डुर एवेति । अयोगव्यवच्छेदो नाम उद्देश्यतावच्छेदक-समानाधिकरणाभावाप्रतियोगित्वम् । × × × विशेष्यसङ्गतैवकारोऽन्ययोगव्यवच्छेदबोधकः, यथा पार्थ एव धनुर्धर इति । अन्ययोगव्यवच्छेदो नाम विशेष्यभिन्नतादात्म्यादिव्यवच्छेदः । तत. त. पृ. २५-२६.

तेत्तीससागरोवमाणि उक्कस्सिया ट्ठिदी च होदि त्ति जाणावणट्ठं तदुत्तीए। देवाउअं पडुच्च सम्मादिट्ठीणं वा त्ति भणिदं, संजदेसु सम्मादिट्ठीसु पुव्वकोडितिभागपढमसमय-ट्ठिदीसु देवाउअस्स केसु वि तेत्तीससागरोवमपमाणस्स बंधुवलंभादो। णिरयाउअं पडुच्च मिच्छाइट्ठीणं वा त्ति वुत्तं, पुव्वकोडितिभागपढमसमए वट्टमाणमिच्छाइट्ठीसु केसु वि तेत्तीससागरोवममेत्तणिरयाउअस्स बंधुवलंभादो। सेसं जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा परूवेदव्वं, विसेसाभावादो।

अंतोखित्तपरूवणा-पमाणमणंतरोवणिधं णामा-गोदाणमुत्तरसुत्तेण भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तयाणं णामागोदाणं बेवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदिय-समए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण वीसं सागरोवमकोडीयो त्ति ॥ १०५ ॥

णिसेगभागहारो सव्वकम्मेसु सरिसो, सव्वत्थ गुणहाणीणं सरिसत्तुवलंभादो। गोवुच्छविसेसा ण सव्वगुणहाणीसु सरिसा, किंतु आदिगुणहाणिप्पहुडि अद्धद्धगया,

लिये उक्त प्ररूपणा की जा रही है।

देवायुकी अपेक्षा करके 'सम्मादिट्ठीणं वा' ऐसा कहा गया है, क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागके प्रथम समयमें स्थित किन्हीं सम्यग्दृष्टि संयत जीवोंमें तेतीस सागरोपम प्रमाण देवायुका बन्ध पाया जाता है। नारकायुकी अपेक्षा करके 'मिच्छाइट्ठीणं वा' ऐसा कहा गया है, क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागके प्रथम समयमें वर्तमान किन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तेतीस सागरोपम प्रमाण नारकायुका बन्ध पाया जाता है। शेष प्ररूपणा जैसे ज्ञाना-वरणीयके विषयमें की गई है, वैसे ही यहां करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

अब आगेके सूत्रसे प्ररूपणा व प्रमाण अनुयोगद्वारोंसे गर्भित नाम व गोत्रकी अनन्तरोपनिधाको कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके नाम व गोत्र कर्मकी दो हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निषिक्त है, वह उससे विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमों तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०५ ॥

निषेकभागहार सब कर्मोंमें समान है, क्योंकि सर्वत्र गुणहानियोंकी सदृशता देखी जाती है। गोपुच्छविशेष सब गुणहानियोंमें सदृश नहीं है, किन्तु प्रथम गुणहानिसे लेकर

गुणहाणीसु अवट्ठिदासु गोवुच्छविसेसाणमवट्ठाणविरोहादो। सेसं जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा परूवेदव्वं।

संपहि सण्णीसु पज्जत्तेसु सव्वकम्माणं पदेसणिसेगस्स अणंतरोवणिधं परूविय सण्णि-अपज्जत्ताणं तप्परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणमपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणमाउववज्जाणमंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण अंतोकोडाकोडीयो त्ति ॥ १०६ ॥

एत्थ आउअं किमट्ठं एदेहि सह ण भणिदं? ण एस दोसो, एदेसिं ट्ठिदिबंधेण समाणाउअट्ठिदिबंधाभावेण सह वोत्तुमसत्तीदो। णामा-गोदाणमंतोकोडाकोडीदो चदुण्णं कम्माणमंतोकोडाकोडी दुभागब्भहिया। मोहस्स अंतोकोडाकोडी चदुण्णं कम्माणमंतो-

उत्तरोत्तर आधे आधे होते गये हैं, क्योंकि, गुणहानियोंके अवस्थित होनेपर गोपुच्छ-विशेषोंके अवस्थानका विरोध हैं। शेष प्ररूपणा जैसे ज्ञानावरणीयके सम्बन्धमें की गई है वैसे ही करना चाहिये।

अब संज्ञी पर्याप्तक जीवोंके सब कर्मोंके प्रदेशनिषेककी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करके संज्ञी अपर्याप्तक जीवोंके उसकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निषिक्त है वह विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निषिक्त है वह विशेषहीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे अन्तः-कोड़ाकोड़ि सागरोपम तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०६ ॥

शंका—यहां इनके साथ आयु कर्मका कथन क्यों नहीं किया?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इनके स्थितिबन्धके समान आयु कर्मका स्थितिबन्ध नहीं होता; अतएव उनके साथ आयु कर्मका कहना शक्य नहीं है।

शंका—नाम व गोत्रके अन्तः कोड़ाकोड़ि मात्र स्थितिबन्धकी अपेक्षा चार कर्मोंका स्थितिबन्ध द्वितीय भागसे अधिक अन्तः कोड़ाकोड़ि प्रमाण होता है। मोहनीय कर्मकी अन्तःकोड़ाकोड़ि चार कर्मोंकी अन्तःकोड़ाकोड़िकी अपेक्षा एक तृतीय भाग सहित दो

कोडाकोडीहिंतो सतिभाग-दोरूवेंगुणा त्ति । सेसकम्मट्ठिदी विसरिसा त्ति । तेण सेसकम्माणं पि एगजोगो मा होदु त्ति वुत्ते ण, अंतोकोडाकोडित्तणेण तेसिं ट्ठिदीणं समाणत्तुवलंभादो । अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूणेत्ति भणिदे पढमसमयप्पहुडि संखेज्जावलियाओ वज्जिदूण उवरि णिसेयरचणं करेदि त्ति घेत्तव्वं । सेसं सण्णिपंचिंदियपज्जत्तणाणावरणीयस्स जहा वुत्तं तहा वत्तव्वं, अविसेसादो ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं चउरिंदिय-तीइंदिय-बीइंदियाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयाणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणमाउअस्स अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जाव पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण पुव्वकोडीयो त्ति ॥ १०७ ॥

एदे सत्त अपज्जत्तजीवसमाससरूवेण परिणयजीवा सुहुमेइंदियपज्जत्तजीवा च आउअस्स सव्वुक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणा पुव्वकोडिं चेव जेण बंधंति तेण पुव्वकोडिमेत्ता चेव पदेस-

रूपों (२⅓) से गुणित है । शेष कर्मोंकी स्थिति विसदृश है । इसलिये शेष कर्मोंका भी एक योग नहीं होना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अन्तःकोड़ाकोडि स्वरूपसे उनकी स्थितियोंके समानता पायी जाती है ।

' अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण ' ऐसा कहनेपर प्रथम समयसे लेकर संख्यात आवलियोंको छोड़कर इसके आगे निषेकरचनाको करता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । शेष कथन जैसे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके ज्ञानावरणीयके विषयमें किया है वैसा ही इसके भी करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय व बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त है वह विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे पूर्वकोटि तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०७ ॥

अपर्याप्त जीवसमास स्वरूपसे परिणत ये सात जीव तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हुए चूँकि पूर्वकोटि प्रमाण ही बाँधते हैं, अतएव पूर्वकोटि मात्र ही प्रदेशरचना कही गई है । पूर्वकोटिमेंसे एक- अंक कम इत्यादि क्रमसे

१ काप्रतौ ' दोरूव ' इति पाठः ।

रचणापरूविदा पुव्वकोडीदो रूवूणादिकमेण परिहीणा वि पदेसरचणा अत्थि, अण्णहा उक्कस्सेण जाव पुव्वकोडि त्ति णिद्देसाणुववत्तीदो। एदे पुव्वकोडीदो अब्भहियमाउअं किण्ण बंधंति ? सहावदो अच्चंताभावेण णिरुद्धसत्तित्तादो वा। एदेसिमाबाहा अंतोमुहुत्तमेत्ता चेवे त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एदेसिमंतोमुहुत्तआउआणं सगआउअतिभागे अंतोमुहुत्तभावस्सेव उवलंभादो। सेसं सुगमं।

पंचिंदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं बादरएइंदियपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणं आउअवज्जाणं अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सस्स सागरोवमसदस्स सागरोवमपण्णासाए सागरोवमपणुवीसाए सागरोवमस्स तिण्णि-सत्तभागा सत्त-सत्तभागा

हीन भी प्रदेशरचना होती है, क्योंकि, अन्यथा ' उक्कस्सेण जाव पुव्वकोडि त्ति ' यह निर्देश घटित नहीं होता।

शंका—ये जीव पूर्वकोटिसे अधिक आयुको क्यों नहीं बाँधते हैं ?

समाधान—उक्त जीव स्वभावतः उससे अधिक आयुको नहीं बाँधते हैं, अथवा अत्यन्ताभावसे निरुद्धशक्ति होनेसे वे अधिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं।

शंका—इन जीवोंके उक्त कर्मोंकी आबाधा अन्तर्मुहूर्त मात्र ही किसलिये कही जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इन जीवोंकी आयु अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही होती है, अतएव अपनी आयुके त्रिभागमें अन्तर्मुहूर्तता ही पायी जा सकती है।

शेष कथन सुगम है।

पंचेन्द्रिय असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंके आयु कर्मसे रहित सात कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है; इस प्रकार विशेषहीन विशेषहीन होकर उत्कर्षसे हजार सागरोपमोंके, सौ सागरोपमोंके, पचास सागरोपमोंके और पच्चीस सागरोपमोंके चार कर्मों, मोहनीय एवं नाम-गोत्र कर्मोंके क्रमसे सात भागोंमेंसे परिपूर्ण तीन भाग (३।७), सात भाग (७।७)

बे-सत्तभागा पडिवुण्णा त्ति ॥ १०८ ॥

एत्थ पुव्वाणुपुव्वीए जेण णिद्देसो कदो तेण असण्णिपंचिंदियाणं सागरोवमसहस्सस्स[1] तिण्णि-सत्तभागा चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सट्ठिदी[2] होदि, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा। चउरिंदियाणं सागरोवमसदस्स तिण्णि-सत्तभागा चदुण्णं कम्माण-मुक्कस्सट्ठिदी होदि, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा। तीइंदिय-पज्जत्तएसु सागरोवमपण्णासाए तिण्णि-सत्तभागा चदुण्हं कम्माणं उक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बेसत्तभागा होदि। बीइंदियपज्जत्तएसु सागरोवमपणुवीसाए तिण्णि-सत्तभागा चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा होदि। बादरएइंदियपज्जत्तएसु सागरोवमाए तिण्णि-सत्तभागा चदुण्णं कम्माण-मुक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा[3] होदि। एत्थ एदाओ ट्ठिदीओ तेरासियकमेण जाणिदूण आणेदव्वाओ। सत्तरिकोडाकोडिरूवेहि सत्त-वाससहस्समोवट्टिय लद्धे सग-सगकम्मट्ठिदीणं[4] सागरोवमसलागाहि गुणिदे इच्छिदजीवसमा-सकम्मट्ठिदीणमाबाहाओ होति। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

और दो भागों (२।७) तक चला गया है ॥ १०८ ॥

यहाँ सूत्रमें चूँकि पूर्वानुपूर्वीके क्रमसे निर्देश किया गया है, अतः असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति हजार सागरोपमोंके तीन-सात भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण, मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति सात सात भाग ($\frac{7}{7}$) प्रमाण, और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग ($\frac{2}{7}$) प्रमाण है। चतुरिन्द्रिय जीवोंके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति सौ सागरोपमोंके तीन-सात भाग प्रमाण, मोहनीयकी सात-सात भाग प्रमाण और नाम गोत्रकी दो-सात भाग प्रमाण है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति पचास सागरोप-मोंके तीन सात भाग, मोहनीयकी सात-सात भाग और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग प्रमाण है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति पच्चीस सागरोपमोंके तीन-सात भाग, मोहनीयकी सात-सात भाग और नाम-गोत्रकी दो सात भाग प्रमाण है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमके तीन-सात भाग, मोहनीयकी सात-सात भाग और नाम-गोत्रकी दो सात भाग प्रमाण है। यहां इन स्थितियोंको त्रैराशिक क्रमसे जानकर ले जाना चाहिये। सत्तर कोड़ाकोड़ि रूपोंसे सात हजार वर्षोंको अपवर्तित करके जो लब्ध हो उसे अपनी कर्मस्थितियोंकी सागरोपमशला-काओं द्वारा गुणित करनेपर अभीष्ट जीवसमासकी कर्मस्थितियोंकी आबाधायें होती हैं। शेष कथन जानकर करना चाहिये।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'सहस्स' इति पाठः। २ अप्रतौ 'कम्माणमणुक्कट्ठिदी', आ-काप्रत्योः 'कम्माणमणुक्कस्सट्ठिदी' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'गोदाणं चेय वेसत्तभागा' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'सगकम्म' इति पाठः।

पंचिंदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं बादरएइंदियपज्जत्तयाणमाउअस्स[1] पुव्वकोडितिभागं बेमासं सोलसरादिंदियाणि सादिरेयाणि चत्तारिवासाणि सत्तवाससहस्साणि सादिरेयाणि आबाहं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो पुव्वकोडि त्ति ॥१०९॥

असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं पुव्वकोडितिभागो आबाहा होदि, तेसु भुंजमाणाउअस्स पुव्वकोडिपमाणस्स उवलंभादो। चउरिंदिएसु उक्कस्साबाहा बे मासा, तत्थ सव्वुक्कस्सभुंजमाणाउअस्स छम्मासपमाणत्तुवलंभादो। तेइंदिएसु सोलसरादिंदियाणि सादिरेयाणि उक्कस्साबाहा होदि, तेसु एगूणवण्णरादिंदियमेत्तपरमाउदंसणादो। बीइंदिएसु चत्तारिवासाणि उक्कस्साबाहा होदि, तत्थ बारसवासमेत्तपरमाउदंसणादो। बादरेइंदियपज्जत्तएसु सत्तसहस्सतिण्णिसदतेत्तीसवासाणि चत्तारिमासा च उक्कस्साबाहा होदि, तत्थ बावीससहस्समेत्त-

असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मकी क्रमशः पूर्वकोटिके तृतीय भाग, दो मास साधिक सोलह दिवस, चार वर्ष, और साधिक सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग व पूर्वकोटि तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०९ ॥

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकर्मकी आबाधा पूर्वकोटिके त्रिभाग प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें भुज्यमान आयु पूर्वकोटि प्रमाण पायी जाती है। चतुरिन्द्रिय जीवोंमें उसकी उत्कृष्ट आबाधा दो मास प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें सर्वोत्कृष्ट भुज्यमान आयु छह मास प्रमाण पायी जाती है। त्रीन्द्रिय जीवोंमें उत्कृष्ट आबाधा साधिक सोलह दिवस प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें उनंचास दिवस प्रमाण उत्कृष्ट आयु देखी जाती है। द्वीन्द्रिय जीवोंमें चार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आबाधा होती है, क्योंकि, उनमें बारह वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु देखी जाती है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें उत्कृष्ट आबाधा सात हजार तीन सौ तेतीस वर्ष व चार मास प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें बाईस हजार वर्ष

---

१ प्रतिषु 'माउअपुव्व' इति पाठः।

पमाउदंसणादो। एदाओ आबाहाओ वज्जिदूण पदेसरचणा कीरदि त्ति उत्तं होदि। पदेसविण्णासस्स आयामो पुण असण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु आउअस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागमेत्तो, तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणिरयाउट्ठिदीए बंधुवलंभादो। चउरिंदि-यादीणं आउअस्स पदेसविण्णासायामो पुव्वकोडिमेत्तो चेव, तत्थ एदम्हादो अहियबंधा-भावादो। सेसं सुगमं।

पंचिंदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयाणं सुहुमेइंदियपज्जत्तअपज्जत्तयाणं सत्तण्हं कम्माणमाउववज्जाणमंतोमुहुत्तयाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं निसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सागरोवमसदस्स सागरोवमपण्णासाए सागरोवमपणुवीसाए सागरोवमस्स तिण्णिसत्तभागा, सत्त-सत्तभागा, बे-सत्तभागा पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणया पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया त्ति॥ ११०॥

प्रमाण उत्कृष्ट आयु देखी जाती है। इन आबाधाओंको छोड़कर प्रदेशरचना की जाती है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है।

परन्तु असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें आयु कर्मके प्रदेशविन्यासका आयाम पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि, उनमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण नारकायुका स्थितिबन्ध पाया जाता है। चतुरिन्द्रिय आदिक जीवोंके आयु कर्मके प्रदेश-विन्यासका आयाम पूर्वकोटि प्रमाण ही है, क्योंकि, उनमें इससे अधिक स्थितिबन्धका अभाव है। शेष कथन सुगम है।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मसे रहित शेष सात कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड निषिक्त है वह बहुत है, द्वितीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है, तृतीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे सौ सागरोपम, पचास सागरोपम, पच्चीस सागरोपम और एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन तीन, सात और दो भाग तक विशेषहीन विशेषहीन होता चला गया है॥ ११०॥

१ ताप्रतौ 'उक्कस्सेण [सागरोवमसहस्सस्स] सागरोवम ' इति पाठः।

एत्थ अपज्जत्तसद्दो असण्णिपंचिंदियादिसु पादेक्कमहिसंबंधणिज्जो, तस्संबंधेण विणा पउणरुत्तियप्पसंगादो। असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तप्पहुडि जाव बीइंदियअपज्जत्तो त्ति ताव एदेसिं ट्ठिदीयो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणाओ। बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदिय-पज्जत्तापज्जत्ताणमुक्कस्साउट्ठिदीयो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवममेत्ताओ। सेसं सुगमं। एवमणंतरोवणिधा समत्ता।

परंपरोवणिधाए पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणं अट्ठण्णं कम्माणं जं पढमसमए पदेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा, एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव उक्कस्सिया ट्ठिदी त्ति[1] ॥ १११ ॥

विसेसहीणकमेण गच्छंता णिसेगा किं कत्थ वि दुगुणहीणा जादा त्ति पुच्छिदे असंखेज्जगोवुच्छविसेसे गंतूण दुगुणहीणा जादा त्ति जाणावणट्ठं परंपरोवणिधा आगदा। पढमणिसेगादो प्पहुडि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं[2] गंतूण दुगुणहीणा त्ति वयणेण कम्मट्ठिदिअब्भंतरे असंखेज्जाओ दुगुणहाणीयो अत्थि त्ति णव्वदे। तं जहा—पलिदोवमस्स

सूत्रमें प्रयुक्त अपर्याप्त शब्दका सम्बन्ध असंज्ञी पंचेन्द्रिय आदिक जीवोंमेंसे प्रत्येकके साथ करना चाहिये, क्योंकि, उसका सम्बन्ध न करनेसे पुनरुक्ति दोषका प्रसंग आता है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकसे लेकर द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक तक इन जीवोंकी स्थितियाँ पल्योपमके संख्यातवें भागसे हीन हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक और सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तक जीवोंकी उत्कृष्ट स्थितियाँ पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सागरोपम प्रमाण हैं। शेष कथन सुगम है। इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आठ कर्मोंका जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र है उससे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर दुगुणहीन है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणहीन दुगुणहीन होता चला गया है ॥ १११ ॥

विशेषहीनताके क्रमसे जाते हुए निषेक कहींपर दुगुण हीन भी हो जाते हैं अथवा नहीं होते हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तरमें कहते हैं कि असंख्यात गोपुच्छविशेष जाकर वे दुगुण हीन हो जाते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ परम्परोपनिधाका अवतार हुआ है। प्रथम निषेकसे लेकर पल्योपमके असंख्यात बहुभाग जाकर दुगुण हीन होते हैं, इस वचनसे कर्मस्थितिके भीतर असंख्यात दुगुणहानियां हैं, यह जाना जाता है। यथा—

१ पल्लासंखियभागं गंतुं दुगुणूणमेवमुक्कोसा। नाणंतराणि पल्लस्स मूलभागो असंखतमो॥ क. प्र. १,८४. २ अ-आ-का प्रतिषु 'मागे' इति पाठः।

असंखेज्जदिभागं गंतूण जदि एगा दुगुणहाणिसलागा लब्भदि तो कम्मट्ठिदिअब्भंतरसंखेज्ज-पलिदोवमेसु केत्तियाओ दुगुणहाणिसलागाओ लभामो त्ति पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उवलब्भदि त्ति आबाधूणकम्मट्ठिदीए एगगुणहाणीए भागे हिदाए रूवूणणाणागुणहाणिसलागाओ एक्किस्से गुणहाणिसलागाए असंखेज्जा भागा च आगच्छंति । कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगगुणहाणी आगच्छदि त्ति गुरूवदेसादो । तम्हा सव्वकम्माणं णाणागुणहाणि-सलागाओ सच्छेदाओ होंति । अद्धगुणहाणिणा आबाधाऊणकम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए जदि अच्छेदरासी आगच्छदि तो णाणागुणहाणिसलागाहि सयलकम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए सादिरेयगुणहाणिअद्धाणमागच्छदि । कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि अहियाबाहाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो । ण च णाणागुणहा-णिसलागाणं गुणहाणिअद्धाणस्स वा सच्छेदत्तं, तहोवएसाभावादो । तम्हा गुणहाणिणा आबाहूणकम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए णाणागुणहाणिसलागाओ आगच्छंति । पुणो ताहि वि ताए ओवट्टिदाए एगगुणहाणिअद्धाणमागच्छदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ गुणहाणि-अद्धाणं सव्वकम्माणमवट्टिदं । कुदो ? अण्णोण्णब्भत्थरासीणं विसरिसत्तब्भुवगमादो । तदो

पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर यदि एक दुगुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो कर्म-स्थितिके भीतर असंख्यात पल्योपमोंमें कितनी दुगुणहानिशलाकायें प्राप्त होंगी, इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भागसे कर्मस्थितिको अपवर्तित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है। अत एव आबाधासे हीन कर्मस्थितिमें एक गुणहानिका भाग देनेपर एक कम नानागुणहानिशलाकायें और एक गुणहानिशलाकाके असंख्यात बहुभाग आते हैं, क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एक गुणहानि लब्ध होती है, ऐसा गुरुका उपदेश है। इस कारण सब कर्मोंकी नानागुण-हानिशलाकायें सछेद होती हैं। अर्ध गुणहानिका आबाधासे हीन कर्मस्थितिमें भाग देनेपर यदि अछेद राशि प्राप्त होती है, (ऐसा अभीष्ट है) तो नानागुणहानिशलाकाओंका समस्त कर्मस्थितिमें भाग देनेपर साधिक गुणहानि अध्वान आता है, क्योंकि, नानागुणहा-निशलाकाओंसे अधिक आबाधाको अपवर्तित करनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग पाया जाता है। परन्तु नानागुणहानिशलाकायें अथवा गुणहानिअध्वान सछेद नहीं हैं, क्योंकि, वैसा उपदेश नहीं है। इस कारण आबाधासे हीन कर्मस्थितिमें गुणहानिका भाग देनेपर नानागुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं। पश्चात् उनके द्वारा उसीको अपवर्तित करनेपर एक गुणहानि अध्वान आता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। यहां सब कर्मोंका गुणहानि-अध्वान अवस्थित है, क्योंकि, अन्योन्याभ्यस्त राशियां विसदृश स्वीकार की गई हैं।

१ ताप्रतौ 'एगा गुणहाणि-' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'आबाहाण' इति पाठः

णामा-गोदणाणागुणहाणिसलागाहिंतो चदुण्णं कम्माणं णाणागुणहाणिसलागाओ दुभागा-हियाओ। मोहणीयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ अद्धुट्ठगुणाओ। आउअस्स णाणागुण-हाणिसलागाओ णामा-गोदणाणागुणहाणिसलागाणं संखेज्जदिभागमेत्तीयो। एवमसण्णीण-मट्ठण्णं कम्माणं पि तेरासियं काऊण णाणागुणहाणिसलागाओ उप्पाएयव्वाओ। असण्णीणमुक्कस्सट्ठिदिबंधो[1] पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। गुणहाणिअद्धाणं पि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव। किंतु गुणहाणिअद्धाणादो असण्णीणं उक्कस्साउ-ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो[2] त्ति एत्थ वि असंखेज्जाओ णाणागुणहाणिसलागाओ लब्भंति त्ति घेत्तव्वं। एवमसण्णिपंचिंदियपज्जत्तणाणावरणादीणं णाणागुणहाणिसलागाओ तेरासिएण आणेदव्वाओ।

संपहि एत्थ णाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च पमाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असंखेज्जाणि पलिदो-वमवग्गमूलाणि[3] ॥ ११२ ॥

एत्थ पलिदोवमस्स वग्गमूलमिदिवुत्ते पलिदोवमपढमवग्गमूलस्सेव गहणं कायव्वं, ण बिदियादीणं; पलिदोवमस्स वग्गमूले गहिदे पढमवग्गमूलस्सेव उप्पत्तिदंसणादो। ताणि च

इस कारण नाम व गोत्रकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा चार कर्मोंकी नानागुण-हानिशलाकायें द्वितीय भागसे अधिक हैं। मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकायें उनसे साढ़ेतीन गुणी हैं। आयुकर्मकी नानागुणहानिशलाकायें नाम-गोत्रकी नानागुणहानिशलाका-ओंके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं।

इसी प्रकार असंज्ञी जीवोंके आठों कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको त्रैराशिक करके उत्पन्न कराना चाहिये। असंज्ञी जीवोंके आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है। गुणहानिअध्वान भी पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण ही है। किन्तु गुणहानिअध्वानसे असंज्ञी जीवोंके आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा होता है, अतएव यहाँ भी असंख्यात नाना गुणहानिशलाकायें पायी जाती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। इसी प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके ज्ञानावरणादिक कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको त्रैराशिक द्वारा ले आना चाहिये।

अब यहां नानागुणहानिशलाकाओं और गुणहानिके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ॥ ११२ ॥

यहां 'पल्योपमका वर्गमूल' ऐसा कहनेपर पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये, द्वितीयादि वर्गमूलोंका नहीं; क्योंकि, पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करनेपर प्रथम वर्गमूलकी ही उत्पत्ति देखी जाती है। वे वर्गमूल असंख्यात हैं, क्योंकि,

१ अ-आ-काप्रतिषु 'मुक्कस्साउट्ठिदिबंधो' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'उक्कस्साउट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुण' इति पाठः। ३ एकस्मिन् द्विगुणवृद्ध्योरन्तरे स्थितिस्थानानि पल्योपमवर्गमूलान्यसंख्येयानि। क. प्र. (मलय.) १,८८

पढमवग्गमूलाणि असंखेज्जाणि, णाणागुणहाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए गुणहाणिपमाणुप्पत्तीदो। एसा गुणहाणी सव्वकम्माणं सरिसा; कम्मट्ठिदिभागहारभूद-णाणागुणहाणिसलागाणं कम्मट्ठिदिपडिभागेण पमाणत्तुवलंभादो।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ११३ ॥

एत्थ मोहणीयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स किंचूणद्धच्छेदणयमेत्ताओ। तं कधं णव्वदे ? चरिमगुणहाणिदव्वादो पढमणिसेयो असंखेज्जगुणो त्ति पदेसविरइयअप्पा-बहुगादो। णाणावरणादीणं पुण णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमपढमवग्गमूलअद्धच्छेद-णेहिंतो थोवाओ। कुदो ? एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्ज-पलिदोवमबिदियवग्गमूलुप्पत्तीदो। तं पि कुदो णव्वदे ? मोहणीयणाणागुणहाणिसलागाणं दो-तिण्णि-सत्तभागेसु विसेसाहियबिदियवग्गमूलछेदाणुवलंभादो।

नानागुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर गुणहानिका प्रमाण प्राप्त होता है। यह गुणहानि सब कर्मोंकी समान है, क्योंकि, कर्मस्थितिके भागहारभूत नानागुणहानि-शलाकाओंका प्रमाण कर्मस्थितिप्रतिभागसे पाया जाता है।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ ११३॥

यहां मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकायें पल्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके बराबर हैं।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह 'अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे प्रथम निषेक असंख्यातगुणा है' इस प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

परन्तु ज्ञानावरणादिकोंकी नानागुणहानिशलाकायें पल्योपम सम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे स्तोक हैं, क्योंकि, इनका विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर पल्योपमके असंख्यात द्वितीय वर्गमूल उत्पन्न होते हैं।

शंका—यह भी कहांसे जाना जाता है ?

समाधान—चूंकि मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाओंके दो-तीन सात भागोंमें विशेष अधिक द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद पाये जाते हैं, अतः इसीसे उतने द्वितीय वर्गमूलोंकी उत्पत्तिका ज्ञान होता है।

१ नानाद्विगुणवृद्धिस्थानानि चांगुलवर्गमूलच्छेदनकासंख्येयतमभागप्रमाणानि। एतदुक्तं भवति—अंगुलमात्रक्षेत्रगतप्रदेशराशेर्यत् प्रथमं वर्गमूलं तन्मनुष्यप्रमाणहेतुराशिषण्णवतिच्छेदनविधिना तावच्छिद्यते यावद् भागं न प्रयच्छति। तेषां च छेदनकानामसंख्येयतमे भागे यावन्ति छेदकानि तावत्सु यावानाकाश-प्रदेशराशिस्तावत्प्रमाणानि नानाद्विगुणस्थानानि भवन्ति। क. प्र. (मलय) १,८८. २ ताप्रतौ 'पलिदो-वमस्स बिदियं' इति पाठः।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ ११४ ॥

कुदो ? थोवूणपलिदोवमद्धच्छेदणयपमाणत्तादो थोवूणपलिदोवमपढमवग्गमूलच्छेदणयमेत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ११५ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाणं चउरिंदिय-तीइंदिय-बीइंदिय-एइंदिय-बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणमाउववज्जाणं जं पढमसमए पदेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा, एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥ ११६ ॥

एत्थ जधा सण्णिपज्जत्तणाणावरणादीणं परूवणा कदा तधा कायव्वा । णवरि एत्थ अप्पणो ट्ठिदीणं पमाणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि ॥ ११७ ॥

सुगममेदं ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ ११४ ॥

कारण यह कि वे पल्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके बराबर होनेसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे कुछ कम हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ ११५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल हैं ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय तथा एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म इन पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़ शेष सात कर्मोंका जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें है उससे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वह दुगुणहीन हो जाता है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वह दुगुणहीन दुगुणहीन होता जाता है ॥ ११६ ॥

यहां जैसे संज्ञी पर्याप्तकके ज्ञानावरणादिकोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही करना चाहिये । विशेषता इतनी है कि यहां अपनी स्थितियोंका प्रमाण जानकर कहना चाहिये ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यात वर्गमूलोंके बराबर है ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगमं ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ ११९ ॥

गुणहाणिणा कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए तेसिमुप्पत्तिदंसणादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १२० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि । एवं परम्परोवणिधा समत्ता ।

संपहि सेढिपरूवणाए सूचिदाणमवहार-भागाभाग-अप्पाबहुआणियोगद्दाराणं परूवणं कस्सामो । तं जहा— सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं पढमाए ट्ठिदीए पदेसपमाणेण केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एदस्स कारणं वुच्चदे । तं जहा— बिदियादिगुणहाणिदव्वे पढमगुणहाणिदव्वपमाणेण कदे चरिमगुणहाणि-

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥ ११८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ ११९ ॥

कारण कि गुणहानि द्वारा कर्मस्थितिको अपवर्तित करनेपर उनकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १२० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमके असंख्यात वर्गमूल हैं । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

अब श्रेणिप्ररूपणा द्वारा सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड प्रथम स्थितिके प्रदेशपिण्डके प्रमाण द्वारा कितने कालसे अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणके द्वारा वह डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । इसका कारण बतलाते हैं । वह इस प्रकार है— द्वितीयादिक गुणहानियोंके द्रव्यको प्रथम गुणहानिके द्रव्यप्रमाणसे करनेपर वह अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे रहित प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है । उसका प्रमाण यह है—

द्वि. गु.	१२८	१२०	११२	१९४	९६	८८	८०	७२
तृ. ,,	६४	६०	५६	५२	४८	४४	४०	३६
च. ,,	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८
पं. ,,	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
योग	२४०	२२५	२१०	१९५	१८०	१६५	१५०	१३५
अन्तिम गुण.	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
प्रथम गुण.	२५६	२४०	२२४	२०८	१९२	१७६	१६०	१४४

दव्वेणूणपढमगुणहाणिदव्वं होदि । तस्स पमाणमेदं २४० । २२५ । २१० । १९५ । १८० । १६५ । १५० । १३५ । चरिमगुणहाणिदव्वपमाणमेदं १६ । १५ । १४ । १३ । १२ । ११ । १० । ९ । एदम्मि दव्वे पुव्वदव्वम्हि पक्खित्ते पढमगुणहाणिदव्वपमाणं होदि । २५६ । २४० । २२४ । २०८ । १९२ । १७६ । १६० । १४४ । पुणो एदं पढमगुणहाणिदव्वं दोखंडे कादूण तत्थ एगखंडमधोसिरं करिय बिदियखंडपासे ठविदे एत्तियं होदि । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । एदस्स पमाणं पढमणिसेयस्स तिण्णि-चदुब्भागा सादिरेया । पुणो एत्थ सादिरेये अवणिदे सुद्धा पढमणिसेयस्स तिण्णि-चदुब्भागा चेव चेट्ठंति । तेसिं पमाणमेदं १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । सादिरेयं पि एदं ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । पढमगुणहाणिदव्वे वि समकरणे कीरमाणे पढमणिसेगस्स तिण्णिचदुब्भागा सादिरेया होंति । पुणो तेसु चदुब्भागे अवणिदे सेसं बे-चदुब्भागपमाण-मेत्तियं होदि १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । सेसचदुब्भागपमाणमेदं ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । पुणो इमं चदुब्भागं घेत्तूण पुव्विल्लतिण्णि-चदुब्भागेसु पक्खित्ते गुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति । तेसिं पमाणमेदं २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । पुणो पढमणिसेयस्स अद्धाणि गुणहाणिमेत्ताणि अत्थि । ताणि पढमणिसेयपमाणेण कदे गुणहाणीए अद्धमेत्ता पढमणिसेया होंति । तेसिं पमाणमेदं २५६ । २५६ । २५६ ।

अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण यह है । इस द्रव्यको पूर्व द्रव्यमें मिलानेपर प्रथम गुण-हानिके द्रव्यका प्रमाण होता है । (संदृष्टिमें देखिये) । पुनः प्रथम गुणहानिके इस द्रव्यके दो खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डको अधःशिर करके द्वितीय खण्डके पार्श्वमें स्थापित करनेपर इतना है—२००+२००+२००+२००+२००+२००+२००+२००=१६०० । इसका प्रमाण प्रथम निषेकके तीन चतुर्थ भाग ($\frac{3}{4}$) से कुछ (८) अधिक होता है । इसमेंसे अधिकताके प्रमाणको कम कर देनेपर अवशिष्ट प्रथम निषेकके शुद्ध तीन चतुर्थ भाग ही रहते हैं—(२००-८=) १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, साधिकताका भी प्रमाण यह है—८, ८, ८, ८, ८, ८, ८, ८ । प्रथम गुणहानिके द्रव्यका भी समकरण करनेपर (१६००÷८=२००) वह प्रथम निषेकके साधिक (८) तीन चतुर्थ भाग प्रमाण होता है । फिर उनमेंसे एक चतुर्थ भागको अलग कर देनेपर शेष दो चतुर्थ भागोंका प्रमाण इतना होता है—[$१९२-६४=१२८=\frac{२५६\times२}{४}$] १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८ । अवशेष चतुर्थ भागका प्रमाण यह है—६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४ । अब इस चतुर्थ भागको ग्रहण करके पूर्वके तीन चतुर्थ भागोंमें मिला देनेपर गुणहानिके बराबर प्रथम निषेक होते हैं । उनका प्रमाण यह है—(१९२+६४=२५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६ । प्रथम निषेकके अर्ध भाग गुणहानिके बराबर अर्थात् आठ हैं (२×२×२×२×२×२×२×२=२५६) । उनको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण

२५६ । पुणो एदे[1] गुणहाणिअद्धमेत्तपढमणिसेगे घेत्तूण गुणहाणिमेत्तपढमणिसेगेसु पक्खित्तेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति २५६ । १२ । पुणो सेसअधियदव्वे वि पढमणिसेयपमाणेण कदे तस्सद्धमेत्तं होदि १२८ । पुणो एदमप्पहाणं कादूण पढमणिसेगेण दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए सव्वदव्वमेत्तियं होदि ३०७२ । पुणो एदम्हि[2] दिवड्ढगुणहाणीए १२ । भागे हिदे पढमणिसेयो आगच्छदि । एवं[3] पढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि त्ति सिद्धं ।

बिदियाए ट्ठिदीए पदेसग्गपमाणेण सव्वट्ठिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण । तं जहा—दिवड्ढगुणहाणीयो विरलेदूण सव्वदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स पढमणिसेयपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठा णिसेगभागहारं विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेग-गोवुच्छविसेसपमाणं पावदि । पुणो एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणिदेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसा अधिया होंति । पुणो उव्वरिददव्वं[4] पि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तबिदियणिसेयपमाणं होदि । पुणो अधियगोवुच्छविसेसे बिदियणिसेयपमाणेण कस्सामो ।

प्रथम निषेक होते हैं । उनका प्रमाण यह है—२५६, २५६, २५६, २५६ । पश्चात् गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण इन प्रथम निषेकोंको ग्रहण करके गुणहानिके बराबर प्रथम निषेकोंमें मिला देनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं—२५६×१२ । अवशिष्ट अधिक द्रव्यको भी प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर वह उसके अर्ध भागके बराबर होता है १२८ । अब इसको गौण करके प्रथम निषेकसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर सब द्रव्य इतना होता है—२५६×१२=३०७२ । इसमें डेढ़ गुणहानिका (१२) भाग देनेपर प्रथम निषेक प्राप्त होता है । इस प्रकार प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है, यह सिद्ध होता है ।

द्वितीय स्थिति सम्बन्धी प्रदेशाग्रके प्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड कितने कालसे अपहृत होता है ? वह साधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—डेढ़ गुणहानियोंको विरलित करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति प्रथम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है (३०७२÷१२=२५६) । इसके नीचे निषेकभागहारका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलन अंकके प्रति एक एक गोपुच्छविशेषका प्रमाण प्राप्त होता है (२५६÷१६=१६) । इस प्रमाणसे ऊपरकी सब एक अंकके प्रति प्राप्त राशियोंका अपनयन करनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविशेष अधिक होते हैं (१६×१२=१९२) । अवशिष्ट द्रव्य भी डेढ़ गुणहानि मात्र द्वितीय निषेकके बराबर होता है (२४०×१२=२८८०) ।

१ ताप्रतौ 'एदेण' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'एदं' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'एदं' इति पाठः । ४ आप्रतौ 'उवरिददव्वं', ताप्रतौ 'उवरि दव्वं' इति पाठः ।

तं जहा—१६ । १५ । १ । १६ । १२ रूवूणणिसेयभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसे घेत्तूण जदि एगं बिदियणिसेयपमाणं लब्भदि, तो दिवड्ढगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संदिट्ठीए चत्तारि पंचभागा होंति ४ । ५ । पुणो एदं दिवड्ढगुणहाणीसु सरिसच्छेदं[1] कादृण पक्खित्ते एत्तियं होदि ६४ । ५ ।[2] पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेगो आगच्छदि ।

तदियाए ट्ठिदीए पदेसग्गपमाणेण सव्वट्ठिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? सादिरेयरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि १६ । १४ । १ । १६ । २४ । दोरूवूणणिसेयभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसेहिंतो जदि एगं तदियणिसेयपमाणं लब्भदि तो तिण्णिगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु केवडिए तदियणिसेगे लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि १ । ५ । ७ । पुणो एदम्मि दिवड्ढगुणहाणिम्मि पक्खित्ते एत्तियं होदि ९६ । ७ पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे तदियणिसेयो आगच्छदि । एवं जाणिदूण उवरि णेदव्वं जाव पढमगुणहाणीए अद्धं गदं ति ।

अब अधिक गोपुच्छविशेषोंको द्वितीय निषेकके प्रमाणसे करते हैं । यथा—एक कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि एक द्वितीय निषेकका प्रमाण पाया जाता है, तो डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें कितना द्वितीय निषेकका प्रमाण प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर वह पाँच भागोंमेंसे चार भाग ($\frac{४}{५}$) प्रमाण होता है ।

उदाहरण—यहां निषेकभागहारका प्रमाण १६ और गोपुच्छविशेषका प्रमाण भी १६ है; अतः निम्न प्रकार त्रैराशिक करनेपर उपर्युक्त प्रमाण प्राप्त होता है—$\frac{१३ \times १}{१५}=\frac{४}{५}=(\frac{२४०}{५} \times ४)=१९२$ ।

पुनः इसको समच्छेद करके डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर इतना होता है-$१२+\frac{४}{५}=\frac{६४}{५}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक प्राप्त होता है—$३०७२ \div \frac{६४}{५}=२४०$ ।

तृतीय स्थिति सम्बन्धी प्रदेशाग्रप्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड कितने कालसे अपहृत होता है ? वह साधिक एक अंकसे अधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । दो रूपोंसे कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे यदि एक तृतीय निषेक प्राप्त होता है, तो तीन गुणहानियोंके बराबर गोपुच्छविशेषोंमें कितने तृतीय निषेक प्राप्त होंगे; इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर इतना होता है—

उदाहरण—निषेकभागहार १६; गोपुच्छ १६; १६–२=१४; $\frac{३ \times ४ \times १}{१ \times ४}=१\frac{५}{७}$ ।

इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिला देनेपर इतना होता है—$१२+\frac{१२}{७}=\frac{९६}{७}$ । अब इसका समस्त द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय निषेक आता है $३०७२ \div \frac{९६}{७}=२२४$ । इस प्रकार जानकर प्रथम गुणहानिका अर्ध भाग समाप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

---

१ ताप्रतौ 'सरिच्छेदं' इति पाठः । २ प्रतिषु ६४ इति पाठः ।

पुणो उवरिमणिसेयपमाणेण सव्वट्ठिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? बेगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण । तं जहा— दिवड्ढगुणहाणिक्खेत्तं पढमणिसेगविक्खंभेण चत्तारि फालीयो कादूण पुणो तत्थ चउत्थफालिं घेत्तूण गुणहाणिअद्धपमाणेण तिण्णि खंडाणि कादूण परावत्तिय तिण्णं फालीणं पासे ठविदेसु बेगुणहाणीयो होंति [संदृष्टि] अथवा, तेरासियकमेण आणेदव्वं । तं जहा— १६ । १२ । १ । १६ । १२ । ४ । णिसेयभागहारस्स तिण्णि-चदुब्भागमेत्तविसेसे घेत्तूण जदि एगं तदित्थणिसेयपमाणं लब्भदि तो आयामेण दिवड्ढगुणहाणिविक्खंभेण णिसेयभागहारचदुब्भागमेत्तविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए गुणहाणीए अद्धमागच्छदि ४ । पुणो एदम्मि दिवड्ढगुणहाणिम्मि पक्खित्ते दोगुणहाणीयो भवंति १६ । पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे तदित्थणिसेयो आगच्छदि । तदुवरि भागहारे वुच्चमाणे सादिरेय-बे-गुणहाणीयो वत्तव्वाओ । एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ त्ति । पुणो बिदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? तिण्णि गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण । तं जहा— दिवड्ढगुणहाणिक्खेत्तं ठविय [संदृष्टि] अद्धेण

उससे अग्रिम निषेकके प्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशाग्र कितने कालमें अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणसे वह दोगुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा— डेढ़ गुणहानि मात्र क्षेत्रकी प्रथम निषेकके विस्तारप्रमाणसे चार फालियां करके पश्चात् उनमेंसे चतुर्थ फालिको ग्रहण कर गुणहानिके अर्ध प्रमाणसे तीन खण्ड करके परिवर्तनपूर्वक तीन फालियोंके पार्श्व भागमें स्थापित करनेपर दो गुणहानियां होती हैं । (संदृष्टि मूलमें देखिये ।)

अथवा, त्रैराशिकक्रमसे इसे ले आना चाहिये । यथा— निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र विशेषोंको ग्रहण करके यदि वहांके एक निषेकका प्रमाण पाया जाता है, तो आयाम (?) व डेढ़ गुणहानि विष्कम्भसे निषेकभागहारके चतुर्थ भाग मात्र विशेषोंमें वह कितना प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर गुणहानिका अर्ध भाग आता है ।

फिर इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर दो गुणहानियां (१६) होती हैं । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर वहांके निषेकका प्रमाण लब्ध होता है । उससे आगेके भागहारका कथन करनेपर साधिक दो गुणहानियां कहना चाहिये । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह कितने कालसे अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणसे वह तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा— डेढ़ गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको स्थापित करके (संदृष्टि मूलमें देखिये) अर्ध

पाडिय बिदिअद्धस्सुवरि ठविदे तिण्णिगुणहाणीयो होंति । अथवा, दिवड्ढगुणहाणीयो ठवेदूण एगगुणहाणिं चडिय इच्छामो त्ति एगरूवं विरलिय विगं करियं अण्णोण्णब्भत्थे कदे उप्पण्णरासिणा दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए तिण्णिगुणहाणीयो होंति । २४ । पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियगुणहाणीए पढमणिसेगो आगच्छदि ।

पुणो तिस्से चेव बिदियणिसेगपमाणेण सव्वदव्वं सादिरेयतिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— ८ । १५ । १ । ८ । २४ [1] रूवूणणिसेयभागहारमेत्त-गोवुच्छविसेसे घेत्तूण जदि एगपक्खेवसलागा लब्भदि तो तिण्णिगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसे-हिंतो केवडियाओ पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि ८ । ५ । पुणो एदम्मि सरिसच्छेदं कादूण तिसुं[2] गुणहाणीसु पक्खित्ते एत्तियं होदि १२८ । ५ । पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेयो आगच्छदि । एवं [णेदव्वं] जाव बिदियगुणहाणीए अद्धं गदं ति । तदो तण्णिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा—तिण्णिगुणहाणि-क्खेत्तं ठविय पुव्वं व चत्तारिफालीयो कादूण तत्थ तीहि फालीहि तदित्थणिसेओ होदि त्ति चउत्थफाली अधिया होदि । पुणो इममहियफालिं तप्पमाणेण कस्सामो— ८ । १२ ।-

भागसे फाड़कर द्वितीय अर्ध भागके ऊपर रखनेपर तीन गुणहानियां होती हैं। अथवा, डेढ़ गुणहानियोंको स्थापित करके चूंकि एक गुणहानि चढ़े हैं, अतः एक रूपका विरलन करके द्विगुणित कर परस्परमें गुणित करनेपर उत्पन्न राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर तीन गुणहानियां (२४) होती हैं । अब इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक आता है ।

उसी (द्वितीय) गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य साधिक तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा—एक कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छ-विशेषोंको ग्रहणकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त है, तो तीन गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेषोंसे कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होंगी ? इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है—$\frac{२४}{१५} \times १ = \frac{८}{५}$ । अब इसको समच्छेद करके तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर इतना होता है—$२४ + \frac{८}{५} = \frac{१२८}{५}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक आता है—$३०७२ \div \frac{१२८}{५} = १२०$ । इस प्रकार द्वितीय गुणहानिका अर्ध भाग समाप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

पश्चात् उसके आगेके निषेकप्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह चार गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा— तीन गुणहानि मात्र क्षेत्रको स्थापित कर पूर्वके ही समान चार फालियां करके उनमेंसे तीन फालियोंसे वहांका निषेक होता है । अतः चतुर्थ फालि अधिक है । अब इस अधिक फालिको उसके प्रमाणसे करते हैं—

१ अप्रतौ संदृष्टिरियमग्रे '-भागहारमेत्त' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते । २ ताप्रतौ ' तीसु ' इति पाठः ।

१ । ८ । ४ । २४ । णिसेगभागहारतिण्णि-चदुब्भागमेत्तगोवुच्छविसेसे घेत्तूण जदि एगो तदित्थणिसेगो लब्भदि तो एगफालिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि ८ । पुणो एदम्मि तिसु[1] गुणहाणीसु पक्खित्ते चत्तारिगुणहाणीयो होंति ३२ । पुणो एदेण सव्वदव्वे[2] भागे हिदे तदित्थणिसेयो होदि । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव बिदियगुणहाणिचरिमणिसेयो त्ति ।

पुणो तदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण अवहिरिज्जमाणे छगुणहाणिट्ठाणंतरपमाणेण अवहिरिज्जदि । तं जहा—तिण्णिगुणहाणिक्खेत्ते मज्झे पाडिय एगअद्धस्सुवरि बिदियअद्धे जोएदूण[3] ट्ठविदे छगुणहाणीयो होंति । अधवा, बेगुणहाणीओ चडिदाओ त्ति बे रूवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे चत्तारि रूवाणि उप्पज्जंति । पुणो तेहि दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए भागहारो छगुणहाणिमेत्तो होदि ४८ । पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे इच्छिदणिसेयो आगच्छदि ।

पुणो तिस्से गुणहाणीए बिदियणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सादिरेयछगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एत्थ तेरासियकमेण लद्धपक्खेवरूवाणि ४८ । १५ । पुणो एदम्मि सरिसछेदं कादूण छसु गुणहाणीसु पक्खित्ते सादिरेयछगुण-

निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि वहांका एक निषेक प्राप्त होता है, तो एक फालि मात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है—८। इसको तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर चार गुणहानियां होती हैं—२४+८=३२। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर वहांका (द्वि० गु० हा० का पांचवां) निषेक होता है—३०७२÷३२=९६। इस प्रकार जानकर द्वितीय गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये।

तृतीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह छह-गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा—तीन गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको मध्यमें फाड़कर एक अर्ध भागके ऊपर द्वितीय अर्ध भागको जोड़कर स्थापित करनेपर छह गुणहानियां होती हैं। अथवा, चूंकि दो गुणहानियां चढे हैं अतः दो अंकोंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणित करनेपर चार अंक उत्पन्न होते हैं। पश्चात् उनके द्वारा डेढ़ गुणहानियोंको गुणित करनेपर भागहार छह गुणहानि प्रमाण होता है—१२×४=४८ =८×६। इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर अभीष्ट निषेक प्राप्त होता है—३०७२÷४८=६४।

उक्त गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह साधिक छह गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यहां त्रैराशिकक्रमसे प्राप्त प्रक्षेप अंक ये हैं—$\frac{४८}{१५}$। इनको समच्छेद करके छह गुणहानियोंमें मिलाने पर साधिक

१ ताप्रतौ ' तीसु ' इति पाठः। २ अ-आ-ताप्रतिषु ' सव्वदव्वेण ' इति पाठः। ३ प्रतिषु ' लोएदूण ' इति पाठः।

हाणीयो होंति । ७६८ । १५[1] । पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेयो आगच्छदि । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव अग्गट्ठिदिभागहारो त्ति । णवरि अग्गट्ठिदिभागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जओसप्पिणि[2]-उस्सप्पिणिमेत्तो । तस्स पमाणमेदं ३०७२ । ९[3] । एदेण समयपबद्धे भागे हिदे चरिमणिसेयो आगच्छदि । एवं भागहार-परूवणा समत्ता ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो, दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं ति वुत्तं होदि । एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणि-चरिमणिसेगो त्ति । बिदियगुणहाणिपढमणिसेगो सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? तिण्णि गुणहाणीयो । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो त्ति । एवं भागाभागपरूवणा समत्ता ।

सव्वत्थोवं चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ९ । पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासी । तस्स पमाणमेदं २५६ । ९[4] । एदेण चरिमणिसेगे गुणिदे पढमणिसेगो होदि । २५६ ।

छह गुणहानियां होती हैं — $\frac{७६८}{१५}$ + $\frac{४८}{५}$ = $\frac{७६८}{१५}$ = $\frac{५१२}{५}$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय गुणहानिका द्वितीय निषेक आता है — ३०७२ ÷ $\frac{७६८}{१५}$ = ६० । इस प्रकार जानकर अग्रस्थिति भागहार तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि अग्रस्थिति भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंके बराबर है । उसका प्रमाण यह है — $\frac{३०७२}{९}$ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक प्राप्त होता है — ३०७२ ÷ $\frac{३०७२}{९}$ = ९ । इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके कितनेवें भाग प्रमाण है ? उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डमें डेढ़ गुणहानिका भाग देनेपर जो प्राप्त हो (३०७२÷१२=२५६) उतने मात्र वह है, यह उसका अभिप्राय है । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिये । द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके कितनेवें भाग प्रमाण है ? वह उसके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग तीन गुणहानियां हैं । इस प्रकार जानकर अन्तिम गुणहानिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अन्तिम स्थितिका प्रदेशपिण्ड सबसे स्तोक (९) है । प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड उससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि है । उसका प्रमाण यह है — $\frac{२५६}{१}$ । इसके द्वारा अन्तिम

१ अ-आ-ताप्रतिषु ७६८ । ५ । एवंविधात्र संदृष्टिरस्ति । २ अप्रतौ ' भागो असंखेज्जाओसप्पिणि ', आ-काप्रत्योः ' भागो असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि ', ताप्रतौ ' भागो असंखेज्जाओ [संखेज्जाओ] ओसप्पिणि ' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु ३०७३ इति पाठः । ४ का-ताप्रत्योः २५६ । ४ । एवंविधात्र संदृष्टिरस्ति ।

अजहण्णअणुक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सादिरेगेगरूवपरिहीणदिवड्ढगुणहाणी । किं कारणं ? रूवूणदिवड्ढगुणहाणिसलागाहि पढमणिसेगे गुणिदे पढमणिसेयवदिरित्तउवरिमसव्वट्ठिदिदव्वं होदि २८१६ । पुणो एदम्मि चरिमट्ठिदिदव्वेण विणा इच्छिज्जमाणे रूवूणदिवड्ढगुणहाणीए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागमवणिय पढमणिसेगे गुणिदे अजहण्णअणुक्कस्सदव्वं होदि २८०७ । अपढमं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तो विसेसो ? उक्कस्सट्ठिदिदव्वमेत्तो २८१६ । अणुक्कस्सं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो । सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? चरिमट्ठिदिदव्वमेत्तेण । एवं णिसेयपरूवणा समत्ता ।

आबाधकंदयपरूवणदाए ॥ १२१ ॥

किमट्ठमाबाधकंदयपरूवणा आगदा ? किं सव्वट्ठिदिबंधट्ठाणेसु एक्का चेव आबाहा होदि, आहो अण्णण्णा[१] होदि त्ति पुच्छिदे एवं होदि त्ति जाणावणट्ठमाबाहाकंदयपरूवणा

निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेक होता है— $\frac{२५६}{९}$×९ = २५६ । उससे अजघन्यानुत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार साधिक एक अंकसे हीन डेढ़ गुणहानियां हैं ।

शंका— इसका कारण क्या है ?

समाधान— इसका कारण यह है कि एक कम डेढ़गुणहानिशलाओंसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेकसे रहित अग्रिम सब स्थितियोंके द्रव्यका प्रमाण होता है—[२५६×(१२-१)=२८१६=(३०७२—२५६)] ।

अब यदि यह द्रव्य अन्तिम स्थितिके द्रव्यसे रहित अभीष्ट है, तो एक कम डेढ़ गुणहानिमेंसे एक अंकके असंख्यातवें भागको घटाकर शेषसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर अजघन्यअनुत्कृष्ट द्रव्यका प्रमाण होता है—१२-१=११; ११-$\frac{९}{२५६}$=१०$\frac{२४७}{२५६}$; २५६×$\frac{२८०७}{२५६}$= २८०७ । इसकी अपेक्षा प्रथम स्थितिसे हीन सब द्रव्य विशेष अधिक है । विशेष कितना है ? वह उत्कृष्ट अर्थात् अन्तिम स्थितिके द्रव्यके बराबर है—२८०७+९=२८१६ । इससे अनुत्कृष्ट द्रव्य विशेष अधिक है । विशेष कितना है ? वह अन्तिम निषेकसे हीन प्रथम निषेकके बराबर है—(२५६-९=२४७; २८१६+२४७=३०६३) । इससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे वह अधिक है ? वह अन्तिम स्थितिके द्रव्यप्रमाणसे अधिक है—(३०६३+९=३०७२) । इस प्रकार निषेकप्ररूपणा समाप्त हुई ।

आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अधिकार है ॥ १२१ ॥

शंका— आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अवतार किसलिये हुआ है ?

समाधान— सब स्थितिबन्धस्थानोंमें क्या एक ही आबाधा है, अथवा अन्य-अन्य हैं, ऐसा पूछनेपर 'इस प्रकारकी आबाधा-व्यवस्था है' यह बतलानेके लिये आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अवतार हुआ है ।

[१] अ-आ-काप्रतिषु 'अण्णोण्णा', ताप्रतौ 'अण्णा ण' इति पाठः ।

आगदा। एत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेव। पमाणप्पाबहु-आणं संभवो होदु णाम, सुत्तसिद्धत्तादो। सुत्तम्मि असंतीए परूवणाए कधमेत्थ संभवो? ण एस दोसो, परूवणाए विणा पमाणप्पाबहुआणमणुववत्तीदो। तत्थ ताव सुत्तेण सूचिदपरूवणा वुच्चदे। तं जहा—चोद्दसण्णं जीवसमासाणं अत्थि आबाहाकंदयाणि आबाहाट्ठाणाणि च। आबाहाकंदयपरूवणाए कधमाबाहट्ठाणाणि वुच्चंति? ण, आबाहाकंदयपरूवणाए आबाहट्ठाणाविणाभावेण देसामासियत्तमावण्णाए आबाहट्ठाणपरूवणं पडि विरोहाभावादो।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं एइंदियबादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माण-माउववज्जाणमुक्कस्सियादो ट्ठिदीदो समए समए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण एयमाबाहाकंदयं करेदि। एस कमो जाव जहण्णिया ट्ठिदि त्ति[1] ॥ १२२ ॥

समए समए इदि वुत्ते आबाधाए एगेगसमए इदि वुत्तं होदि। उक्कस्साबाहाए

इस आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें तीन अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व।

शंका—प्रमाण और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि, वे सूत्रसे सिद्ध हैं। परन्तु सूत्रमें न पाये जानेवाले प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी सम्भावना यहां कैसे हो सकती है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्ररूपणाके बिना प्रमाण और अल्प-बहुत्वका कथन बन ही नहीं सकता।

उनमें पहिले सूत्रसे सूचित प्ररूपणा अनुयोगद्वारका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है—चौदह जीवसमासोंके आबाधाकाण्डक और आबाधास्थान दोनों हैं।

शंका—आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें आबाधास्थानोंका कथन क्यों किया जा रहा है?

समाधान—नहीं, क्योंकि आबाधाकाण्डकप्ररूपणाका आबाधास्थानप्ररूपणाके साथ अविनाभाव सम्बन्ध है, अतः आबाधास्थानप्ररूपणाके प्रति देशामर्शक भावको प्राप्त हुई आबाधाकाण्डकरूपणामें आबाधास्थानोंका कथन करना विरुद्ध नहीं है।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर व सूक्ष्म एकेन्द्रिय इन पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़ शेष सात कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे समय समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे उतर कर एक आबाधाकाण्डकको करता है। यह क्रम जघन्य स्थिति तक है ॥ १२२ ॥

सूत्रमें 'समए समए' ऐसा कहनेसे आबाधाके एक एक समयमें, ऐसा अभिप्राय

---

१ मोत्तूण आउगाइं समए समए अबाहहाणीए। पल्लासंखियमागं कंडं कुण अप्पबहुमेसिं ॥ क. प्र. १, ८५.

चरिमसमए णिरुद्धे उक्कस्सट्ठिदीदो हेट्ठा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण एयमाबाहाकंदयं करेदि। आबाहचरिमसमयं णिरुंभिदूण उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधदि। तत्तो समऊणं पि बंधदि[1]। एवं दुसमऊणादिकमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे-णूणट्ठिदि त्ति। एवमेदेण आबाहाचरिमसमएण बंधपाओग्गट्ठिदिविसेसाणमेगमाबाहाकंदय-मिदि सण्णा त्ति वुत्तं होदि। आबाधाए दुचरिमसमयस्स णिरुंभणं कादूण एवं चेव बिदियमाबाहाकंदयं परूवेदव्वं। आबाहाए तिचरिमसमयणिरुंभणं कादूण पुव्वं व तदिओ आबाहाकंदओ परूवेदव्वो। एवं णेयव्वं जाव जहण्णिया ट्ठिदि त्ति। एदेण सुत्तेण एगाबाहाकंदयस्स पमाणपरूवणा कदा।

संपहि देसामासियत्तमावण्णेण एदेण सुत्तेण सूचिदाणमाबाहट्ठाणाणमाबाहाकंदय-सलागाणं च पमाणपरूवणा कीरदे। तं जहा— सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि संखेज्जवासमेत्ताणि। सण्णिपंचिंदियअपज्जत्ताणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि अंतोमुहुत्तमेत्ताणि। असण्णिपंचिंदिय-चउरिंदिय-तीइंदिय-

---

समझना चाहिये। उत्कृष्ट आबाधाके अन्तिम समयकी विवक्षा होनेपर उत्कृष्ट स्थितिसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे उतर कर एक आबाधाकाण्डकको करता है। आबाधाके अन्तिम समयको विवक्षित करके उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है। उससे एक समय कम भी स्थितिको बांधता है। इस प्रकार दो समय कम इत्यादि क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे रहित स्थिति तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार आबाधाके इस अन्तिम समयमें बन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी एक आबाधाकाण्डक संज्ञा है, यह अभिप्राय है। आबाधाके द्विचरम समयकी विवक्षा करके इसी प्रकारसे द्वितीय आबाधा-काण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये। आबाधाके त्रिचरम समयकी विवक्षा करके पहिलेके ही समान तृतीय आबाधाकाण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार जघन्य स्थिति तक यही क्रम जानना चाहिये। इस सूत्रके द्वारा एक आबाधाकाण्डकके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है।

अब देशामर्शक भावको प्राप्त हुए इस सूत्रके द्वारा सूचित आबाधास्थानों और आबाधाकाण्डकशलाकाओंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही संख्यात वर्ष प्रमाण हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही अन्तर्मुहूर्त प्रमाण हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय [पर्याप्तक अपर्याप्त]

---

१ ताप्रतौ 'समऊणं बंधदि' इति पाठः।

बीइंदियाणमट्ठण्हं जीवसमासाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयसलगाओ च आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्ताणि। चदुण्णमेइंदियाणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि।

आउअस्स आबाहाकंदयपरूवणा किमट्ठं ण कदा? ण एस दोसो, आउअस्स इमा ट्ठिदी एदीए चेवे आबाहाए बज्झदि त्ति णियमाभावादो। पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण तेत्तीसाउअं बंधदि, समऊणतेत्तीसं पि बंधदि, एवं दुसमऊणं-तिसमऊणादिकमेण पुव्वकोडितिभागाबाहं धुवं कादूण णेदव्वं जाव बंधखुद्दाभवग्गहणं ति। पुणो एदे चेव आउवबंधवियप्पा पुव्वकोडितिभागे[4] समऊणे आबाधत्तणेण णिरुद्धे वि होंति। एवं दुसमऊणादिकमेण णेदव्वं जाव असंखेयद्धा त्ति। जेणेवमणियमो तेण आउअस्स आबाहा-कंदयपरूवणा ण कदा। ण च आबाहाकंदयाणि णत्थि त्ति आबाहट्ठाणाणमसंभवो, तदभावे लिंगाभावादो। तदो आउअस्स णत्थि आबाहाकंदयाणि त्ति सिद्धं।

इन आठ जीवसमासोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डकशलाकायें आवलीके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं। चार एकेन्द्रिय जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं।

शंका— यहां आयु कर्मके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा किसलिये नहीं की गई?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, कारण कि आयुकी यह स्थिति इसी आबाधामें बंधती है, ऐसा कोई नियम नहीं है। पूर्वकोटिके त्रिभागको आबाधा करके तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बांधता है, एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको भी बांधता है; इस प्रकार पूर्वकोटिके त्रिभाग रूप आबाधाको ध्रुव करके दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि क्रमसे बन्ध क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण स्थिति तक ले जाना चाहिये। पूर्वकोटिके एक समय कम त्रिभागको आबाधा रूपसे विवक्षित करनेपर भी ये ही आयुबन्धके विकल्प होते हैं। इसी प्रकार दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि क्रमसे असंख्येयाद्धा काल प्रमाण आबाधा तक ले जाना चाहिये। जिस कारण यहां कोई ऐसा नियम नहीं है, इसीलिये आयुके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गई।

आबाधाकाण्डक चूंकि नहीं हैं, इसलिये आबाधास्थान असम्भव हों; ऐसी कोई बात नहीं है; क्योंकि, उनके अभावमें कोई हेतु नहीं है। इस कारण आयुके आबाधा-काण्डक नहीं हैं, यह सिद्ध है।

१ आप्रतौ 'असंखे०', ताप्रतौ 'असंखे०' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'इमा ट्ठिदीए चेव' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'दुसमऊणा' इति पाठः। ४ अ-आ-ताप्रतिषु 'पुव्वकोडिभागे' इति पाठः। ५ ताप्रतौ 'दुसमयादि-' इति पाठः।

एत्थ अप्पाबहुगपरूवणा किण्ण कीरदे ? ण एस दोसो, उवरि भण्णमाणअप्पाबहु-आणियोगद्दारेण तदवगमादो । एवमाबाधाकंदयपरूवणा समत्ता ।

अप्पाबहुएत्ति ॥ १२३ ॥

जं तं चउत्थमणियोगद्दारमप्पाबहुगमिदि तं[1] वत्तइस्सामो त्ति भणिदं होदि ।

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तण्हं कम्माणमाउववज्जाणं सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा[2] ॥ १२४ ॥

कुदो ? संखेज्जावलियमेत्ता होदूण अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि[3] ॥ १२५ ॥

कुदो ? जहण्णाबाधादो उक्कस्साबाहा संखेज्जगुणा, तेण आबाहट्ठाणाणि वि

शंका— यहां अल्पबहुत्वप्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उसका ज्ञान आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारसे हो जाता है । इस प्रकार आबाधाकाण्डक प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारका अधिकार है ॥ १२३ ॥

जो वह चौथा अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है उसको कहते हैं, यह अभिप्राय है ।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक व अपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ॥ १२४ ॥

इसका कारण यह है कि उक्त आबाधा संख्यात आवली प्रमाण हो करके अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं ॥ १२५ ॥

चूंकि जघन्य आबाधाकी अपेक्षा उत्कृष्ट आबाधा संख्यातगुणी है, इसीलिये आबाधास्थान भी उससे संख्यातगुणे ही हैं ।

शंका— कैसे ?

१ आप्रतौ 'तं' इति नोपलभ्यते । २ एतेषां दशानां स्थानानामल्पबहुत्वमुच्यते— तत्र संज्ञिपंचेन्द्रियेषु पर्याप्तेषु अपर्याप्तकेषु वा बन्धकेषु आयुर्वर्जानां सप्तानां कर्मणां सर्वस्तोका जघन्याबाधा (१) । सा च अन्तर्मुहूर्तप्रमाणा । क. प्र. (मलय. टीका) १, ८६. ३ आप्रतौ 'च तुल्लाणि दो वि संखेज्जगुणाणि' इति पाठः । ततोऽबाधास्थानानि कंडकस्थानानि चासंख्येयगुणानि । तानि तु परस्परं तुल्यानि । तथाहि— जघन्यामबाधामादिं कृत्वोत्कृष्टाऽबाधाचरमसमयमभिव्याप्य यावन्तः समयाः प्राप्यन्ते तावन्त्यबाधास्थानानि भवन्ति । तद्यथा— जघन्याऽबाधा एकमबाधास्थानम् । सैव समयाधिका द्वितीयम् । द्विसमयाधिका तृतीयम् । एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टाबाधाचरमसमयः । एतावन्त्येव चाबाधाकंडकानि, जघन्याबाधात आरभ्य समयं समयं प्रति कंडकस्य प्राप्यमाणत्वात् । एतच्च प्रागेवोक्तम् (२-३) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.

संखेज्जगुणाणि चेव । कधं ? समऊणजहण्णाबाहाए उक्कस्साबाहादो सोहिदाए आबाहट्ठाणुप्पत्तीदो । कधमाबाहट्ठाणेहि आबाहाकंदयसलागाणं सरिसत्तं ? ण एस दोसो, एगेगाबाहट्ठाणस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणमाबाहाकंदयसण्णिदाणं उवलंभेण समाणत्ता ।

उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया[1] ॥ १२६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णाबाहमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि[2] ॥ १२७ ॥

कुदो ? उक्कस्साबाहाओ संखेज्जावलियमेत्ताओ होदूण सण्णीसु पज्जत्तएसु संखेज्जवस्साणि अपज्जत्तएसु अंतोमुहुत्तं होंति । णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पुण असंखेज्जवस्साणि होदूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । तेण उक्कस्सआबाहादो णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि त्ति जुज्जदे ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं[3] ॥ १२८ ॥

समाधान— क्योंकि, उत्कृष्ट आबाधामेंसे एक समय कम जघन्य आबाधाको घटा देनेपर आबाधास्थानोंकी उत्पत्ति होती है ।

शंका— आबाधास्थानोंसे आबाधाकाण्डकशलाकायें समान कैसे हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक एक आबाधास्थान सम्बन्धी जो पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान हैं उनकी आबाधाकाण्डक संज्ञा है; अत एव उनके समानता है ही ।

उनसे उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ॥ १२६ ॥

शंका— वह कितने प्रमाणसे अधिक है ?

समाधान— वह एक समय कम जघन्य आबाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १२७ ॥

कारण कि उत्कृष्ट आबाधायें संख्यात आवली प्रमाण हो करके संज्ञी पर्याप्तक जीवोंमें संख्यात वर्ष और अपर्याप्तकोंमें अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती हैं । परन्तु नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यात वर्ष प्रमाण हो करके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं । अतएव उत्कृष्ट आबाधाकी अपेक्षा नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरोंका असंख्यातगुणा होना उचित ही है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १२८ ॥

---

१ तेभ्य उत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका, जघन्याबाधायास्तत्र प्रवेशात् (४) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.
२ ततो दलिकनिषेकविधौ द्विगुणहानिस्थानानि असंख्येयगुणानि, पल्योपमप्रथमवर्गमूलासंख्येयभागगतसमयप्रमाणत्वात् (५) । क. प्र. (म. टी.) १,८६. ३ तत एकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निषेकस्थानान्यसंख्येयगुणानि, तेषामसंख्येयानि पल्योपमवर्गमूलानि परिमाणमिति कृत्वा (६) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.

कुदो ? असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो ।

एयमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं[1] ॥ १२९ ॥

णाणापदेसगुणहाणिसलागाहि असंखेज्जवस्सपमाणाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमागच्छदि । उक्कस्साबाहाए संखेज्जवस्समेत्ताए अंतोमुहुत्तमेत्ताए च सग-सगुक्कस्सट्ठिदीए ओवट्टिदाए जेणेगमाबाहाकंदयपमाणं होदि, तेणेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरादो एगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणमिदि घेत्तव्वं ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो[2] ॥ १३० ॥

एगमाबाहाकंदयं णाम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, जहण्णट्ठिदिबंधो पुण अंतोकोडाकोडिमेत्तसागरोवमाणि । तेण एगाबाहाकंदयादो जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो जादो ।

ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[3] ॥ १३१ ॥

जहण्णट्ठिदिबंधादो उक्कस्सट्ठिदिबंधो जेण संखेज्जगुणो तेण ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि वि

क्योंकि, वे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर हैं ।

एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है ॥ १२९ ॥

असंख्यात वर्ष प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एकगुणहानिस्थानान्तर लब्ध होता है । संख्यात वर्ष मात्र व अन्तर्मुहूर्त मात्र उत्कृष्ट आबाधाका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर चूंकि एक आबाधाकाण्डकका प्रमाण होता है, अत एव एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरकी अपेक्षा एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ॥ १३० ॥

चूंकि एक आबाधाकाण्डक पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, परन्तु जघन्य स्थितिबन्ध अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपमों प्रमाण है; अत एव एक आबाधाकाण्डककी अपेक्षा जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा हो जाता है ।

स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १३१ ॥

चूंकि जघन्य स्थितिबन्धकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है, अतः उससे

१ तेभ्योऽपि अर्थेन कंडक- [पंचसंग्रहे पुनरेतस्य स्थानेऽबाधाकंडकमित्येतदेवोपलभ्यते] मसंख्येयगुणम् (७) । क. प्र. (म. टी.) १,८६. २ तस्माज्जघन्यः स्थितिबन्धोऽसंख्येयगुणः, अन्तःसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणत्वात् । संज्ञिपचेन्द्रिया हि श्रेणिमनारूढा जघन्यतोऽपि स्थितिबन्धमन्तःसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणमेव कुर्वन्ति (८) । क. प्र. (म. टी.) १,८६. ३ ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानानि संख्येयगुणानि (९) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.

संखेज्जगुणाणि चेव, समऊणजहण्णट्ठिदिबंधेणूणउक्कस्सट्ठिदिबंधस्सेव ट्ठिदिबंधट्ठाणववएसादो।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १३२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधमेत्तेण ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणमाउअस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा[२] ॥ १३३ ॥

कुदो ? आउअं बंधिय समयाहियसव्वजहण्णविस्समणकालग्गहणादो ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ १३४ ॥

कुदो ? खुद्दाभवग्गहणपमाणत्तादो ।

आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ १३५ ॥

स्थितिबन्धस्थान भी संख्यातगुणे ही होने चाहिये, क्योंकि एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धसे रहित उत्कृष्ट स्थितिबन्धकी ही स्थितिबन्धस्थान संज्ञा है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध उससे विशेष अधिक है ॥ १३२ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे वह अधिक है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ॥ १३३ ॥

क्योंकि, यहां आयुको बांधकर एक समय अधिक सर्वजघन्य विश्रमणकालका ग्रहण है ।

उससे जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १३४ ॥

क्योंकि, वह क्षुद्रभवग्रहणके बराबर है ।

उससे आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १३५ ॥

---

१ तेभ्य उत्कृष्टा स्थितिर्विशेषाधिका, जघन्यस्थितेरबाधायाश्च तत्र प्रवेशात् । क. प्र. (म. टी.) १,८६.
२ तथा संज्ञिपंचेन्द्रियेष्वसंज्ञिपंचेन्द्रियेषु वा पर्याप्तकेषु प्रत्येकमायुषो जघन्याबाधा सर्वस्तोका (१) । ततो जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः । स च क्षुल्लकभवरूपः (२) । ततोऽबाधास्थानानि संख्येयगुणानि । जघन्याबाधारहितः पूर्वकोटित्रिभाग इति कृत्वा (३) । ततोऽप्युत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका, जघन्याबाधाया अपि तत्र प्रवेशात् (४) । ततो द्विगुणहानिस्थानान्यसंख्येयगुणानि, पल्योपमप्रथमवर्गमूलासंख्येयभागगतसमयप्रमाणत्वात् (५) । तेभ्योऽप्येकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निषेकस्थानान्यसंख्येयगुणानि (६) । तत्र युक्तिः प्रागुक्ता वक्तव्या । ततः स्थितिबन्धस्थानान्यसंख्येयगुणानि (७) । तेभ्योऽप्युत्कृष्टः स्थितिबन्धो विशेषाधिकः, जघन्यस्थितेरबाधायाश्च तत्र प्रवेशात् (८) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो णाम अंतोमुहुत्तमेत्तो[1], आबाहाट्ठाणाणि पुण संखेज्जपमाण-पुव्वकोडितिभागमेत्ताणि; तेण जहण्णट्ठिदिबंधादो आबाहट्ठाणाणं संखेज्जगुणत्तं णव्वदे ।

उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ॥ १३६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णाबाहमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १३७ ॥

पुव्वकोडितिभागं पेक्खिदूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १३८ ॥

कुदो ? पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतर-सलागाहि असंखेज्जपलिदोवमवग्गमूलमेत्तएगपदेसगुणहाणीए ओवट्टिदाए असंखेज्जरूवुवलंभादो ।

ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १३९ ॥

कुदो ? एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं णाम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, ठिदिबंध-ट्ठाणाणि पुण संखेज्जसागरोवममेत्ताणि पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागो[3] च; तेण एगपदेसगुण-

---

जघन्य स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, परन्तु आबाधास्थान संख्यात प्रमाण [जघन्य आबाधासे रहित] पूर्वकोटित्रिभाग मात्र हैं; इसीसे जाना जाता है कि जघन्य स्थितिबन्धकी अपेक्षा आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं ।

उनसे उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ॥ १३६ ॥

कितने प्रमाणसे वह अधिक है ? एक समय कम जघन्य आबाधाके प्रमाणसे वह विशेष अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १३७ ॥

क्योंकि, पूर्वकोटित्रिभागकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानागुण-हानिशलाकाओंके असंख्यातगुणत्व पाया जाता है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १३८ ॥

क्योंकि, पल्योपम सम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग मात्र नानाप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तरशलाकाओंका पल्योपमके असंख्यात वर्गमूलोंके बराबर एकप्रदेश-गुणहानिमें भाग देनेपर असंख्यात अंक पाये जाते हैं ।

स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ १३९ ॥

क्योंकि, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, परन्तु स्थितिबन्धस्थान संख्यात सागरोपम मात्र व पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं; इस कारण

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'मेत्ता' इति पाठः । २ प्रतिषु 'असंखेज्ज' इति पाठः । ३ अ-आप्रत्योः 'पलिदोवमस्स संखे० भागो' इति पाठः ।

हाणिट्ठाणंतरादो ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि त्ति[1] घेत्तव्वं ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १४० ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधमेत्तेण ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं एइंदियबादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाणमाउअस्स[2] सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा[3] ॥ १४१ ॥

आउअं बंधिय समयाहियसव्वजहण्णविस्समणकालग्गहणादो ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ १४२ ॥

कुदो ? बंधखुद्दाभवग्गहणादो ।

आबाहट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ १४३ ॥

सग-सगउक्कस्साउआणं तिभागस्स समऊणजहण्णाबाहाए परिहीणस्स गहणादो ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरकी अपेक्षा स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १४० ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे वह विशेष अधिक है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकों तथा चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एवं सूक्ष्म एकेन्द्रिय, इन पर्याप्त-अपर्याप्तोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ॥ १४१ ॥

क्योंकि, यहां आयुको बांधकर एक समयसे अधिक सर्वजघन्य विश्रमणकालका ग्रहण है ।

जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १४२ ॥

क्योंकि, यहां बन्धक्षुद्रभवका ग्रहण है ।

आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १४३ ॥

क्योंकि, एक समय कम जघन्य आबाधासे हीन अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुओंके त्रिभागका यहां ग्रहण है ?

१ ताप्रतौ 'असंखेज्जगुणात्ति' इति पाठः । २ प्रतिषु 'सुहुमपज्जत्तयाण-' इति पाठः । ३ तथा पंचेन्द्रियेषु संज्ञिष्वसंज्ञिष्वपर्याप्तेषु चतुरिन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय-बादरसूक्ष्मैकेन्द्रियेषु च पर्याप्तापर्याप्तेषु प्रत्येकमायुषः सर्वस्तोका जघन्याबाधा (१) । ततो जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः, स च क्षुल्लकभवरूपः (२) । ततोऽबाधास्थानानि संख्येयगुणानि (३) । ततोऽप्युत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका (४) । ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानानि संख्येयगुणानि, जघन्यस्थितिन्यूनपूर्वकोटिप्रमाणत्वात् (५) । तत उत्कृष्टः स्थितिबन्धो विशेषाधिकः, जघन्यस्थितेराबाधायाश्च तत्र प्रवेशात् (६) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.

उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ॥ १४४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णाबाहामेत्तेण ।

ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ १४५ ॥

कुदो ? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधेणूणपुव्वकोडिग्गहणादो ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १४६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधमेत्तेण ।

पंचिंदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणं आउववज्जाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि[1] ॥ १४७ ॥

कुदो ? आवलियाए संखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ।

उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ॥ १४४ ॥

वह कितने मात्र विशेषसे अधिक है ? वह एक समय कम जघन्य आबाधा मात्रसे अधिक है ।

स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १४५ ॥

क्योंकि, एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धसे हीन पूर्वकोटिका ग्रहण है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १४६ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? वह एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे विशेष अधिक है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय पर्याप्तक-अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं ॥ १४७ ॥

क्योंकि, वे आवलीके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

---

१ तथाऽसंज्ञिपंचेन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय-सूक्ष्मबादरैकेन्द्रियेषु पर्याप्तापर्याप्तेष्वायुर्वर्जानां सप्तानां कर्मणां प्रत्येकमबाधास्थानानि कंडकानि च स्तोकानि परस्परं च तुल्यानि, आवलिकाऽसंख्येयभागगतसमयप्रमाणत्वात् (१-२) । ततो जघन्याबाधाऽसंख्येयगुणा, अन्तर्मुहूर्तप्रमाणत्वात् (३) । ततोऽप्युत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका, जघन्याबाधाया अपि तत्र प्रवेशात् (४) । ततो द्विगुणहीनानि (हानि) स्थानान्यसंख्येयगुणानि (५) । तत एकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निषेकस्थानान्यसंख्येयगुणानि (६) । ततोऽर्थेन कंडकमसंख्येयगुणम् (७) । ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानान्यसंख्येयगुणानि, पल्योपमा (ऽ) संख्येयभागगतसमयप्रमाणत्वात् (८) । ततोऽपि जघन्यस्थितिबन्धोऽसंख्येयगुणः (९) । ततोऽप्युत्कृष्टस्थितिबन्धो विशेषाधिकः, पल्योपमासंख्येयभागेनाभ्यधिकत्वादिति (१०) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.

जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा ॥ १४८ ॥

कुदो ? संखेज्जावलियमेत्तजहण्णाबाहाए आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तआबाहट्ठाणेहि भागे हिदाए संखेज्जरूवोवलंभादो ।

उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ॥ १४९ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५० ॥

कुदो ? संखेज्जावलियमेत्तउक्कस्साबाहाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरेसु अवहिरिदेसु असंखेज्जरूवोवलंभादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १५१ ॥

कुदो ? पलिदोवमच्छेदणाणं संखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिसलागाहि असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तएयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरे भागे हिदे असंखेज्जरूवोवलंभादो ।

एयमाबाधाकंदयमसंखेज्जगुणं ॥ १५२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उक्कस्साबाहाए ओवट्टिदणाणागुणहाणिसलागाओ वा ।

जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है ॥ १४८ ॥

क्योंकि, संख्यात आवलियों प्रमाण जघन्य आबाधामें आवलीके संख्यातवें भाग मात्र आबाधास्थानोंका भाग देनेपर संख्यात अंक प्राप्त होते हैं ।

उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ॥ १४९ ॥

कितने मात्रसे वह विशेष अधिक है ? वह आवलीके संख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १५० ॥

क्योंकि, संख्यात आवली प्रमाण उत्कृष्ट आबाधाका पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरोंमें भाग देनेपर असंख्यात अंक लब्ध होते हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १५१ ॥

क्योंकि, पल्योपमके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भाग प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिशलाकाओंका पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरमें भाग देनेपर असंख्यात अंक लब्ध होते हैं ।

एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है ॥ १५२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग अथवा उत्कृष्ट आबाधासे अपवर्तित नानागुणहानिशलाकायें हैं ।

ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जरूवोवट्टिदसगुक्कस्साबाहा ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ १५४ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १५५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तेण ।

एइंदियबादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तण्हं कम्माणं आउववज्जाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि ॥ १५६ ॥

कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ।

जहण्णिया आबाहा असंखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तआबाहट्ठाणेहि संखेज्जावलियमेत्तजहण्णाबाहाए ओवट्टिदाए आवलियाए[1] असंखेज्जदि-भागुवलंभादो ।

स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ १५३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात अंकोंसे अपवर्तित अपनी उत्कृष्ट आबाधा है ।

जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १५५ ॥

वह कितने मात्रसे विशेष अधिक है ? वह पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

बादर और सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं ॥ १५६ ॥

क्योंकि, वे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है ॥ १५७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण आबाधास्थानोंका संख्यात आवली मात्र जघन्य आबाधामें भाग देनेपर आवलीका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

---

१ ताप्रतौ 'आवलियाए' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते ।

उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ॥ १५८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५९ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उक्कस्साबाहोवट्टिदणाणागुणहाणि-सलागाओ वा ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १६० ॥

सुगममेदं ।

एयमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं ॥ १६१ ॥

एदं पि सुगमं ।

ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १६२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ॥ १६३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १६४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । संपहि एदेण अप्पाबहुअसुत्तेण

उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ॥ १५८ ॥

विशेष कितना है ? वह आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग अथवा उत्कृष्ट आबाधासे अपवर्तित नानागुणहानिशलाकायें हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १६० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है ॥ १६१ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ १६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ॥ १६३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १६४ ॥

वह कितने मात्रसे विशेष अधिक है ? वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

सूचिदाणं सत्थाण-परत्थाणअप्पाबहुआणं परूवणं कस्सामो। सत्थाणे पयदं— पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं सण्णीणं सव्वत्थोवा आउअस्स जहण्णिया आबाहा। जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। णामा-गोदाण-माबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणा आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहि-याणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहा-कंदयाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि[1]। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि। उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। आउअस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि। णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि। चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि। अट्ठण्णं कम्माणं एगपदेसगुण-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं। सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं। आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

अब इस अल्पबहुत्वसूत्रसे सूचित स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है। जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। नाम व गोत्रके आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयके आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य असंख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। आयु कर्मके नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं। नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। मोहनीयके नानाप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। आठ कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यात-गुणा है। सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है। आयुके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। मोहनीयका जघन्य

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'संखेज्जगुणाणि' इति पाठः।

मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमपज्जत्तयाणमाउअस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जयण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिआ । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स वग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं

स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । नाम-गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है । गुणकार पल्योपमके वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात

कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जावलियाओ गुणगारो । आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति णिक्खेवा-इरियो भणदि । किंतु सो एत्थ ण उत्तो, बहुवेहि आइरिएहि असम्मदत्तादो[1] । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

पंचिंदियाणं असण्णीणं पज्जत्तयाणं णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणं आबाहाट्ठाणाणि आबाहकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्ज-गुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पल्योपमके असंख्यात वर्गमूल प्रमाण है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात आवलियां हैं । गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, ऐसा निक्षेपाचार्य कहते हैं । किन्तु उसे यहां नहीं कहा गया है, क्योंकि, वह बहुतसे आचार्योंको इष्ट नहीं है । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार अन्तर्मुहूर्त है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके नाम व गोत्रके आबाधास्थान एवं आबाधा-काण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यात-गुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष

१ अप्रतौ 'असम्मदत्तादो', आप्रतौ 'असम्मुदत्तादो', काप्रतौ 'असम्मुदत्तादो' इति पाठः ।

मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । अट्ठण्णं कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? असंखेज्जपलिदोवम-पढमवग्गमूलाणि । सत्तण्हं कम्माणमेयमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? णाणागुण-हाणिसलागाणमसंखेज्जदिभागो । आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयाण णामा-गोदाणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च

अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमके वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । चार कर्मोंके नाना-प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । आठ कर्मोंके एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल हैं । सात कर्मोंका आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार नानागुणहानिशलाकाओंका असंख्यातवां भाग है । आयुके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार अन्तर्मुहूर्त है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है चार कर्मोंका जघन्द स्थितिबन्धविशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक

दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । उवरि सेसपदाणमसण्णिपंचिंदियपज्जत्तभंगो ।

बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्तयाणं णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव जहण्णओ

दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उनकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । आगे शेष पदोंकी प्ररूपणा असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीका जघन्य

ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । सेसपदाणमसण्णिपंचिंदियअपज्जत्तभंगो ।

एदेसिं चेव अपज्जत्ताणं असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तभंगो । बादरेइंदियपज्जत्तएसु णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माण-माबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहा-ट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि

स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

इन्हीं द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी प्ररूपणा असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध

संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा

विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट

विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

परत्थाणे पयदं— सुहुमेइंदियअपज्जत्तयाण णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । बादरएइंदियअपज्जत्तयाणं णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं आबाहाट्ठाणाणि

आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका अधिकार है — सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम व गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार

आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण-माबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माण-माबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि[1] । बादरेइंदियपज्जत्त-यस्स णामा-गोदाणं आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च

कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'असंखेज्जगुणाणि', ताप्रतौ स्वीकृतपाठ एव ।

दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि

अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य

विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । चोद्दसण्हं जीवसमासाणमाउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सत्तण्णमपज्जत्ताणं जीवसमासाणमाउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवं सेसपदाणि विसेसाहियाणि त्ति वत्तव्वाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स

विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यात गुणे हैं । चौदह जीवसमासोंके आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थिति-बन्ध संख्यातगुणा है । सात अपर्याप्त जीवसमासोंके आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके आयु कर्मके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके [नाम-गोत्रकी] उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार उसके शेष पद विशेष अधिक हैं, ऐसा कहना चाहिये । बादर

मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । सेसाणि सत्त पदाणि विसेसाहियाणि । बेइंदियपज्जत्तयाणं णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । बेइंदियअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तेसिं चेव उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाण उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स[1] णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स [णामा-गोदाणं] उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स

एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसके शेष सात पद विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उनकी ही उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके [नाम गोत्रकी] उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक

[1] ताप्रतौ 'तस्सेव [अ] पज्ज०' इति पाठः ।

मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव चउरिंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। चउरिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं

है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसी चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके

जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव णामा-गोदाणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स [आउअस्स] आबाहट्ठाणाणि [संखेज्जगुणाणि] । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि

चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके नाम गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके नाम गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके [आयुके] आबाधास्थान [संख्यातगुणे हैं]। उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य

संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरएइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । पंचिंदियसण्णि-असण्णीणं पज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बारसण्णं जीवसमासाणमाउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणमाउअस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि । सुहुमेइंदियअपज्जत्ताण णामा-गोदाणं णाणापदेसगुहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । बादरेइंदियअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । बादरे-इंदियपज्जत्ताण णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । बादरएइंदिय-अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । बादरेइंदिय-पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-

संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुके आबाधास्थान विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्तक जीवोंके आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बारह जीवसमासोंके आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुके नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम गोत्रके नाना-प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं ।

अपज्जत्तयस्स[1] मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। बादरएइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। बेइंदियअपज्जत्तयस्स[2] मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स[3] मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। चउरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि। सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणमाउअस्स णाणापदेसगुणहा-

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नामगोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुके नानाप्रदेशगुण-

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पज्ज०', ताप्रतौ '[अ] पज्ज०' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'बेइंदियपज्ज०' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अपज्ज०' इति पाठः।

णिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहा-णिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहा-णिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणं-तराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणं-तराणि विसेसाहियाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणं-तराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणं-तराणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणं-तराणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसा-हियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेस-

---

हानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेश-गुण-हानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर विशेष अधिक हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं। मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं।

गुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । अट्ठण्णं कम्माणं एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । सत्तण्णं कम्माण-मेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । बादरएइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।

मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं। आठ कर्मोंका एकप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है। सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यात-गुणा है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थिति-बन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थिति-बन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थिति-बन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थिति-बन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके

चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चउरिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स[1] णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'बादरएइंदियपज्ज०' इति पाठः ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ[1] ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ

पर्याप्तकके नाम गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

१ ताप्रतौ 'जह०' इति पाठः ।

ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्हं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट

चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयुके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा

१ अ-आ-का-प्रतिष्वनुपलभ्यमानं वाक्यमिदं मप्रतितोऽत्र योजितम्।

विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदिय-पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदि-बंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो

..

है । उसीके अपर्याप्तकके नाम गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष

विसेसाहिओ। चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।

संपहि सुत्तंतोणिलीणस्स एदस्स अप्पाबहुगस्स विसमपदाणं भंजणप्पिया पंजिया[1] उच्चदे। तं जहा—तिण्णिवाससहस्समाबाहं काऊण समऊण-बिसमऊणादिकमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं जाव ओसारिय बंधदि ताव णिसेगट्ठिदी च ऊणा होदि। कुदो? एदेसु ट्ठिदिबंधविसेसेसु उक्कस्साबाहं मोत्तूण अण्णाबाहाणमभावादो। पुणो संपुण्णआबाहाकंदएणूणउक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणस्स आबाहा समऊणतिण्णिवाससहस्समेत्ता होदि, पुव्विल्लाबाहाचरिमसमए पढमणिसेयो पडिदो त्ति तस्स णिसेयट्ठिदीए अंतब्भावादो। समऊणाबाहाकंदएणूणउक्कस्सट्ठिदिबंधे संपुण्णाबाहाकंदएणूणउक्कस्सट्ठिदिबंधे च णिसेय-ट्ठिदीयो समाणाओ, पुव्विल्लाबाधादो संपहिआबाधाए समऊणत्तुवलंभादो। पुणो[2] समऊण-तिण्णिवाससहस्साणि आबाहभावेण धुवं करिय समऊण-बिसमऊणादिकमेण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि ओसरिय बंधदि ताव णिसेयट्ठिदी चेव

अधिक है। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।

अब सूत्रके अन्तर्गत इस अल्पबहुत्वके विषम पदोंकी भंजनात्मक पंजिकाको कहते हैं। यथा, तीन हजार वर्ष मात्र आबाधा करके एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक नीचे हटकर स्थितिको जब तक बांधता है तब तक निषेकस्थिति ही कम होती जाती है, क्योंकि, इन स्थितिबन्धोंमें उत्कृष्ट आबाधाके अतिरिक्त अन्य आबाधाओंकी सम्भावना नहीं है। पश्चात् सम्पूर्ण आबाधाकाण्डकसे रहित उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जीवके आबाधाका प्रमाण एक समय कम तीन हजार वर्ष होता है, क्योंकि पूर्वोक्त आबाधाके अन्तिम समयमें चूंकि प्रथम निषेक आचुका है अतः वह निषेक स्थितिमें गर्भित है। एक समय कम आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिबन्धमें तथा सम्पूर्ण आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिबन्धमें निषेक स्थितियां समान हैं, क्योंकि, पहिलेकी आबाधासे इस समयकी आबाधा एक समय तक पायी जाती है। फिर एक समय कम तीन हजार वर्षोंको आबाधा रूपसे स्थिर करके एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि क्रमसे जब तक पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान नीचे हटकर स्थितिको बांधता है तब तक केवल निषेक स्थिति ही

---

१ कारिका स्वल्पवृत्तिस्तु सूत्रं सूचनकं स्मृतम्। टीका निरन्तरं व्याख्या पञ्जिका पदभञ्जिका॥ प्रमेयर० (वैजेयप्रियपुत्रस्येत्यादिश्लोकस्य टिप्पण्याम्) पिञ्ज्यतेऽर्थोऽस्यामिति 'पिजि भाषार्थः' अस्माच्चौरादिकाद्धिकरणे "गुरोश्च हलः" इत्यप्रत्यये, पृषोदरत्वादिकारस्याकारे स्वार्थे कनि च, पिञ्जयतीति विग्रहे तु क्वनि वा पञ्जिका—निश्शेषपदस्य व्याख्या। अमरकोष ३, ५, ७. (रसालाख्या टीका)
२ प्रतिषु 'पुण' इति पाठः।

ऊणा होदि, समऊणुक्कस्साबाधाए तत्थ धुवभावेण अवट्ठाणदंसणादो। पुणो बिदिय-आबाधाकंडयमेत्तमोसरिय बंधे उक्कस्साबाहा दुसमऊणा होदि। कुदो? समउत्तरट्ठिदि-बंधणिसेगट्ठिदीहि सह समऊणट्ठिदिबंधणिसेगट्ठिदीणं समाणत्तुवलंभादो। पुणो एत्तो समऊण-दुसमऊणादिकमेण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणट्ठिदिं बंधदि ताव दुसमऊणतिण्णिवाससहस्समेत्ता आबाहा होदि। संपुण्णेसु आबाहाकंदएसु परिहीणेसु[1] तिसमऊणतिण्णिवाससहस्समेत्तआबाहा होदि। एवं समऊणाबाहाकंदयमेत्ताओ ट्ठिदीयो जाव परिहायंति ताव एक्का चेव आबाहा होदूण पुणो संपुण्णेगाबाहाकंदयमेत्तट्ठिदीसु परिहीणासु पुव्विल्लाबाहादो संपहियाबाहा समऊणा होदि त्ति सव्वत्थ वत्तव्वं। एदेण कमेण ओदारेदव्वं जाव जहण्णाबाहा जहण्णणिसेयट्ठिदी च चिट्ठदि त्ति।

जहण्णट्ठिदिबंधादो समउत्तरादिकमेण जाव समऊणाबाहाकंदयमेत्तट्ठिदीयो बड्ढिदूण बंधदि ताव आबाहा जहण्णिया चेव होदि। पुणो संपुण्णमेगमाबाहाकंदयमेत्तं वड्ढिदूण बंधमाणस्स आबाहा जहण्णाबाहादो समउत्तरा होदि। आबाहावड्ढिदसमए णिसेगट्ठिदी ण वड्ढदि, अक्कमेण दोण्णं ट्ठिदीणं वड्ढिप्पसंगादो। दोसु समएसु जुगवं वड्ढिदेसु[2] को

उत्तरोत्तर कम होती जाती है, क्योंकि, उनमें एक समय कम उत्कृष्ट आबाधाका ध्रुव स्वरूपसे अवस्थान देखा जाता है। पश्चात् द्वितीय आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितिबन्ध-स्थान नीचे हटकर जो स्थितिबन्ध होता है, उसमें उत्कृष्ट आबाधा दो समय कम होती है, क्योंकि, एक समय अधिक स्थितिबन्धोंकी निषेक स्थितियोंके साथ एक समय कम स्थितिबन्धकी निषेकस्थितियोंकी समानता पायी जाती है। इसके आगे एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि क्रमसे जब तक पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन स्थितिको बांधता है तब तक आबाधा दो समय कम तीन हजार वर्ष प्रमाण होती है। सम्पूर्ण आबाधा-काण्डकोंके हीन होनेपर आबाधा तीन समय कम तीन हजार वर्ष मात्र होती है। इस प्रकार जब तक एक समय कम आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियां हीन होती हैं तब तक एक ही आबाधा होती है। पश्चात् सम्पूर्ण एक आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियोंके हीन हो जानेपर पहिलेकी आबाधासे इस समयकी आबाधा एक समय कम होती है, ऐसा सर्वत्र कथन करना चाहिये। इस क्रमसे जब तक जघन्य आबाधा और जघन्य निषेकस्थिति प्राप्त नहीं होती तब तक नीचे उतारना चाहिये।

जघन्य स्थितिबन्धसे एक समय अधिक, दो समय अधिक, इत्यादि क्रमसे जब तक एक समय कम आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियां वृद्धिंगत होकर बन्ध होता है तब तक आबाधा जघन्य ही होती है। पुनः सम्पूर्ण एक आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियोंके वृद्धिगत होनेपर स्थितिको बाँधनेवाले जीवके जघन्य आबाधाकी अपेक्षा एक समय अधिक आबाधा होती है। आबाधाकी वृद्धिके समयमें निषेकस्थितिकी वृद्धि नहीं होती, क्योंकि, वैसा होनेपर एक साथ दोनों स्थितियोंकी वृद्धिका प्रसंग आता है।

शंका—दो समयोंकी एक साथ वृद्धि होनेपर क्या दोष है?

१ प्रतिषु 'परिहीणेसु' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'वड्ढिदे' इति पाठः।

दोसो ? ण, जहण्णट्ठिदिमुक्कस्सट्ठिदिम्हि सोहिय रूवे पक्खित्ते ट्ठिदिबंधट्ठाणाणमणुप्पत्तिप्पसंगादो। ण च एवं, ट्ठिदिबंधट्ठाणसुत्तेण सह विरोहादो। एवं कदे अन्तोमुहुत्तूणतिण्णिवाससहस्समेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि लद्धाणि[1] होंति। जत्तियाणि आबाहाट्ठाणाणि तत्तियाणि चेव आबाहाकंदयाणि लब्भंति। णवरि अंतिममाबाहकंदयमेगरूवूणं[3]। कुदो ? जहण्णट्ठिदिजहण्णाबाहाए चरिमसमयस्स सव्वणिसेगट्ठिदीसु परिहीणासु जहण्णट्ठिदिग्गहणादो।

मोहणीयस्स अंतोमुहुत्तूणसत्तवाससहस्समेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च हवंति। एत्थ आबाहाकंदएसु एगरूवअवणयणस्स कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवमूणिदे आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च तुल्लाणि त्ति अप्पाबहुगसुत्तेण विरोहो किण्ण होदि त्ति उत्ते, ण, वीचारट्ठाणेसु उप्पण्णआबाहाकंदयसलागाणं तेहि समाणत्तं पडि विरोहाभावादो।

णामा-गोदाणमंतोमुहुत्तूणबेवाससहस्समेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि हवंति।

समाधान—नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेसे उत्कृष्ट स्थितिमेंसे जघन्य स्थितिको कम करके एक अंक मिलानेपर स्थितिबन्धस्थानोंकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, स्थितिबन्धस्थान सूत्रके साथ विरोध आता है।

इस प्रकार करनेपर अन्तर्मुहूर्तसे रहित तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधास्थान प्राप्त होते हैं। जितने आबाधास्थान प्राप्त हैं उतने ही आबाधाकाण्डक प्राप्त होते हैं। विशेष इतना है कि अन्तिम आबाधाकाण्डक एक अंकसे हीन होता है, क्योंकि, जघन्य स्थिति सम्बन्धी जघन्य आबाधाके अन्तिम समयकी सब निषेकस्थितियोंकी हानि हो जानेपर जघन्य स्थितिका ग्रहण किया गया है।

मोहनीय कर्मके अन्तर्मुहूर्तसे हीन सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक होते हैं। यहाँ आबाधाकाण्डकोंमेंसे एक अंक कम करनेका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये।

शंका—इस प्रकार कम करनेपर 'आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों तुल्य हैं' इस अल्पबहुत्वसूत्रके साथ विरोध क्यों नहीं होगा ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि उससे विरोध नहीं होगा, क्योंकि, वीचारस्थानोंमें उत्पन्न आबाधाकाण्डकशलाकाओंकी उनके साथ समानतामें कोई विरोध नहीं है।

नाम व गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक अन्तर्मुहूर्त कम दो हजार वर्ष प्रमाण हैं।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'ट्ठिदीहि' इति पाठः। २ अ-आ-का प्रतिषु 'अद्धाणि' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'रूवाणं' इति पाठः।

आउअस्स अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडितिभागमेत्ताणि आबाहट्ठाणाणि । आबाहाकंदयाणि पुण णत्थि । कारणं चिंतिय वत्तव्वं ।

जेणेवंविहमाबाहाकंदयं तेणेगाबाहाकंदएण समऊणजहण्णट्ठिदिमोवट्टिय लद्धम्मि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया आबाहा आगच्छदि । अधवा, जहण्णाबाहाए आबाहाट्ठाण-गुणिदएगाबाहाकंदए भागे हिदे जं लद्धं तेणे ट्ठिदिबंधट्ठाणेसु भागे हिदे जहण्णिया आबाहा आगच्छदि । अधवा, जहण्णाबाहाए उक्कस्साबाहमोवट्टिय लद्धेण एगमाबाहाकंदयं गुणिय तेण उक्कस्सट्ठिदीए भागे हिदाए जहण्णियाबाहा होदि ।

एक्केण आबाहाकंदएण ट्ठिदिबंधट्ठाणेसु भागे हिदेसु आबाहट्ठाणाणि आगच्छंति । जहण्णाबाहमुक्कस्साबाहादो सोहिदे सुद्धसेसमाबाहट्ठाणविसेसो णाम । एक्केणाबाहाकंदएण उक्कस्सट्ठिदीए भागे हिदाए उक्कस्साबाहा होदि । एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरेण कम्मट्ठिदिम्हि भागे हिदे णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि आगच्छंति । णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरेहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं होदि । उक्कस्सियाए आबाहाए उक्कस्स-ट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगमाबाहाकंदयं होदि । अधवा, आबाहाट्ठाणेहि ट्ठिदिबंधट्ठाणेसु ओवट्टिदेसु एगमाबाहकंदयं होदि । जहण्णियाए आबाहाए एगमाबाहाकंदयं गुणिय पुणो

आयुके आबाधास्थान अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण हैं । उसके आबाधाकाण्डक नहीं होते । इसका कारण विचारपूर्वक कहना चाहिये ।

जिस कारण इस प्रकारका आबाधाकाण्डक है इसीलिये एक आबाधाकाण्डकका एक समय कम जघन्य स्थितिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसमें एक अंक मिला देनेपर जघन्य आबाधाका प्रमाण आता है । अथवा, जघन्य आबाधाका आबाधास्थानोंसे गुणित एक आबाधाकाण्डकमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसका स्थितिबन्धस्थानोंमें भाग देनेसे जघन्य आबाधा आती है । अथवा, उत्कृष्ट आबाधामें जघन्य आबाधाका भाग देकर जो प्राप्त हो उससे एक आबाधाकाण्डकको गुणित करना चाहिये । पश्चात् प्राप्त राशिका उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर जघन्य आबाधाका प्रमाण आता है ।

स्थितिबन्धस्थानोंमें एक आबाधाकाण्डकका भाग देनेपर आबाधास्थानोंका प्रमाण आता है । उत्कृष्ट आबाधामेंसे जघन्य आबाधाको कम करनेपर जो शेष रहे वह आबाधास्थानविशेष कहलाता है । उत्कृष्ट स्थितिमें एक आबाधाकाण्डकका भाग देनेपर उत्कृष्ट आबाधाका प्रमाण आता है । कर्मस्थितिमें एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका भाग देनेपर नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका प्रमाण आता है । नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका प्रमाण आता है । उत्कृष्ट स्थितिमें उत्कृष्ट आबाधाका भाग देनेपर आबाधाकण्डकका प्रमाण होता है । अथवा, स्थितिबन्धस्थानोंमें आबाधास्थानोंका भाग देनेपर एक आबाधाकाण्डकका प्रमाण

१ अप्रतौ 'जं बंधे ति तेण', आप्रतौ 'जं बंध तेण', इति पाठः । २ अ-आ-ताप्रतिषु 'कम्मट्ठिदिं', काप्रतौ 'कम्मट्ठिदि' इति पाठः ।

तत्थ रूवूणे आबाहाकंदए अवणिदे जहण्णट्ठिदिबंधो होदि। आबाहट्ठाणविसेसेहि एगमाबाहाकंदयं गुणिय तत्थ रूवूणाबाहाकंदए पक्खित्ते ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो होदि। उक्कस्सियाए आबाहाए एगआबाहाकंदए गुणिदे उक्कस्सट्ठिदिबंधो होदि।

संपहि चदुण्णमेइंदियजीवसमासाणमट्ठण्णं विगलिंदियजीवसमासाणं च आबाहाट्ठाणाणमाबाहाकंदयाणं च पमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा—संखेज्जपलिदोवममेत्तवीचारट्ठाणेहि जदि[2] संखेज्जावलियमेत्ताणि आबाहट्ठाणाणि[1] आबाहाकंदयाणि च लब्भंति[3] तो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तवीचारट्ठाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदि[4]भागमेत्तवीचारट्ठाणाणं च केत्तियाणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए चदुण्णमेइंदियजीवसमासाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च[6] होंति। बेइंदियादिअट्ठण्णं पि जीवसमासाणमावलियाए संखेज्जदि[5]भागमेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च होंति। एवं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरस्स च तेरासियं काऊण सव्वजीवसमाससव्वकम्मट्ठिदीणं पमाणपरूवणं कायव्वं।

होता है। जघन्य आबाधासे एक आबाधाकाण्डकको गुणित करके उसमेंसे एक कम आबाधाकाण्डकको घटा देनेपर जघन्य स्थितिबन्ध होता है। आबाधास्थानविशेषोंसे एक आबाधाकाण्डकको गुणित करके प्राप्त राशिमें एक कम आबाधाकाण्डकको मिलानेपर स्थितिबन्धस्थानविशेष प्राप्त होता है। उत्कृष्ट आबाधासे एक आबाधाकाण्डकको गुणित करनेपर उत्कृष्ट स्थितिबन्ध प्राप्त होता है।

अब चार एकेन्द्रिय समासों और आठ विकलेन्द्रिय जीवसमासोंके आबाधास्थानों व आबाधाकाण्डकोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—संख्यात पल्योपम प्रमाण वीचारस्थानोंसे यदि संख्यात आवलि प्रमाण आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक प्राप्त होते हैं, तो पल्योपमके संख्यातवें भाग मात्र वीचारस्थानों और पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र वीचारस्थानोंके कितने आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर चार एकेन्द्रिय जीवसमासोंके आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक प्राप्त होते हैं। द्वीन्द्रियादिक आठोंही जीवसमासोंके आवलिके संख्यातवें भाग मात्र आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक होते हैं। इसी प्रकार नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरों और एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका त्रैराशिक करके समस्त जीवसमासों सम्बन्धी कर्मस्थितियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करना चाहिये।

१ काप्रतौ 'आबाहाट्ठाणाणि', ताप्रतौ 'आबाहाट्ठणाणि (णं)' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'विचारट्ठाणेहियो जदि', काप्रतौ 'विचारट्ठाणेहिओ जदि', ताप्रतौ 'विचारट्ठाणेहिय (हिंतो) इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'लब्मदि (ब्भंति)', इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'असंखे०' इति पाठः। ५ ताप्रतौ 'संखेज्जदि' इति पाठः ६ ताप्रतौ 'च' इत्येतत्पदं नास्ति।

सव्वत्थोवा आउअस्स जहण्णाबाहा इदि वुत्ते असंखेयद्धापढमसमए आउअकम्मबंध-माढविय जहण्णबंधगद्धाए चरिमसमए वट्टमाणस्स जा आबाहा सा घेत्तव्वा[2], तत्तो ऊणाए[3] अण्णाबाहाए अणुवलंभादो[4]। खुद्दाभवग्गहणप्पहुडि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण जाव अपज्जत्तउक्कस्साउअं ति ताव णिरंतरं गंतूण पुणो उवरि अंतोमुहुत्तमंतरं होदूण सण्णि-असण्णि-पज्जत्ताणं जहण्णाउअं होदि । पुणो एदमादिं कादूण उवरि णिरंतरं गच्छदि जाव तेत्तीससागरोवमाणि त्ति । तेण जहण्णट्ठिदिबंधमुक्कस्सट्ठिदिबंधम्हि सोहिदे सेसकम्माणं व आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो ण उप्पज्जदि त्ति घेत्तव्वं । एवमप्पाबहुगं समत्तं ।

(बिदिया चूलिया)

ठिदिबंधज्झवसाणपरूवणदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि जीवसमुदाहारो पयडिसमुदाहारो ट्ठिदिसमुदाहारो त्ति[5] ॥१६५॥

संपधि इमा कालविहाणस्स बिदिया चूलिया किमट्ठमागदा ? ठिदिबंधट्ठाणाणं कारणभूदअज्झवसाणट्ठाणपरूवणट्ठं । ट्ठिदिबंधट्ठाणबंधकारणसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं परूवणा

'आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ऐसा' कहनेपर असंखेयाद्धा (असंक्षेपाद्धा) के प्रथम समयमें आयु कर्मके बन्धको प्रारम्भ करके जघन्य बन्धककालके अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके जो आबाधा होती है उसका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि उससे हीन और अन्य आबाधा पायी नहीं जाती। क्षुद्रभवग्रहणको आदि लेकर एक समय अधिक दो समय अधिक इत्यादि क्रमसे जब तक अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आयु नहीं प्राप्त होती तब तक निरन्तर जाकर, तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त अन्तर होकर संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्तकोंकी जघन्य आयु होती है। फिर इसको आदि लेकर आगे तेतीस सागरोपम तक निरन्तर जाते हैं। इसलिये उत्कृष्ट स्थितिबन्धमेंसे जघन्य स्थितिबन्धको कम करनेपर शेष कर्मोंके समान आयु कर्मका स्थितिबन्धविशेष उत्पन्न नहीं होता, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

(द्वितीय चूलिका)

स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानप्ररूपणा अधिकृत है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं— जीवसमुदाहार, प्रकृतिसमुदाहार और स्थितिसमुदाहार ॥ १६५ ॥

शंका—अब यह कालविधानकी द्वितीय चूलिका किसलिये आयी है ?

समाधान—वह स्थितिबन्धस्थानोंके कारणभूत अध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये प्राप्त हुई है।

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'संखेयद्धा—' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'जाव आबाहा घेत्तव्वा', मप्रतौ 'जाव आबाहा सा घेत्तव्वा' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'ऊणए' इति पाठः । ४ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'अण्णाबाहाअणुवलंभादो' इति पाठः । ५ तदेवमुक्तमल्पबहुत्वम् । इदानीं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानप्ररूपणा कर्तव्या । तत्र त्रीण्यनुयोगद्वाराणि । तद्यथा—स्थितिसमुदाहारः १, प्रकृतिसमुदाहारः २, जीवसमुदाहारश्च ३ । समुदाहारः प्रतिपादनम् । क.प्र. (म.टी.) १,८७ गाथाया उत्थानिका ।

पढमाए चूलियाए कदा चेव, पुणो तत्थ परूविदाणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं परूवणा ण कायव्वा; पुणरुत्तदोसप्पसंगादो। ण च कसाउदयट्ठाणाणि मोत्तूण ट्ठिदिबंधस्स अण्णं कारणमत्थि, ट्ठिदिअणुभागे कसायदो कुणदि त्ति वयणेण विरोहप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे। तं जहा—असादबंधपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणि संकिलेसो णाम। ताणि च जहण्णट्ठिदीए थोवाणि होदूण विदियट्ठिदिप्पहुडि विसेसाहिय कमेण ताव गच्छंति जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति। एदाणि च सव्वमूलपयडीणं समाणाणि, कसाएण विणा बज्झमाणमूलपयडीए अणुवलंभादो। सादबंधपाओग्गाणि कसाउदयट्ठाणाणि विसोहिट्ठाणाणि। एदाणि च उक्कस्सट्ठिदीए थोवाणि होदूण दुचरिमट्ठिदिप्पहुडिप्पगणणादो विसेसाहियकमेण ताव गच्छंति जाव जहण्णट्ठिदि त्ति। संकिलेसट्ठाणेहिंतो किमट्ठं विसोहिट्ठाणाणि ऊणत्तमुवगयाणि ? ण, साभावियादो। एदाणि संकिलेसविसोहिट्ठाणाणि णाम ट्ठिदिबंधमूलकारणभूदाणि एदेसिं ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणाए वण्णणा कदा। ण च एत्थ एदेसिं पुव्वं परूविदाणं परूवणा अत्थि जेण पुणरुत्तदोसो होज्ज[1], किंतु एत्थ ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं विसेसपच्चयस्स ट्ठिदिबंधज्झवसाणसण्णिदस्स परूवणा कीरदे। ण पुणरुत्तदोसो वि ढुक्कदे, पुव्वमपरूविदट्ठिदि-

शंका—स्थितिबन्धस्थानोंके कारणभूत संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा प्रथम चूलिकामें की ही जा चुकी है, अतः वहां वर्णित संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा फिरसे नहीं की जानी चाहिये; क्योंकि, वैसा करनेपर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है। कषायोदयस्थानोंको छोड़कर स्थितिबन्धका और कोई दूसरा कारण संभव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर "स्थिति व अनुभागको कषायसे करता है" इस आगम वाक्यके साथ विरोधका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहां इस शंकाका उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकार है—असाता वेदनीयके बन्ध योग्य कषायोदयस्थानोंको संक्लेश कहा जाता है। वे जघन्य स्थितिमें स्तोक होकर आगे द्वितीय स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति तक विशेषाधिकताके क्रमसे जाते हैं। ये सब मूल प्रकृतियोंके समान हैं, क्योंकि, कषायके विना बंधको प्राप्त होनेवाली कोई मूल प्रकृति पायी नहीं जाती। सातावेदनीयके बन्ध योग्य परिणामोंको विशुद्धिस्थान कहते हैं। ये उत्कृष्ट स्थितिमें स्तोक होकर आगे द्विचरम स्थितिसे लेकर जघन्य स्थिति तक गणनाकी अपेक्षा विशेष अधिकताके क्रमसे जाते हैं।

शंका—विशुद्धिस्थान संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा हीनताको क्यों प्राप्त हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वे स्वभावसे ही हीनताको प्राप्त हैं।

ये संक्लेश-विशुद्धिस्थान स्थितिबन्धके मूल कारणभूत हैं। इनका वर्णन स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें किया गया है। यहां पूर्वमें वर्णित इनकी पुनः प्ररूपणा नहीं की जा रही है, जिससे कि पुनरुक्त दोष होनेकी सम्भावना हो। किन्तु यहां स्थितिबंधाध्यवसान नामसे प्रसिद्ध स्थितिबन्धस्थानोंके विशेष प्रत्यय (कारण) की प्ररूपणा की जा रही है। अतः पुनरुक्त दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, यहां पूर्वमें जिनकी प्ररूपणा नहीं की गयी है, उन बन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा की गयी है।

---

१ अ-आप्रत्योः 'जेण पुणरुत्तदोसो ण होज्ज' काप्रतौ 'जे पुण रुत्तदोसो ण होज्ज' इति पाठः।

बंधज्झवसाणट्ठाणपरूवणत्तादो[1]। ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि कसाउदयट्ठाणाणि ण होंति त्ति कधं णव्वदे ? णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेहिंतो चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि [असंखेज्जगुणाणि त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो। जदि पुण कसाउदयट्ठाणाणि चेव ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि] होंति तो णेदमप्पाबहुगं घडदे, कसायोदयट्ठाणेण विणा मूलपयडिबंधाभावेण सव्वपयडिट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं समाणत्तप्पसंगादो। तम्हा सव्वमूलपयडीणं सग-सगउदयादो समुप्पण्णपरिणामाणं सग-सगट्ठिदिबंधकारणत्तेण ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणसण्णिदाणं एत्थ गहणं कायव्वं, अण्णहा उत्तदोसप्पसंगादो। एदेसिं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं परूवणट्ठमिमा बिदिया चूलिया आगदा। तत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि जीव-पयडि-ट्ठिदिसमुदाहारभेदेण। तत्थ जीवसमुदाहारो किमट्ठं आगदो ? सादासादाणं एक्केक्किस्से ट्ठिदीए एत्तिया जीवा होंति ण होंति त्ति जाणावणट्ठमागदो। पयडिसमुदाहारो किमट्ठमागदो ? एदिस्से पयडीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि एत्तियाणि

शंका—स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान कषायोदयस्थान नहीं हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नाम व गोत्रके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे है, इस अल्पबहुत्वसूत्रसे वह जाना जाता है। यदि कषायोदयस्थान ही स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हों तो यह अल्पबहुत्व घटित नहीं हो सकता है, क्योंकि, कषायोदयस्थानके विना मूल प्रकृतियोंका बन्ध न हो सकनेसे सभी मूल प्रकृतियोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी समानताका प्रसंग आता है। अत एव सब मूल प्रकृतियोंके अपने अपने उदयसे जो परिणाम उत्पन्न होते हैं उनकी ही अपनी अपनी स्थितिके बन्धमें कारण होनेसे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान संज्ञा है। उनका ही ग्रहण यहाँ करना चाहिये, क्योंकि, अन्यथा पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है।

इन स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणाके लिये द्वितीय चूलिकाका अवतार हुआ है। उसमें तीन अनुयोगद्वार हैं—जीवसमुदाहार, प्रकृतिसमुदाहार और स्थितिसमुदाहार।

शंका—इनमें जीवसमुदाहार किसलिये आया है ?

समाधान—साता व असाताकी एक एक स्थितिमें इतने जीव हैं व इतने नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ जीवसमुदाहार प्राप्त हुआ है।

प्रकृतिसमुदाहार किसलिये आया है ?

इस प्रकृतिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान इतने होते हैं और इतने नहीं होते हैं, इस

१ अ-आ-का-ताप्रतिष्वनुपलभ्यमानमिदं हेतुवचनं मप्रतितोऽत्र योजितम्। २ अ-आ-का ताप्रतिष्वनुपलभ्यमानोऽयं कोष्ठकस्थः पाठो मप्रतितोऽत्र योजितः।

होंति [एत्तियाणि] ण होंति त्ति जाणावणट्ठमागदो । ट्ठिदिसमुदाहारो किमट्ठमागदो ? एदिस्से ट्ठिदीए एत्तियाणि ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होंति, एत्तियाणि ण होंति त्ति जाणावणट्ठं । ण च तिण्णि अणियोगद्दाराणि मोत्तूण एत्थ चउत्थमणियोगद्दारं संभवदि, अणुवलंभादो । पयडिट्ठिदिसमुदाहाराणं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपरूवणट्ठं[2] होदु णाम, पयडि-ट्ठिदीओ अस्सिदूण तत्थ ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपरूवणुवलंभादो । ण जीवसमुदाहारस्स[3], तत्थ तदणुवलंभादो त्ति[4] ? ण एस दोसो, ठिदीणं कज्जे कारणोवयारेण ठिदिबंधज्झवसाण-ट्ठाणववएसोवलंभादो । ण च जीवसमुदाहारो उवयारेण ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणसण्णिद-ट्ठिदीयो ण परूवेदि, तत्थ जीवविसेसिदट्ठिदिपरूवणुवलंभादो । अधवा, ठिदिबंधज्झवसाण-ट्ठाणमासओ त्ति जीवाणं तत्थ तव्ववएसो त्ति ण दोसो ।

जीवसमुदाहारे त्ति जे ते णाणावरणीयस्स बंधा जीवा ते दुविहा-सादबंधा चेव असादबंधा चेव ॥ १६६ ॥

पुव्वुद्दिट्ठअहियारसंभालणट्ठं जीवसमुदाहारो पयदं ति अज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा

बातका परिज्ञान करानेके लिये प्रकृतिसमुदाहारका अवतार हुआ है । स्थितिसमुदाहार किस लिये आया है ? इस स्थितिके इतने स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं और इतने नहीं होते हैं, इसका परिज्ञान करानेके लिये स्थितिसमुदाहार प्राप्त हुआ है । इन तीन अनुयोगद्वारोंको छोड़कर यहां किसी चौथे अनुयोगद्वारकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वह पाया नहीं जाता ।

शंका—स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये प्रकृतिसमुदाहार व स्थितिसमुदाहारकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि, प्रकृति व स्थितिका आश्रय करके वहां स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा पायी जाती है । किन्तु जीवसमुदाहारकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वहां उनकी प्ररूपणा पायी नहीं जाती ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कार्यमें कारणका उपचार करनेसे स्थितियोंकी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान संज्ञा पायी जाती है । और जीवसमुदाहार उपचारसे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान संज्ञाको प्राप्त हुई स्थितियोंकी प्ररूपणा न करता हो, ऐसा है नहीं; क्योंकि, उसमें जीवसे विशेषताको प्राप्त हुई स्थितियोंकी प्ररूपणा पायी जाती है । अथवा, चूंकि स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान आश्रय है, अतः वहाँ जीवोंकी उक्त संज्ञामें कोई दोष नहीं है ।

जीवसमुदाहार प्रकृत है । जो ज्ञानावरणीयके बन्धक जीव हैं वे दो प्रकार हैं— सातबन्धक और असातबन्धक ॥ १६६ ॥

पूर्वोद्दिष्ट अधिकारका स्मरण करानेके लिये 'जीवसमुदाहार प्रकृत है' ऐसा अध्याहार करना चाहिये, क्योंकि अन्यथा परिज्ञान नहीं हो सकता । 'सादबंधा'

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जाणावणट्ठं च' इति पाठः । २ आ-का-ताप्रतिषु 'परूवणसं' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'जीवसमुदाहारो' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'त्ति' इत्येतत्पदं नास्ति ।

अत्थपडिवत्तीए अभावादो। सादबंधा त्ति उत्ते सादबंधया त्ति घेत्तव्वं, कत्तारणिद्देसादो। णाणावरणीयस्स बंधया जीवा दुविहा चेव सादबंधया असादबंधया चेदि। ण च सादासादाणं बंधेण विणा णाणावरणीयस्स बंधया जीवा अत्थि, अणुवलंभादो। एत्थ णाणावरणीयगहणेण णाणावरणादीणं धुवबंधीणं पयडीणं बंधया जीवा दुविहा त्ति वत्तव्वं। सादबंधया इदि उत्ते साद-थिर-सुभ-सुस्सर-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणमट्ठण्णं सुहपयडीणं परियत्तमाणीणं गहणं कायव्वं, अण्णोण्णाविणाभाविबंधादो। असादबंधया इदि उत्ते असाद-अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदबंधयाणं गहणं कायव्वं, बंधेण अण्णोण्णाविणाभावित्तदंसणादो। सादासादादीणमक्कमेण एगजीवम्मि बंधो किण्ण जायदे? ण, अच्चंताभावेण पडिसिद्धअक्कमप्पउत्तीदो। सादासादादीणमक्कम-बंधे जीवाणं सत्ती णत्थि त्ति भणिदं होदि।

तत्थ जे ते सादबंधा जीवा ते तिविहा- चउट्ठाणबंधा तिट्ठाण-बंधा बिट्ठाणबंधा[1] ॥ १६७ ॥

तत्थ सादबंधा जीवा त्ति णिद्देसेण असादबंधयजीवाणं पडिसेहो कदो। तिविहा त्ति वयणेण चउव्विहादिपडिसेहो कदो। चउट्ठाण-तिट्ठाण-बिट्ठाणमिदि तिविहो सादाणुभागो होदि। सादावेदणीए एगट्ठाणाणुभागो णत्थि, तहाणुवलंभादो। बंधं पडि एगट्ठा-

कहनेपर 'सादबंधया' अर्थात् सातावेदनीयके बन्धक, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, कर्ताका निर्देश है। ज्ञानावरणीयके बन्धक जीव दो प्रकार ही हैं— सातबन्धक और असातबन्धक। साता व असाता वेदनीयके बन्धसे रहित ज्ञानावरणीयके बन्धक जीव नहीं हैं, क्योंकि वे पाये नहीं जाते। सूत्रमें जो ज्ञानावरणीय पदका उपादान किया है उससे ज्ञानावरणादिक ध्रुव प्रकृतियोंके बन्धक जीव दो प्रकार हैं, ऐसा कहना चाहिये। 'सादबंधया' कहनेपर साता, स्थिर, शुभ, सुस्वर, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इन आठ परिवर्तमान प्रकृतियोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इनके बन्धमें परस्पर अविनाभाव सम्बन्ध है। 'असादबंधया' कहनेसे असाता, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीच गोत्रके बन्धकोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, बन्धकी अपेक्षा उनमें अविनाभाव सम्बन्ध देखा जाता है।

शंका— एक जीवमें एक साथ साता व असातादिकोंका बन्ध क्यों नहीं होता है?

समाधान— नहीं, उनकी युगपत् प्रवृत्ति अत्यन्ताभावसे प्रतिषिद्ध है, अर्थात् साता व असाता आदिकोंको एक साथ बाँधनेमें जीवोंकी शक्ति नहीं है, यह अभिप्राय है।

उनमें जो सातबन्धक जीव हैं वे तीन प्रकार हैं— चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थान-बन्धक और द्विस्थानबन्धक ॥ १६७ ॥

सूत्रमें 'सादबन्धा जीवा' इस निर्देशसे असातबन्धक जीवोंका निषेध किया गया है। चतुःस्थान, त्रिस्थान और द्विस्थान इस प्रकारसे साता वेदनीयका अनुभाग तीन प्रकार है। सातावेदनीयमें एकस्थान अनुभाग नहीं है, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता।

१ बंधंती धुवपगडी परित्तमाणिगसुभाण तिविहरसं। चउ-तिगबिट्ठाणगयं विवरीयतयं च असुभाणं॥ क.प्र. १, ९०.

णाणुभागस्स संभवो जदि वि अत्थि तो वि संतं पडुच्च अत्थि त्ति एगट्ठाणाणुभागो एत्थ किण्ण परूविदो ? ण, बंधाहियारे संतपरूवणाणुववत्तीदो । एत्थ सादाणुभागो जहण्ण-फद्दयप्पहुडि जाव उक्कस्सफद्दयो त्ति ताव रचेयव्वो सेडिआगारेण । तत्थ पढमो भागो गुडसमाणो[1] एगं ट्ठाणं, बिदियो भागो खंडसमाणो बिदियं ट्ठाणं, तदियो भागो सक्करातुल्लो तदियं ट्ठाणं, चउत्थो भागो अमियसमो चउत्थट्ठाणं । एदाणि चत्तारिट्ठाणाणि जम्मि सदाणुभागबंधे अत्थि सो अणुभागबंधो चउत्थट्ठाणो । तस्स बंधया जीवा चउट्ठाणबंधया णाम । एवं तिट्ठाण-बिट्ठाणबंधाणं पि परूवणं कायव्वं[2] । एवं सादबंधया अणुभागबंध-भेदेण तिविहा चेव होंति ।

असादबंधा जीवा तिविहा[3]- बिट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा चउट्ठाण-बंधा त्ति ॥ १६८ ॥

एत्थ असादाणुभागो पुव्वं व सेडिआगारेण ठइदूण चत्तारिभागेसु कदेसु तत्थ पढम-भागो णिंबसमो एगट्ठाणं, बिदियभागो कांजीरसमो बिदियट्ठाणं, तदियभागो विससमो

शंका—यद्यपि बन्धकी अपेक्षा एकस्थान अनुभागकी सम्भावना नहीं है, तथापि सत्त्वकी अपेक्षा तो उसकी सम्भावना है ही । फिर एकस्थानानुभागकी प्ररूपणा यहाँ क्यों नहीं की गई ?

समाधान—नहीं, क्योंकि बन्धके अधिकारमें सत्त्वकी प्ररूपणा संगत नहीं है ।

यहाँ जघन्य स्पर्धकसे लेकर उत्कृष्ट स्पर्धक तक श्रेणिके आकारसे साताके अनुभागकी रचना करना चाहिये । उसमें प्रथम भाग गुड़के समान एक स्थान, द्वितीय भाग खाँड़के समान दूसरा स्थान, तृतीय भाग शक्करके समान तीसरा स्थान, और चतुर्थ भाग अमृतके समान चौथा स्थान है । इस प्रकार जिस साताके अनुभागमें ये चार स्थान हों वह अनुभागबन्ध चतुर्थस्थान कहा जाता है । उसको बाँधनेवाले जीव चतुःस्थानबन्धक कहलाते हैं । इसी प्रकार त्रिस्थान और द्विस्थानबन्धकोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । इस अनुभागके भेदसे सातबन्धक तीन प्रकारके हैं ।

असातबन्धक जीव तीन प्रकारके हैं—द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक ॥ १६८ ॥

यहाँ असाताके अनुभागको पहिलेके ही समान श्रेणिके आकारसे स्थापित करके चार भाग करनेपर उनमेंसे प्रथम भाग नीमके समान एक स्थान, द्वितीय भाग कांजीरके समान दूसरे स्थान, तृतीय भाग विषके समान तीसरे स्थान, और चतुर्थ भाग हालाहलके

१ अ-आ-काप्रतिषु 'गुणसमाणो', ताप्रतौ 'गुण (ड) समाणो' इति पाठः ।

२ इह शुभप्रकृतीनां रसः क्षीरादिरसोपमः । अशुभप्रकृतीनां तु घोषातकी-निंबादिरसोपमः । उक्तं च—'घोसाडइ-निंबुवमो असुहाण सुहाण खीर-खंडुवमो' इति । क्षीरादिरसश्च स्वाभाविक एकस्थानिक उच्यते । द्वयोस्तु कर्षयोरावर्तने कृते सति योऽवशिष्यते एकः कर्षः स द्विस्थानिकः । त्रयाणामावर्तने कृते सति च उद्धरित एकः कर्षः त्रिस्थानगतः । चतुर्णां तु कर्षाणामावर्तने कृते सति योऽवशिष्टः एकः कर्षः स चतुस्थानगतः । क. प्र. (म. टी.) १,९०. ३ अप्रतौ 'असादबंधजीवा तिविहा' इति पाठः ।

तदियं ठाणं, चउत्थो भागो हालाहलतुल्लो चउत्थट्ठाणं । तत्थ दोण्णि ट्ठाणाणि जम्हि अणुभागबंधे सो बिट्ठाणो[1] णाम । तस्स बंधया जीवा बिट्ठाणबंधा । एवं तिट्ठाणबंधाणं चउट्ठाणबंधाणं च परूवणा कायव्वा । एवमणुभागबंधमस्सिदूण असादबंधा तिविहा होंति ।

सव्वविसुद्धा सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा[2] ॥ १६९ ॥

सव्वेहिंतो विसुद्धा सव्वविसुद्धा । सादबिट्ठाण-तिट्ठाणबंधएहिंतो सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा सुट्ठु विसुद्धा त्ति उत्तं होदि । एत्थ[3] का विसुद्धदा णाम ? अइतिव्वकसायाभावो मंदकसाओ विसुद्धदा त्ति घेत्तव्वा । तत्थ सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा सव्वविसुद्ध त्ति भणिदे सुट्ठुमंदसंकिलेसा त्ति घेत्तव्वं । जहण्णट्ठिदिबंधकारणजीवपरिणामो वा विसुद्धदा णाम ।

तिट्ठाणबंधा जीवा संकिलिट्ठदरा[4] ॥ १७० ॥

सादचउट्ठाणबंधएहिंतो सादस्सेव तिट्ठाणाणुभागबंधया जीवा संकिलिट्ठदरा, कसाउक्कड्डा त्ति भणिदं होदि ।

समान चौथे स्थान रूप है । उनमेंसे जिस अनुभागबन्धमें दो स्थान हैं वह द्विस्थान अनुभागबन्ध कहलाता है । उसको बांधनेवाले जीव द्विस्थानबन्धक कहे जाते हैं । इसी प्रकार त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक जीवोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अनुभागबन्धका आश्रय करके असातबन्धक तीन प्रकारके होते हैं ।

सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव सबसे विशुद्ध हैं ॥ १६९ ॥

'सव्वेहिंतो विसुद्धा सव्वविसुद्धा' इस प्रकार सर्वविशुद्ध पदमें तत्पुरुष समास है । साता वेदनीयके द्विस्थानबन्धकों और त्रिस्थानबन्धकोंकी अपेक्षा उनके चतुःस्थानबन्धक जीव अतिशय विशुद्ध हैं, यह उसका अभिप्राय है ।

शंका—यहां विशुद्धतासे क्या अभिप्राय है ?

समाधान—अत्यन्त तीव्र कषायके अभावमें जो मन्द कषाय होती है उसे विशुद्धता पदसे ग्रहण करना चाहिये ।

सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव सर्वविशुद्ध हैं, ऐसा कहनेपर 'वे अतिशय मन्द संक्लेशसे सहित हैं' ऐसा ग्रहण करना चाहिये । अथवा, जघन्य स्थितिबन्धका कारण स्वरूप जो जीवका परिणाम है उसे विशुद्धता समझना चाहिये ।

त्रिस्थानबन्धक जीव संक्लिष्टतर हैं ॥ १७० ॥

साताके चतुःस्थानबन्धकोंकी अपेक्षा साताके ही त्रिस्थानानुभागबंधक जीव संक्लिष्टतर हैं, अर्थात् वे उनकी अपेक्षा उत्कट कषायवाले हैं, यह अभिप्राय है ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अणुभागबंधो सो बिट्ठाणू' इति पाठः । २ ये सर्वविशुद्धा रसं बध्नन्ति । क. प्र. (म. टी.) १,९१. । ३ अप्रतौ 'एवं एत्थ' इति पाठः । ४ ये पुनर्मध्यमपरिणामास्ते त्रिस्थानगतं रसं बध्नन्ति । क. प्र. (म. टी.) १,९१ ।

बिट्ठाणबंधा जीवा संकिलिट्ठदरा[1] ॥ १७१ ॥

सादतिट्ठाणुभागबंधएहिंतो सादस्सेव बिट्ठाणाणुभागबंधया जीवा संकिलिट्ठदरा, संकिलेसेणं अहिया त्ति भणिदं होदि ।

सव्वविसुद्धा असादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा[3] ॥ १७२ ॥

असादस्स तिट्ठाणाणुभागबंधएहिंतो तस्सेव बिट्ठाणाणुभागबंधया मंदकसाया त्ति भणिदं होदि ।

तिट्ठाणबंधा जीवा संकिलिट्ठदरा[4] ॥ १७३ ॥

असादस्स बिट्ठाणाणुभागबंधएहिंतो तिट्ठाणाणुभागबंधया जीवा सुट्ठुक्कडसंकिलेसा होंति । कुदो ? साभावियादो ।

चउट्ठाणबंधा जीवा संकिलिट्ठदरा[5] ॥ १७४ ॥

असादतिट्ठाणाणुभागबंधएहिंतो तस्सेव चउट्ठाणाणुभागबंधयाणं कसायो अइबहुलो होदि । कुदो ? साभावियादो । संकिलेसे वड्ढमाणे सादादीणं सुहपयडीणमणुभागबंधो हायदि, असादादीणमसुहपयडीणमणुभागबंधो वड्ढदि । संकिलेसे हायमाणे सादादीणं

द्विस्थानबन्धक जीव संक्लिष्टतर हैं ॥ १७१ ॥

साताके त्रिस्थानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा साताके ही द्विस्थानबन्धक जीव संक्लिष्टतर हैं, अर्थात् वे अधिक संक्लेशवाले हैं ।

असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव सर्वविशुद्ध हैं ॥ १७२ ॥

असाता वेदनीयके त्रिस्थानानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा उसके ही द्विस्थानानुभाग बन्धक जीव मन्दकषायवाले हैं, यह सूत्रका अभिप्राय है ।

त्रिस्थानबन्धक जीव संक्लिष्टतर हैं ॥ १७३ ॥

असाताके द्विस्थानानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा उसके ही त्रिस्थानानुभागबन्धक जीव अति उत्कट संक्लेशसे संयुक्त होते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

चतुःस्थानबन्धक जीव संक्लिष्टतर हैं ॥ १७४ ॥

असाताके त्रिस्थानानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा उसके ही चतुःस्थानानुभागबन्धकोंकी कषाय अतिशय बहुल होती है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । संक्लेशकी वृद्धि होनेपर साता आदिक शुभ प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध हीन होता है और असाता आदिक अशुभ

---

१ संक्लिष्टपरिणामास्तु द्विस्थानगतम् । क. प्र. (म.टी.) १,९१. । २ अ-आ-काप्रतिषु ' संकिलेसेव ' इति पाठः । ३ ये पुनस्तद्योग्यभूमिकानुसारेण सर्वविशुद्धा परावर्तमाना अशुभप्रकृतीर्बध्नन्ति ते तास-द्विस्थानगतं रसं निवर्तयन्ति क. प्र. (म. टी.) १,९१ । ४ मध्यमपरिणामास्त्रिस्थानगतम् । क. प्र. (म. टी.) १,८१. । ५ संक्लिष्टपरिणामास्तु चतुःस्थानगतम् । क. प्र. (म. टी.) १,९१. ।

सुहपयडीणमणुभागबंधो वड्ढदि, असादादीणं असुहपयडीणमणुभागबंधो हायदि त्ति उत्तं होदि।

सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियं ट्ठिदिं बंधंति[1] ॥ १७५ ॥

णाणावरणग्गहणं जेण देसामासियं तेण णाणावरणादीणं[2] धुवबंधीणमसुहपयडीणं[3] सव्वासिं जहण्णयं ट्ठिदिं बंधंति त्ति घेत्तव्वं। जे जे सादस्स चउट्ठाणाणुभागबंधया जीवा ते ते णाणावरणादीणं जहण्णियं चेव ट्ठिदिं बंधंति त्ति णावहारणं[4] कीरदे, चउट्ठाणबंधएसु णाणावरणादीणमजहण्णट्ठिदीणं पि बंधदंसणादो। जेण कसाओ ट्ठिदिबंधस्स कारणं तेण मंदकसाइणो सादस्स चउट्ठाणबंधया जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियं ट्ठिदिं बंधंति त्ति भणिदं।

सादस्स तिट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियं ठिदिं बंधंति[5] ॥ १७६ ॥

ण ताव उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति, असादजोग्गुक्कस्ससंकिलेसेहि[6] विणा णाणावरणी-

---

प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध बढ़ता है। संक्लेशकी हानि होनेपर साता आदिक शुभ प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध बढ़ता है और असाता आदिक अशुभ प्रकृतियोंका अनुभाग-बन्ध हीन होता है, यह अभिप्राय है।

सातावेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं ॥ १७५ ॥

चूँकि ज्ञानावरणका ग्रहण देशामर्शक है, अतः उससे ज्ञानावरणादिक ध्रुवबन्धी सब अशुभ प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं; ऐसा ग्रहण करना चाहिये। जो जो साता वेदनीयके चतुस्थानानुभागबन्धक जीव हैं वे वे ज्ञानावरणादिकोंकी जघन्य ही स्थितिको बाँधते हैं, ऐसा अवधारण नहीं किया जा रहा है, क्योंकि, चतुःस्थानबन्धकोंमें ज्ञानावरणादिकोंकी अजघन्य स्थितियोंका भी बन्ध देखा जाता है। चूँकि स्थितिबन्धका कारण कषाय है, अतः सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक मन्दकषायी जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं; ऐसा कहा गया है।

साताके त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं ॥ १७६ ॥

ये जीव ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, क्योंकि, असाताके योग्य

---

१ ये सर्वविशुद्धा शुभप्रकृतीनां चतुःस्थानगतं रसं बध्नन्ति ते ध्रुवप्रकृतीनां जघन्यां स्थितिं निवर्तयन्ति। क. प्र. (म. टी.) १,९१.। २ ताप्रतौ 'णाणावरणीयादीणं' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'धुवबद्धीणमसुह—' ताप्रतौ 'धुवबद्धीए असुह—' इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'णाणवहारणं' इति पाठः। ५ परावर्तमानशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानगतस्य रसस्य ये बन्धकास्ते ध्रुवप्रकृतीनामजघन्यां मध्यमां स्थितिं बध्नन्ति। क. प्र. (म. टी.) १,९२.। ६ काप्रतौ 'सायक्कस्स', अ-आ प्रत्योः 'सागउक्कस्स' ताप्रतौ 'सागरु (?) क्कस्स—' इति पाठः।

कस्स [उक्कस्स] ट्ठिदिबंधाभावादो । ण जहण्णयं पि बंधंति, उक्कट्ठविसोहीए अभावादो । तम्हा सादस्स तिट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणादीणमजहण्णमणुक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति त्ति उत्तं ।

सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा सादस्स चेव उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति ॥ १७७ ॥

सादस्स बिट्ठाणबंधया जीवा जेण उक्कट्ठसंकिलेसा तेण सादस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति, ण[1] णाणावरणीयस्स; ओघुक्कस्ससंकिलेसाभावादो । ण च सादबंधपाओग्गउक्कस्ससंकिलेसेण णाणावरणीयस्स उक्कस्सट्ठिदिं[2] बंधदि, विरोहादो । ण च सादस्स बिट्ठाणबंधया सव्वे वि सादुक्कस्सट्ठिदिं पण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्तं बंधंति[4], तत्थ[5] अणुक्कस्सट्ठिदिबंधस्स वि उवलंभादो । तम्हा अजोगववच्छेदो एत्थ कायव्वो । अत्रोपयोगिनौ श्लोकौ[6]

विशेषण-विशेष्याभ्यां क्रियया च सहोदितः । पार्थो धनुर्धरो नीलं सरोजमिति वा यथा ॥७॥
अयोगमपरैर्योगमत्यन्तायोगमेवं[7] च । व्यवच्छिनत्ति धर्मस्य निपातो व्यतिरेचकः ॥ ८ ॥[8]

उत्कृष्ट संक्लेशके बिना ज्ञानावरणीयके [उत्कृष्ट] स्थितिबन्धकी सम्भावना नहीं है । उसकी जघन्य स्थितिको भी नहीं बांधते हैं, क्योंकि उनके उत्कृष्ट विशुद्धिका अभाव है । अतएव त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणादिकोंकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं, ऐसा कहा गया है ।

सातांके द्विस्थानबन्धक जीव सातावेदनीयकी ही उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं ॥१७७॥

सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव चूंकि उत्कृष्ट संक्लेशसे संयुक्त होते हैं अतः वे साता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं, न कि ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिको; क्योंकि, यहां सामान्य उत्कृष्ट संक्लेशका अभाव है । साताके बन्ध योग्य उत्कृष्ट संक्लेशके ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि, इसमें विरोध है । दूसरे, साता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक सभी जीव सातावेदनीयकी पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, क्योंकि उनमें उसका अनुत्कृष्ट स्थितिबन्ध भी पाया जाता है । इस कारण यहां अयोगव्यवच्छेद करना चाहिये । यहां उपयोगी दो श्लोक—

निपात अर्थात् एवकार व्यतिरेचक अर्थात् निवर्तक या नियामक होता है । विशेषण, विशेष्य और क्रियाके साथ कहा गया निपात क्रमसे अयोग, अपरयोग (अन्ययोग)

---

१ अ-का-ताप्रतिषु 'संकिलेसेहि वि णाणावरणीयस्स' इति पाठः । २ अ-आ-का-ताप्रतिषु 'ण' इत्येतत्पदं नास्ति, मप्रतौ त्वस्ति तत् । ३ प्रतिषु 'उक्कस्सट्ठिदी' इति पाठः । ४ आप्रतौ 'सागरोवममेत्तं कोडाकोडी बज्झन्ति' इति पाठः । ५ अप्रतौ 'तस्स' इति पाठः । ६ ताप्रतौ 'वामया (?)' इति पाठः । ७ अ-काप्रत्योः '-योगमेव' इति पाठः । ८ प्रमाणवार्तिक ४-१९०. ।

असादस्स बेट्ठाणबंधा जीवा सत्थाणेण[1] णाणावरणीयस्स जहण्णियं ट्ठिदिं बंधंति[2] ॥ १७८ ॥

असादबंधएसु बेट्ठाणबंधया जीवा अइविसुद्धा मंदकसाइत्तादो जहण्णट्ठिदिकारण-परिणामेहि संजुत्ता[3], तेण णाणावरणीयस्स जहण्णियं ट्ठिदिं बंधंति। जहण्णट्ठिदिं बंधंता वि ओघजहण्णियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सत्थाणेण णाणावरणीयस्स जहण्णियं ट्ठिदिं बंधंति त्ति भणिदं। सत्थाणेण णाणावरणीयस्स का जहण्णट्ठिदी णाम? असादेण सह

और अत्यन्तायोगका व्यवच्छेद करता है। जैसे—'पार्थो धनुर्धरः' और 'नीलं सरोजम्' इन वाक्योंके साथ प्रयुक्त एवकार ॥ ७-८ ॥

विशेषार्थ—विशेषणके साथ प्रयुक्त एवकार अयोगव्यवच्छेदका बोधक होता है। जैसे—'पार्थो धनुर्धरः एव' अर्थात् पार्थ धनुषधारी ही है, इस वाक्यमें प्रयुक्त एवकार पार्थमें अधनुर्धरत्वकी आशंकाको दूरकर धनुर्धरत्वका विधान करता है। अतः वह अयोगव्यवच्छेदका बोधक है। विशेष्यके साथ प्रयुक्त एवकार अन्ययोगव्यवच्छेदका बोधक होता है। जैसे—'पार्थ एव धनुर्धरः' अर्थात् अर्जुन ही एक मात्र धनुर्धर है, इस वाक्यमें प्रयुक्त एवकार अर्जुनमें जो अन्य धनुधरोंकी अपेक्षा सातिशय धनुर्धरत्व विद्यमान है उसका अन्य पुरुषोंमें निषेध करता है। अतएव वह अन्ययोगव्यवच्छेदका बोधक है। क्रियापदके साथ प्रयुक्त एवकार अत्यन्तायोगव्यवछेदका बोधक होता है। जैसे—'नीलं सरोजं भवत्येव' अर्थात् सरोज नील होता ही है, इस वाक्यमें प्रयुक्त एवकार सरोजमें नीलत्वके अत्यन्ताभावका व्यवच्छेदक होनेसे अत्यन्तायोगव्यवच्छेदका बोधक है। (देखिये न्यायकुमुदचन्द्र भा. २ पृ. ६९३)

असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं ॥ १७८ ॥

असातबन्धकोंमें द्विस्थानबन्धक जीव अतिशय विशुद्ध होते हुए, मन्दकषायी होनेसे चूंकि जघन्य स्थितिके कारणभूत परिणामोंसे संयुक्त हैं, इसीलिये वे ज्ञानावरणकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं। जघन्य स्थितिको बाँधते हुए भी वे ओघ जघन्य स्थितिको नहीं बाँधते है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बांधते हैं' ऐसा कहा गया है।

शंका—स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति किसे कहते हैं।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'संठाणेण' इति पाठः। २ तथा इतरासां परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां ये द्विस्थानगतं रसं बध्नन्ति ते ध्रुवप्रकृतीनां जघन्यां स्थितिं स्वस्थाने, स्वविशुद्धिभूमिकानुसारेणेत्यर्थः, बध्नन्ति। परावर्तमानाशुभप्रकृतिरसकद्विस्थानगतरसबन्धहेतुविशुद्ध्यनुसारेण जघन्यां स्थितिं बध्नन्ति, न त्वतिजघन्यामित्यर्थः। जघन्यस्थितिबन्धो हि ध्रुवप्रकृतीनामेकान्तविशुद्धो सम्भवति, न च तदानीं परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां बन्धा सम्भवन्ति। क. प्र. (म. टी.) १,९२. । ३ प्रतिषु 'संजुत्तं' इति पाठः।

बंधपाओग्गा णाणावरणीयस्स सव्वजहण्णट्ठिदी सा सत्थाणजहण्णा णाम । तिस्से बंधया त्ति उत्तं होदि

असादस्स तिट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति[1] ॥ १७९ ॥

कुदो ? ण ताव उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति, उक्कस्ससंकिलेसाभावादो । ण जहण्णियं पि, अइविसुद्धपरिणामाभावादो । तम्हा णाणावरणीयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियं चेव ट्ठिदिं असादतिट्ठाणबंधा जीवा बंधंति त्ति सिद्धं ।

असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चेव उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति[2] ॥ १८० ॥

जेण असादस्स चउट्ठाणबंधया जीवा तिव्वसंकिलेसा तेण असादस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति । एत्थ चेव सद्दो अवि-सद्दट्ठे वट्टदे । तेण णाणावरणादीणं पि उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधंति त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा तदुक्कस्सट्ठिदीणं बंधकारणाभावप्पसंगादो । एवं

समाधान—असातावेदनीयके साथ बन्धके योग्य जो ज्ञानावरणीयकी सबसे जघन्य स्थिति है वह स्वस्थान जघन्य स्थिति कही जाती है ।

उक्त जीव उसी स्थितिके बन्धक हैं, यह अभिप्राय है ।

असातावेदनीयके त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं ॥ १७९ ॥

कारण यह कि वे उत्कृष्ट स्थितिको तो बांधते नहीं हैं, क्योंकि, उनके उत्कृष्ट संक्लेशका अभाव है । न जघन्य स्थितिको भी बांधते हैं, क्योंकि, उनके अत्यन्त विशुद्ध परिणामोंका अभाव है । इस कारण असाताके त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिको ही बांधते हैं, यह सिद्ध है ।

असाता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव असातावेदनीयकी ही उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं ॥ १८० ॥

चूंकि असाता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव तीव्र संक्लेशसे संयुक्त होते हैं, अतएव वे असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं । यहाँ सूत्रमें प्रयुक्त 'चेव' शब्द 'अपि' शब्दके अर्थमें वर्तमान है । इसीलिये वे ज्ञानावरणादिकोंकी भी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इसके बिना उनके उत्कृष्ट स्थितिबन्धके कारणोंके अभावका प्रसंग आवेगा । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयके

---

१ ये पुनः परावर्तमानशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानगतस्य रसस्य बन्धकास्ते ध्रुवप्रकृतीनामजघन्यां स्थितिं बध्नन्ति । क. प्र. (म. टी.) १,९१. । २ तथा ये परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां चतुःस्थानगतं रसं बध्नन्ति ते ध्रुवप्रकृतीनामुत्कृष्टां स्थितिं निवर्तयन्ति । क. प्र. (म. टी.) १,९१ ।

सादासादाणं चउट्ठाण-तिट्ठाण-बिट्ठाणाणुभागबंधेसु ट्ठिदीणं संकिलेस-विसोहीणं च पमाणं परूविय संपहि ट्ठिदीयो आधारं कादूण तत्थ ट्ठिदजीवाणं सेडिपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तेसिं दुविहा सेडिपरूवणा अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा ॥ १८१ ॥

एदं सुत्तं देसामासियं, सेडिपरूवणं भणिदूण परूवणा-पमाण-अवहार-भागाभाग-अप्पाबहुगाणं सूचयत्तादो। तेण ताव परूवणादीणं पण्णवणा कीरदे। तं जहा- सादस्स चउट्ठाणबंधया तिट्ठाणबंधया बिट्ठाणबंधया असादस्स बिट्ठाणबंधया तिट्ठाणबंधया चउट्ठाणबंधया णाणावरणीयस्स सग-सगजहण्णियाए ट्ठिदीए अत्थि जीवा बिदियाए ठिदीए अत्थि जीवा एवं णेयव्वं जाव अप्पप्पणो उक्कस्सट्ठिदि त्ति। परूवणा गदा।

सादस्स चउट्ठाण-तिट्ठाण-बिट्ठाणबंधया असादस्स बिट्ठाण-तिट्ठाण-चउट्ठाणबंधगा णाणावरणीयस्स सग-सगजहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, बिदियाए ठिदीए पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, एवं णेदव्वं जाव अप्पप्पणो उक्कस्सट्ठिदि त्ति। सादबिट्ठाणिय जवमज्झादो असादचउट्ठाणियजवमज्झादो च उवरिमट्ठिदीसु कत्थ वि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा किण्ण होंति त्ति उत्ते- ण होंति। किं कारणं? अप्पप्पणो

चतुःस्थान, त्रिस्थान और द्विस्थान रूप अनुभागबन्धोंमें स्थितियों एवं संक्लेश व विशुद्धिके प्रमाणकी प्ररूपणा करके अब स्थितियोंका आश्रय करके उनमें स्थित जीवोंकी श्रेणिप्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

उनकी श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥१८१॥

यह सूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह श्रेणिप्ररूपणाको कहकर प्ररूपणा, प्रमाण, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंका सूचक है। अतएव पहिले प्ररूपणा आदिक अनुयोगद्वारोंका प्रज्ञापन किया जाता है। यथा—सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक त्रिस्थानबन्धक और चतुस्थानबन्धक ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें जीव हैं। द्वितीय स्थितिमें जीव हैं। इस प्रकार अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक तथा असाता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें जगप्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। द्वितीय स्थितिमें जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इस प्रकार अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये।

शंका—साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यसे तथा असातावेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यसे ऊपरकी स्थितियोंमें कहींपर भी जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव क्यों नहीं होते?

जहण्णट्ठिदीए जीवेहि समाणजवमज्झउवरिमट्ठिदिजीवा पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, तम्हि रासिम्हि तिण्णिगुणहाणिगुणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे सेडीए असंखेज्ज-दिभागमेत्तसेडीणमुवलंभादो। ण च एदेसु पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गंतूण अद्धद्धेण ज्झीयमाणेसु अवसाणे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तं होदि, उवरिमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण पदरस्स असंखेज्ज-दिभागे[1] भागे हिदे असंखेज्जसेडिमेत्तजीवोवलंभादो। उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ सेडिछेदणाहिंतो बहुगाओ त्ति के वि आइरिया भणंति। तेसिमाइरियाणमहिप्पाएण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा उवरि तप्पाओग्गासंखेज्जगुणहाणीयो गंतूण होंति। ण च एवं, वक्खाणे अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तुवलंभादो। पमाणपरूवणा गदा।

अणंतरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स विट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा[3] जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा थोवा[4] ॥ १८२ ॥

समाधान—उक्त शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि वे श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण नहीं होते हैं। कारण यह कि अपनी अपनी जघन्य स्थितिके जीवोंके समान यवमध्यसे उपरिम स्थितियोंके जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, क्योंकि, उस राशिमें तीन गुणहानियोंसे गुणित पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जगश्रेणियाँ लब्ध होती हैं। परन्तु प्रतरके असंख्यातवें भाग मात्र इन जीवोंके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अध्वान आकर अर्ध-अर्ध भागसे हीन होनेपर अन्तमें उनका प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण उपरिम अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रतरके असंख्यातवें भागमें भाग देनेपर असंख्यात श्रेणियों प्रमाण जीव उपलब्ध होते हैं।

ऊपरकी नानागुणहानिशलाकायें श्रेणिके अर्धच्छेदोंसे बहुत हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। उन आचार्योंके अभिप्रायसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव आगे तत्प्रायोग्य असंख्यात गुणहानियां आकर हैं। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इस व्याख्यानमें अन्योन्याभ्यस्त राशि पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण पायी जाती है। प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा साता वेदनीयके चतुःस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव, असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव तथा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीव स्तोक हैं ॥ १८२ ॥

१ अ-आ-का-प्रतिषु 'अद्धेण' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'पदरस्स असंखेज्जदिभागे' इत्येतावान् पाठो नास्ति। अआप्रत्योः 'असंखे॰ भागेण भागे हिदे' काप्रतौ 'असंखेज्जदिभागे हिदे' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'विट्ठाणतिट्ठाणबंधा' इति पाठः। ४ थोवा जहण्णियाए होंति विसेसाहिओ वड्ढियमाई।

सादस्स चउट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदीयो सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताओ। ताओ बुद्धीए पुध ट्ठविय, तिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गाओ सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताओ, एदाओ वि पुध ट्ठविय; एवमसादस्स बिट्ठाणतिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गसागरोवमसदपुधत्तमेत्तट्ठिदीयो च पुध ट्ठविय, तत्थ एदेसिं चदुण्णं पि पंतीणं[१] णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा थोवा; तसरासिस्स संखेज्जदिभागमेक्केक्कट्ठिदिपंतिअब्भंतरे ट्ठिदजीवरासिं तिण्णिगुणहाणिगुणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे जहण्णट्ठिदिजीवाणं पमाणुवलंभादो।

बिदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८३ ॥

कुदो? एगगुणहाणियद्धाणमसंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तं विरलिय जहण्णट्ठिदिजीवे समखंडं करिय विरलणरूवं पडि दादूण तत्थ एगखंडमेत्तेण अहियत्तुवलंभादो। एगगुणअद्धाणं चेव भागहारो होदि त्ति कधं णव्वदे? पक्खेवाणं दुगुणत्तुवलंभादो। तं पि कुदो? अण्णहा जवमज्झभावाणुववत्तीदो।

साता वेदनीयकी चतुःस्थानानुभागबन्धके योग्य शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितियां हैं। उनको बुद्धिसे पृथक् स्थापित करके उसीकी त्रिस्थानानुभागबन्धके योग्य जो शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितियां हैं इनको भी पृथक् स्थापित करके, इसी प्रकार असाता वेदनीयकी द्विस्थान व त्रिस्थान रूप अनुभागबन्धके योग्य शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितियोंको पृथक् स्थापित करके उनमें इन चारों ही कर्मोंकी पंक्तियोंके ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीव स्तोक हैं, क्योंकि, त्रस राशिके संख्यातवें भाग एक एक पंक्तिके भीतर स्थित जीवराशिमें तीन गुणहानिगुणित पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण उपलब्ध होता है।

द्वितीय स्थितिके जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८३ ॥

इसका कारण यह है कि पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण एकगुणहानि-अध्वानका विरलन करके जघन्य स्थितिके जीवोंको समखण्ड करके प्रत्येक विरलन रूपके ऊपर देकर उनमेंसे एक खण्डके प्रमाणसे उनमें अधिकता पायी जाती है।

शंका—एकगुणहानिअध्वान ही भागहार होता है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—प्रक्षेपोंमें दुगुणताकी उपलब्धि होनेसे जाना जाता है कि एक गुणहानिअध्वान ही भागहार होता है।

शंका—यह भी कहांसे जाना जाता है?

जीवा विसेसहीणा उदहिसयपुहत्त मो जाव ॥ एव तिट्ठाणकरा बिट्ठाणकरा य आ सुभुक्कोसा। असुभाणं बिट्ठाणे ति-चउट्ठाणे य उक्कोसा ॥ क. प्र. १,९३-९४.। परावर्तमानानां शुभप्रकृतीनां चतुस्स्थानगतरसबन्धका सन्तो ज्ञानावरणीयादीनां ध्रुवप्रकृतीनां जघन्यस्थितौ बन्धकत्वेन वर्तमाना जीवा स्तोकाः (म. टी.)।

१ अप्रतौ 'पि कम्माणं पंत्तीणं' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'जीवरासी-तिण्णि', आप्रतौ 'जीवरासितिण्णि' इति पाठः।

तदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? एगविसेसमेत्तेण । एवं उवरिं पि एगेगजीवविसेसमहियं कादूण णेदव्वं ।

एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसदपुधत्तं ॥१८५॥

सागरोवमसदपुधत्तवयणेण चदुण्णं पि जवमज्झाणं हेट्ठिमअद्धाणपमाणं जाणाविदं । एत्थ विसेसो अणवट्ठिदो दट्ठव्वो, गुणहाणिं पडि दुगुणक्कमेण विसेसाणं वड्ढिदंसणादो ।

तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १८६ ॥

एदेण सागरोवमसदपुधत्तवयणेण चदुण्णं जवमज्झाणं उवरिमअद्धाणपमाणं जाणाविदं । जवमज्झउवरिमगुणहाणीयो वि हेट्ठिमगुणहाणीहि अद्धाणपमाणेण समाणाओ । जीवविसेसा पुण अणवट्ठिदा; अद्धद्धक्कमेण गुणहाणिं पडि तेसिं गमणुवलंभादो ।

समाधान—चूंकि इसके विना यवमध्यपना बनता नहीं है, इसलिये उनका दुगुणत्व निश्चित होता है ।

तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८४ ॥

कितने प्रमाणसे वे अधिक हैं ? वे एक विशेष मात्रसे अधिक हैं । इसी प्रकार आगे भी एक एक जीवविशेषको अधिक करके ले जाना चाहिये ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपमों तक विशेष अधिक विशेष अधिक ही हैं ॥ १८५ ॥

'शतपृथक्त्व सागरोपम' के कहनेसे चारों ही यवमध्योंके अधस्तन अध्वानका प्रमाण बतलाया गया है । यहां विशेषको अनवस्थित समझना चाहिये, क्योंकि, प्रत्येक गुणहानिके प्रति दुगुणे क्रमसे विशेषोंकी वृद्धि देखी जाती है ।

उसके आगे शतपृथक्त्व सागरोपमों तक विशेष हीन विशेष हीन हैं ॥ १८६ ॥

इस 'सागरोपमशतपृथक्त्व' के कहनेसे चारों यवमध्योंके उपरिम अध्वानका प्रमाण बतलाया गया है । यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानियां भी अध्वानप्रमाणकी अपेक्षा नीचेकी गुणहानियोंके समान हैं । परन्तु जीवविशेष अनवस्थित हैं, क्योंकि, प्रत्येक गुणहानिके प्रति उनकी आधे आधे क्रमसे प्रवृत्ति देखी जाती है ।

---

१ ततो द्वितीयस्यां स्थितौ विशेषाधिकाः । ततोऽपि तृतीयस्यां स्थितौ विशेषाधिकाः । एवं तावद्विशेषाधिका वक्तव्या यावत्प्रभूतानि सागरोपमशतान्यतिक्रान्तानि भवन्ति । ततः परं विशेषहीना विशेषहीनास्तावद्वक्तव्या यावद्विशेषहानावपि 'उदहिसयपुहुत्तं त्ति' प्रभूतानि सागरोपमशतानि भवन्ति । 'मो' इति पादपूरणे । पृथक्त्वशब्दोऽत्र बहुत्ववाची । यदाह चूर्णिकृत्—पुहुत्तसद्दो बहुत्तवाचीति ।' इति । क. प्र. (म. टी.) १,९२. ।

सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा थोवा ॥ १८७ ॥

कुदो ? जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो विसेसाहियकमेण उवरिमट्ठिदिजीवाणं वड्ढिदंसणादो।

बिदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? एगजीवविसेसमेत्तो। को पडिभागो ? एगदुगुणवड्ढिअद्धाणं।

तदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८९ ॥

को विसेसो ? रूवाहियगुणहाणीए खंडिदएगखंडमेत्तो।

एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसद-पुधत्तं ॥ १९० ॥

एदेण सागरोवमसदपुधत्तणिद्देसेण जवमज्झाणं हेट्ठिमअद्धाणं जाणाविदं। एत्थ गुणहाणिअद्धाणाणं पमाणमवट्ठिदं। जीवविसेसा पुण अणवट्ठिदा, गुणहाणिं पडि दुगुण-दुगुणक्कमेण तेसिं वड्ढिदंसणादो।

तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सादस्स असादस्स उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥ १९१ ॥

साताके द्विस्थानबन्धक जीव और असाताके चतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें स्तोक हैं ॥ १८७ ॥

इसका कारण यह है कि जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उपरिम स्थितियोंके जीवोंके विशेष अधिक क्रमसे वृद्धि देखी जाती है।

द्वितीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८८ ॥

विशेष कितना है ? वह एक जीवविशेषके बराबर है। प्रतिभाग क्या है ? एक दुगुणवृद्धिअध्वान प्रतिभाग है।

तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८९ ॥

विशेष क्या है ? एक अधिक गुणहानिका द्वितीय स्थितिमें भाग देनेपर जो एक भाग प्राप्त हो उतना विशेषका प्रमाण है।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थिति तक जीवोंका प्रमाण विशेष अधिक विशेष अधिक होता गया है ॥ १९० ॥

'शतपृथक्त्व सागरोपम' इस निर्देशसे यवमध्योंके अधस्तन अध्वानको बतलाया गया है। यहां गुणहानिअध्वानोंका प्रमाण अवस्थित है। परन्तु जीव विशेष अनवस्थित हैं, प्रत्येक गुणहानिके अनुसार उनके दुगुण-दुगुण वृद्धि देखी जाती है।

इसके आगे साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे विशेष हीन विशेष हीन होते गये हैं ॥ १९१ ॥

एदेसिं दोण्णं जवमज्झाणं पुध परूवणा किमट्ठं कदा ? पुव्विल्लचदुण्णं जवमज्झाणं जवमज्झादो हेट्ठिम-उवरिमअद्धाणाणि सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि चेव, एदेसिं दोण्णं जवमज्झाणं हेट्ठिमअद्धाणाणि सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि, उवरिमअद्धाणाणि पुण पण्णारस-तीससागरोवमकोडाकोडिमेत्ताणि त्ति जाणावणट्ठं पुध परूवणा कदा। एत्थ छण्णं पि जवमज्झाणं एगेगगुणहाणिअद्धाणं समाणं। कुदो ? गुरूवएसादो। णाणागुणहाणिसला-गाओ पुण असमाणाओ,[1] जवमज्झे हेट्ठिमउवरिमअद्धाणाणं अण्णोण्णसमाणत्ताभावादो। एत्थ संदिट्ठी एसा १६।२०।२४।२८।३२।४०।४८।५६।६४।५६।४८।४०।३२।२८।२४। २०।१६।१४।१२।१०।८।७।६।५। एवमणंतरोवणिधा समत्ता।

परंपरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स बिट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवेहिंतो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्ढिदा[2] ॥ १९२ ॥

तदो जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो त्ति [उत्तं] होदि। जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो दुगुणत्तं

शंका—इन दो यवमध्योंकी पृथक् प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—पूर्व चार यवमध्यों सम्बन्धी यवमध्यसे नीचे व ऊपरके अध्वान शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण ही हैं, परन्तु इन दो यवमध्योंके नीचेके अध्वान शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण और उपरिम अध्वान पन्द्रह व तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं; इस बातको बतलानेके लिये उनकी पृथक् प्ररूपणा की गई है।

यहां छहों यवमध्योंकी एक एक गुणहानिका अध्वान समान है, क्योंकि, ऐसा गुरुका उपदेश है। परन्तु नानागुणहानिशलाकायें असमान हैं, क्योंकि, यवमध्यमें नीचे व ऊपरके अध्वानोंके परस्पर समानता नहीं है। यहां उसकी संदृष्टि यह है—(मूलमें देखिये) इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा साताके चतुस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव तथा असाताके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उनसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं ॥ १९२ ॥

'तदो' पदका अर्थ 'जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा' है। अर्थात् वे जघन्य

---

१ ताप्रतौ 'असमाणाओ त्ति', इति पाठः। २ पल्लासंखियमूलानि गंतुं दुगुणा य दुगुणहीणा य। नाणंतराणि पल्लस्स मूलभागो असंखतमो ॥ क. प्र. १,९९। पल्ल त्ति—परावर्तमानशुभप्रकृतीनां चतुःस्थानगतरसबन्धका ध्रुवप्रकृतीनां जघन्यस्थितौ बन्धकत्वेन वर्तमाना ये जीवास्तदपेक्षया जघन्यस्थितेः परतः पल्योपमस्यासंख्येयानि वर्गमूलानि—पल्योपमस्यासंख्येयेषु वर्गमूलेषु यावन्तः समयास्तावत्प्रमाणाः स्थितीरतिक्रम्यान्तरे स्थितिस्थाने द्विगुणा भवन्ति (म. टी.)।

पडिवज्जमाणा । कं पेक्खिदूण दुगुणत्ते पुच्छिदे जहण्णट्ठिदीए जीवेहिंतो त्ति भणिदं होदि । एदेसिं जवमज्झाणं णाणागुणहाणिसलागाहि अप्पप्पणो अद्धाणे भागे हिदे एगगुणहाणि-अद्धाणं होदि त्ति घेत्तव्वं । जवमज्झस्स हेट्ठा एक्का चेव गुणहाणी ण होदि, अणेगाओ होंति त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव जवमज्झं ॥ १९३ ॥

अवट्ठिदमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि त्ति जाणावणट्ठमेवमिदि णिद्देसो कदो । जवमज्झस्स हेट्ठा गुणहाणीयो बहुगाओ होंति त्ति जाणावणट्ठं विच्छाणिद्देसो[1] कदो ।

तेण परं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुण-हीणा ॥ १९४ ॥

जवमज्झादो उवरिमगुणहाणीयो आयामेण हेट्ठिमगुणहाणीहि समाणाओ । सेसं सुगमं ।

एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सागरोवमसदपुधत्तं ॥१९५॥

एदेसिं चदुण्णं जवमज्झाणं हेट्ठिमभागो व्व उवरिमभागो सागरोवमसदपुधत्तमेत्तो चेव होदि त्ति जाणावणट्ठं सागरोवमसदपुधत्तग्गहणं कदं । सेसं सुगमं ।

स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं । किसकी अपेक्षा वे दुगुणे हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वे जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा दुगुणे हैं, यह अभिप्राय निकलता है । इन यवमध्योंकी नानागुणहानिशलाकाओंका अपने अपने अध्वानमें भाग देनेपर एक गुणहानिअध्वान प्राप्त होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यवमध्यके नीचे एक ही गुणहानि नहीं होती, किन्तु वे अनेक होती हैं; इस बातका ज्ञापन करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इस प्रकार यवमध्य तक वे दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥ १९३ ॥

अवस्थित अध्वान जाकर दुगुणी वृद्धि होती है, इस बातका परिज्ञान करानेके लिये 'एवं' पदका निर्देश किया गया है । यवमध्यके नीचे गुणहानियां बहुत होती हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा' यह वीप्सा (द्विरुक्ति) का निर्देश किया है ।

इसके आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त होते हैं ॥ १९४ ॥

यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानियां आयामकी अपेक्षा समान हैं । शेष कथन सुगम है ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितितक दुगुणी दुगुणी हानिको प्राप्त होते गये है ॥ १९५ ॥

इन चार यवमध्योंके अधस्तन भागके समान उपरिम भाग भी शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण ही है, इस बातका परिज्ञान करानेके लिये सूत्रमें 'सागरोपमशतपृथक्त्व' का ग्रहण किया है । शेष कथन सुगम है ।

१ प्रतिषु 'मिच्छाणिद्देसो' इति पाठः ।

सादस्स विट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवेहिंतो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्ढिदा ॥ १९६ ॥

सुगममेदं ।

एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव सागरोवमसद-पुधत्तं ॥ १९७ ॥

एदं पि सुगमं ।

तेण परं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुण-हीणा ॥ १९८ ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सादस्स असादस्स उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥ १९९ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवम-वग्गमूलाणि ॥ २०० ॥

पुव्वं गुणहाणीए आयामो सामण्णेण परूविदो, विसेसेण विणा पलस्स असंखेज्जदि-

सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव व असातावेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उससे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपमों तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इसके आगे पल्योपमका असंख्यातवां भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणे दुगुणे हीन होते गये हैं ॥ १९९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

एकजीवद्गुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यात वर्गमूल प्रमाण है ॥ २०० ॥

पहिले सामान्य रूपसे गुणहानिके आयामकी प्ररूपणा की गई है, क्योंकि, वह

भागो त्ति उवइट्ठत्तादो । संपधि तस्स अद्धाणस्स विसेसो एदेण सुत्तेण परूविदो । असंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि त्ति भणिदे असंखेज्जा पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि त्ति घेत्तव्वं, बिदियादिवग्गमूलेसु वग्गिदेसु पलिदोवमाणुप्पत्तीदो ।

णाणाजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०१ ॥

पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि भागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होंति त्ति जदि वि सामण्णेण उत्तं तो वि पलिदोवमअद्धछेदणएहिंतो थोवाओ त्ति घेत्तव्वं । कुदो ? एदेसिमण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति गुरूवदेसादो ।

णाणाजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २०२ ॥

कुदो ? पलिदोवमादो असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिय उप्पण्णत्तादो ।

एगजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ २०३ ॥

कुदो ? असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । कम्मपदेसगुणहाणीदो एसा जीवगुणहाणी किं सरिसा किमसरिसा त्ति पुच्छिदे एदं ण जाणिज्जदे । कुदो ? सुत्ताभावादो । एवं सेडिपरूवणा समत्ता ।

विशेषके विना पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, ऐसा उपदिष्ट है । इस समय इस सूत्रके द्वारा उस अध्वानका विशेष बतलाया गया है । 'असंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि' ऐसा कहनेपर पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंको ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, द्वितीयादि वर्गमूलोंका वर्ग करनेपर पल्योपम उत्पन्न नहीं होता है ।

नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २०१ ॥

यद्यपि पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानागुणहानिशलाकायें होती हैं, ऐसा सामान्य रूपसे कहा गया है, तो भी वे पल्योपमके अर्धच्छेदोंसे स्तोक हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, ऐसा गुरुका उपदेश है ।

नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २०२ ॥

क्योंकि, वे पल्योपमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे हटकर उत्पन्न हुए हैं ।

एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २०३ ॥

क्योंकि, वह पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है । कर्मप्रदेशोंकी गुणहानिकी अपेक्षा यह जीवगुणहानि क्या सदृश है या विसदृश है, ऐसा पूछनेपर उसका उत्तर ज्ञात नहीं होता, क्योंकि, उसकी प्ररूपणा करनेवाला कोई सूत्र नहीं है । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई ।

---

१ प्रतिषु 'वग्गेसु' इति पाठः ।

जवमज्झजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण । छण्णं जवाणं जीवे अप्पप्पणो जवमज्झजीवपमाणेण कदे किंचूणतिण्णिगुणहाणिमेत्ता होंति । संदिट्ठीए सव्वदव्वमट्ठतीसाहियछस्सदमेत्तं ६३८ । किंचूणतिण्णिगुणहाणीओ एदाओ ३१९।३२ । एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे जवमज्झजीवपमाणं होदि ६४ ।

पुणो छण्णं जवाणं जवमज्झस्स हेट्ठिमजहण्णट्ठिदिजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? तिण्णिगुणहाणिगुणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । तं जहा— जीवजवमज्झस्स हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ (२) विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उप्पज्जदि (४) । पुणो एदेण किंचूणतिसु गुणहाणीसु गुणिदासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणहाणिपमाणं होदि (३१९।८) । पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे जहण्णट्ठिदिजीवपमाणं होदि (१६) । पुणो एदं परिहाणिं कादूण णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमट्ठिदिजीवेत्ति ।

पुणो विदियगुणहाणिपढमट्ठिदिजीवपमाणेण सव्वट्ठिदिजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? जहण्णट्ठिदिजीवभागहारादो अद्धमेत्तेण । कुदो ? एगदुगुणवड्ढि चडिदो त्ति एगरूवं विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण पुव्वभागहारे ओवट्टिदे तदुप्पत्तीदो

यवमध्यके जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे तीन गुणहानिस्थानान्तरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । छह यवोंके जीवोंको अपने अपने यवमध्यजीवोंके प्रमाणसे करनेपर वे कुछ कम तीन गुणहानियोंके बराबर होते हैं । संदृष्टिमें सब द्रव्यका प्रमाण छह सौ अड़तीस (६३८) है । कुछ कम तीन गुणहानियां ये हैं — $\frac{३१९}{३२}$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण होता है — ६३८ ÷ $\frac{३१९}{३२}$ = $\frac{६३८}{१}$ × $\frac{३२}{३१९}$ = ६४ । छह यवोंके यवमध्यसे नीचेकी जघन्य स्थितिके जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे तीन गुणहानियोंसे गुणित पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालके द्वारा अपहृत होते हैं । यथा जीवयवमध्यके नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओं (२) का विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग (२×२=४) उत्पन्न होता है । इसके द्वारा कुछ कम तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र गुणहानियोंका प्रमाण होता है — $\frac{३१९}{३२}$ ÷ ४ = $\frac{३१९}{८}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता है — ६३८ ÷ $\frac{३१९}{८}$ = $\frac{६३८}{१}$ × $\frac{८}{३१९}$ = १६ । इसकी हानि करके प्रथम गुणहानि सम्बन्धी अन्तिम स्थितिके जीवों तक ले जाना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानिकी प्रथम स्थितिके जीवोंके प्रमाणसे सब स्थितियोंके जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? वे उक्त प्रमाण से जघन्य स्थिति सम्बन्धी जीवोंके भागहारके अर्ध भाग मात्रसे अपहृत होते हैं, क्योंकि, एक दुगुणवृद्धि आगे गये हैं, अतः एक अंकका विरलन करके दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उससे पूर्व

३१९ । १६ । पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे विदियगुणहाणिपढमट्ठिदिजीवपमाणं होदि ३२ । पुणो परिहाणिं कादूण णेदव्वं जाव छण्णं जवाणं सागरोवमसदपुधत्तमेत्तमुवरि चडिदूण ट्ठिदजवमज्झजीवपमाणं पत्तं त्ति । पुणो तस्स भागहारो किंचूणतिण्णिगुणहाणीयो ३१९ । ३२ । पुणो एदस्सुवरि पक्खेवं कादूण णेदव्वं जाव छण्णं जवाणं चरिमट्ठिदिजीव-पमाणं पत्तं ति । पुणो तप्पमाणेण अवहिरिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुण-हाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति । तं जहा—जवमज्झाणमुवरिमणाणागुणहाणिसलागाणं (४) अण्णोण्णब्भत्थरासिणा (१६) तिण्णिगुणहाणीयो गुणिय किंचूणे कदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणहाणीयो भागहारो होदि त्ति (६३८ । ५) । पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे चरिमट्ठिदिजीवपमाणमागच्छदि (५) । एवं भागहारपरूवणा गदा ।

छण्णं जवाणं जवमज्झजीवा सव्वजीवाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? किंचूणतिण्णिगुणहाणीयो । एवं जवमज्झस्स हेट्ठोवरिं जाणिदूण भागाभाग-परूवणा कायव्वा । भागाभागपरूवणा गदा ।

सव्वत्थोवा छण्णं जवाणं चरिमट्ठिदिजीवा ५ । तेसिं जहण्णट्ठिदिजीवा असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? जवमज्झस्स उवरिम-

---

भागहारको अपवर्तित करनेपर उसका अर्ध भाग उत्पन्न होता है—१×२; $\frac{३१९}{८} \div २ = \frac{३१९}{१६}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिकी प्रथम स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता है—$६३८ \div \frac{३१९}{१६} = ३२$ । इतनी हानि करके छह यवोंके शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण आगे जाकर स्थित यवमध्य सम्बन्धी जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । उसका भागहार कुछ कम तीन गुणहानियां है—$\frac{३१९}{३२}$ । इसके आगे प्रक्षेप करके छह यवोंकी अन्तिम स्थिति सम्बन्धी जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । उस प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र गुणहानिस्थानान्तरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । यथा—यवमध्योंकी उपरिम नानागुणहानिशलाकाओं (४) की अन्योन्याभ्यस्त राशि (१६) से तीन गुणहानियोंको गुणित करके कुछ कम करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र गुणहानियां भागहार होती हैं $\frac{६३८}{५}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम स्थितिके जीवोंका प्रमाण (५) आता है । इस प्रकार भागहारप्ररूपणा समाप्त हुई ।

छह यवोंके यवमध्यके जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे सब जीवोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग कुछ कम तीन गुणहानियां हैं । इसी प्रकार यवमध्यके नीचे व ऊपर भी जानकर भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये । भागाभागकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

छह यवोंकी अन्तिम स्थितिके जीव सबसे स्तोक हैं (५) । उनकी जघन्य स्थितिके जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग

जहण्णट्ठिदिजीवसमाणजीवट्ठिदीदो उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ (२) विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण किंचूणे कदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगाररासिसमुप्पत्तीदो १६।५। एदेण चरिमट्ठिदिजीवे गुणिदे[2] जहण्णट्ठिदिजीवपमाणं होदि १६। जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? जवमज्झस्सुवरिमजहण्णट्ठिदिसमाणजीवाणं[3] च हेट्ठिम (२) णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स गुणगारभूदस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवलंभादो[4] ४। एदेण जहण्णट्ठिदिजीवे गुणिदे जवमज्झजीवा होंति ६४। केत्तियासु ट्ठिदीसु जवमज्झं? एक्किस्से चेव। जवमज्झप्पहुडि हेट्ठिमजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, किंचूणदिवड्ढगुणहाणीयो त्ति उत्तं होदि। ३९।८। एदेण जवमज्झजीवे गुणिदे जवमज्झेण सह हेट्ठिमजीवपमाणं होदि ३१२[5]। जवमज्झस्स उवरिमजीवा विसेसाहिया। बंधविसेसाहियकारणं उच्चदे। तं जहा—जवमज्झहेट्ठिमआयामादो[6]। तत्तो उवरिमदीहपमाणं संखेज्जगुणं। पुणो जवमज्झस्स हेट्ठा

है, क्योंकि, उपरिम जघन्य स्थितिके जीवोंके समान जीवस्थितिसे ऊपरकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दूना कर परस्पर गुणन करनेपर जो प्राप्त हो उसमें कुछ कम करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण गुणकार राशि उत्पन्न होती है—$\frac{16}{5}$। इससे अन्तिम स्थितिके जीवोंको गुणित करनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता है—१६। उनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, यवमध्यसे ऊपरकी और जघन्य स्थितिके समान जीवोंके नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जो गुणकारभूत राशि प्राप्त होती है वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण पायी जाती है—४। इससे जघन्य स्थितिके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीव होते हैं—६४।

शंका—कितनी स्थितियोंमें यवमध्य होता है?

समाधान—एक ही स्थितिमें होता है।

यवमध्यसे लेकर नीचेके जीव असंख्यात गुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग अर्थात् कुछ कम डेढ़ गुणहानियां हैं, यह अभिप्राय है—$\frac{39}{8}$। इससे यवमध्यजीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके साथ नीचेके जीवोंका प्रमाण होता है—३१२। यवमध्यसे ऊपरके जीव विशेष अधिक हैं। उनके विशेष अधिक होनेका कारण बतलाते हैं। वह इस प्रकार है—यवमध्यके अधस्तन आयामकी अपेक्षा उससे ऊपरकी दीर्घताका प्रमाण संख्यातगुणा है। यवमध्यके नीचे जितना अध्वान है उतना

---

१ अ-काप्रत्योः '-समाणाण-', ताप्रतौ 'समाणाणं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'जीवगुणिदे' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'जहण्णट्ठिदिसमाण जीवाणं' इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'मेत्तुवलंभादो' इति पाठः। ५ अप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु १९ इति पाठः। ६ अप्रतौ 'जवमज्झहेट्ठिमजीवेहि उवरिमं होदि आयामादो' इति पाठः।

जत्तियमद्धाणं तत्तियमेत्तमुवरि गंतूण ट्ठिदट्ठिदीणं जीवपमाणं जवमज्झहेट्ठिमजीवेहि सरिसं होदि। पुणो वि उवरिमट्ठिदिदीहपमाणं संखेज्जगुणमत्थि। तासु ट्ठिदीसु ट्ठिदसव्वजीवा जवमज्झहेट्ठिमजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता। तेसिं पमाणमेदं ७८। पुणो एदम्मि एत्थ ३१२ पक्खित्ते जवमज्झहेट्ठिमजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्तेण उवरिमजीवा अहिया होंति ३९०। सव्वासु ट्ठिदीसु जीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? जवमज्झहेट्ठिमजीवपक्खित्तमेत्तेण ६३८। अथवा, पुणरवि अण्णेण पयारेण अप्पाबहुअं भणिस्सामो। तं जहा—सव्वत्थोवा छण्णं जवाणं उक्कस्सियाए ट्ठिदीए जीवा। अप्पप्पणो जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा पुध पुध असंखेज्जगुणा। अजहण्ण-अणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु जीवा असंखेज्जगुणा। पढमासु ट्ठिदीसु जीवा विसेसाहिया। अचरिमासु ट्ठिदीसु जीवा विसेसाहिया। सव्वासु ट्ठिदीसु जीवा विसेसाहिया। एदाओ ट्ठिदीओ णाणोवजोगेण बज्झंति, एदाओ च दंसणोवजोगेण बज्झंति त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सादस्स असादस्स य विट्ठाणयम्मि णियमा अणागारपाओग्गट्ठाणाणि[2] ॥ २०४ ॥

अणागारउवजोगपाओग्गट्ठिदिबंधट्ठाणाणि णियमा णिच्छएण सादासादाणं विट्ठा-

मात्र ऊपर जाकर स्थित स्थितियोंके जीवोंका प्रमाण यवमध्यसे नीचेके जीवोंके समान होता है। फिर भी उपरिम स्थितियोंकी दीर्घताका प्रमाण संख्यातगुणा है। उन स्थितियोंमें स्थित सब जीव यवमध्यके अधस्तन जीवोंके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। उनका प्रमाण यह है—७८। इसको इसमें (३१२) मिलानेपर यवमध्यसे नीचेके जीवोंके असंख्यातवें भाग मात्रसे ऊपरके जीव अधिक होते हैं—३१२+७८=३९०। सब स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं? यवमध्यके नीचेके जीवोंके प्रक्षिप्त मात्रसे वे अधिक हैं—६३८।

अथवा फिरसे भी दूसरे प्रकारसे अल्पबहुत्वको कहते हैं। वह इस प्रकार है—छह यवोंकी उत्कृष्ट स्थितिमें जीव सबसे स्तोक हैं। अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें पृथक् पृथक् असंख्यातगुणे हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं। प्रथम स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। अचरम स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। सब स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं। ये स्थितियाँ ज्ञानोपयोगसे बँधती हैं और ये स्थितियाँ दर्शनोपयोगसे बंधती हैं, यह बतलानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

साता व असाता वेदनीयके द्विस्थानिक अनुभागमें निश्चयसे अनाकार उपयोग योग्य स्थान होते हैं ॥ २०४ ॥

अनाकार उपयोग योग्य स्थितिबन्धस्थान नियम अर्थात् निश्चयसे साता व असाता

१ प्रतिषु 'अजहण्णा—' इति पाठः। २ अणगारप्पाउग्गा विट्ठाणगयाउ दुविहरसगंमि। सागारा सव्वत्थ वि...॥ क. प्र. १, ९६.।

णियम्मि अणुभागे बज्झमाणे होंति, ण अण्णत्थ; दंसणोवजोगकाले अइसंकिलेसविसोहीण-मभावादो। को दंसणोवजोगो णाम? अंतरंगउवजोगो[1]। कुदो? आगारो णाम कम्म-कत्तारभावो, तेण विणा जा उवलद्धी[2] सो अणागारउवजोगो। अंतरंगउवजोगे[3] वि कम्म-कत्तारभावो अत्थि त्ति णासंकणिज्जं, तत्थ कत्तारादो दव्व-खेत्तेहि फुट्ठकम्माभावादो। एवं संते सुद-मणपज्जवणाणाणं पि दंसणोवजोगपुरंगमत्तं पसज्जदि त्ति उत्ते, ण, मदिणाण-पुरंगमाणं तेसिं दोण्णं पि दंसणोवजोगपुरंगमत्तविरोहादो। तदो[4] बज्झत्थगहणसंते विसिट्ठसगसरूवसंवेयणं दंसणमिदि सिद्धं। ण च बज्झत्थग्गहणुम्मुहावत्था चेव दंसणं, किंतु बज्झत्थग्गहणुवसंहरणपढमसमयप्पहुडि जाव बज्झत्थअग्गहणचरिमसमओ त्ति दंसणुव-जोगो त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा दंसण-णाणोवजोगवदिरित्तस्स वि जीवस्स अत्थित्तप्पसंगादो।

सागारपाओग्गट्ठाणाणि सव्वत्थ ॥ २०५ ॥

वेदनीयके द्विस्थानिक अनुभागका बन्ध होनेपर होते हैं, अन्यत्र नहीं होते; क्योंकि, दर्शनोपयोगके समयमें अतिशय संक्लेश और विशुद्धिका अभाव होता है।

शंका—दर्शनोपयोग किसे कहते हैं?

समाधान—अन्तरंग उपयोगको दर्शनोपयोग कहते हैं। कारण यह कि आकारका अर्थ कर्मकर्तृत्व है, उसके बिना जो अर्थोपलब्धि होती है उसे अनाकार उपयोग कहा जाता है।

अन्तरंग उपयोगमें भी कर्मकर्तृत्व होता है, ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये; क्योंकि, उसमें कर्ताकी अपेक्षा द्रव्य व क्षेत्रसे स्पष्ट कर्मका अभाव है।

शंका—ऐसा होनेपर श्रुतज्ञान और मनःपर्यय ज्ञानके भी दर्शनोपयोगपूर्वक होनेका प्रसंग आवेगा?

समाधान—नहीं आवेगा, क्योंकि, वे दोनों ज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होते हैं, अतः उनके दर्शनोपयोगपूर्वक होनेमें विरोध है। इस कारण बाह्य अर्थका ग्रहण होनेपर जो विशिष्ट आत्मस्वरूपका वेदन होता है वह दर्शन है, यह सिद्ध होता है।

बाह्य अर्थके ग्रहणके उन्मुख होने रूप जो अवस्था होती है वही दर्शन हो, ऐसी बात भी नहीं है; किन्तु बाह्यार्थग्रहणके उपसंहारके प्रथम समयसे लेकर बाह्यार्थके अग्रहणके अन्तिम समय तक दर्शनोपयोग होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इसके बिना दर्शन व ज्ञानोपयोगसे भिन्न भी जीवके अस्तित्वका प्रसंग आता है।

साकार उपयोगके योग्य स्थान सर्वत्र बँधते हैं ॥ २०५ ॥

---

१ ताप्रतौ 'णाम? अंतरोवजोगो अंतरंगउवजोगो' इति पाठः। २ अप्रतौ 'जाउवाउवलद्धी' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'अंतरंगउवजोगो' इति पाठः। ४ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'फुट्ठि', ताप्रतौ 'फुट्ठ (?)' इति पाठः। ५ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'कुदो' इति पाठः।

सागारो णाणोवजोगो, तत्थ कम्म-कत्तारभावसंभवादो । तस्स सागारस्स पाओग्गाणि ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि सव्वत्थ अत्थि । भावत्थो—जाणि ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि दंसणोवजोगेण सह बज्झंति ताणि णाणोवजोगेण वि बज्झंति । जाणि दंसणोवजोगेण ण बज्झंति[1] ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि ताणि[2] वि णाणोवजोगेण बज्झंति त्ति उत्तं होदि । एदेसिं छण्णं जवाणं हेट्ठिम-उवरिमभागाणं थोवबहुत्तजाणावणट्ठमणागार[3]पाओग्गट्ठाणाणं पमाणजाणावणट्ठं च उवरिल्लमप्पाबहुगसुत्तमागदं—

सादस्स चउट्ठाणियजवमज्झस्स[4] हेट्ठदो ट्ठाणाणि थोवाणि[5] ॥ २०६ ॥

कुदो ? सागरोवमसदपुधत्तपमाणत्तादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि[6] ॥ २०७ ॥

जवमज्झादो उवरिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । किं कारणं ? अइविसुद्धट्ठिदीहिंतो मंदविसुद्धट्ठिदीणं बहुत्ताविरोहादो ।

साकारसे अभिप्राय ज्ञानोपयोगका है, क्योंकि, उसमें कर्म और कर्तृत्वकी सम्भावना है। उक्त साकार उपयोगके योग्य स्थितिबन्धस्थान सर्वत्र होते हैं। भावार्थ—जो स्थितिबन्धस्थान दर्शनोपयोगके साथ बँधते हैं वे ज्ञानोपयोगके साथ भी बँधते हैं। जो स्थितिबन्धस्थान दर्शनोपयोगके साथ नहीं बंधते हैं वे भी ज्ञानोपयोगके साथ बँधते हैं, यह उसका अभिप्राय है।

इन छह यवोंके अधस्तन और उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वको बतलानेके लिये तथा अनाकार उपयोगके योग्य स्थानोंके प्रमाणको भी बतलानेके लिये आगेका अल्पबहुत्वसूत्र प्राप्त होता है—

साता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान स्तोक हैं ॥ २०६ ॥

कारण कि वे शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण हैं।

उपरिम स्थान उनसे संख्यातगुणे हैं ॥ २०७ ॥

यवमध्यसे ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अति विशुद्ध

---

१ ताप्रतौ 'जाणि दंसणोवजोगेण ण बज्झंति' इत्येतावानयं पाठस्त्रुटितोऽस्ति । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'तिण्णि' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'अणगार' इति पाठः (काप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः)। ४ ताप्रतौ 'चउट्ठाणिया जव—' इति पाठः । ५...हिट्ठा थोवाणि जवमज्झा ॥ ठाणाणि चउट्ठाणा संखेज्जगुणाणि उवरिमेवन्ति (एवं)। तिट्ठाणे बिट्ठाणे सुभाणि एगंतमीसाणि ॥ उवरिं मिस्साणि जहन्नगो सुभाणं तओ विसेसहिओ। होइ सुभाण जहण्णो संखेज्जगुणाणि ठाणाणि ॥ बिट्ठाणे जवमज्झा हेट्ठा एगंतमीसगाणुवरिं। एवं ति-चउट्ठाणे जवमज्झाओ य डायठिई ॥ अंतोकोडाकोडी सुभबिट्ठाण जवमज्झओ उवरिं। एगंतगा विसिट्ठा सुभबिट्ठा डायट्ठिइजेट्ठा ॥ क. प्र. १,९९—१००, परावर्तमानशुभप्रकृतीनां चतुःस्थानकरणयवमध्यादधः स्थितिस्थानानि सर्वस्तोकानि (म. टी. १,९९)। ६ तेभ्यश्चतुःस्थानकरणयवमध्यस्यैवोपरि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि (२)। क. प्र. (म. टी.) १,९७.।

सादस्स तिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[1] ॥ २०८ ॥

कुदो ? चउट्ठाणियअणुभागबंधपाओग्गअज्झवसाणेहिंतो सादतिट्ठाणियजवमज्झहेट्ठिमअणुभागबंधपाओग्गअज्झवसाणाणमसुहत्तदंसणादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि[2] ॥ २०९ ॥

कुदो ? सादतिट्ठाणियजवमज्झहेट्ठिमअज्झवसाणेहिंतो उवरिमअज्झवसाणाणमसुहत्तदंसणादो । मंदविसोहीहि परिणममाणा जीवा बहुगा होंति, तासिं पाओग्गट्ठिदीयो वि बहुगीयो त्ति उत्तं होदि । कुदो ? जं तेणं वि मंदविसोहीणमुप्पत्तीदो ।

सादस्स विट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयंतसागारपाओग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[5] ॥ २१० ॥

कुदो ? सादतिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरिमट्ठिदिसंकिलेसादो सादविट्ठाणियजव-

स्थितियोंकी अपेक्षा मन्द विशुद्ध स्थितियोंके बहुत होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

साता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०८ ॥

कारण यह कि चतुःस्थानिक अनुभागबन्धके योग्य परिणामोंकी अपेक्षा साताके त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके अनुभागबन्धके योग्य परिणाम अशुभ देखे जाते हैं ।

यवमध्यसे ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २०९ ॥

कारण कि साताके त्रिस्थानिक यवमध्यके अधस्तन परिणामोंकी अपेक्षा उपरिम परिणाम अशुभ देखे जाते हैं । मन्द विशुद्धियों रूप परिणमन करनेवाले जीव बहुत हैं तथा उनके योग्य स्थितियां भी बहुत हैं, यह अभिप्राय है । इसका कारण यह है कि उनसे भी मन्द विशुद्धियां उत्पन्न होती हैं ।

साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१० ॥

इसका कारण यह है कि साता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके ऊपरके स्थितिबन्ध-

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठः । २ तेभ्योऽपि त्रिस्थानकरसयवमध्यस्योपरि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ४ । क. प्र. (म. टी.) १,९७ । तेभ्योऽपि परावर्तमानशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानकरसयवमध्यादधः स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ३ । क. प्र. (म. टी.) १,९७ । ३ अ-आ-काप्रतिषु 'सुत्तेण' इति पाठः । ४ अप्रतौ 'सायर', आ-काप्रत्योः 'सागर' इति पाठः । ५ तेभ्योऽपि परावर्तमानशुभप्रकृतीनां द्विस्थानकरसयवमध्यादधःस्थितिस्थानानि एकान्तसाकारोपयोगयोग्यानि संख्येयगुणानि ५ । क. प्र. (म. टी.) १,९७ ।

वज्झस्स हेट्ठिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणं सागारोवजोगेणेव बज्झमाणाणं संकिलेसस्स असुहत्तदंसणादो। दीसइ च सुहवज्जादिपाओग्गट्ठाणेहिंतो असुहपत्थरादिपाओग्गट्ठाणाणमइबहुत्तं।

मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि[2] ॥ २११ ॥

सागार-अणागारउवजोगाणं जाणि पाओग्गाणि सादवेट्ठाणियजवमज्झादो हेट्ठिमाणि ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि ताणि संखेज्जगुणाणि। कुदो? हेट्ठिमअज्झवसाणेहिंतो एदेसिमज्झवसाणाणं असुहत्तुवलंभादो। मोक्खकारणादो संसारकारणेण बहुएण होदव्वं, अण्णहा देव-मणुस्सेहिंतो तिरिक्खाणमणंतगुणत्ताणुववत्तीदो।

सादस्स चेव[3] बिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि[4] ॥ २१२ ॥

कारणं हेट्ठिमअज्झवसाणेहिंतो उवरिमअज्झवसाणाणं सुट्ठु असुहत्तं।

असादस्स बिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयंतसायारपाओग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[5] ॥ २१३ ॥

स्थानोंके संक्लेशकी अपेक्षा साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके साकार उपयोगसे बंधनेवाले स्थितिबन्धस्थानोंका संक्लेश अशुभ देखा जाता है। वज्र आदिके योग्य शुभ स्थानोंकी अपेक्षा अशुभ पत्थर आदिके योग्य स्थान अत्यन्त बहुत देखे भी जाते हैं।

मिश्र स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २११ ॥

साकार व अनाकार उपयोगके योग्य जो साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थितिबन्धस्थान हैं वे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि नीचेके अध्यवसानोंकी अपेक्षा ये अध्यवसान अशुभ देखे जाते हैं। मोक्षके कारणकी अपेक्षा संसारका कारण बहुत होना चाहिये, क्योंकि, अन्यथा देव और मनुष्योंकी अपेक्षा तिर्यंचोंका अनन्तगुणत्व बन नहीं सकता।

साताके ही द्विस्थानिक यवमध्यके ऊपर मिश्र स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१२ ॥

इसका कारण अधस्तन अध्यवसानोंकी अपेक्षा उपरिम अध्यवसानोंका अत्यन्त अशुभ होना है।

असाताके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचे एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१३ ॥

१ ताप्रतौ 'वज्झदि' इति पाठः। २ तेभ्योपि द्विस्थानकरसयवमध्यादधः साकारेभ्य ऊर्ध्वं स्थितिस्थानानि मिश्राणि साकारानाकारोपयोगयोग्यानि संख्येयगुणानि ६। क. प्र. (म. टी.) १,९७। ३ अप्रतौ 'सादस्सेव' इति पाठः। ४ तेभ्योऽपि द्विस्थानकरसयवमध्यस्योपरि मिश्राणि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ७। क. प्र. १,९८.। ५ ताप्रतौ 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठः। ततोऽप्यशुभपरावर्तमानप्रकृतीनामेव द्विस्थानकरसयवमध्यादध एकान्तसाकारोपयोगयोग्यानि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि १०। क. प्र. (म. टी.) १,९९।

कुदो? सादबिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि सागाराणागारपाओग्गट्ठिदिबंधज्झवसाणेहिंतो असादबिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठिमएयंतसागारपाओग्गट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमसुहत्तुवलंभादो।

मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि[1] ॥ २१४ ॥

कारणं सुगमं।

असादस्स चेव बिट्ठाणियजवमज्झस्सुवरि मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि[2] ॥ २१५ ॥

एदेसिं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं संखेज्जगुणत्तस्स कारणं पुव्वं परूविदमिदि णेह परूविज्जदे। सादस्स सागाराणागारपाओग्गट्ठिदिबंधट्ठाणप्पहुडिबिट्ठाण-तिट्ठाण-चउट्ठाणपाओग्गादिहेट्ठिमासेसट्ठिदीहिंतो संखेज्जगुणमद्धाणमुवरि गंतूण असादस्स बिट्ठाणजवमज्झस्स सागारअणागारपाओग्गट्ठाणाणि होंति। कुदो? पयडिविसेसेण तदो संखेज्जगुणं गंतूण तदुप्पत्तिविरोहाभावादो।

एयंतसागारपाओग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[3] ॥ २१६ ॥

कारणं सुगमं।

इसका कारण यह है कि साताके द्विस्थानिक यवमध्यके ऊपरके साकार व अनाकार उपयोगके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसानोंकी अपेक्षा असाताके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके सर्वथा साकार उपयोगके योग्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अशुभ पाये जाते हैं।

मिश्र स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१४ ॥

इसका कारण सुगम है।

ऊपर मिश्र स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१५ ॥

इन स्थितिबन्धस्थानोंके संख्यातगुणे होनेका जो कारण है उसकी प्ररूपणा पहिले की जा चुकी है, अतः वह यहां फिरसे नहीं की जा रही है। साता वेदनीयके साकार और अनाकार उपयोगके योग्य स्थितिबन्धस्थानोंको लेकर द्विस्थान त्रिस्थान एवं चतुःस्थान योग्य इत्यादि नीचेकी समस्त स्थितियोंसे संख्यातगुणे अध्वान आगे जाकर असातावेदनीयके द्विस्थान यवमध्यके साकार व अनाकार उपयोग योग्य स्थान होते हैं, क्योंकि, प्रकृतिविशेषके कारण उनसे संख्यातगुणे स्थान आगे जाकर उनके उत्पन्न होनेमें कोई विरोध नहीं है।

एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१६ ॥

इसका कारण सुगम है।

---

१ ततस्तासामेव परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां द्विस्थानकरसयवमध्यादधः पाश्चात्येभ्य ऊर्ध्वं मिश्राणि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ११। क. प्र. (म. टी.) १,९९.। २ तेभ्योऽपि तासामेवाशुभपरावर्तमानप्रकृतीनां द्विस्थानकरसयवमध्यादुपरि स्थितिस्थानानि मिश्राणि संख्येयगुणानि १२। क. प्र. (म. टी) १,९९. ३ तेभ्योऽप्युपरि एकान्तसाकारोपयोगयोग्यानि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि १३। क.प्र. (म.टी.) १,९९.।

असादस्स तिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्ज-गुणाणि[1] ॥ २१७ ॥

कुदो ? हेट्ठिमसंकिलेसेहिंतो एदेसिं संकिलेसाणमसुहत्तदंसणादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि[2] ॥ २१८ ॥

कारणं सुगमं ।

असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्ज-गुणाणि[3] ॥ २१९ ॥

कारणं सुगमं ।

सादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो[4] ॥ २२० ॥

कुदो ? असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणि सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताणि । सादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो पुण अंतोकोडाकोडिआबाधूणा । तेण असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झहेट्ठिमट्ठाणेहिंतो सादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो जादो ।

जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ २२१ ॥

असाता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१७ ॥

कारण यह कि नीचेके संक्लेश परिणामोंकी अपेक्षा ये संक्लेश परिणाम अशुभ देखे जाते हैं ।

उसके ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१८ ॥

इसका कारण सुगम है ।

असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१९ ॥

इसका कारण सुगम है ।

सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ २२० ॥

कारण कि असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थितिबन्धस्थान शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण हैं । परन्तु सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध आबाधासे हीन अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । इसीलिये असाताके चतुस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थानोंकी अपेक्षा साता वेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा हो जाता है ।

ज-स्थितिबन्ध उससे विशेष अधिक है ॥ २२१ ॥

१ तेभ्योऽपि तासामेव परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानकरसयवमध्यादधः स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि १४ । क. प्र. (म. टी.) १,९९. । २ तेभ्योऽपि तासामेव परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानकरसयवमध्यस्योपरि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि १५ । क. प्र. (म. टी.) १,९९. । ३ तेभ्योऽप्यशुभपरावर्तमानप्रकृतीनामेव चतुःस्थानकरसयवमध्यादधःस्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि १६ । क. प्र. (म. टी.) १,९९. ४ तेभ्योऽपि शुभानां परावर्तमानप्रकृतीनां जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः ८ । क. प्र. (म. टी.) १,९८.

जट्ठिदिबंधो णाम आबाहाए सहिदजहण्णट्ठिदिबंधो, पहाणीकयकालत्तादो । जहण्ण-बंधो णाम आबाधूणजहण्णबंधो, पहाणीकयणिसेगट्ठिदित्तादो । तेण जहण्णट्ठिदिबंधादो जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सगअंतोमुहुत्तजहण्णाबाहामेत्तेण ।

असादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ २२२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जसागरोवममेत्तेण ।

जट्ठिदिबंधो[2] विसेसाहिओ ॥ २२३ ॥

केत्तियमेत्तेण ? जहण्णाबाहामेत्तेण ।

जत्तो उक्कस्सयं दाहं गच्छदि सा ट्ठिदी संखेज्जगुणा[3] ॥२२४॥

दाहो णाम संकिलेसो । कुदो ? इह-परभवसंतावकारणत्तादो । उक्कस्सदाहो णाम उक्कस्सट्ठिदिबंधकारणउक्कस्ससंकिलेसो । जिस्से ट्ठिदीए ठाइदूण उक्कस्ससंकिलेसं गंतूण उक्कस्सट्ठिदिं[4] बंधदि सा ट्ठिदी संखेज्जगुणा त्ति उत्तं होदि ।

अंतोकोडाकोडी संखेज्जगुणा[5] ॥ २२५ ॥

आबाधासे सहित जघन्य स्थितिबन्धको ज-स्थितिबन्ध कहा जाता है, क्योंकि, वहां कालकी प्रधानता है । आबाधासे हीन जघन्य स्थितिबन्ध जघन्य बन्ध कहलाता है, क्योंकि, उसमें निषेकस्थितिकी प्रधानता है । इसीलिये जघन्य स्थितिबन्धसे ज-स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अपनी अन्तर्मुहूर्त मात्र जघन्य आबाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

असातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२२ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है । वह संख्यात सागरोपम मात्रसे अधिक है ।

ज-स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२३ ॥

कितने मात्रसे अधिक है ? वह जघन्य आबाधा मात्रसे अधिक है ।

जिसके कारण प्राणी उत्कृष्ट दाहको प्राप्त होता है वह स्थिति संख्यातगुणी है ॥२२४॥

दाहका अर्थ संक्लेश है, क्योंकि, वह इस भव और पर भवमें सन्तापका कारण है । उत्कृष्ट दाहका अर्थ उत्कृष्ट स्थितिबन्धका कारणभूत उत्कृष्ट संक्लेश है । जिस स्थितिमें स्थित होकर उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हो जीव उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है वह स्थिति संख्यातगुणी है, यह अभिप्राय है ।

अन्तःकोड़ाकोड़िका प्रमाण संख्यातगुणा है ॥ २२५ ॥

१ ततोऽप्यशुभपरावर्तमानप्रकृतीनां जघन्यः स्थितिबन्धः विशेषाधिकः ९ । क. प्र. (म. टी.) १,९८. । २ अ-आ-काप्रतिषु 'जहण्णट्ठिदिबन्धो' इति पाठः । ३ तेभ्योऽपि शुभमध्यादुपरि डाहस्थिति-संख्येयगुणः १७ । यतः स्थितिस्थानादपवर्तनाकरणवशेनोत्कृष्टां स्थितिं याति तावती स्थितिर्डाहस्थितिः रित्युच्यते । क. प्र. (म. टी.) १,९९. ४ ताप्रतौ 'उक्कस्सट्ठिदी' इति पाठः । ५ ततोऽपि सागरोपमाणामन्तःकोडाकोडी संख्येयगुणा १८ । क. प्र. (म. टी.) १,१००।

पुव्विल्लट्ठिदी अंतोकोडाकोडिमेत्ता, एसा वि ट्ठिदी[1] अंतोकोडाकोडिमेत्ता चेव। किंतु एसा णिव्वियप्पा, तेण संखेज्जगुणा त्ति भणिदा।

सादस्स बिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि एयंतसागारपाओग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि[2] ॥ २२६ ॥

कुदो ? अंतोकोडाकोडीए ऊणपण्णारससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो।

सादस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो[3] विसेसाहिओ[4] ॥ २२७ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सादअणागारपाओग्गट्ठाणप्पहुडि हेट्ठिमआबाधूणअंतोकोडाकोडिणिसेयट्ठिदिमेत्तेण[5]।

जट्ठिदिबंधो[6] विसेसाहियो ॥ २२८ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सगआबाधामेत्तेण।

दाहट्ठिदी विसेसाहिया[7] ॥ २२९ ॥

पूर्वोक्त स्थितिका प्रमाण अन्तःकोड़ाकोड़ि मात्र है, यह स्थिति भी अन्तःकोड़ाकोड़ि प्रमाण ही है। किन्तु यह स्थिति निर्विकल्प है, इसीलिये संख्यातगुणी कही गई है।

साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके ऊपरके एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २२६ ॥

क्योंकि, वे अन्तःकोड़ाकोड़िसे हीन पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं।

साता वेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२७ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? साताके अनाकार उपयोगके योग्य स्थानोंको लेकर नीचे आबाधासे रहित अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम निषेकस्थितियोंके प्रमाणसे वह अधिक हैं।

ज-स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२८ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अपनी आबाधाके प्रमाणसे अधिक है।

दाहस्थिति विशेष अधिक है ॥ २२९ ॥

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'एसा दि ट्ठिदि' इति पाठः। २ ततोऽपि परावर्तमान शुभप्रकृतीनां द्विस्थानकरसयवमध्यस्योपरि यानि भिन्नानि स्थितिस्थानानि तेषु पर्यन्तसाकारोपयोगयोग्यानि स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि १९। क. प्र. (म. टी.) १,१००. ३ अ-आ-काप्रतिषु 'उक्कस्सट्ठिदिबन्धो' इति पाठः। ४ तेभ्योऽपि परावर्तमानशुभप्रकृतीनामुत्कृष्टः स्थितिबन्धो विशेषाधिकः २०। क. प्र. (म. टी.) १,१००.। ५ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'मेत्तो' इति पाठः। ६ अ-आ-काप्रतिषु 'अहण्णट्ठिदिबन्धो' इति पाठः। ७ ततोऽप्यशुभ-(?) परावर्तमानशुभप्रकृतीनां बद्धा डायस्थितिर्विशेषाधिका २१। यतः स्थितिस्थानात् मण्डूकप्लुतिन्यायेन डायां फालां दत्वा या या स्थितिर्बध्यते ततः प्रभृति

दाहो उक्कस्सट्ठिदिपाओग्गसंकिलेसो तस्स दाहस्स कारणभूदट्ठिदी दाहट्ठिदी णाम, कारणे कज्जुवयारादो। तत्थ जहण्णदाहट्ठिदिप्पहुडि जाव उक्कस्सदाहट्ठिदि त्ति एदासिं सव्वासिं जादिदुवारेण एयत्तमावण्णाणं दाहट्ठिदि त्ति सण्णा। सा पण्णारससागरोवम-कोडाकोडीयो पेक्खिदूण विसेसाहिया, किंचूणतीससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो।

असादस्स चउट्ठाणियजवमज्झस्स उवरिमट्ठाणाणि विसेसाहि-याणि ॥ २३० ॥

केत्तियमेत्तेण? असादचउट्ठाणियजवमज्झादो उवरिमजहण्णदाहट्ठिदीदो हेट्ठिम-अंतोकोडाकोडिसागरोवममेत्तेण।

असादस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ[1] ॥ २३१ ॥

केत्तियमेत्तेण? अंतोकोडाकोडीए।

जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ २३२ ॥

केत्तियमेत्तेण? तिण्णिवाससहस्समेत्तेण।

एदेण अट्ठपदेण सव्वत्थोवा सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा[2] ॥२३३॥

दाहका अर्थ उत्कृष्ट स्थितिके योग्य संक्लेश है। उस दाहकी कारणभूत स्थिति कारणमें कार्यका उपचार करनेसे दाहस्थिति कही जाती है। उसमें जघन्य दाहस्थितिसे लेकर उत्कृष्ट दाहस्थितिपर्यन्त जातिके द्वारा एकताको प्राप्त हुई इन सब स्थितियोंकी दाहस्थिति संज्ञा है। वह पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंकी अपेक्षा विशेष अधिक है, क्योंकि, वह कुछ कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है।

असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके ऊपरके स्थान विशेष अधिक हैं ॥२३०॥

वे कितने मात्रसे अधिक हैं? असाता वेदनीयके चतुस्थानिक यवमध्यके ऊपरकी जघन्य दाहस्थितिसे नीचेके अन्तः कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्रसे अधिक हैं।

असाता वेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २३१ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है? वह अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्रसे अधिक है।

ज-स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २३२ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है? वह तीन हजार वर्ष मात्रसे अधिक है।

इस अर्थपदसे सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २३३ ॥

तदन्ता तावती स्थितिर्बद्धा डायस्थितिरिहोच्यते। सा चोत्कर्षतोऽन्तःसागरोपमकोटिकोटयूना सकलकर्मस्थिति-प्रमाणा वेदितव्या। तथाहि—अन्तःसागरोपमकोटिकोटिप्रमाणं स्थितिबन्धं कृत्वा पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रिय उत्कृष्टां स्थितिं बध्नातीति, नान्यथा। क. प्र. (म. टी.) १,१००.

१ तस्मेऽपि परावर्तमानाशुभप्रकृतीनामुत्कृष्टः स्थितिबन्धो विशेषाधिक इति २२। क. प्र. (म. टी.) १,१००. २ संखेज्जगुणा जीवा कमसो एएसु दुविहपगईणं। असुभाणं तिट्ठाणे सव्वुवरि विसेसओ अहिया।

एदमत्थमाहारं काऊण छण्णं जवाणं जीवाणमप्पाबहुगं भणिस्सामो। तम्हि भण्णमाणे सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा थोवा। कुदो? थोवद्धाणत्तादो।

तिट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३४ ॥

कुदो? सादचउट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदीहिंतो तिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदि-विसेसाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो।

विट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३५ ॥

कुदो? सादावेदणीयतिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो तस्सेव विट्ठाणाणु-भागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो।

असादस्स विट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३६ ॥

सादावेदणीयविट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो असादावेदणीयविट्ठाणाणु-भागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसा संखेज्जगुणहीणा। कुदो? अंतोकोडाकोडिऊणपण्णारससागरो-वमकोडाकोडिमेत्तसादविट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदीहिंतो सागरोवमसदपुधत्तट्ठिदिविसे-साणं संखेज्जगुणहीणत्तुवलंभादो। तदो असादस्स विट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा त्ति ण

इस अर्थको आधार करके छह यवोंके जीवोंके अल्पबहुत्वको कहते हैं। उसका कथन करनेमें साता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव स्तोक हैं, क्योंकि, उनका अध्वान स्तोक है।

त्रिस्थानबन्धक जीव उनसे संख्यातगुणे हैं ॥ २३४ ॥

इसका कारण यह है कि साता वेदनीयके चतुःस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितियोंकी अपेक्षा त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे पाये जाते हैं।

द्विस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २३५ ॥

कारण कि सातावेदनीयके त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उसके ही द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे पाये जाते हैं।

असाता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २३६ ॥

शंका— साता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंसे असाता-वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे हीन हैं, क्योंकि, अन्तःकोड़ाकोड़िसे हीन पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण साता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितियोंकी अपेक्षा शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितिविशेष संख्यातगुणे हीन पाये जाते हैं। अतएव असाताके द्विस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं, यह कहना उचित नहीं है?

क. प्र. १,१०१. सर्वस्तोकाः परावर्तमानशुभप्रकृतीनां चतुःस्थानकरसबन्धका जीवाः तेभ्योऽपि त्रिस्थान-करसबन्धकाः संख्येयगुणाः। तेभ्योऽपि द्विस्थानकरसबन्धकाः संख्येयगुणाः (म. टी.)

१ तेभ्योऽपि परावर्तमानशुभप्रकृतीनां द्विस्थानकरसबन्धकाः संख्येयगुणाः। तेभ्योऽपि चतुःस्थानकरस-बन्धका संख्येयगुणाः। तेभ्योऽपि त्रिस्थानकरसबन्धका विशेषाधिकाः। क. प्र. (म. टी.) १,१०१. । २ ताप्रतौ 'सादावेदणीयं विट्ठाणाणु—' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'विट्ठाणाणुबन्ध' इति पाठः।

जुज्जदि ? ण, सादावेदणीयबंधगद्धादो संखेज्जगुणाए असादावेदणीयबंधगद्धाए संचिदाणं संखेज्जगुणत्तेण विरोहाभावादो संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे।

चउट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३७ ॥

कुदो ? असादविट्ठाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो तस्सेव चउट्ठाणाणुभागबंध-पाओग्गट्ठिदिविसेसाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो।

तिट्ठाणबंधा जीवा विसेसाहिया ॥ २३८ ॥

असादस्स चउट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो तस्सेव तिट्ठाणाणुभागबंध-पाओग्गट्ठिदिविसेसा संखेज्जगुणहीणा। तदो तिट्ठाणबंधजीवाणं विसेसाहियत्तं [ण] जुज्जदि त्ति ? ण एस दोसो, सुक्कुक्कस्सपरिणामेसु बहुट्ठिदिविसेसेसु वट्टमाणजीवेहिंतो थोवट्ठिदि-विसेसेसु मज्झिमपरिणामेसु च वट्टमाणजीवाणं बहुत्तं पडि विरोहाभावादो। ण च बहुसं-किलेसविसोहीसु खलविल्लसंजोगो व्व तुट्टीए[1] समुप्पज्जमाणासु जीवबहुत्तं[2] संभवदि, तहा-णुवलंभादो। संखेज्जगुणा ण होंति, विसेसाहिया चेव होंति[3] त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो

समाधान—नहीं, क्योंकि, सातावेदनीयके बन्धककालकी अपेक्षा संख्यातगुणे असाता वेदनीयके बन्धक कालमें संचित जीवोंके संख्यातगुणत्वसे कोई विरोध न होनेके कारण उनको संख्यातगुणा कहना उचित ही है।

चतुःस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २३७ ॥

कारण कि असाता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उसके ही चतुःस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे पाये जाते हैं।

त्रिस्थानबन्धक जीव विशेष अधिक हैं ॥ २३८ ॥

शंका—असाता वेदनीयके चतुःस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उसके ही त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे हीन हैं। इस कारण त्रिस्थानबन्धक जीवोंको उनसे विशेष अधिक कहना उचित [नहीं] है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं हैं, क्योंकि, शुक्ललेश्याके उत्कृष्ट परिणामोंमें बहुत स्थितिविशेषोंमें वर्तमान जीवोंकी अपेक्षा स्तोक स्थितिविशेषों और मध्यम परिणामोंमें वर्तमान जीवोंके बहुत होनेमें कोई विरोध नहीं है। खल्व विल्वसंयोग (खल्वाट और बिल्व फलके संयोग) के समान त्रुटिसे अर्थात् यदा कदाचित् उत्पन्न होनेवाले बहुत संक्लेश व बहुत विशुद्धिमें जीवोंकी अधिकता सम्भव नहीं है, क्योंकि वैसा पाया नहीं जाता।

शंका—वे संख्यातगुणे नहीं हैं, विशेष अधिक ही हैं; यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह इसी सूत्रसे जाना जाता है।

१ अप्रतौ 'खलविल्लसंतो व्व तुट्टीए', आ-काप्रत्योः 'खलविल्लसंजो व्व तुट्टीए' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'जवबहुत्तं' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'विसेसाहिया होंति' इति पाठः।

चेव सुत्तादो। विसंवादिसुत्तं[1] किण्ण जायदे ? ण, विसंवादकारणसयलदोसुम्मुक्कभूदबलिव-यण-विणिग्गयस्स सुत्तस्स विसंवादित्तविरोहादो[2]। एसो जीवसमुदाहारो बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु सण्णिअपज्जत्तएसु च जोजेयव्वो। णवरि ट्ठिदि-विसेसो णायव्वो[3]। बादर-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तेसु वि एवं चेव वत्तव्वो। णवरि एदेसु सव्वेसु वि सादासादाणं बिट्ठाणजवमज्झं चेव, तत्थ तिट्ठाण-चउट्ठाणाणुभागाणं बंधा-भावादो। णवरि बादर-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु एक्केक्किस्से ट्ठिदीए अणंता जीवा। पढमट्ठिदिबंधजीवप्पहुडि कमेण विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेण खंडिदमेत्तेण। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव जवमज्झं। तेण परं विसेसहीणा। सेसं जाणिदूण वत्तव्वं। एसो जीवसमुदाहारो बहुभेदो वि संतो संखेवेण एत्थ परूविदो। एवं जीवसमुदाहारो समत्तो।

शंका—यह सूत्र विसंवाद सहित क्यों नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो भूतबलि भट्टारक विसंवादके कारणभूत समस्त दोषोंसे रहित हैं उनके मुखसे निकले हुए सूत्रके विसंवादी होनेमें विरोध है।

इस जीवसमुदाहारको द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक तथा संज्ञी अपर्याप्तक जीवोंमें जोड़ना चाहिये। विशेष इतना है कि उक्त जीवोंके स्थितिभेदको जानना चाहिये। बादर व सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंमें भी इसी प्रकार कहना चाहिये। विशेष इतना है कि इन सभी जीवोंमें साता व असाताका द्विस्थानिक अनुभाग रूप यवमध्य ही होता है, क्योंकि, उनमें त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक अनुभागोंके बन्धका अभाव है। विशेषता यह है कि बादर व सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंमें एक एक स्थितिमें अनन्त जीव होते हैं। वे क्रमशः प्रथम स्थितिबन्धके जीवोंसे लेकर विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे वे अधिक हैं ? उनको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर जो एक भाग लब्ध हो उतने मात्रसे भी अधिक हैं। पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर यवमध्य तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिसे वृद्धिंगत होते गये हैं। आगे वे विशेष हीन हैं। शेष कथन जानकर करना चाहिये। बहुत भेदोंसे संयुक्त होनेपर भी इस जीवसमुदाहारकी यहां संक्षेपसे प्ररूपणा की गई है। इस प्रकार जीवसमुदाहार समाप्त हुआ।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'विसंवादीसुत्तं', ताप्रतौ 'विसंवादी सुत्त' इति पाठः। २ प्रतिषु 'विसंवादत्त-' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'ट्ठिदिविसेसो वत्तव्वो' इत्येतावानयं पाठस्त्रुटितोऽस्ति।

(संदृष्टियां)
४
३
२
जहण्णाबाधा
उक्कस्साबाधा
सादजहण्णगो ट्ठिदि बंधो
जत्तो उक्कस्सं गच्छदि सा ट्ठिदी एसा
सादउक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो
धुवट्ठिदीए चरिमट्ठिदी एसा
जहण्णिया आबाधा
उक्कसाबाधा
असादजहण्णगो ट्ठिदिबंधो
३
४
जत्तो उक्कस्सं दाह
मगच्छदि सा ट्ठिदी एसा
णिव्वियप्पअंतो-
कोडाकोडी
दाहट्ठिदी
असादउक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो
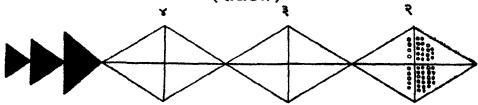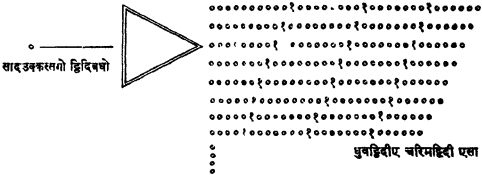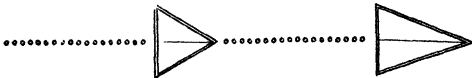
पयडिसमुदाहारे[1] त्ति तत्थ इमाणि दुवे[2] अणियोगद्दाराणि पमाणाणुगमो अप्पाबहुए त्ति[3] ॥ २३९ ॥

परूवणाए सह तिण्णिअणियोगद्दाराणि किण्ण परूविदाणि ? ण, एदेसु चेव परूवणाए अंतब्भूदत्तादो । ण च परूवणाए विणा पमाणादीणं संभवो अत्थि, विरोहादो । तेण एत्थ ताव परूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा—अत्थि णाणावरणादीणं पयडीणं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि । परूवणा गदा ।

पमाणाणुगमे णाणावरणीयस्स असंखेज्जा लोगा ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ॥ २४० ॥

णाणावरणीयस्स ट्ठिदिबंधकारणअज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वाणि एगट्ठं कादूण एसा परूवणा परूविदा । ठिदिं पडि अज्झवसाणट्ठाणाणमेसा पमाणपरूवणा ण होदि, उवरि ट्ठिदिसमुदाहारे ट्ठिदिं पडि अज्झवसाणपमाणस्स परूविज्जमाणत्तादो ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २४१ ॥

जहा णाणावरणीयस्स ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमव्वोगाढेण पमाणपरूवणा कदा

अब प्रकृतिसमुदाहारका अधिकार है । उसमें दो अनुयोगद्वार हैं—प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ॥ २३९ ॥

शंका—प्ररूपणाके साथ यहां तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इनमें ही प्ररूपणाका अन्तर्भाव हो जाता है । कारण कि प्ररूपणाके विना प्रमाणादिकोंकी सम्भावना ही नहीं है, क्योंकि, उसमें विरोध है ।

इसी कारण यहां पहिले प्ररूपणाको कहते हैं । वह इस प्रकार है—ज्ञानावरणादिक प्रकृतियोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रमाणानुगमके अनुसार ज्ञानावरणीयके असंख्यात लोक प्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं ॥ २४० ॥

ज्ञानावरणीयके स्थितिबन्धमें कारणभूत सब अध्यवसानस्थानोंको इकट्ठा करके यह प्रमाणप्ररूपणा कही गई है । प्रत्येक स्थितिके अध्यवसानस्थानोंकी यह प्रमाणप्ररूपणा नहीं है, क्योंकि, आगे स्थितिसमुदाहारमें प्रत्येक स्थितिके आश्रयसे अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जानेवाली है ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी प्रमाणप्ररूपणा है ॥ २४१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी अव्वोगाढ स्वरूपसे

१ आप्रतौ 'समुदाहारो' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः 'इमा दुवो' इति पाठः । ३ संप्रति प्रकृतिसमुदाहार उच्यते । तत्र च द्वे अनुयोगद्वारे । तद्यथा—प्रमाणानुगमः अल्पबहुत्वं च । तत्र प्रमाणानुगमे ज्ञानावरणीयस्स सर्वेषु स्थितिबन्धेषु कियन्त्यध्यवसायस्थानानि ? उच्यते—असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि । एवं सर्वकर्मणामपि द्रष्टव्यम् । क. प्र. (म. टी.) १,८८. ।

तधा सेससत्तण्णं कम्माणं पमाणपरूवणा कायव्वा। एवं पमाणाणुगमे त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा आउअस्स ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि[1] ॥ २४२ ॥

कुदो ? चदुण्णमाउआणं सव्वोदयवियप्पग्गहणादो । कसायउदयट्ठाणेसु उच्चिदूणं[2] गहिदज्झवसाणट्ठाणाणमाउअबंधपाओग्गाणं किण्ण [परूवणा] कीरदे ? ण, सगट्ठिदिबंधट्ठाणहेदुभूदसोदयट्ठाणाणं परूवणाए अण्णपयडिउदयट्ठाणेहि पओजणाभावादो ।

णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि[3] ॥ २४३ ॥

कुदो ? साभावियादो । णामा-गोदाणमुदयस्सेव आउओदयस्स संसारावत्थाए सव्वत्थ संभवे संते ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं थोवत्तं कत्तो णव्वदे ? ठिदिबंधट्ठाणाणं थोव-

प्रमाणप्ररूपणा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी प्रमाणप्ररूपणा भी करना चाहिये। इस प्रकार प्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके अनुसार आयुकर्मके स्थितिबन्धाध्यवसान सबसे स्तोक हैं ॥ २४२ ॥

कारण कि चारों आयुओंके सब उदयविकल्पोंका यहां ग्रहण किया गया है।

शंका—कषायोदयस्थानोंमेंसे चुनकर ग्रहण किये गये आयुबन्धके योग्य अध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अपने स्थितिबन्धस्थानोंके हेतुभूत अपने उदयस्थानोंकी प्ररूपणामें दूसरी प्रकृतियोंके उदयस्थानोंका कोई प्रयोजन नहीं है।

नाम व गोत्रके स्थितिबन्धस्थान दोनोंही तुल्य असंख्यातगुणे हैं ॥ २४३ ॥

कारण कि ऐसा स्वभावसे है।

शंका—जिस प्रकार संसार अवस्थामें नाम व गोत्रका उदय सर्वत्र सम्भव है, उसी प्रकार आयुके उदयकी भी सर्वत्र सम्भावना होनेपर उसके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी स्तोकता कहांसे जानी जाती है ?

१ ठिइदीहयाए त्ति—स्थितिदीर्घतया क्रमशः क्रमेणाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि वक्तव्यानि। यस्य यतः क्रमेण दीर्घा स्थितिस्तस्य ततः क्रमेणाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि वक्तव्यानीत्यर्थः। तथाहि —सर्वस्तोकान्यायुषः स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानानि। क. प्र. (म. टी.) १,८९.। २ प्रतिषु 'उच्चिदूण' इति पाठः। ३ तेभ्योऽपि नाम-गोत्रयोरसंख्येयगुणानि। नन्वायुषः स्थितिस्थानेषु यथोत्तरमसंख्येयगुणा वृद्धिः, नाम-गोत्रयोस्तु विशेषाधिका, तत्कथमायुरपेक्षया नाम-गोत्रयोरसंख्येयगुणानि भवन्ति ? उच्यते—आयुषो जघन्यस्थितावध्यवसायस्थानान्यतीव स्तोकानि, नाम-गोत्रयोः पुनर्जघन्यायां स्थितौ अतिप्रभूतानि, स्तोकानि चायुषः स्थितिस्थानानि, नाम-गोत्रयोस्त्वतिप्रभूतानि, ततो न कश्चिद्दोषः। क. प्र. (म. टी.) १,८९.।

त्तादो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं पहाणत्ते इच्छिज्जमाणे गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि। होदु णाम, असंखेज्जलोगमेत्तो चेवेत्ति गुणगारे अम्हाणं पमाणणियमाभावादो। णामा-गोदज्झवसाणट्ठाणाणं कधं तुल्लत्तं? ण, ट्ठिदिं बंधंताण समाणत्तणेण तत्तुल्लत्तावगमादो।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीयअंतराइयाणं ट्ठिदिबंध-ज्झवसाणट्ठाणाणि चत्तारि वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि[1] ॥ २४४ ॥

णामा-गोदेहिंतो चत्तारि वि कम्माणि मिच्छत्तासंजम-कसायपच्चएहि सरिसाणि। तेण णामा-गोदाणं अज्झवसाणेहिंतो चदुण्णं कम्माणं अज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि त्ति ण घडदे। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि त्ति असंखेज्जगुणत्तं ण जुज्जदे। हेट्ठिमबेतिभागट्ठिदिबंधट्ठाणपाओग्गकसाएहिंतो उवरिमतिभागट्ठिदिबंधट्ठाणपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणं असमाणाणमणुवलंभेण

समाधान—चूंकि उसके स्थितिबन्धस्थान स्तोक हैं, अतः इसीसे उसके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी स्तोकताका भी परिज्ञान हो जाता है।

स्थितिबन्धस्थानोंकी प्रधानताके अभीष्ट होनेपर गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग होता है।

शंका—यदि पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है तो, हो, क्योंकि असंख्यात लोक मात्र ही गुणकार होता है, ऐसा हमारे पास उसके प्रमाणका कोई नियम नहीं है।

शंका—नाम व गोत्रके स्थितिबन्धस्थानोंके परस्पर समानता कैसे है?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्थितिबन्धस्थानोंकी समानतासे उनकी समानता भी निश्चित है।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय, इन चारों ही कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान तुल्य व असंख्यातगुणे हैं ॥ २४४ ॥

शंका—चारों ही कर्म मिथ्यात्व, असंयम और कषाय रूप प्रत्ययोंकी अपेक्षा चूंकि नाम-गोत्रके समान हैं इसी कारण नाम-गोत्रके अध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा चारों कर्मोंके अध्यवसानस्थानोंको असंख्यातगुणा बतलाना संगत नहीं है। दूसरे, नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान चूंकि विशेष अधिक हैं, इसलिये भी उनके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंको असंख्यातगुणा बतलाना उचित नहीं? इसके अतिरिक्त चूंकि नीचेके दो त्रिभाग मात्र स्थितिबन्धस्थानोंके योग्य कषायोदयस्थानोंकी अपेक्षा ऊपरके एक त्रिभाग मात्र स्थितिबन्धस्थानोंके योग्य कषायोदयस्थानोंके असमान न पाये जानेसे भी उनका असंख्यातगुणत्व घटित नहीं होता?

१ नाम-गोत्रयोः सत्कस्थितिबन्धाध्यवसायस्थानेभ्यो ज्ञानावरणीयदर्शनावरणीय-वेदनीयान्तरायाणां स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि। कथमिति चेदुच्यते—इह पल्योपमासंख्येयभागमात्रासु स्थितिष्वतिक्रान्तासु द्विगुणवृद्धिरुपलभ्या। तथा च सत्येकैकस्यापि पल्योपमस्यान्तेऽसंख्येयगुणानि लभ्यन्ते, किं पुनर्दशसागरोपमकोटीकोट्यन्ते इति। क. प्र. (म. टी.) १,८९.

असंखेज्जगुणत्ताणुववत्तीदो ? ण एस दोसो, णामा-गोदाणमुदयट्ठाणेहिंतो चदुण्णं कम्माणं उदयट्ठाणबहुत्तेण असंखेज्जगुणत्ताविरोहादो। कधं चदुण्णं कम्माणं पयडिअज्झवसाणाणं अण्णोण्णं समाणत्तं ? ण, सोदयादिवियप्पेहि तेसिं भेदाभावादो।

मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ २४५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो ? चदुण्णं कम्माणमुद-यट्ठाणेहिंतो मोहणीयस्स उदयट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तादो। एवं पगडिसमुदाहारो समत्तो।

ठिदिसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि पगणणा अणुकट्ठी तिव्व-मंददा त्ति[2] ॥ २४६ ॥

तत्थ पगणणा णाम इमिस्से इमिस्से ट्ठिदीए बंधकारणभूदाणि ट्ठिदिबंधज्झवसाण-ट्ठाणाणि एत्तियाणि एत्तियाणि होंति त्ति ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं पमाणं परूवेदि। तत्थ अणुकट्ठी णाम ट्ठिदिं पडि[3] ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं समाणत्तमसमाणत्तं च परूवेदि। तिव्व-मंददा णाम तेसिं जहण्णुक्कस्सपरिणामाणमविभागपडिच्छेदाणमप्पाबहुगं परूवेदि।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नाम-गोत्रके उदयस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके उदयस्थानोंके बहुत होनेसे उनके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है।

शंका—चार कर्मोंके प्रकृतिअध्यवसानस्थानोंके परस्पर समानता कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्वोदयादिक विकल्पोंकी अपेक्षा उनमें कोई भेद नहीं है।

मोहनीयके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २४५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, चार कर्मोंके उदयस्थानोंकी अपेक्षा मोहनीयके उदयस्थान असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार प्रकृतिसमुदाहार समाप्त हुआ।

अब स्थितिसमुदाहारका अधिकार है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार है—प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्रमन्दता ॥ २४६ ॥

इनमें प्रगणना नामक अनुयोगद्वार अमुक अमुक स्थितिके बन्धके कारणभूत स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान इतने इतने होते हैं, इस प्रकार स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करता है। अनुकृति अनुयोगद्वार प्रत्येक स्थितिके स्थितिबन्धाध्यव-सानस्थानोंकी समानता व असमानताको बतलाता है। तीव्रमन्दता अनुयोगद्वार उनके जघन्य व उत्कृष्ट परिणामोंके अविभाग प्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करता है।

१ तेभ्योऽपि कषायमोहनीयस्य स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि। तेभ्योऽपि दर्शनमोहनीयस्य स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि। क. प्र. (म. टी.) १,८९.। २ तत्र स्थितिसमुदाहारेऽपि त्रीण्यनुयोगद्वाराणि। तद्यथा—प्रगणना १, अनुकृष्टिः २, तीव्रमन्दता ३ च। तत्र प्रगणनाप्ररूपणार्थमाह—क. प्र. (म. टी.) १,८७ गाथाया उत्थानिका। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'पवडि' इति पाठः।

तिण्णि चेव अणियोगद्दाराणि किमट्ठं परूविदाणि ? ण, चउत्थादिअणियोगद्दाराणं संभवाभावादो ।

पगणणाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जा लोगा ॥ २४७ ॥

जहण्णट्ठिदी णाम धुवट्ठिदी, तत्तो हेट्ठा ट्ठिदिबंधाभावादो । तत्थ ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढि-अणंतगुणवड्ढीहि णिप्पण्णअसंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि होंति । कधमेक्कस्स जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणस्स अणंतो सव्वजीवरासी भागहारो कीरदे ? ण, जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणे वि अणंतसव्वजीवरासिमेत्तअविभागपडिच्छेदुवलंभादो ।

बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जा लोगा ॥ २४८ ॥

बिदियाए ट्ठिदीए त्ति वुत्ते समउत्तरमवट्ठिदी घेत्तव्वा । कधं तिस्से बिदियत्तं ? ण,

शंका—तीन ही अनुयोगद्वार किस लिये कहे हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि चतुर्थादिक अन्य अनुयोगद्वारोंकी सम्भावनाका अभाव है ।

प्रगणना अनुयोगद्वारका अधिकार है । ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४७ ॥

जघन्य स्थितिका अर्थ ध्रुवस्थिति है, क्योंकि, उसके नीचे स्थितिबन्धका अभाव है । उसमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं । वे अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि, इन छह वृद्धियोंसे उत्पन्न असंख्यात लोक मात्र छह स्थानोंसे संयुक्त होते हैं ।

शंका—अनन्त सर्व जीव राशिको एक जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानका भागहार कैसे किया जा रहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानमें भी अनन्त सब जीवराशि प्रमाण अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं ।

द्वितीय स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४८ ॥

' बिदियाए ट्ठिदीए ' ऐसा कहनेपर एक समय अधिक अवस्थितिका ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—इसको द्वितीय स्थिति कहना कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्रुवस्थितिसे एक समय अधिक स्थिति पृथक् पायी

१ ठिइबंधे ठितिबंधे अज्झवसाणाणसंखया लोगा । हस्सा वे (वि) सेसवुड्ढी आऊणमसंखगुणवड्ढी ॥ क. प्र. १,८७. ।

धुवट्ठिदीदो समउत्तरट्ठिदीए पुधत्तुवलंभादो । तिस्से ट्ठिदीए बंधपाओग्गज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि होंति त्ति भणिदं होदि ।

तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जा लोगा ॥ २४९ ॥

अणंतभागवड्ढीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गंतूण सइमसंखेज्जभागवड्ढी होदि । पुणो वि तेत्तियमेत्तं चेव अणंतभागवड्ढीए अद्धाणं गंतूण विदियअसंखेज्जभागवड्ढी होदि । एवं कंदयमेत्तअसंखेज्जभागवड्ढीओ कंदयवग्गं-कंदयमेत्तअणंतभागवड्ढीयो[1] च गंतूण सइं संखेज्जभागवड्ढी होदि । पुणो वि एत्तियमेत्तं चेव अद्धाणं पुव्वविहाणेण गंतूण बिदिया संखेज्जभागवड्ढी होदि । एवमेदेण विहाणेण कंदयमेत्तसंखेज्जभागवड्ढीसु गदासु समयाविरोहेण सइं संखेज्जगुणवड्ढी होदि । एदेण कमेण कंदयमेत्तसंखेज्जगुणवड्ढीसु गदासु सइमसंखेज्जगुणवड्ढी होदि । पुणो समयाविरोहेण कंदयमेत्तअसंखेज्जगुणवड्ढीसु गदासु सइमणंतगुणवड्ढी होदि । एदं सव्वं पि एगं छट्ठाणं त्ति भण्णदि । एरिसाणि असंखेज्जदिलोगमेत्तछट्ठाणाणि घेत्तूण तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होंति ।

एवमसंखेज्जा लोगा असंखेज्जा लोगा जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ॥ २५० ॥

जाती है ।

उक्त स्थितिके बन्धके योग्य अध्यवसानस्थान असंख्यात लोक मात्र छह स्थानोंसे संयुक्त होते हैं, यह अभिप्राय है ।

तृतीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४९ ॥

अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अनन्तभागवृद्धिके स्थानोंके बीतनेपर एक बार असंख्यात भागवृद्धि होती है । फिरसे भी उतना ही अनन्तभागवृद्धिका अध्वान जाकर द्वितीय असंख्यातभागवृद्धि होती है । इस प्रकारसे काण्डक प्रमाण असंख्यातभागवृद्धियों, काण्डक वर्ग और काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धियोंके बीतनेपर एक बार संख्यातभागवृद्धि होती है । फिरसे भी पूर्वोक्त रीतिसे इतने मात्र स्थान जाकर द्वितीय संख्यातभागवृद्धि होती है । इस प्रकार इस रीतिसे काण्डक प्रमाण संख्यातभागवृद्धियोंके बीतनेपर आगमाविरोधसे एक बार संख्यातगुणवृद्धि होती है । इस क्रमसे काण्डक प्रमाण संख्यातगुणवृद्धियोंके बीत जानेपर एक बार असंख्यातगुणवृद्धि होती है । पश्चात् आगमाविरोधसे काण्डक प्रमाण असंख्यातगुणवृद्धियोंके बीतनेपर एक बार अनन्तगुणवृद्धि होती है । यह सभी एक षट्स्थान कहा जाता है । ऐसे असंख्यात लोक प्रमाण षट्स्थान ग्रहण करके तृतीय स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक असंख्यात लोक असंख्यात लोक प्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ॥ २५० ॥

१ प्रतिषु ' कंदयवग्गो कंदय—' इति पाठः ।

जहा पुव्विल्लाणं तिण्णं ट्ठिदीणं अज्झवसाणट्ठाणाणि पमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ताणि तहा उवरिमसव्वट्ठिदीणं पि ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं पमाणं होदि त्ति जाणावणट्ठमेवमिदि णिद्देसो कदो ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २५१ ॥

जहा णाणावरणीयस्स ट्ठिदिं पडि[1] ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं पमाणपरूवणा कदा तथा सेससत्तण्णं पि कम्माणं परूवेदव्वं, असंखेज्जलोगपमाणत्तं पडि भेदाभावादो । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

एत्थ संतपरूवणा किण्ण परूविदा ? ण, तिस्से पमाणंतब्भावादो । कदो ? पमाणेण विणा संताणुववत्तीदो ।

तेसिं दुविधा सेडिपरूवणा अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा ॥ २५२ ॥

जत्थ णिरंतरं थोवबहुत्तपरिक्खा कीरदे सा अणंतरोवणिधा । जत्थ दुगुण-चदुगुणादिपरिक्खा कीरदि सा परंपरोवणिधा । एवं सेडिपरूवणा दुविहा चेव, तदियादिपयारा-

जिस प्रकार पूर्वोक्त तीन स्थितियोंके अध्यवसानस्थान प्रमाणसे असंख्यात लोक मात्र हैं, उसी प्रकार आगेकी सब स्थितियोंके भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है; यह बतलानेके लिये सूत्रमें ' एवं ' पदका निर्देश किया गया है ।

इसी प्रकार सात कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २५१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी प्रत्येक स्थितिसम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी भी स्थितियोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें असंख्यात लोक प्रमाणकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

शंका—यहां सत्प्ररूपणाकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उसका प्रमाण अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है, कारण कि प्रमाणके विना सत्त्व घटित ही नहीं होता है ।

उक्त स्थानोंकी श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥ २५२ ॥

जहांपर निरन्तर अल्पबहुत्वकी परीक्षा की जाती है वह अनन्तरोपनिधा कही जाती है । जहांपर दुगुणत्व और चतुर्गुणत्व आदिकी परीक्षा की जाती है वह परम्परोपनिधा कहलाती है । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार ही है, क्योंकि, और तृतीयादि प्रकारोंकी

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-प्रतिषु ' णाणावरणीयस्स पडि ', ताप्रतौ ' णाणावरणीयस्स पयडि ' इति पाठः ।

संभवादो । एत्थ संदिट्ठी बालजणबुद्धिविप्फारणट्ठं ठवेदव्वा—१६ । २० । २४ । २८ । ३२ । ४० । ४८ । ५६ । ६४ । ८० । ९६ । ११२ । १२८ । १६० । १९२ । २२४ । २५६ ।

अणंतरोवणिधाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि थोवाणि[1] ॥ २५३ ॥

केहिंतो थोवाणि त्ति वुत्ते उवरिमट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेहिंतो । कधमेदं णव्वदे ? हेट्ठा ट्ठिदिबंधट्ठाणाभावेण ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाभावादो ।

बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि[2] ॥ २५४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? असंखेज्जलोगमेत्तेण । जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणाणं विसेसागमणट्ठं को भागहारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एगगुणहाणिअद्धाणमिदि वुत्तं होदि ।

सम्भावना नहीं है । यहांपर अज्ञानी जनोंकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये संदृष्टिकी स्थापना करना चाहिये (मूलमें देखिये)

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान स्तोक हैं ॥ २५३ ॥

शंका—किनकी अपेक्षा स्तोक हैं ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि वे ऊपरके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा स्तोक हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—चूंकि नीचे स्थितिबन्धस्थानोंके न होनेसे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अभाव है, अतः इसीसे ज्ञात होता है कि वे ऊपरके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा स्तोक हैं ।

द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २५४ ॥

कितने मात्रसे अधिक हैं ? असंख्यात लोक मात्रसे वे अधिक हैं ।

शंका—जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके विशेषको लानेके लिये भागहार क्या है ?

---

१ अत्र द्वेधा प्ररूपणा । तद्यथा—अनन्तरोपनिधया परंपरोपनिधया च तत्र । अनन्तरोपनिधया प्रमाणमाह—हस्सा वे (वि) सेसवुड्ढी आयुवर्जानां कर्मणां ह्रस्वाज्जघन्यात् स्थितिबन्धात् परतो द्वितीयादिषु स्थितिस्थानबन्धेषु विशेषवृद्धिः विशेषाधिका वृद्धिरवसेया । तद्यथा—ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितौ तद्बन्धहेतुभूता अध्यवसाया नानाजीवापेक्षयाऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणाः । ते चान्यापेक्षया सर्वस्तोकाः । क. प्र. (म. टी.) १,८७. । २ ततो द्वितीयस्थितौ विशेषाधिकाः । ततोऽपि तृतीयस्थितौ विशेषाधिकाः । एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टा स्थितिः । एवं सर्वेष्वपि कर्मसु वाच्यम् । क. प्र. (म.टी.) १,८७. ।

संदिट्ठीए एत्थ गुणहाणिपमाणं चत्तारि ४ । एदं विरलेदूण जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि सोलस समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगपक्खेवपमाणं पावदि । एत्थ एगपक्खेवं घेत्तूण जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेसु पक्खित्ते बिदियट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं ।

तदियाए [ट्ठिदीए] ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २५५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? एगपक्खेवमेत्तेण । एत्थ जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ त्ति अवट्ठिदो पक्खेवो । कुदो[1] ? वड्ढिदएगेगपक्खेवाणं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमेगेगरूवाहियगुणहाणिभागहारुवलंभादो ।

एवं विसेसाहियाणि विसेसाहियाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥ २५६ ॥

एवं सव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि । अणंतराणंतरेण विसेसाहियकमेणं गच्छंति जाव उक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणे त्ति । णवरि गुणहाणिं पडि पक्खेवो दुगुण-दुगुणो होदि । कुदो ? दुगुण-दुगुणक्कमेण ट्ठिदिगुणहाणिचरिमट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमवट्ठिदएगगुणहाणिभागहारदंसणादो ।

समाधान—भागहार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। अभिप्राय यह कि एकगुणहानिस्थान भागहार है।

यहां संदृष्टिमें गुणहानिका प्रमाण चार (४) है। इसका विरलन करके जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाण सोलहको समखण्ड करके देनेपर एक एक विरलनरूपके ऊपर एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। यहां एक प्रक्षेपको ग्रहण करके जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंमें मिलानेपर द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है, ऐसा जानना चाहिये।

तृतीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २५५ ॥

कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? एक प्रक्षेपके प्रमाणसे वे विशेष अधिक हैं। यहां प्रथम गुणहानिके अन्तिम समय तक अवस्थित प्रक्षेप है, क्योंकि एक प्रक्षेपसे वृद्धिको प्राप्त हुए स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका उत्तरोत्तर एक एक अंकसे अधिक गुणहानि भागहार पाया जाता है।

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं ॥ २५६ ॥

इस प्रकार सब स्थितियोंके अध्यवसानस्थान अनन्तर-अनन्तर क्रमसे उत्कृष्ट स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंतक उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते गये हैं। विशेष इतना है कि प्रक्षेप प्रत्येक गुणहानिके अनुसार दूना दूना होता गया है। कारण कि दूने दूने क्रमसे स्थित गुणहानियोंमें अन्तिम स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अवस्थित एक गुणहानि भागहार देखा जाता है।

---

१ ताप्रतौ 'अवट्ठिदो । कुदो' इति पाठः ।

एवं छण्ण कम्माणं ॥ २५७ ॥

जहा णाणावरणीयस्स अणंतरोवणिधा परूविदा तहा छण्णं कम्माणं आउववज्जाणं परूवेदव्वा, विसेसाहियत्तं पडि भेदाभावादो ।

आउअस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि थोवाणि[1] ॥ २५८ ॥

कुदो ? आउअस्स असंखेज्जदिलोगमेत्तट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागमेत्ताणं चेव जहण्णट्ठिदिपाओग्गत्तादो ।

बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ २५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? जहण्णट्ठिदिबंधकारणादो समउत्तरट्ठिदिबंधकारणाणं बहुत्तुवलंभादो ।

तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ २६० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

इसी प्रकार छह कर्मोंकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २५७ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार आयुको छोड़कर शेष छह कर्मोंकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, इसमें विशेष अधिकताकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान स्तोक हैं ॥ २५८ ॥

इसका कारण यह है कि आयु कर्मके असंख्यात लोक प्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसान-स्थानोंमें उनके असंख्यातवें भाग मात्र ही जघन्य स्थितिके योग्य हैं ।

द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, जघन्य स्थितिबन्धके कारणोंकी अपेक्षा एक एक समय अधिक स्थितिबन्धके कारण बहुत पाये जाते हैं ।

तृतीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २६० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग है । इसके कारणका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये ।

---

१ आऊणमसंखगुणवड्ढी । आयुषां जघन्यस्थितेरारभ्य प्रतिस्थिति बन्धमसंख्येयगुणवृद्धिर्वक्तव्या । तद्यथा—आयुषो जघन्यस्थितौ तद्बन्धहेतुभूता अध्यवसाया असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणाः । ते च सर्वस्तोकाः । ततो द्वितीयस्थितौ असंख्येयगुणाः । ततोऽपि तृतीयस्थितावसंख्येयगुणाः । एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टा स्थितिः । क. प्र. (म. टी.) १,८७. ।

एवमसंखेज्जगुणाणि असंखेज्जगुणाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥ २६१ ॥

एवं ठिदिं पडि[1] ट्ठिदिं पडि आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणगारेण सव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि णेदव्वाणि जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

परंपरोवणिधाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेहिंतो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्ढिदा ॥ २६२ ॥

कुदो ? विरलणमेत्तपक्खेवेसु जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेसु वड्ढिदेसु दुगुणज्झवसाणट्ठाणसमुप्पत्तीदो ।

एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥ २६३ ॥

एवमवट्ठिदमेत्तियमद्धाणं गंतूण सव्वदुगुणवड्ढीओ उप्पज्जंति त्ति वत्तव्वं ।

एवं ट्ठिदिबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[2] ॥ २६४ ॥

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे होते गये हैं ॥ २६१ ॥

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितितक एक एक स्थितिके प्रति सब स्थितिबन्धाध्यवसान स्थानोंको आवलिके असंख्यातवें भाग गुणकारसे ले जाना चाहिये । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा उनसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हैं ॥ २६२ ॥

इसका कारण यह है कि जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंमें विरलन राशिके बराबर प्रक्षेपोंकी वृद्धिके होनेपर दुगुणे अध्यवसानस्थानोंकी उत्पत्ति होती है ।

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥ २६३ ॥

इस प्रकार इतना मात्र अध्वान जाकर सब दुगुणवृद्धियां उत्पन्न होती हैं, ऐसा कहना चाहिये ।

एक स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानोंके दुगुण-दुगुणवृद्धिहानिस्थानोंके अन्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २६४ ॥

---

१ अ-आ-का-प्रतिषु 'पयडि' इति पाठः । २ पल्लासंखियभागं गंतुं दुगुणाणि जाव उक्कोसा। क.प्र. १,८८.

कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताहि संखेज्ज-पलिदोवमेसु भागे हिदेसु असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलुवलंभादो । एवमेदेण सुत्तेण एगगुण-हाणिअद्धाणपमाणं परूविदं । णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णाणाट्ठिदिबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि अंगुल-वग्गमूलछेदणाणामसंखेज्जदिभागो[1] ॥ २६५ ॥

अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचीअंगुलपढमवग्गमूलं घेत्तव्वं । तस्स अद्धछेदणाणं असंखेज्जदिभागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होंति । होंताओ वि मोहणीयट्ठिदिपदेस-णाणागुणहाणिसलागाहिंतो थोवाओ, तार्णि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति पमाणमभणिदूण अंगुलवग्गमूलच्छेदणाणं असंखेज्जदिभागो त्ति परूविदत्तादो । होंताओ वि असंखेज्जगुणहीणाओ पुव्वं विहज्जमाणरासीदो संपहि विहज्जमाणरासीए असंखेज्जगुण-हीणत्तादो ।

णाणाठिदिबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २६६ ॥

कारण कि पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नानागुणहानिशलाकाओंका संख्यात पल्योपमोंमें भाग देनेपर पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध होते हैं । इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा एक गुणहानिअध्वानके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है । नानागुणहानि-शलाकाओंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

नानास्थितिबन्धाध्यवसानों सम्बन्धी दुगुण-दुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर अंगुलसम्बन्धी वर्गमूलके अर्धच्छेदोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २६५ ॥

'अंगुलवर्गमूल' ऐसा कहनेपर सूचीअंगुलके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करना चाहिये । उसके अर्धच्छेदोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानागुणहानिशलाकायें होती हैं । इतनी होकरके भी मोहनीय कर्मके स्थितिप्रदेशोंकी नानागुणहानिशलाकाओंसे स्तोक हैं, क्योंकि, 'वे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं' ऐसा उनका प्रमाण न बतलाकर 'वे अंगुलके वर्गमूलसम्बन्धी अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भाग हैं' ऐसी प्ररूपणा की गई है । असंख्यातगुणी हीन होती हुई भी पूर्वमें विभज्यमान राशिसे इस समयकी विभज्यमान राशि असंख्यातगुणी हीन है ।

नानास्थितिबन्धाध्यवसानदुगुणवृद्धिहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २६६ ॥

---

१ नाणंतराणि अंगुलमूलच्छेयणमसंखतमो ॥ क. प्र. १,८८., नानाद्विगुणवृद्धिस्थानानि चांगुलवर्ग-मूलच्छेदनकासंख्येयतमभागप्रमाणानि । एतदुक्त भवति—अंगुलमात्रक्षेत्रगतप्रदेशराशेर्यत्प्रथमं वर्गमूलं तन्मनुष्यप्रमाणहेतुराशिषण्णवतिच्छेदनविधिना तावच्छिद्यते यावद् भागं न प्रयच्छति । तेषां च छेदनका-नामसंख्येयतमे भागे यावन्ति छेदनकानि तावन्तु यावानाकाशप्रदेशराशिस्तावत्प्रमाणानि नानाद्विगुण-स्थानानि भवन्ति (म. टी.) । २ अ-आ-काप्रतिषु 'तार्णि व पलिदोवम—' इति पाठः ।

कुदो ? पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

एयट्ठिदिबंधज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्ज-गुणं ॥ २६७ ॥

कुदो ? असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । कथमेदं णव्वदे ? णाणागुण-हाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगगुणहाणिपमाणुवलंभादो ।

एवं छण्णं कम्माणमाउववज्जाणं ॥ २६८ ॥

जहा णाणावरणीयस्स परंपरोवणिधा परूविदा तहा छण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । आउअस्स एसा परूवणा णत्थि, ठिदिं पडि असंखेज्जगुणक्कमेण ट्ठिदि-बंधज्झवसाणट्ठाणाणं वड्ढिदंसणादो ।

संपहि सेडिपरूवणाए सूचिदाणं अवहार-भागाभाग-अप्पाबहुगाणं परूवणं कस्सामो । तं जहा—जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपमाणेण सव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? असंखेज्जदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति । तं जहा—उक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपमाणेण सव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणेसु कदेसु किंचूण-

क्योंकि, वे पल्योपम सम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

एक स्थितिबन्धाध्यवसानदुगुणवृद्धिहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २६७ ॥

क्योंकि, वह पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—चूंकि कर्मस्थितिमें नानागुणहानिशलाकाओंका भाग देनेपर एक गुणहानिका प्रमाण लब्ध होता है, इसीसे जाना जाता है कि वह पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है ।

इसी प्रकार आयुको छोड़कर छह कर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २६८ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी परम्परोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार छह कर्मोंकी परम्परोपनिधाकी भी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । आयु कर्मके सम्बन्धमें यह प्ररूपणा लागू नहीं होती, क्योंकि, उसके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रत्येक स्थितिके अनुसार असंख्यातगुणितक्रमसे वृद्धि देखी जाती है ।

अब श्रेणिप्ररूपणाके द्वारा सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे सब स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । यथा—सब स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंको उत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर वे कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण होते हैं । वहां संदृष्टिमें सब अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण

दिवड्डगुणहाणिमेत्तं होदि तत्थ संदिट्ठीए सव्वज्झवसाणट्ठाणपमाणमेदं[1] १५६० । पुणो एदम्मि उक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणेहि भागे हिदे दिवड्डगुणहाणिपमाणमागच्छदि । तं च एदं $\frac{१९५}{३२}$ । पुणो एदं जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणभागहारमिच्छामो त्ति सव्वज्झवसाणदुगुणवड्ढि-हाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भासे कदे जो उप्पण्णरासी तेण रासिणा १६ दिवड्डगुणहाणीए गुणिदाए जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणभागहारो होदि $\frac{१९५}{२}$ । पुणो एदेण सव्वज्झवसाणेसु अवहिरिदेसु[2] जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणमागच्छदि १६ । पुणो एदस्सुवरि भागहारो विसेसहीणकमेण जाणिदूण णेदव्वो जाव एगदुगुणवड्ढिपमाणमेत्तं चडिदो त्ति । पुणो तप्पमाणेण अवहिरिज्जमाणे पुव्वभागहारो अद्धं होदि । कुदो ? एगगुणवड्ढिं चडिदो त्ति एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण पुव्वभागहारे ओवट्टिदे तदुवलंभादो $\frac{१९५}{४}$ । पुणो एदस्सुवरि भागहारो जाणिदूण णेदव्वो जाव उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणे त्ति । पुणो तप्पमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे किंचूणदिवड्डगुणहाणिट्ठाणंतरेण अवहिरिज्जदि ।

एवं छण्णं कम्माणं भागहारपरूवणा परूवेदव्वा । एवं आउअस्स वि वत्तव्वं । णवरि जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणपमाणेण सव्वज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तकालेण अवहिरिज्जंति तं जहा—आउअस्स अज्झवसाणगुणगारो अवट्ठिदो त्ति के वि आइरिया भणंति ।

यह है—१५६० । इसमें उत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका भाग देनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण आता है । वह यह है—$\frac{१९५}{३२}$ । इस जघन्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानोंके भागहारको लानेकी इच्छासे सब अध्यवसानस्थानोंकी दुगुणवृद्धि-हानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न हो (१६) उससे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंका भागहार होता है—$\frac{१९५}{३२}$×१६=$\frac{१९५}{२}$ । इसका सब अध्यवसानस्थानोंमें भाग देनेपर जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण आता है—१५६०÷$\frac{१९५}{२}$=$\frac{३१२०}{१}$×$\frac{१}{१९५}$=१६ । इसके आगे एक दुगुणवृद्धि प्रमाण मात्र जाने तक भागहारको विशेषहीन क्रमसे जानकर ले जाना चाहिये । फिर उक्त प्रमाणसे अपहृत करनेपर पूर्व भागहार आधा होता है, क्योंकि, एक गुणहानि आगे गये हैं, अतः एक अंकका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उससे पूर्व भागहारको अपवर्तित करनेपर उसका अर्ध भाग लब्ध होता है—$\frac{१९५}{२}$÷२=$\frac{१९५}{४}$ । फिर इसके आगे उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानस्थानोंतक भागहारको जानकर ले जाना चाहिये । उसके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह कुछ कम डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है ।

इस प्रकार छह कर्मोंके भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । इसी प्रकार आयुकर्मके भी भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि सब अध्यवसानस्थान जघन्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे असंख्यात लोक मात्र कालके द्वारा

---

१ ताप्रतौ 'सव्वज्झवसाणपमाणमेदं' इति पाठः । २ प्रतिषु 'अवहिरिज्जदेसु' इति पाठः ।

तेसिमहिप्पाएण भागहारो वुच्चदे— अंतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि गच्छं कादूण " अर्द्धं शून्यं रूपेषु गुणम् " इति गणितन्यायेन जं लद्धं तं ठविय " रूपोनमादिसंगुणमेकोणगुणोन्मथितमिच्छा " एदेण सुत्तेण रूवूणं काऊण असंखेज्जलोगमेत्तआदिणा गुणिय रूवूणगुणगारेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे सव्वज्झवसाणपमाणं होदि । एदम्मि जहण्णट्ठिदिज्झवसाणपमाणेणोवट्टिदे असंखेज्जा लोगा लब्भंति । तेण जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणपमाणेण अवहिरिज्जमाणे सव्वज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तकालेण अवहिरिज्जंति । एवं उवरिमट्ठिदिअज्झवसाणाणं पि असंखेज्जलोगभागहारो वत्तव्वो । णवरि सव्वत्थ एसो चेव भागहारो होदि त्ति णियमो णत्थि, कत्थ वि घणलोग-जगपदर-सेडि-सागर-पल्ल-आवलिया-तदसंखेज्जदिभागमेत्तभागहारुवलंभादो । उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणपमाणेण सव्वज्झवसाणाणि सादिरेगएगरूवपमाणेण अवहिरिज्जंति । एत्थ कारणं जाणिदूण वत्तव्वं । एवं भागहारपरूवणा[1] समत्ता ।

जहण्णियाए ट्ठिदीए अज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि गुणहाणिट्ठाणंतराणि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणे त्ति । एवं छण्णं कम्माणं । आउअस्स वि एवं

अपहृत होते हैं । यथा—आयु कर्मके अध्यवसानोंका गुणकार अवस्थित है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । उनके अभिप्रायसे भागहारका कथन करते हैं—अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपमोंको गच्छ करके " अर्द्धं शून्यं रूपेषु गुणम् " इस गणितन्यायसे जो लब्ध हो उसको स्थापित करके 'रूपोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा' इस सूत्रके अनुसार एक रूप कम करके असंख्यात लोक मात्र आदिसे गुणितकर एक अंकसे रहित आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारका भाग देनेपर सब अध्यवसानोंका प्रमाण होता है । इसमें जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका जो प्रमाण हो उसका भाग देनेपर असंख्यात लोक लब्ध होते हैं । इसी कारण जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका जो प्रमाण है उससे सब अध्यवसानस्थानोंको अपहृत करनेपर वे असंख्यात लोक मात्र कालसे अपहृत होते हैं । इसी प्रकार आगेकी स्थितियोंके भी अध्यवसानस्थानोंका भागहार असंख्यात लोक मात्र कहना चाहिये । विशेष इतना है कि सभी जगह यही भागहार हो, ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, कहींपर घनलोक, जगप्रतर, जगश्रेणि, सागर, पल्य, आवलि और उनके असंख्यातवें भाग मात्र भागहार पाया जाता है । उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानोंके प्रमाणसे सब अध्यवसान साधिक एक रूपके प्रमाणसे अपहृत होते हैं । यहां कारण जानकर बतलाना चाहिये । इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थान सब स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग असंख्यात गुणहानिस्थानान्तर हैं । इस प्रकार, उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानस्थानोंतक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार छह कर्मोंके सम्बन्धमें भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ अप्रतौ 'परूवण' इति पाठः ।

चेव वत्तव्वं। णवरि उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वज्झवसाणट्ठाणाणमसंखेज्जा भागा होंति। एवं भागाभागपरूवणा समत्ता।

सव्वत्थोवाणि णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि १६। उक्कस्सियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणाणि असंखेज्जगुणाणि। को गुणगारो? अण्णोण्णब्भत्थरासी १६। अजहण्ण-अणुक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। को गुणगारो? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीयो। तस्स पमाणमेदं १६३। ३२। पुणो एदेण उक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु गुणिदेसु अजहण्ण-अणुक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपमाणं होदि १३०४। अणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणाणि विसेसाहियाणि। केत्तियमेत्तेण? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण १३२०। अजहण्णियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। केत्तियमेत्तेण? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणेहि परिहीणउक्कस्सट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण १५६०[1]। सव्वासु ट्ठिदीसु अज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। केत्तियमेत्तेण? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण १५७६।

आउववज्जाणं छण्णं पि कम्माणं एवं चेव वत्तव्वं। आउअस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि थोवाणि। अजहण्णअणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठा-

आयुके विषयमें भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि आयुकर्मके उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी अध्यवसान समस्त अध्यवसानस्थानोंके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं। इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई।

ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान सबसे स्तोक हैं (१६)। उत्कृष्ट स्थितिसम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार अन्योन्याभ्यस्त राशि है (१६)। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थिति-बन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार कुछ कम डेढ़ गुणहानियां हैं। उसका प्रमाण यह है— $\frac{163}{32}$। इसके द्वारा उत्कृष्ट स्थिति सम्बधी अध्यवसानस्थानोंको गुणित करनेपर अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है—२५६ × $\frac{163}{32}$ = १३०४। अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं? जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं। १३०४+१६=१३२० अजघन्य स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं? जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं—१३२०+(२५६−१६)=१५६०। सब स्थितियोंमें अध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं। जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है—१५६०+१६=१५७६।

आयु कर्मको छोड़कर छह कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा इसी प्रकारसे करना चाहिये। आयु कर्मकी जघन्य स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान स्तोक हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात-

१ प्रतिषु १०६०५ एवंविधात्र संदृष्टिः।

णाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । अणुक्कस्सियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणमेत्तेण । उक्कस्सियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अजहण्णियासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? अजहण्ण-अणुक्कस्सट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमेत्तेण । सव्वासु ट्ठिदीसु ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणमेत्तेण । एवं पगणणा त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

अणुकट्ठीए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जाणि ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि विदियाए ट्ठिदीए बंधज्झवसाणट्ठाणाणि अपुव्वाणि[1] ॥ २६९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे संदिट्ठी उच्चदे । तं जहा—जहण्णट्ठिदीए विणा उक्कस्सट्ठिदिपमाणं सत्त ७ । धुवट्ठिदिपमाणं पंच ५ । धुवट्ठिदीए सह उक्कस्सट्ठिदिपमाणमेदं १२ । पुणो एदिस्से समयचरणं कादूण धुवट्ठिदिप्पहुडि उवरिमसव्वट्ठिदिविसेसेसु सव्वज्झ-

गुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक हैं । अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? जघन्य स्थिति सम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग है । अजघन्य स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । सब स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । इस प्रकार प्रगणना अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अनुकृष्टिकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं द्वितीय स्थितिमें वे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं और अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान भी हैं ॥ २६९ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते समय संदृष्टि कही जाती है । वह इस प्रकार है—जघन्य स्थितिके विना उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण सात (७) है । ध्रुवस्थितिका प्रमाण पांच (५) है । ध्रुवस्थितिके साथ उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण यह है—१२ । इसके समयोंकी

१ सांप्रतमनुकृष्टिरभिधीयते । सा च न विद्यते । तथा हि—ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितिबन्धे यान्यध्यवसायस्थानानि, तेभ्यो द्वितीयस्थितिबन्धेऽन्यानि, तेभ्योऽपि तृतीयस्थितिबन्धेऽन्यानि, एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टा स्थितिः । एव सर्वेषामपि कर्मणा द्रष्टव्यम् (१-२) । क. प्र. (म. टी.) १,८८. ।

वसाणाणमसंखेज्जलोगमेत्ताणं तिरिच्छेण रचणा कायव्वा। एवं रचणं कादूण सव्वट्ठिदि-विसेसट्ठिदअज्झवसाणट्ठाणाणं णिव्वग्गणाकंदयमेत्तखंडाणि कादव्वाणि। किं पमाणं णिव्वग्गणकंदयं? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। संदिट्ठीए तस्स पमाणं चत्तारि ४। एदाणि खंडाणि किं समाणि, आहो विसमाणि? ण होंति समाणि, विसमाणि[1] चेव। कधं णव्वदे? परमाइरियोवदेसादो। तं जहा—पढमखंडादो बिदियखंडं विसेसाहियं असंखेज्जलोगमेत्तेण। बिदियखंडादो तदियखंडं विसेसाहियं असंखेज्जलोगमेत्तेण। तदियखंडादो चउत्थखंडं विसेसाहियमसंखेज्जलोगमेत्तेण। एवं णेदव्वं जाव चरिमखंडं त्ति। णवरि पढमखंडादो वि चरिमखंडं विसेसाहियं चेव। कुदो? परमाइरियोवदेसादो बाहाणुवलंभादो च। एत्थ संदिट्ठी[2]।

एवं ठविय एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे-णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जाणि

. . .

रचना करके ध्रुवस्थितिको आदि लेकर आगेके सब स्थितिविशेषोंमें रहनेवाले असंख्यात लोक प्रमाण सब अध्यवसानस्थानोंकी तिरछे रूपसे रचना करना चाहिये। इस प्रकार रचना करके सब स्थितिविशेषोंमें स्थित अध्यवसानस्थानोंके निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण खण्ड करना चाहिये।

शंका—निर्वर्गणाकाण्डकका प्रमाण कितना है?

समाधान—वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

संदृष्टिमें उसका प्रमाण चार (४) है।

शंका—ये खण्ड क्या सम हैं, अथवा विषम?

समाधान—वे सम नहीं होते, विषम ही होते हैं।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—यह श्रेष्ठ आचार्योंके उपदेशसे जाना जाता है। जैसे—प्रथम खण्डकी अपेक्षा द्वितीय खण्ड असंख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है। द्वितीय खण्डकी अपेक्षा तृतीय खण्ड असंख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है। तृतीय खण्डकी अपेक्षा चतुर्थ खण्ड असंख्यात लोक प्रमाणसे विशेष अधिक है। इस प्रकार अन्तिम खण्ड तक ले जाना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रथम खण्डकी अपेक्षा भी अन्तिम खण्ड विशेष अधिक ही है, क्योंकि, ऐसा ही उत्कृष्ट आचार्योंका उपदेश है, तथा उसमें कोई बाधा भी नहीं पायी जाती है। यहां संदृष्टि—(पृष्ठ ३४५ पर देखिये) इस प्रकार स्थापित करके इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान

१ अ-आ-काप्रतिषु 'विसमाणि ण होंति विसमाणि', ताप्रतौ 'विसमाणि ण होंति ! विसमाणि' इति पाठः। २ अत्रोपलभ्यमाना संदृष्टयः ३४५ तमे पृष्ठे द्रष्टव्याः।

ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि च बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होंति, अपुव्वाणि च । कधमपुव्वाणं संभवो ? ण, बिदियट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणचरिमखंडज्झवसाणट्ठाणाणं धुवट्ठिदिअज्झवसाणेसु अभावादो । ण च जहण्णट्ठिदिसव्वज्झवसाणाणि बिदियट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु अत्थि, जहण्णट्ठिदिपढमखंडज्झवसाणट्ठाणाणं बिदियट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु अणुवलंभादो । जाणि बिदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेसु होंति त्ति ण घेतव्वं, पढमखंडज्झवसाणट्ठाणाणं तदियट्ठिदिअज्झवसाणट्ठाणेसु अणुवलंभादो । कधमेदं णव्वदे ? ताणि सव्वाणि होंति त्ति णिद्देसाभावादो । अपुव्वाणि त्ति वुत्ते अपुव्वाणि चेव वत्तव्वं, च-सद्देण विणा-समुच्चयावगमाभावादो । जदि एवं तो सुत्ते च-सद्दो किण्ण परूविदो ? ण, च-सद्दणिद्देसेण[1] विणा वि तदट्ठावगमादो ।

एवमपुव्वाणि अपुव्वाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति ॥२७०॥

है वे भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं, तथा अपूर्व भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं ।

शंका—अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान ध्रुवस्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं, तथा जघन्य स्थितिके सब अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं है; कारण कि जघन्य स्थितिसम्बन्धी प्रथम खण्डके अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं । जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं वे तृतीय स्थितिके अध्यवसानोंमें होते हैं, ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि द्वितीय स्थितिके प्रथम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान तृतीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, 'वे सभी होते हैं, ऐसा सूत्रमें निर्देश नहीं किया गया है, इसीसे उसका ज्ञान हो जाता है ।

सूत्रमें जो 'अपुव्वाणि' ऐसा निर्देश किया है उससे 'अपुव्वाणि चेव' अर्थात् अपूर्व भी होते हैं, ऐसा कथन करना चाहिये, क्योंकि, च शब्दके विना समुच्चयका ज्ञान नहीं होता है ।

शंका—यदि ऐसा है तो सूत्रमें च शब्दका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि च शब्दके निर्देशके विना भी उक्त अर्थका ज्ञान हो जाता है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक अपूर्व अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ॥२७०॥

१ अ-काप्रत्योः '—णिद्देसेण' इति पाठः ।

एवं उत्तविधाणेण अपुव्वाणि अपुव्वाणि चेव ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि सव्व-ट्ठिदिविसेसेसु होदूण गच्छंति जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । सव्वट्ठिदिविसेसेसु पुव्वट्ठिदि-बंधज्झवसाणट्ठाणाणि वि अत्थि, ताणि च अभणिदूण अपुव्वाणि चेव अत्थि त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एवमिदि वयणादो चेव पुव्वाणं अत्थित्तसिद्धीदो । एवं वयणादो चेव पुव्वाणं पि अत्थित्तसिद्धीए संतीए अपुव्वाणं णिद्देसो किमट्ठं कदो ? ण, अपुव्वपरिणामअत्थित्तपओ-जणत्तेण तप्पदुप्पायणे दोसाभावादो ।

जहण्णट्ठिदीए पढमखंडं उवरि केण वि सरिसं ण होदि । बिदियखंडं समउत्तर-जहण्णट्ठिदीए पढमज्झवसाणखंडेण सरिसं । तदियखंडं दुसमउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमखंडेण सरिसं । चउत्थखंडं तिसमउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमखंडेण सरिसं । एवं णेयव्वं जाव णिव्वग्गणकंदयचरिमसमओ त्ति । तदो उवरिमसमए जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणाणमणुकट्ठी वोच्छिज्जदि, तत्थ एदेहि सरिसपरिणामाभावादो । एवं सव्वट्ठिदिविसेससव्वज्झवसाणाणं पादेक्कमणुकट्ठिवोच्छेदो परूवेदव्वो त्ति भावत्थो ।

इस प्रकार उक्त प्रक्रियासे उत्कृष्ट स्थितितक सब स्थितिविशेषोंमें होकर अपूर्व ही अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते जाते हैं ।

शंका—सब स्थितिविशेषोंमें जब पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान भी हैं, तब उन्हें न कहकर ' अपूर्व ही हैं ' ऐसा किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ' एवं ' अर्थात् ' इसी प्रकार ' ऐसा कहनेसे ही पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है ।

शंका—यदि ' एवं ' पदका निर्देश करनेसे ही पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है, तो फिर अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका निर्देश किसलिये किया गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यहां अपूर्व परिणामोंके अस्तित्वका प्रयोजन होनेसे उनके कहनेमें कोई दोष नहीं है ।

जघन्य स्थितिका प्रथम खण्ड आगे किसीके भी सदृश नहीं है । उसका द्वितीय खण्ड एक समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका तृतीय खण्ड दो समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । चतुर्थ खण्ड तीन समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है । इस प्रकार निर्वर्गणाकाण्डकके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । उससे आगेके समयमें जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंकी अनुकृष्टिका व्युच्छेद हो जाता है, क्योंकि, वहां इनके सदृश परिणामोंका अभाव है । इस प्रकारसे सब स्थितिविशेषोंके सब अध्यवसानोंमेंसे प्रत्येकमें अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी प्ररूपणा करना चाहिये । यह उक्त कथनका भावार्थ है ।

संपहि अपुणरुत्तज्झवसाणपरूवणा कीरदे। तं जहा—जहण्णट्ठिदिमादिं कादूण जाव दुचरिमट्ठिदि त्ति ताव सव्वट्ठिदिविसेसेसव्वज्झवसाणाणं सव्वपढमखंडाणि अपुणरुत्ताणि। उक्कस्सट्ठिदीए सव्वखंडाणि अपुणरुत्ताणि चेव। सेस-दुचरिमादिट्ठिदीणं बिदियादिखंडाणि पुणरुत्ताणि, एदेहि समाणपरिणामाणमपुणरुत्तपरिणामेसु उवलंभादो।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २७१ ॥

जहा णाणावरणीमस्स अणुकट्ठी परूविदा तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं। णवरि आउअस्स जहण्णट्ठिदीए णिव्वग्गणमेत्तअज्झवसाणखंडाणि पुव्वं व पढमखंडप्पहुडि विसेसाहियाणि होंति। समउत्तरजहण्णट्ठिदिप्पहुडिसव्वज्झवसाणखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि चेव। किंतु तत्थ समयाहियजहण्णट्ठिदीए दुचरिमखंडादो चरिमखंडमायामेण असंखेज्जगुणं। तदुवरिमट्ठिदीए पुण तिचरिमखंडादो दुचरिमखंडमसंखेज्जगुणं। तदो चरिमखंडमसंखेज्जगुणं। एवं णेदव्वं जाव णिव्वग्गणकंदयदुचरिमसमओ त्ति। पुणो तदुवरिमट्ठिदिप्पहुडि जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ताव सव्वखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण आयामेण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं। एत्थ वि अणुकट्ठिवोच्छेदो पुव्वं व परूवेदव्वो। एवमणुकट्ठी समत्ता।

तिव्व-मंददाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जहण्णयं

अब अपुनरुक्त अध्यवसानोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—जघन्य स्थितिको आदि लेकर द्विचरम स्थिति तक सब स्थितिविशेषोंके सभी अध्यवसानस्थान सम्बन्धी सब प्रथम खण्ड अपुनरुक्त हैं। उत्कृष्ट स्थितिके सब खण्ड अपुनरुक्त ही हैं। शेष द्विचरम आदि स्थितियोंके द्वितीयादिक खण्ड पुनरुक्त हैं, क्योंकि, इनके समान परिणाम अपुनरुक्त परिणामोंमें पाये जाते हैं।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें अनुकृष्टिका कथन करना चाहिये ॥ २७१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके विषयमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा की है, उसी प्रकार अन्य सात कर्मोंके सम्बन्धमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि आयुकी जघन्य स्थितिके निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण अध्यवसानखण्ड पूर्वके ही समान प्रथम खण्डको आदि लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं। एक समय अधिक जघन्य स्थितिको आदि लेकर सब अध्यवसानखण्ड परस्परकी अपेक्षा यथाक्रमसे विशेष अधिक ही हैं। परन्तु उनमें एक समय अधिक जघन्य स्थितिके द्विचरम खण्डसे अन्तिम खण्ड आयामकी अपेक्षा असंख्यातगुणा है। उससे आगेकी स्थितिके त्रिचरम खण्डकी अपेक्षा द्विचरम खण्ड असंख्यातगुणा है। उससे अन्तिम खण्ड असंख्यातगुणा है। इस प्रकार निर्वर्गणाकाण्डकके द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये। फिर उससे आगेकी स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति तक सब खण्ड एक दूसरेकी अपेक्षा आयामसे असंख्यात गुणे होते हैं, ऐसा समझना चाहिये। यहां भी अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी पूर्वके ही समान प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अनुकृष्टिका कथन समाप्त हुआ।

तीव्र-मन्दताकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी जघन्य स्थिति-

१ ताप्रतौ 'सव्वट्ठिदिविसेसस्स' इति पाठः।

ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणं सव्वमंदाणुभागं[1] ॥ २७२ ॥

सव्वट्ठिदीसु पुणरुत्तट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि अवणिय अपुणरुत्ताणि[2] घेत्तूण एदमप्पाबहुगं वुच्चदे। सव्वमंदाणुभागमिदि वुत्ते सव्वजहण्णसत्तिसंजुत्तमिदि घेत्तव्वं। सेसं सुगमं।

तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ॥ २७३ ॥

तिस्से चेव जहण्णट्ठिदीए पढमखंडस्स अपुणरुत्तस्स उक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो, असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो। चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो ण गहिदो त्ति कधं णव्वदे? जहण्णट्ठिदिउक्कस्सपरिणामादो समयाहियजहण्णट्ठिदीए जहण्णपरिणामो अणंतगुणो त्ति सुत्तणिद्देसादो णव्वदे।

बिदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं ॥२७४॥

पुव्विल्लउक्कस्सपरिणामो उव्वंको, एसो जहण्णपरिणामो अट्ठंको त्ति काऊण हेट्ठिमउक्कस्सपरिणामं सव्वजीवरासिणा गुणिदे उवरिमट्ठिदिजहण्णपरिणामो होदि, तेण अणंतगुणत्तं ण विरुज्झदे। उवरिं पि उक्कस्सपरिणामादो जत्थ जहण्णपरिणामो अणंतगुणो त्ति वुच्चदि तत्थ एदं चेव कारणं वत्तव्वं।

बन्धाध्यवसानस्थान सबसे मन्द अनुभागवाला है ॥ २७२ ॥

सब स्थितियोंमें पुनरुक्त स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंको छोड़कर और अपुनरुक्तोंको ग्रहण करके यह अल्पबहुत्व कहा जा रहा है। 'सव्वमंदाणुभाग' ऐसा कहनेपर सबसे जघन्य शक्तिसे संयुक्त है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। शेष कथन सुगम है।

उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७३ ॥

उसी जघन्य स्थितिके अपुनरुक्त प्रथम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, क्योंकि वह असंख्यात लोक मात्र छहस्थान आगे जाकर स्थित है।

शंका—अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम नहीं ग्रहण किया गया है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—जघन्य स्थितिके उत्कृष्ट परिणामसे एक समय अधिक जघन्यस्थितिका परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा सूत्रमें निर्देश किया जानेसे उसका परिज्ञान होता है।

द्वितीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७४ ॥

पूर्वका उत्कृष्ट परिणाम ऊर्वक और यह जघन्य परिणाम अष्टांक है, ऐसा करके अधस्तन उत्कृष्ट परिणामको सर्व जीवराशिसे गुणित करनेपर आगेकी स्थितिका जघन्य परिणाम होता है, इसी कारण उसके अनन्तगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है। आगे भी जहांपर उत्कृष्ट परिणामकी अपेक्षा जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहा जाता है वहां पर भी यही कारण बतलाना चाहिये।

१ सम्प्रति स्थितिसमुदाहारे या प्राक् तीव्र-मन्दता नोक्ता साभिधीयते—अणंतेत्यादि। तद्यथा—ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितौ जघन्यस्थितिबन्धाध्यवसायस्थानं सर्वमन्दानुभावम्। ततस्तस्यामेव जघन्यस्थितौ उत्कृष्टमध्यवसायस्थानमनन्तगुणम्। ततोऽपि द्वितीयस्थितौ जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम्। ततोऽपि तस्यामेव द्वितीयस्थितौ उत्कृष्टमनन्तगुणम्। एवं प्रतिस्थिति जघन्यमुत्कृष्टं च स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणतया तावद्वक्तव्य यावदुत्कृष्टायां स्थितौ चरम स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् (१-१)। क. प्र. (म. टी.) १,८९. । २ अ-आ-काप्रतिषु-'पुणरूत्ताणि' इति पाठः।

तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ॥ २७५ ॥

असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो ।

तदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं ॥ २७६ ॥

कारणं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो ।

तिस्से चेव उक्कस्सयमणंतगुणं ॥ २७७ ॥

असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो ।

एवमणंतगुणा जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ॥ २७८ ॥

एवं पुव्वुत्तकमेण अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । णवरि उक्कस्सियाए ट्ठिदीए जहण्णादो उक्कस्समणंतगुणमिदि वुत्ते चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो त्ति घेत्तव्वं ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २७९ ॥

जहा णाणावरणीयस्स तिव्वमंददाए अप्पाबहुगं परूविदं तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । एवं तिव्व-मंददा त्ति समत्तमणियोगद्दारं । एवं ट्ठिदिसमुदाहारो समत्तो । एवं ट्ठिदिबंधज्झवसाणपरूवणा समत्ता । एवं वेयणकालविहाणे त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है ॥ २७५ ॥

क्योंकि, वह जघन्य परिणामसे असंख्यात लोक प्रमाण छह स्थान आगे जाकर स्थित है ।

उससे तृतीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७६ ॥

इसका कारण सुगम है, क्योंकि, वह पूर्वमें बतलाया जा चुका है ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम उससे अनन्तगुणा है ॥ २७७ ॥

क्योंकि, वह उससे असंख्यात लोक मात्र छह स्थान आगे जाकर स्थित है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वे अनन्तगुणे अनन्तगुणे हैं ॥ २७८ ॥

इस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्त क्रमसे उत्कृष्ट स्थिति तक अनन्तगुणित श्रेणिसे ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट स्थितिके जघन्य परिणामकी अपेक्षा उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहनेपर अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वको कहना चाहिये ।२७९।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें कहना चाहिये, क्योंकि वहां उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार तीव्रमन्दता अनुयोगद्वार समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थितिसमुदाहार समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थितिबन्धाध्यवसान प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस प्रकार वेदनकालविधान अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१

वेदणाखेत्तविहाणसुत्ताणि

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	वेयणखेत्तविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति।	१
२	पदमीमांसा सामित्तं अप्पाबहुए त्ति।	३
३	पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो किं उक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा?	,,
४	उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा।	४
५	एवं सत्तण्णं कम्माणं।	११
६	सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे।	,,
७	सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स?	१४
८	जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे अच्छिदो।	१५
९	वेयणसमुग्घादेण समुहदो।	१८
१०	काउलेस्सियाए लग्गो।	१९
११	पुणरवि मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो तिण्णि विग्गहकंदयाणि कादूण।	२०
१२	से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उप्पज्जिहिदि त्ति तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सा।	,,
१३	तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा।	२३
१४	एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं।	२९
१५	सामित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स?	,,
१६	अण्णदरस्स केवलिस्स केवलिसमुग्घादेण समुहदस्स सव्वलोगं गदस्स तस्स वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सा।	२९
१७	तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा।	३०
१८	एवमाउव-णामा-गोदाणं।	३३
१९	सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णिया कस्स?	,,
२०	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स तिसमयआहारयस्स तिसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा।	,,
२१	तव्वदिरित्तमजहण्णा।	३६
२२	एवं सत्तण्णं कम्माणं।	५३
२३	अप्पाबहुए त्ति। तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगद्दाराणि जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे।	,
२४	जहण्णपदे अट्ठण्ण पि कम्माण वेयणाओ तुल्लाओ।	,,
२५	उक्कस्सपदे णाणावरणीय-दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाण वेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ थोवाओ।	५४
२६	वेयणीय आउअ-णामा-गोदवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ।	,,
२७	जहण्णुक्कस्सपदेण अट्ठण्णं पि कम्माण वेदणाओ खेत्तदो जहण्णियाओ तुल्लाओ थोवाओ।	५५

वेयणकालविहाणसुत्ताणि

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तीसं सागरोवमकोडीयो त्ति ।	२३८
१०३	पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तयाणं मोहणीयस्स सत्तवाससहस्साणि आबाहं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सत्तरिसागरोवमकोडाकोडि त्ति ।	२४२
१०४	पंचिंदियाणं सण्णीणं सम्मादिट्ठीणं वा मिच्छादिट्ठीणं वा पज्जत्तयाणमाउअस्स पुव्वकोडितिभागमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि त्ति ।	२४५
१०५	पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तयाणं णामा-गोदाणं बेवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण वीसं सागरोवमकोडीयो त्ति ।	,,
१०६	पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणमपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणमाउववज्जाणमंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण अंतोकोडाकोडीयो त्ति ।	२४७
१०७	पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं चउरिंदिय-तीइंदिय-बीइंदियाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयाणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणमाउअस्स अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण पुव्वकोडीयो त्ति ।	२४८
१०८	पंचिंदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं बादरएइंदियपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणं आउअवज्जाणं अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सस्स सागरोवमसदस्स सागरोवमपण्णासाए सागरोवमपणुवीसाए सागरोवमस्स तिण्णि सत्त भागा सत्त-सत्त-भागा बेसत्त भागा पडिवुण्णा त्ति ।	२४९

—•—

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रमसंख्या गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
(वेदणा-क्षेत्रविधान)		प्रमाणवार्तिक ४-१९०
१ अवगयनिवारणट्ठं	१	पंचा. १०१
(वेदणा-कालविधान)		
५ अच्छेदनस्य राशेः	१६४	पंचा. १००
८ अयोगमपरैर्योग—	३१७	गो. जी. ५६९
४ कालो त्ति य ववएसो	७६	ष. खं. पु. ६ पृ. १५८, पु. १० पृ. ४८५
१ कालो परिणामभवो	७५	गो. जी. ५८८
२ णय परिणमइ सयं सो	७६	
६ प्रक्षेपकसंक्षेपेण	२४१	
३ लोगागासपदेसे	७६	
७ विशेषणविशेषाभ्याम्	३१७	

३ ग्रन्थोल्लेख

१ छेदसूत्र

१ ण च दव्वित्थि-णवुंसयवेदाणं चेलादिचागो अत्थि, छेदसुत्तेण सह विरोहादो। ११४

२ तत्त्वार्थसूत्र (१-२०)

१ ण च पुव्वसद्दो कारणत्थभावेण अप्पसिद्धो, "मदिपुव्वं सुदं" (विशेषा १०५) इच्चेत्थ कारजे वट्टमाणपुव्वसद्दुवलंभादो। १४१

३ प्रदेशविरचितअल्पबहुत्व

१ तं कधं णव्वदे ? चरिमगुणहाणिदव्वादो पढमणिसेयो असंखेज्जगुणो त्ति पदेसविरइयअप्पाबहुगादो। २५६

४ मूलाचार

१ ण च तेण सह तस्स बंधो, आपंचमी त्ति सिंहा इत्थीओ जंति छट्ठिपुढवि त्ति (१२—११३)। ११४

२ ण च देवाणं उक्कस्साउअं दव्वित्थिवेदेण सह बज्झइ, णियमा णिग्गंथलिंगेण (१२-१३४)

५ संतकम्मपाहुड

१ संतकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पाइदो। २१

६ अनिर्दिष्टनाम

१ "अर्द्धे शून्यं रूपेषु गुणम्" इति गणितन्यायेण जं लद्धं तं ठविय "रूवोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मवितमिच्छा" एदेण रूवूणं काऊण...सव्वज्झवसाणपमाणं होदि। ३६०

४ पारिभाषिक शब्द-सूची